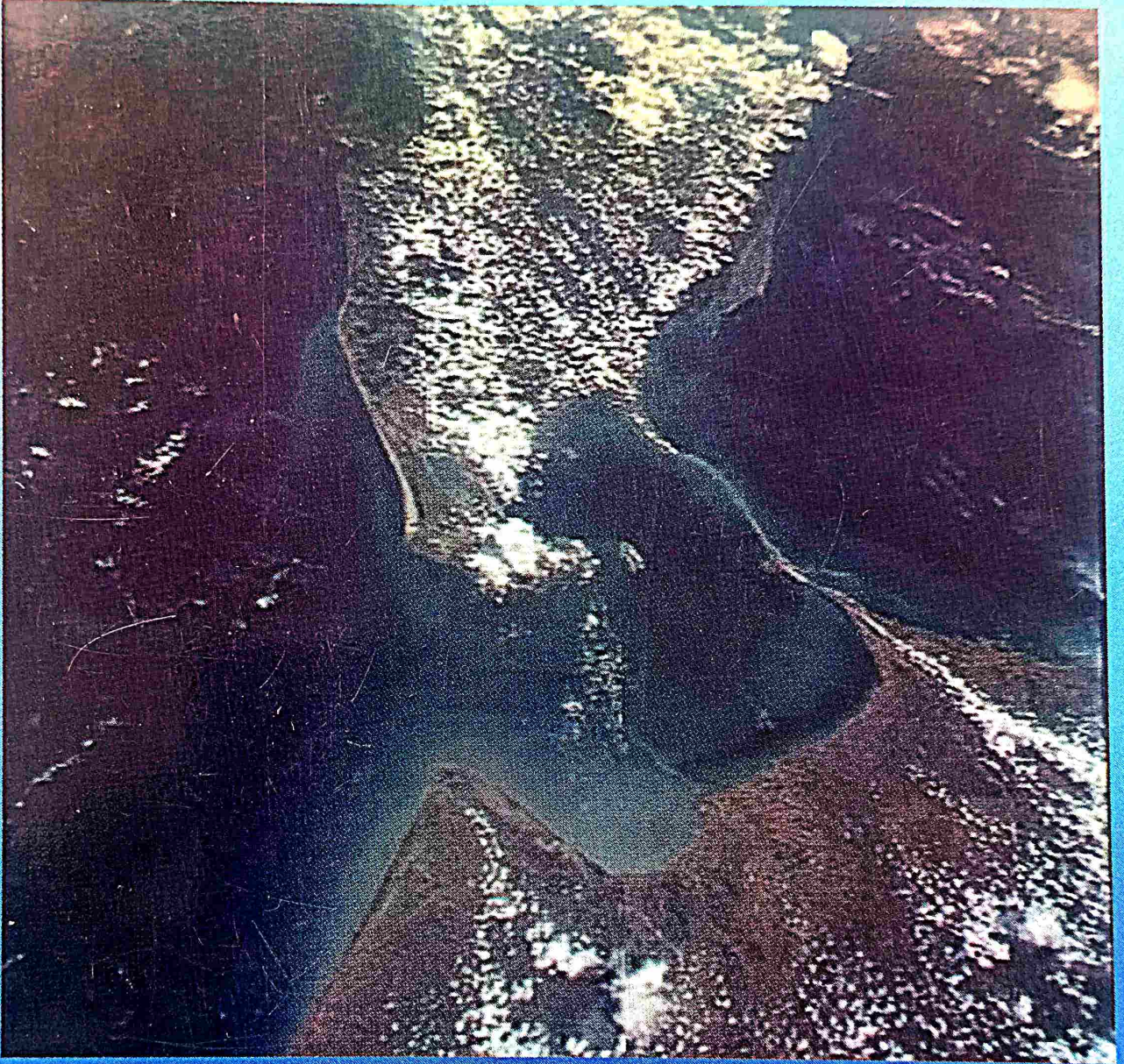


बज्जिका रामाएन् (महाकाव्य)



प्रभु राम द्वारा निर्मित सेतुबन्ध, रामेश्वरम का प्रामाणिक चित्र

कवि
अवधेश्वर अरुण

अखिल भारतीय बज्जिका साहित्य सम्मेलन
चेन्नै

(एक)

बज्जिका रामाएन

(महाकाव्य)

कवि

अवधेश्वर अरुण

अखिल भारतीय बज्जिका

साहित्य सम्मेलन, चेन्नै

(द्व)

मुद्रक के पता : हिन्दी प्रचार प्रेस
त्यागराय नगर
चेन्नई - 600 017.

राएल्टी आ कापीराइट : हंस कुमार

संस्करण : द्वितीय, फरबरी, 2003

प्रति : 1000

मूल्य : सौ रुपइआ

आवरण चित्र :

अमेरिकी अंतरिक्ष संस्था "नासा" द्वारा सेतुबन्ध, रामेश्वरम का लिया गया प्रामाणिक चित्र-नासा के अनुसार यह पुल समुद्र के अन्दर है जो मानव निर्मित है। इसे अब तक 'एडम्स ब्रिज' कहा जाता रहा है। यह वही पुल है जिसके बारे में रामायण में उल्लेख आया है।

अखिल भारतीय बज्जिका साहित्य सम्मेलन
चेन्नै शाखा के सौजन्य से प्रकाशित

BAJJIKA RAMAYAN

by Awadheswhwar Arun

समर्पण

तोहर देल बस्तु माई तोहरा कर में अरपइले ।
घर परिवार समाज देस ला मंगल दान मंगइले ।।
ग्यान कला बिद्या में तूही सुखद सारदा रूप ।
अन धन आ ऐस्वर्ज भोग में लछमी महा अनूप ।।
हे दुरगति दुखनासक दुरगा आदि सक्ति कल्यानी ।
जन-जन के सुख सान्ती देबे हम्मर काब्य भबानी ।।

अवधेश्वर अरुण

रामे जी राम

अखिल भारतीय बज्जिका साहित्य सम्मेलन के गठन बज्जिका के विकास में एगो मील के पत्थर हए। बज्जिका भाषा के मानक रूप दे क आ बज्जिका में साहित्य रच क ई भाषा के सउँसे देस में मान्यता देलावे लेल सम्मेलन जथाशक्ति कोसिस में लागल हए। तनी-मनी कठिनाइयों हए लेकिन तइयो ई भाषा के जनाधार बनावे में सफलता मिल रहल हए। मिल जुल क काम करे में ईहे त फायदा हए जे जदि एगो कोई थक गेल त दोसर आगू बढ़के कमान थाम्ह लेइअ। दोसर जगह सुस्ती हए, त चेन्नै में फुरती।

अखिल भारतीय बज्जिका साहित्य सम्मेलन के गठन आ रजिस्ट्रेशन के समय से चेन्नै शाखा हए। छोट-मोट रूप में बज्जिका विकास के आन्दोलन में शुरू से लागल हए। चेन्नै के शाखा से बहुत लोग जुड़लन, लेकिन कुछ के ट्रान्सफर हो गेल तऽ कुछ के पढ़ाई खतम हो गेला के कारण बिहार वापिस लौट जाएके कारण संगठन में थोड़ा कम्मी रहल। लेकिन पिलपिलहा बिरुआ के नया खाद पानी मिलल त फेर ई हरियर हो गेल ह। ए साल चेन्नै शाखा के पुनर्गठन भेल आ श्री उमेश नारायण सिंह - अध्यक्ष, श्री ईश्वर करुण - उपाध्यक्ष, श्री राम निवास शर्मा - सचिव, श्री मनोज कुमार - सह-सचिव, आ श्री राकेश कश्यप - कोषाध्यक्ष चुनल गेलन।

राष्ट्रीय स्तर पर पहिलहि से श्री ईश्वर करुण संयुक्त सचिव के रूप में काम में लागल रहलन ह।

पुनर्गठन के बाद विचार भेल जे एहन ठोस काम कएल जाए जे बज्जिका के हित में होए। एकरा पहिले एगो भेंट-घाँट भेल रहे जे में ई जनकारी भेल जे श्री राम निवास शर्मा जी रामायण के परम प्रेमी हतन आ तब ईहो ग्यात भेल जे हिनका पास बहुत तरह के प्रकासित रामाएन के बृहद संग्रह हए। ई संग्रह में अंग्रेजी, चीनी आदि भाषा में लिखल रामाएन सहित संस्कृत, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, गुजराती, कश्मीरी, बँगला, उड़िया, नेपाली, हिन्दी आ मैथिलीओ के रामाएन हए। श्री ईश्वर करुण के 'सूचना' पर कि बज्जिका भाषा में रामाएन रचल गेल हए, हिनका बड़ा आनंद भेल आ ई, तुरंत बज्जिका रामाएन के अपना संग्रह में सामिल करेला कोसिस में लग गेलन। ईहे बीच में ई जनकारी भेल जे बज्जिका रामाएन के प्रति अब मिलनाई बड़ा दुर्लभ हए। तइओ श्री शर्माजी एक प्रति के जोगार कइए लेलन। बज्जिका के विकास के दृष्टि से जरूरी हए जे ई रामाएन के प्रति सर्व सुलभ होए।

(पाँच)

नया चुनल शाखा में ई विचार भेल जे कोनो भाषा के रामाएन ओ भाषा के समृद्धि आ विकास के सूचक होइअ, ए खातिर विचार भेल जे अखिल भारतीय बज्जिका साहित्य सम्मेलन के चेन्नै शाखा द्वारा डॉ. अवधेश्वर अरुण लिखित बज्जिका रामाएन के पुनर्प्रकाशित कएल जाए।

ई संयोगे के बात हए जे डॉ. अरुण सुरुए से सम्मेलन के अप्पन सहयोग देइत रहलन ह। जब श्री रामनिवास शर्मा जी हुनका से संपर्क कएलन त डॉ. अरुण के उदार मन हमरा सबके निवेदन के तुरंत स्वीकार क लेलक। ए तरह से बज्जिका रामाएन के नया संस्करण प्रकाशित हो कऽ अपने के आगू हए।

एकर प्रकाशन में समस्या रहे जे चेन्नै के प्रेसबला लोग त बज्जिका न जनइछन, त की कएल जाए? लेकिन दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा मुद्रण के काम स्वीकार कर लेलन। एकर प्रूफ संसोधन के जिम्मेबारी सदस्यगन लेलन आ अंतिम रूप से एकर प्रूफ डा. अरुण खुदे देखलन।

आर्थिक रूप से सहयोग करे लेल सेहो सदस्यगन अप्पन इच्छा से आगू अएलन आ कुछ अन्य महत्वपूर्णजन से सेहो अर्थ संग्रह कएल गेल।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के कथा अइसन हए कि जे, पढ़लन हुनको लाभ, सुनलन हुनको लाभ आ जे सुनैलन हुनको लाभ, माने कि लाभे लाभ। हमर सबके संस्कृति पर बहुत तरह के खतरा सदिखन मरड़ाइत हए, ई स्थिति में बहुत आशा आ विश्वास हए जे रामायण हमरा संस्कृति के रक्षा करेवला महत्वपूर्ण ग्रंथ साबित होएत।

बज्जिकांचल में राम के लोकप्रियता इहे से पता चलइअ जे हम कोनो चीज के गिने लेल पहिले “रामे जी राम” कहइछी, हाँफी (जम्हाई) अबइअ त “हे राम” कहइछी, कुछ दुर्गन्धो महकईअ त “राम-राम” आ प्रणामो के लेल से हो “राम-राम”। जीवन से तंग त ‘हे राम जी उठा ल’ आ जीवन से अनुराग त ‘राम जी के ईच्छा से’ मतलब कि रामे राम ... राममय.... एई तरह के छेत्र के भाषा “बज्जिका” में रामाएन एहन सुन्दर से लिखल गेल हए, ई बात भारतीय वाङ्मय के जनाबेला आ बज्जिका के साहित्य के राष्ट्रीय स्तर पर ले जाएला ई सद्प्रयास हए। आशा हए सुधीजन एकरा सराहतन।

ईश्वर करुण

उमेश नारायण सिंह

रामनिवास शर्मा

संयुक्त मंत्री

अध्यक्ष

सचिव

अ.भा. बज्जिका

अ.भा. बज्जिका

अ.भा. बज्जिका

साहित्य सम्मेलन

साहित्य सम्मेलन

साहित्य सम्मेलन

उपाध्यक्ष : चेन्नै शाखा

चेन्नै शाखा

चेन्नै शाखा

वसंत पंचमी विक्रम सम्वत् 2049 : 6 फरवरी 2003

(छौ)

(पहिल संस्करण के भूमिका)

मनिदीप

बज्रिका रामाएन हमरा साहित्यिक जीवन के सबसे उत्तम उपलब्धि हए। एकरा प्रकासन से हमरा संतति-जन्म के समान प्रसन्नता हो रहल हए। हमर कबिता पानी लेखा पारदर्सी आ तृप्तिदाएक हए। ए लेल, एकरा विषय में कुछ कहे के जरूरत न समझइले। बाकी कुछ गुरुजन, मित्र आ सुभचिन्तक, जिनका हमरा ए रचना से बहुत प्यार हए, चाहइत हतन जे रचना के बारे में कवि के कलम से कुछ लिखाए के चाही। बिना संबल के खाली हाथ लोक - जात्रा पर भेजनाई ठीक न हए। ए लेल रामाएन के साथे इ मनिदीप, रामकथाप्रेमी सहिरदय पाठक आ बज्रिका भाषा - साहित्य के समर्थक लोग के सेवा में प्रस्तुत कर रहल हती।

बज्रिका रामाएन आदि सक्ति जगदम्बा महाकालिका के आसीरवाद के फल हए। हुनके प्रेरना से एकर स्वरूप हमारा हिरदय में प्रकासित भेलक। लिखे के क्रम में जहाँ गारी अटकल, उलझन भेल, आगे के भाओ-बिचार न सूझल ऊहाँ संकटमोचन ग्यानिनाम अग्रगन्य हनुमान जी सहायता कएलन। एही दुन्नो आराध्य के किरपा से इ रचना पूरा भेलक। एकरा संजोग कहू चाहे रामकथा के परभाओ कि रामाएन के रचना संबत 2044 के बिजयादसमी के दिन सुरु भेल, पूरनाहुति संबत 2046 के बिआह पंचमी के दिन भेल। छपाई के काम ओही साल सरसती पूजा के दिन आरंभ भेल आ प्रकासन संबत 2047 के बिजयादसमी के दिन हो रहल हए।

बज्रिका रामायन के रचना के पीछे सुनिश्चित परिकल्पना के आधार हए। एकर कथा प्रधानतः वाल्मीकि रामाएन से लेल गेल ह। सबसे पुरान रचना होए के कारन ऊ मूल रामकथा के जादे नजदीक हए, अइसन हमर बिस्वास हए। ए कारन कहँऊ-कहँऊ कथा-रचना लोक संस्कार आ लोक मान्यता के बिपरीत हो गेलक ह। उदाहरन के लेल केकई मझली रानी मानल जाइछन बाकी रहथ छोटकी (देखू वाल्मीकि रामायण, अयोध्या कांड, सर्ग 70, श्लोक 9)। अइसहीं सुसेन के लोग लंका के बैद मानइअ जबकि ऊ रहथ बानर बैद आ सुग्रीब के सेना के बलबान जूथपति (देखू वाल्मीकि रामायण, युद्धकांड, सर्ग 101, श्लोक 41, 42, 44)। एकरा अलावे आज के परिस्थिति आ आवश्यकता के हिसाब से हम स्वाभाविकता आ सुगमता पर ध्यान रखइत बहुत प्रसंग के कटली छँटली ह। कुछ प्रसंग के हम अपना प्रतिभा के अनुसार संजोजित कहली ह। बाकी सबतर इ ध्यान रखली ह कि कथा में संगति, तर्क आ स्वाभाविकता रहे। उदाहरन के लेल अहिल्या प्रसंग में सराप से पत्थर होए के बात हमरा आज के बिचार से बास्तबिक न लागल। ए लेल हम ओकरा मनोबैग्यानिक रूप देली। एही तरह से राम

(सात)

हनुमाने के कहना अऊँठी चिन्हासी देलन दोसर बानर दल के कहना न, एकरा लेल हम सपना में सिब-पारबती द्वारा रामजी के दरसन देवे के कल्पना कइली ह। बाली बध के सम्बन्ध में राम के तर्क, असोक बन में सीता-हनुमान प्रसंग में दुन्नो के बातचीत, दसरथ के पुत्रेष्टि जग्य के आयुर्वेदिक व्याख्या आदि के मूल में काव्यात्मक तर्क आ स्वाभाविकता के प्रति आग्रह स्पष्ट हए। ए से कथा में अति प्राकृतिक तत्त्व कम भेलक ह आ बिस्वसनीयता बढ़ल ह।

हम्मर, राम, लछुमन, सीता, हनुमान सब मनुस्य हतन। मनुस्य के तीन कोटि में बाँटल जा सकइअ — साधारन, बिसिस्ट आ अति बिसिस्ट। महावीर, बुद्ध, ईसा, गांधी जइसे अतिबिसिस्ट मनुस्य रहथ तइसहीं रामो अतिबिसिष्ट मनुस्य रहथ। ऊ अपना ग्यान, चरित्र आ बल से एतना लमहर काम कएलन जे समाज के लेल आदर्श आ पूज्य हो गेलन। बीर्ज, ऐस्वर्ज, सिरी, जस, ग्यान आ बिराग — इ छौ गो भग कहबइअ। जोन बेकती में इ छहो गुन मिले ओकरा भगवान मानेके चाही। राम एही छौ भग से जुक्त भगवान रहथ। हुनका प्रति सरधा होए के कारन आ हुनका चरित्र से प्रेरना पावे के कारन लोग हुनका पूजे लागल। हमरा राम के चरित्र समसीतोत्सन हए। उ न उग्र हतन, न सीतल। अकारन आक्रमन हुनकर सुभाओ न हए बाकी हर जगह ऊ रक्षात्मको न हतन। हुनका चरित्र में सक्रियता, सुख-दुख के भाओ, त्याग, अपनापन, सहनसीलता आ ऊँच बिचार मिलइअ जे हुनका अतिबिसिस्ट आदमी बनबइअ।

इहे हालत सीता के हए। कबि-परम्परा सीता के सक्ति, ग्यान आ रूप के बहुत बखान कएलक ह बाकी हुनका बस्तु से बेकती न बना पएलक। हुनका सुन्दर बस्तु समझ के राम धनुस तोर के प्राप्त कएलन आ राबन बस्तुए समझ के हर के ले गेलक। हम सीता के बस्तु से बेकती आ बेकती से ब्यक्तित्व बनावे के प्रयास कहली ह। स्त्री सुलभ गुन औगुन के साथ-साथ बैदुस्य हमरा सीता के बिसेसता हए। सीता के बिदुसी रूप के दरसन असोक बन में सीता - हनुमान बारतालाप में कएल जा सकइअ।

सुग्रीव, हनुमान आदि के हम मनुष्य मानइले। ऊ लोग कोनो आर्जेतर जाति के मनुस्य रहथ - सभ्य, सुसिधित, उन्नत। जइसे सुरुजबंसी, चन्द्रबंसी लोग अपना के सुरुज आ चान्द के सन्तान माने, ओइसहीं ऊ लोग अपना के बानरबंसी मानथ। साइत जातिगत स्वतंत्र पहचान बतावे ला बानर के मुखौटा आ लंगरी लगाबथ। आजो दुनिया में आदमी के अइसन बहुत समुदाय हए जे अपना जाति - बंस के बिकास ग्रह, निछत्तर, तारा, पसु, पंछी आदि से मानइअ। एही आधार पर हम ओ लोग के बानरबंसी मनुस्य होए के मिथक स्वीकार कइली ह।

बज्जिका रामाएन बज्जिका भासा में लिखल पहिल रामाएन महाकाव्य हए। एकरा रचना के प्रेरना माँ काली देलन बाकी भासा के चुनाओ हम अपने कइली। एकरा रचना से बज्जिका भासा के साहित्य-भंडार भरत, अइसन बिस्वास

(आठ)

हए। बज्रिका के भासिक रूप विधान के साथ-साथ ए में हम बज्रिकांचल के लोक संस्कार, लोक रंग, लोक चेतना आ लोक संस्कृति के पचावे के कोसिस कइली ह। बज्रिका के मुहाबरा आ लोकोक्ति से एकरा समृद्ध करे के प्रति हम थोरका जादे सचेस्ट रहली ह।

बज्रिकांचल में जदपि राम ईस्वर या ईस्वर के औतार मानल जाइछन बाकी बज्रिका के लोक चेतना हुनकरा मनुस्ये मानइअ। लोक-साहित्य लोक-चेतना के दरपन होइअ। बज्रिका लोकगीत में राम के सुखदुख के बरनन साधारन मनुस्य के सुखदुख लेखा भेलक ह। बज्रिकांचल के प्रसिद्ध बारहमासा के पाँती हए —

*“सेही प्रीती कारन सेतु बान्हल
सिआ उदेस सिरी राम हे।”*

अर्थात् ऊ प्रेमे रहे (सीते के प्रति) जेकरा कारन सीता के उदेस (खोज) में राम सेतु बन्हबएलन। संस्कार में रचल-पचल एही लोक चेतना के कारन हमरा रामायण में रामकथा प्रेम-प्रधान कहानी बन गेल ह। प्रेम के प्रेरना से राम सीता के खोज में बन - बन भटकलन, समुन्दर बन्हबएलन आ अन्त में राबन के मार के सीता के प्राप्त कएलन। हुनका सँजसे जीवन में इहे प्रेम फल्लु के धारा लेखा कहँऊ ब्यक्त आ कहँऊ अब्यक्त रूप में बिराजमान हए —

*“राम प्रेम-साधक, सीता सुन्दर सनेह के साध्य।
प्रेम-सक्ति से साधे चललन रघुबर काम असाध्य।।”*

ए प्रेम पर हमरा एतना बिस्वास हए कि हम सँजसे कबि-परम्परा के मान्यता के नकार क लंका में सीता के अग्नि परीच्छा करावे के बदला सीता-राम के हार्दिक मिलन करइली ह। भला जेकरा पावे ला राम भगीरथ प्रयत्न क के समुद्र बन्हबएलन, राबन के मारे जइसन असंभव काम सम्भव कएलन, कए बेर मिरतु के मुँह में जा-जा के दुन्नो भाई बचलन, ओही सीता के मिले पर ऊ कइसे एतना निश्चुर हो गेलन कि सीता के चोटाह बात कह-कह के बिरह-दग्ध हिरदय पर नून लगावे लगलन। वाल्मीकि रामायण के युद्धकांड के 155 बाँ सर्ग में राम के बातचीत हुनका चरित्र के एकदम बिपरीत हए। ऊ एक तरफ सीता के कहइछन कि तोहरा हरन से हमरा जे अपमान भेल रहे ओकर परिमार्जन हम पुरसारथ के बल पर कर लेली। हम सदाचार के रक्षा, सब तरफ फइलल अपबाद के निबारन आ अपना सुबिख्यात बंस पर लागल कलंक के परिमार्जन ला इ सब कइली। अब तोरा चरित्र पर संदेह के औसर उपस्थित हए। जइसे आँख आएल आदमी के दीपक न सोहाइअ तइसहीं तू हमरा न सोहाइत हतऽ। ए लेल तोरा जहाँ इच्छा होअओ चल जा। हम तोहरा ग्रहन न कर सकइले।” दोसर तरफ ऊ कहइछन जे “तू चाहऽ त भरत या लछुमन या सत्रोहन या बानरराज सुग्रीब या राक्षसराज बिभीसन के पास रह सकलऽ ह।” मान लीऊ कि हुनकर बात मान के सीता

(नौ)

कहितन जे हम भरत चाहे लछुमन के साथ रहम। आ भरत चाहे लछुमन हुनका रख लीतन त ओही अजोध्या के राज महल में राम कोन मुँह लेके रहितन आ राज चलइतन? राबन से छुआएल सीता अगर राम के ग्रहन करे जोग्य न रहथ त कि लछुमन आ भरत के ग्रहन करे लाइक रहथ? इ अइसन बिरोधी बात हए जेकरा साधारनो आदमी समझ सकइअ। दोसर बात कि अगर राम करुमानिधान भगवान रहथ त हुनकर इहे करतब रहे जे एगो अबला के बेसहारा छोर दथ? हुनकरा अइसन सज्जन आ अहिल्या के उद्धार करे बला आदमी के कथन अइसन हो सकइअ? आउर त आउर कौंच-बध से द्रबित जे कबि के करुना कबिता बन के फूटल उ अपना सर्वगुन सम्पन्न नायक से अइसन कठोर बात कइसे कहबएलक? आ ऊहो कथी ला? कल्पित लोक अपबाद आ झूठ कुल परतिस्था ला। हमरा दृष्टि में राम के इ आचार हिरदयहीनता के पराकाष्ठा हए, भावना पर पुरुस के अहंकार आ सामाजिक लोकापवाद के अनुचित दबाओ हए, अबला नारी पर पुरुस के अत्याचार हए, जेकरा हमर हिरदय स्वीकार न करइअ। हमर राम अइसन हिरदयहीन आ अहंकारी न हतन। ऊ नारी उद्धारक हतन, न कि नारी नासक।

इतिहास के हिसाब से राम के अधिकतम समय आज से 5500 से 4500 बरिस पहिले मानल गेल ह। ओ समय के सामाजिक आचार-विचार आ रीति-रेबाज के हमरा जे ग्यान हए ओ से इ न प्रमानित होइअ कि ओ जुग में पर पुरुस के स्पर्स मात्र से नारी के चरित्रहीन आ त्याज्य घोसित कर देल जाइत रहे। जदि कोनो बिद्वान प्रमान दे के हमर बात काटिओ देतन त ओ से हमरा आस्था में कोने अन्तर न परतक। बल प्रजोग या धोखा देके जदि कोनो पुरुस नारी के अपहरन कर लेबे, चाहे ओकरा साथ बलात्कार कर बइठे, त ए में नारी के कोन दोस? अगर दोसो मानल जाय त ओकरा परिमार्जन के औसर मिले के चाही। दंड या निस्कासन से ओकर समस्या न सुलझत। जोन देस के धर्मसास्त्र में गाए से लेके बिलाई तक मारे के दोस ला परिमार्जन के बिधान होए ओ देस में नारी के प्रति अइसन हिरदयहीन बेहवार के कभी समरथन न कएल जा सकइअ। जाले पुरुस के स्वेच्छाचार पर अंकुस न लागते, “परदारेसु मातृबत्” के सिद्धान्त पर अमल न होएत, ताले पुरुस के चरित्रहीनता के दंड पुरुस के मिलेके चाही, नारी के न। इ त इहे बात भेल जे खेत खाए गदहा मार खाए जोलहा। सभ्य सिक्षित समाज के बिचारसील समुदाय के लेल बाल्मीकि के राम अइसन रबैया उचित न हो सकइअ।

राम के ईस्वर मान के उपासना करे से स्वर्ग चाहे मुक्ति मिलइअ कि न, इ त साधु महात्मा लोग जानथ; हमरा नजर में त राम के चरित्रे प्रधान हए। हुनका चरन चिन्ह पर चल के एही दुनिया में आदमी स्वर्ग समान सुख पा सकइअ आ तनाओ, चिन्ता, छुद्रता, स्वार्थ आ लोभ के पीरा से मुक्ति पा सकइअ। त्याग के मानसिकता दुख घटबइअ आ पाबे के हाय-हाय दुख बढ़बइअ। कोदारी लेखा अपने तरफ सब माटी (सुख) खींचे बला लोग कथी जानत जे खुरपी लेखा सबतर

(दस)

माटी फेंके के सुख कथी होइअ। जे ग्यान चरित्र में न उतरल ऊ कतनो उत्तम होइला पर बेकार हए। आज दुख के असली कारन इहे हए कि ग्यान उपदेस के बिसए बन गेलक ह, ओकरा चरित्र से कोनो सम्बन्ध न हए। हमरा दृष्टि में राम ग्यान आ चरित्र के एकता के प्रतीक हतन। हुनका कथनी आ करनी में कोनो भेद न हए। जेकरा बेकतीगत जीवन में कथनी करनी में भेद न हए उहे आदमी हुनकर सच्चा भगत हए। आज के, चाहे आगे आबेबला पीढ़ी के, पढल-लिखल प्रगतिसील लोग राम के कहेला पूजत, कहेला आदर देत, कहेला हुनका चरित्र के अनुगमन करत? ए प्रश्न के उत्तर इहे हए कि राम आधुनिक समाज में व्याप्त चरित्र - संकट आ अविश्वास के बाताबरन में अपना चरित्र से बिश्वास पैदा करे में सक्षम हतन। हम एही रूप में सील-सक्ति से प्रतीक रूप में, हुनकर पूजा करइले, हुनका भगवान मानइले।

बज्जिका रामायन के रचनाकाल में एकरा सुन के सराहे आ लिखे ला प्रेरित करे तथा अपना सुझाओ से लाभान्वित करेबला लोग के प्रति अप्पन कृतग्यता निवेदित करइले, बिसेस कके श्रद्धेय पं. महाशंकर मिश्र, गुरुवर आचार्य सुरेन्द्रनाथ दीक्षित, आदरनीय भाई साहब डॉ. सुरेन्द्र मोहन प्रसाद, आदरनीय बन्धु चन्द्रेश्वर प्र. ठाकुर अत्यन्त प्रिय सहजोगी डॉ. रामप्रवेश सिंह, पूज्यवर भाई डॉ. मदन मोहन वर्मा "पूर्णन्दु", मित्रवर गया प्र. मिश्र मयंक आ साथी गणेश राय, अग्रज सिरी चन्द्रकेतु नारायण सिंह, भाई राजकिशोर सिंह आ प्रिय सिस्य डॉ. रवीन्द्र उपाध्याय आ डॉ. शेखर शंकर मिश्र के प्रति।

श्री भगवती प्रेस के मालिक श्यामसुन्दर नाथानी आ हुनकर सुपुत्र मदन मोहन नाथानी तथा उमाशंकर नाथानी के संकल्प आ हुनका प्रेस के कर्मचारी लोग, बिसेसत; कम्पोजीटर शुभनारायण झा जी, के सहजोग से पुस्तक समय पर प्रकासित हो गेलक। ए सब लोग के हिरदय से धन्यवाद देइले।

अन्त में सहृदय पाठक लोग से इहे कहइत बिदा मंगइले के जदि कोनो सुझाओ होए त हमरा लिखू आ निम्नन लागे त घर - घर पहुँचाबे में सहजोग करू।

बिजयादसमी 2047

मुजफ्फरपुर

बज्जिका के सेबक

अवधेश्वर अरुण

(एगारह)

दोसरका संस्करण के भूमिका

बज्जिका रामाएन के दोसरका संस्करण चेन्नई से प्रकाशित हो रहलक ह। एकर सब स्त्रेय प्रिय भाई राम निवास शर्माजी के तथा अखिल भारतीय बज्जिका साहित्य सम्मेलन, चेन्नई के हुनकर मित्रगण के हए। शर्मा जी बज्जिका भासी हतन हुनका मन में राम, हनुमान आ रामकथा के लेल असीम अनुराग हए। एही अनुराग के अभिव्यक्ति दोसरका संस्करण के रूप में अपने सब के सामने हए। हम भाई राम निवास शर्माजी के प्रति हिरदय से कृतग्यता प्रगट करइले।

बज्जिका रामाएन सहिरदय पाठक से बहुत सम्मान पएलक, हमरा उमीद से जादे। ए लेल हम सहिरदय समाज के कृतग्य हती।

बज्जिका रामाएन के ए संस्करण में जहाँ तहाँ कुछ साब्दिक संसोधन के अलाबे न त कोनो परिवर्तन कएल गेल ह आ न कोनो बिस्तार। ई जथावत्, रूप में पाठक समुदाय के सामने उपस्थित हए। आसा हए प्रेमी समाज पहिले लेखा एकरा अपनाएत। जय रामजी के।

बिनीत

फरवरी 2003

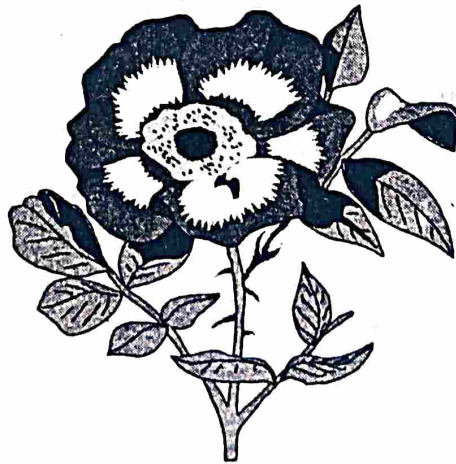
मुजफ्फरपुर

अवधेश्वर अरुण

(बारह)

बिस्मय सूची

१.	भूमिका			१
२.	बाल कांड			७
३.	बिआह कांड			२१
४.	अभिसेक कांड			६२
५.	चित्रकूट कांड			१०३
६.	अपहरण कांड			१२४
७.	मैत्री कांड			१६१
८.	अन्वेषण कांड			१८७
९.	जुद्ध कांड			२३२
१०.	राजतिलक कांड			२७२
११.	उपसंहार			२९०



ॐ सरस्वती नमः



भूमिका

जय जय जय माँ बीनापानी
महासरस्वती जन - कल्याणी ।।
सुकुल बरन तन ससि - मुख सुन्दर ।
सोभा के सुभ सान्त समुन्दर ।।
दिव्य बसन, मुख उज्ज्वल कान्ती ।
दरसन से पावे मन सान्ती ।।
विद्या, कला, ज्ञान के देवी ।
हंसवाहिनी परम विवेकी ।।
अक्षमाल पुस्तक मृदु कर में ।
सकल राग बीना के सुर में ।।
सब्द-दीप के जोत भवानी ।
अर्थ - छन्द - रसमय कल्याणी ।।
जग - जननी जय जय ब्रह्मानी ।
जय जय जय माँ बीनापानी ।।

अन्धकार तोरा बिना, इ सँऊसे संसार ।
द प्रकास जगदम्बिका, होए जगत-उद्धार ।।

मूरख के द ग्यान, ग्यानी के द बिनम्रता ।
निरधन के धन आउर निरबल के बल-छमता ।।
बाधा से रक्षा करऽ सिद्ध करऽ सब काम ।
भगत अकिंचन अरुन के ल माता परनाम ।।
देलऽ प्रतिभा-दीप त भर द अमल प्रकास ।
बज्रिका भासा में करु राम कथा-बिन्यास ।।

निरधन घर में जनम भेल पइली अवधेष्वर नाम ।
 राज बिहार, जिला बैसाली, गेह बिठउली ग्राम ॥
 माता दुरगा देवी पिता हथ जन्त्री सिंह सिरीमान ।
 परम भागवत देलन हमरा रामकथा के ग्यान ॥
 समय रहल बिपरीत, न जीवन में सुख कहिओ पइली ।
 संघर्ष में जीवन बीतल मेहनत से कुछ कइली ॥

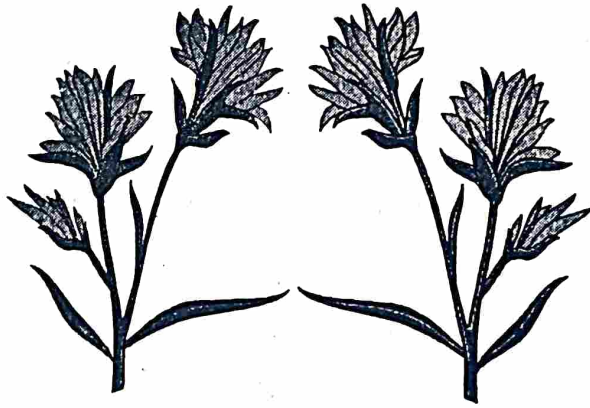
एक बेर ग्रह सनि गरसलक भेली तेज-बिहीन ।
 सुखइत पोखरी के मछरी हो जाइअ जइसे दीन ॥
 जीवन से निरास मन भेलक, दुरबल, संका - ग्रस्त ।
 तरह-तरह के चिन्ता कएलक बहुत-बहुत मन त्रस्त ॥
 घटल आत्मबिस्वास आउर पुरुसारथ भेलक ध्वस्त ।
 दुरदिन में बेरा से पहिले जइसे सुरुज अस्त ॥
 अइसन में भाई ब्रजनन्दन अएलन बन परकास ।
 ले गेलन बरजोरी ऊ बलराम बबा के पास ।
 बाबा दुखिआ के दुखहरता तेजबन्त आ सिद्ध ।
 परदुखकातर परम दयालु साधक परम प्रसिद्ध ॥
 गिरहस्ती के जल में खीलल साधक कमल समान ।
 भूत-प्रेत, ग्रह-दोस, रोग ला पबनपुत्र हनुमान ॥
 हुनके किरपा से हम पइली नूतन जीवन दान ।
 माँ काली के पदतल तक पहुँचा कएलन कल्याण ॥
 महाकालिका के पदतल में बइठ बहुत हम रोइली ।
 अपना आँसू से हम हुनकर कोमल चरन भिंजइली ॥
 माँ किरपा कएलन भर देलन मन में बल-बिस्वास ।
 रोग - सोक से मुक्ति मीलल पइली अमल प्रकास ॥
 संबत दू हजार चौआलीस में दसई के बेला ।
 अरचन बन्दन से गहगह दुरगा पूजा के मेला ॥
 पूजा के उत्कर्ष भरल नउमी के पावन रात ।
 हम्मर जनम - दिबस, ओही दिन भेलक अद्भुत बात ॥
 गनगन रात नीन से मातल सूतल रही अचेत ।
 लागल कोनो देवसक्ति देइअ हमारा संकेत ॥

एगो पाबन हाथ छुअन से हम्मर ताप हरइअ ।
 रामायन के रचना ला हमरा निरदेस करइअ ।।
 तन सिहरल, मन खिललक आउर टूटल हम्मर नीन ।
 लागल बाहर - भीतर केऊ बजा रहल हए बीन ।।
 गेली जाग मगर कुछ मन में समझ न आएल बात ।
 तरह-तरह के चिन्ता में कट गेलक बाकी रात ।।
 बिहने खनी माई के पूजा से उठ के जब अइली ।
 अनायास रामायन रचना ला तत्परता पइली ।।
 निरझर लेखा फूटे लागल पाँती-पाँती कबिता ।
 जइसे मन्त्र जाप से परगट कल्यानी सुभ सबिता ।।
 फूटल रामचरित रसधारा पथ देलन हनुमान ।
 उहे करबएलन इ नूतन रामकथा के ग्यान ।।
 जे लिखबएलन से हम लिखली कोई न हम्मर तंत्र ।
 सब हुनके संकेत, बनल हमरा जीवन के मंत्र ।।
 हुनके इ परसाद जनार्दन जनता ला लइली ह ।।
 मंगलभवन राम रघुवर के सुभ गाथा गइली ह ।।
 लोक चेतना, लोक भाव आ लोके के बेहवार ।
 लोके भासा में कइली ह राम कथा उच्चार ।
 सुभ सक्ति, कल्यान रूप जे पितर भबानी संकर ।
 जिनका किरपा से दुनियां में लगे न कांटा कंकर ।।
 जे जग के रक्षा ला अपने कालकूट पी ले लेइछन ।
 औढ़र दानी भांग धतूरा से तिरपित हो जाइछन ।।
 हुनके किरपा से कबिता के जरलक मंजुल दीप ।
 मोती उपजाबे में सक्षम भेलक सितुहा, सीप ।।
 रामकथा के मरम समझली जे माँ के समझाएल ।
 उहे ए में ब्यंजित कइली पच्चल आउर पचाएल ।।
 जेकरा पढ़के दुनिया समझे, सीखे आउर सराहे ।
 दरपन लेखा जीवन झलके, ऊ कबिता जग चाहे ।।
 सहज भाव, भासा सहज, सहज कहे के ढंग ।
 धरे सत्य सिब रूप जब, तब कबिता के रंग ।।
 हम्मर कबिता हमरा मन के चैन न लेबे देइअ ।
 भादो के बादल लेखा इ रह-रह के उमरइअ ।।

ले लेइअ इ रूप कल्पना के जब पाँख लगइअ ।
 नभ के रूप निहार धरा के निरमल आँख हँसइअ । ।
 जीवन के सुख-दुख, अनुभव, उत्तेजित भाव-बिचार ।
 चुप्पी से होइअ न एक्कर हमरा से प्रतिकार । ।
 मन में बिजली लेखा रह-रह कुछ नूतन कौंधइअ ।
 लिखऽ लिखऽ कहके हमरा हरदम बेचैन करइअ । ।
 तब प्रतिभा के सिल्पी कोनो चमत्कार देखबइअ ।
 सबद-तूलिका अरथ-रंग से काव्य-चित्र रच देइअ । ।
 रचनाधरमी लोग जगत में नब निरमान करइअ ।
 कबिता से कम्प्यूटर तक रच जग में नाम करइअ । ।
 सरजक नर साक्षात देवता ब्रह्मा बिस्नु समान ।
 ओकरा मीले के चाही आदर, पूजा आ मान । ।
 प्रोत्साहन से प्रतिभा के होइअ बेहतर उपजोग ।
 कालजई रचना ला निरमित होइअ उत्तम जोग । ।
 प्रतिभाहीन, निररथक, बुरबक आ विध्वंसक लोग ।
 भू के भार, सृजन के सत्रु, मानबता ला रोग । ।
 अइसन जन के भार बिबस जे प्रतिभासाली ढोइअ ।
 अपना प्रतिभा के सोना के माटी में मिलबइअ । ।
 लंगड़ा के कन्हा पर रख उ दउरे लेल चहइअ ।
 घीउ पाबे के आसा में मट्टा ब्यर्थ मथइअ । ।
 जइसे खर-पतबार-झार से तरु के चाही रक्षा ।
 तइसे जोग्य मनुज के चाही ब्यर्थ बोझ से रक्षा । ।
 घर, परिवार, समाज बनइअ जब सिरजन में बाधा ।
 तब सितजन-छमता अपने आपे हो जाइअ आधा । ।
 ए लेल जे प्रतिभासाली के सिरजन पर बिस्वास ।
 ओकरा रघुबर लेखा चाही लेबे के बनबास । ।
 सुख, सत्ता, परिवार-मोह सिरजन-बल छीन करइअ ।
 कुंठा, घुटन, बिफलता सरजक के मन बिकल करइअ । ।
 ए लेल सरजक के जादे सुख-लोभ न होए के चाही ।
 त्यागी आउर जुझारू बन के कस्ट उठाबे चाही । ।
 जदि बने त प्रातिभ जन के आदर करे समाज ।
 फूल न दे सक्के त रक्खे मत काँटा के ताज । ।

जग में जेतनो बीर, तपस्वी, ग्यानी आ गुनमान ।
सबके जीवन-गाथा में हए एगो बात समान ।।
त्याग, जुझारूपन आउर पीरा झेले के छमता ।
सत्य, न्याय आ मानबता ला उर में अतिसय ममता ।।
एही सबसे ओकरा जस के जग में जोत जरइअ ।
अन्धकार में मानबता के सुन्दर पथ बतबइअ ।।
राम महात्यागी सत्ता ला कभी न कएलन लोभ ।
दुख से लरलन मगर न लएलन मन में तनिको छोभ ।।
धरम, न्याय के पथ पर चल के पएलन उ उत्कर्ष ।
भीतर - बाहर के सत्रु से जीवन - भर संघर्ष ।।
समय कसउटी पर उ साबित भेलन निरमल सोना ।
पुरुसारथ के भब्य भवन के बनलन सिखर सलोना ।।
सील-स्नेह के मुरत मनोहर जीवन - मूल्य महान ।
मानबता ला हुनकर जीवन अमृत - कलस समान ।।
ए लेल रामकथा दुनिया में जीवन मूल्य - प्रतीक ।
समसीतोस्न द्रिस्टि जीवन के सब जुग लाइक ठीक ।।
बिस्वामित्र रहथ ओ जग में उग्र छात्रबल रूप ।
आउर परसुधर ओही भाँति उग्र ब्राम्हंबल रूप ।।
तामस छत्रीबल के जइसन सहसबाहु प्रतिमान
तइसन तामस ब्राम्हन बल के लंकापति निधान ।।
जइसे गुरु बसिष्ठ रहथ सात्विक ब्राम्हन बलधाम ।
तइसे सात्विक छत्रीबल के रूप अबधपति राम ।।
सहसबाहु अभिमानी जइसे परसुराम से हारल ।
तइसे राबन अभिमानी रघुबर से गेलक मारल ।।
जब समाज में उग्र ब्राम्ह या छात्र तेज हो जाइअ ।
अहंकार से पीरा - कातर धरती त्राहि करइअ ।।
भार्गव के हाथे हो जाइअ धरती छत्री बिहीन ।
आउर राबन से पीरित सब साधु-सन्त मलीन ।।
तब कोनो रघुनायक उठके सबके समित करइअ ।
अनाचार, उग्रता, क्रोध से भू के ब्यथा हरइअ ।।
ए लेल राबन, परसुराम के अभ्युदय हए प्रेय ।
आउर रघुबर - उदय जगत ला सुन्दर सत्य सुश्रेय ।।

जहाँ प्रचंड सीत - ताप उहमाँ धरती बंजर हए ।
 समसीतोस्त जहाँ जलबायु उहाँ वृद्धि आ सुख हए ।।
 ए लेल धरती के चाही जदि सान्ती, सुख, बिस्वास ।
 ओकरा के रक्खे के चाही राम - रसायन पास ।।
 दुख-सोधक रघुनाथ तत्त्व सुख, सान्ती, स्नेह बिधायक ।
 समता, ममता भरल सुसासित रामराज के दायक ।।
 धरती पर सुख - समता ला हम रामकथा सुनबइले ।
 त्रासक राबन - राज अन्हरिआ के जग से भगबइले ।।
 कल्यानी बानी से बिनती अच्छर जोत जगा द ।
 रामकथा के भूमि अजोध्या हमरा के पहुँचा द ।।



बाल कांड

दूभी सन साँबर तन कोमल सिरीस सन
 आँख दुन्नो लाल जइसे खीलल पलास बन ।।
 ओठ लाल मात जे से रंग तिलकोर के
 मुँह पर बिराजे कान्ती सरद के भोर के ।।
 लज्जा से जीभ निकलल पदतल सिब-देह देख ।
 समित संहार भाव, उदित सहज करुन रेख ।।
 जग भर के सोभा समाएल सब अंग - अंग ।
 पदतल में परल अरुन मांग रहल भक्ति-रंग ।।

हे जगजननी महाकालिका अनुपम मंगल रूप ।
 सप्तमातृका, नवदुर्गा, दसविद्या सक्ति स्वरूप ।।
 आदिसक्ति माँ स्नेह-सुधामई सोभा के आगार ।
 तोहरे से उत्थित तोहरे में लय सउँसे संसार ।।
 त्रिपुरसुन्दरी, कल्पलता सर्वार्थसाधिका माता ।
 सर्वमई परमेस्वरी अभया ताप - साप-भय - त्राता ।।
 नीलबदन अरुनाभ नयन माँ बरदाई कल्याणी ।
 भव-भयनासिनी असुर बिनासिनी दुर्गा सिबा भवानी ।।
 महिसमर्दिनी मुण्डमालिनी देवी बिकट स्वरूपा ।
 संख-चक्र-धनु-गदा-धारिणी चामुण्डा भवरूपा ।।
 काली दुर्गा छमा सिबा मंगला जयन्ती स्वाहा
 द्रोही दुष्ट सत्रु स्वार्थी के करऽ मार के स्वाहा ।
 राष्ट्र-भाव से सींच सींच द जन-गण के मन-प्रान ।
 भारत भूमि पर बरसा द मंगलमय बरदान ।।

स्वर्ग से सुन्दर प्रभामय देस भारतवर्ष ।
पुन्यभूमि सभ्यता पएलक जहाँ उत्कर्ष ॥
सुरसरी जमुना सरस्वती के सुसंगम धाम ।
सारदा के बीन पर गुञ्जित जहाँ पर साम ॥
बेदभूमी बीरभूमी तपोभूमी प्रबुद्ध ।
सिन्धु जेकर चरन धोए करे निसदिन सुद्ध ॥
संभु के आसीस बन बरसे जहाँ हिमहास ।
ज्योति के जय से भरल जेकर सकल इतिहास ॥

बहुत पहिले इहाँ एगो रहे राजन बंस ।
परम दानी बीर रघु के नाम पर रघुबंस ॥
उहे रघु के बंस में अजपुत्र दसरथ बीर ।
जे चलाबे में निपुन अति सब्दबेधी तीर ॥
रहे राज-समाज में कुछ अधिक हुनकर साख ।
बज्रधारी इन्द्र मानथ बीरता के धाख ॥
तीन रानी रहे हुनका रूप - गुन के धाम ।
कोसिल्या, केकई, सुमित्रा रहे हुनकर नाम ॥
सान्त सुन्दर सहनसीला कौसिल्या मतिमान ।
भगत, भाबुक प्रिय जेकरा सील आ सम्मान ॥
सुमित्रा दृढ़ सरल सुन्दर भरल नेक बिचार ।
कुसल गिरथाइन दयामई कीर्ति से अति प्यार ॥
त्याग ममता के सुमूरत धीर आ गंभीर ।
बिसम संकट में रखे जे मति अप्पन थीर ॥
कैकई चंचल चतुर मृगनैन मोहक रूप ।
रहथ ओकरे साथ जादे रूपलोभी भूप ॥
सारथी उत्तम निपुन उ जुद्धप्रिय मतिमान ।
फूल सन तन, प्राण बज्जर दृढ़ अपर हिमबान ॥

एक बेरी देब - दानव जुद्ध भेलक घोर ।
असुर - दल के सक्ति देलक देबगन के तोर ॥
देब - दानव जुद्ध से होके बहुत हलकान ।
इन्द्र दसरथ के बोलएलन दे बहुत सम्मान ॥

मदत ला सुरलोक जब गेलन अजोध्यानाथ ।
 ले गेलन ऊ केकई के उहाँ अपना साथ ॥
 समरभूमी में पति के साथ केकई गेल ।
 बीर नारी ला समर भेलक मनोरम खेल ॥
 समरभूमी में प्रबल सक्ति देखा अबधेस ।
 काट कएलन असुर दल के तीव्रगति से सेस ॥
 भाग चललक असुर सेना जुद्ध से भयभीत ।
 प्रान मोह बिसार देइअ बीरता के रीत ॥
 देख सेना के पलाएन असुरपति भर रोस ।
 फेंक सक्ति प्रचंड कएलक हरन नृप के होस ॥
 देख मुरछित प्रानप्रिय के बीर केकई क्रुद्ध ।
 उठा पति के धनुस कएलक अति भयानक जुद्ध ॥
 होस में अएलन नृपति देखलन प्रिया तल्लीन ।
 बनल रनचंडी बनएले असुर दल के छीन ॥
 धनुस ओकरा हाथ से ले नृपति कहलन धन्य ।
 चंडिका, दुर्गा भवानी प्रानरक्षक धन्य ॥
 असुर सेनापति कुपित हो फेर ठनलक जुद्ध ।
 तोर रथ के धुरा कएलक गति नृप के रुद्ध ॥
 देख संकट केकई दृढ़ हाथ से रथ थाम ।
 टूट से रथ के बचा कएलक बिकट ऊ काम ॥
 ग्यात न भेलक नृपति के टलल भारी भीर ।
 केकई कएलक प्रान रक्षा उठा अपने पीर ॥
 अन्त भेलक जुद्ध के गेलक असुरपति हार ।
 ग्यात भेलक बात नृप के उमर अएलक प्यार ॥
 देख साहस, सूझ, सक्ति नृपति भाब-अधीर ।
 बिकल कहलन हे प्रिया बर मांग ल मतिधीर ॥

राज पाट धन धाम मांग ल चाहे हम्मर प्रान ।
 तोरा ला सब कुछ कम्मे हए साखी हथ दिनमान ॥
 दू बेर हम्मर प्रान बचएलऽ दूगो बर तू लेलऽ ॥
 दसरथ के जीवन तोहरा ला चाहे जइसे लेलऽ ॥

“नाथ सोहाग बइली अप्पन ए में की एहसान ।
 धरम निभइली अरधांगिनी के, की मांगू बरदान !
 जुद्ध हार के कोना मुँहे जइती हम साकेत ।
 दुनिया भर में लज्जित होइत सुरुज कुल के केत ।।”
 “तू न जाले मंगबऽ ताले हमरा सुख न होएतक ।
 आज प्रेम के अमर घरी मांगऽ हमरा सुख होएतक ।
 ए लेल कुच्छो मांगऽ देबी हम्मर हृदय जुराबऽ ।
 हृदय खोल के आज बिजय के उत्सव प्रिया मनावऽ ।।”
 “अपने के इच्छा, रहलक हम्मर दू बर थाती ।
 उचित समय पर मांग जुराएब हम अपने के छाती ।।”
 जे में तोहरा खुसी, खुसी ओ में हमरा कल्यानी ।
 देबराज से बिदा मांग अब चलऽ प्रिया रजधानी ।।

इन्द्र से सम्मान पाके जीत के डंका बजबइत ।
 नृप अजोध्या लौट अएलन केकई के गीत गबइत ।।
 केकई के बीरता के फइल गेल सबतर कहानी ।
 जे सुने, उहे कहे, हए धन्न हम्मर बीर रानी ।।
 सभा में चरचा सभासद करथ इहे बात ।
 केकई के दिबस भेलक केकई के रात ।।

राजकाज, अहेर, क्रीरा, प्रीति-रीति, अलाप ।
 सामने से निकल गेलक समय - रथ चुपचाप ।।
 हर तरफ सान्ति सुसासन प्रजाजन खुसहाल ।
 अबधपति सन नृपति पाके लोग सब नेहाल ।
 सब तरफ जयकार, सीमा भेल सत्रुहीन ।
 रोग, सोक, अकाल, चिन्ता से न केउ मलीन ।
 राग - रंग - बिलास माहे प्रौढ़बय के काल ।
 आ पहुँचलक मन्द गति से कुटिल लेले चाल ।।
 सुन बुढापा के धमक मन भेल चिन्ताग्रस्त ।
 सान्त छन के डँसे लागल, प्राण भेलक त्रस्त ।।
 तीन गो रानी मगर एक्को न भेलक पुत्र ।
 के बढ़एतक हाय आगे बंस के अब सूत्र ।।

सिसु-किलक से सुन्न जीवन भेल हे भगवान !
 हाय ! हमरा बाद डूबत बंस के दिनमान ।।
 बढ़ल चिन्ता, जगल मन में सन्तति के चाह ।
 सोच के हारलन मगर पएलन न कोनो राह ।।
 एक दिन उद्विग्न मन लेले सचिव के साथ ।
 गुरु आस्रम पर पहुँचलन अवध के नरनाथ ।।

सुन के गुरु अगबानी ला आस्रम से बाहर अएलन ।
 अति आदर से महाराज गुरु-पद पर सीस झुकएलन ।।
 “स्वस्ति” कह गुरु भीतर लएलन, पूछे लगलन हाल ।
 कहेला अपने के मुँह उतरल, कहेला मन बेहाल ।।
 नृप कहलन — “गुरुदेव पहुँचलक तेसरपन के काल ।
 बाकी घर - अंगना न जनलक किलकारी के हाल ।।
 के चउथापन ढोएत हमर के देतक मुख - आग ।
 कइसे बंस चलत, पुरखा पएतन तरपन के भाग ।।
 पुत्र बिना सब राज बिलटतक गुरुवर दुख के बात ।
 इहे चिन्ता खा रहलक ह हमरा के दिन - रात ।।
 गुरु कहलन हए बहुत उचित राजन चिन्ता के बात ।
 कुलदीपक के बिना अन्हरिया सचमुच रघुकुल-रात ।।
 दुख हए, ए पर कभी न सोचली होके बंस - पुरोहित ।
 देख न पइली भाग-छितिज पर उमरल बादल लोहित ।।
 इहो ठीके भेलक राजन जागल अपने ममता ।
 पेंर-पकल फल के न होइअ गोरुआ फल से समता ।।
 अपने के चिन्ता के औसधि रिसि सुंगी के पास ।
 कल्पवृक्ष उ, हुनके से पुरतक अपने के आस ।।
 हए मुहुर्त परसूँए सुन्दर जात्रा तुरत बनाऊ ।
 सुभ कारज में अपने राजन तनिक न देर लगाऊ ।।
 बरस गेल हुनकर किरपा त धन्नधन्न हो जाएम ।
 कुल के नाम बढ़ाबेबाला सन्तति निश्चय पाएम ।।

होके झट तइआर गुरु आ मंत्री के ले साथ ।
 रिसि सुंगी के सेवा में चल देलन कोसलनाथ ।।

रिसि ला भेंट सजएलन, रखलन रसता के सामान ।
 सरधा से पूजन कएलन निज कुल-देओता दिनमान । ।
 तरह-तरह के कस्ट उठा दुरगम पथ करइत पार ।
 आखिर हुनकर रथ आ पहुँचल रिसि आस्रम के द्वार । ।
 परिचय दे तीनो जन रिसि के सादर सीस झुकएलन ।
 हाथ उठा "स्वस्ति" कह रिसिबर सादर स्वागत कएलन । ।
 हाथ जोर नृप कहलन हुनका "हे रिसि दीनदयाल ।
 हम निरबंस हती हमरा पर किरपा करु कृपाल । ।
 भाग्यहीन हम, हमरा पाछे बंस न आगे जाएत ।
 मुनिबर, हमरा साथे हमरा कुल के दीप बुझाएत । ।
 कइसे पाएम पुं नरक से हे रिसिबर हम त्रान ।
 एगो सुत ला तरस रहल हए निसदिन हम्मर प्रान । ।
 अपने सहज दयालु, सक्षम देबे में संतान ।
 एगो सुत के दे दू हमरा हे रिसिबर बरदान । ।"
 राजा के कातर बानी से रिसिबर के मन पघिलल ।
 "नृप तोरा सन्तान देब हम" हुनका मुँह से निकलल । ।
 साधन करम एकट्ठा हम, पुत्रेष्टि जग्य कराएम ।
 ईस कृपा निश्चित तोहरा ला सन्तति के बर पाएम । ।"
 "धन्य भाग हम्मर" कहइत भाबाकुल हो अबधेस ।
 लपटा गेलन रिसि के पग में होके बिकल बिसेस । ।"
 नृप के ठहराबे ला सिस्य के देलन मुनि आदेस ।
 आउर गुरु बसिष्ठ ला कएलन उ परबन्ध बिसेस । ।
 दोसर दिन प्रातः बेला में नृप के मुनि बोलएलन ।
 सहज स्नेह से अपना लगुन हुनका के बइठएलन । ।
 पूछे लगलन राजा से उ रहे - सहे के ढंग ।
 नारी के गति, आउर पसेना के उ देखलन रंग । ।
 समझ-बूझ के रिसिबर कहलन नृपबर हए कुछ दोस ।
 लच्छन बतबइअ अपने के सुक्र न हए निरदोस । ।
 सुक्र -सोध ला उचित औसधि के सेवन करबाएम ।
 अनुष्ठानपूर्वक सेवन से तन निरदोस बनाएम । ।
 संभव हए रानीओ सब के होए कोख असुद्ध ।
 गर्भाधान करे में अक्षम, तन होए अबरुद्ध । ।

हुनको सब ला चरु बनाके अपने के हम देम ।
 संततिदाता प्रबल रसायन से जग में जस लेम ॥
 अपने एतहीं रहू, हम पुत्रेष्टि जग्य करइले ।
 मन्त्रपूत हम दिव्य औसधि अग्नि में पकबइले ॥

एकरा बाद जरी-बूटी ला मुनिबर जंगल गेलन ।
 अग्नि - कुंड बनाबे ला निरदेस सिस्य के देलन ॥
 कहलन जग्य कुंड आ बेदी सुन्दर सुदृढ़ बनइहऽ ।
 पाक - पात्र आ सुबा, मथानी सब के साफ करइहऽ ॥
 हमरा लौटे के पहिले कर रखिहऽ तू सब काम ।
 काम बिना पूरा कएले मत करिहऽ सब बिस्राम ॥
 ओन्ने मुनिबर गेलन एन्ने सिस्य मंडली जुटलन ।
 जइसे गुरु कहलन तइसे सब काम सँबारे लगलन ॥
 देख काम के गति नृप के मन में उपजल बिस्वास ॥
 बनत रसायन संततिदायक भेलक मन उल्लास ।

खोज-खोज के जंगल से सब औसधि रिसिबर लएलन ।
 कूट, पीस आ छान, सुखा के मात्रा जोग लगएलन ॥
 पाक-पात्र में रख ढकना से कएलन ओकरा बन्द ।
 ओकरा बाद पढ़े लगलन रिसि अग्नि-मंत्र के छन्द ॥
 मंत्र-गान के साथ अरनि मथ आग निकालल गेल ।
 अग्नि-कुंड में पाक-पात्र के बिधिवत रक्खल गेल ॥
 निर्धारित पुट तक अग्नि में औसधि गेल पकाएल ।
 ठंढा भेला पर नृपबर के सादर गेल बोलाएल ॥
 आके नृपबर सादर टेकलन मुनिबर पद पर माथ ।
 हाथ जोर हुनका आगे खरा होएलन नरनाथ ॥
 पाक-पात्र से चरु निकालइत राजा से मुनि कहलन ।
 कृपा अग्नि के, औसधि वन के, मरुत सहायक बनलन ॥
 भेलक सिद्ध चरु चारु ले जाउ अब नरनाथ ।
 सेवन करबाउ रानी के अनुष्ठान के साथ ॥
 वैस्वानर के किरपा से होएत निश्चित सन्तान ।
 हमरा हए बिस्वास न डूबत भानुबंस दिनमान ॥

मुनिबर से आग्या ले के, क के सादर परनाम ।
मंत्री आ गुरुबर के साथे अएलन नृपबर धाम ॥

नृप अएलन, परिजन सब उत्सुक, रानी बिकल अधीर ।
सुभ संवाद सुनएलन नृपबर मिललक हमरा खीर ॥
पहिले नेहा - सोना के पूजू कुल देओता दिनमान ।
ओकरा बाद पुत्र - इच्छा से धरू प्रभु के ध्यान ॥
कहइत कएलन राजा चरु के तीन बराबर भाग ।
तीनो रानी के उ देलन भर मन में अनुराग ॥
रहे अमोघ चरु परगट भेलक तुन्ते परिनाम ।
तीनो के रह गेल गर्भ पूरन भेलक मनकाम ॥
राजा सुन आहलादित हो करबएलन स्वस्ति पाठ ।
बेद बिहित सब संस्कार आ बेद - मंत्र के पाठ ॥
कुसल कुसल दिन बीते लागल बिकसित भेलक आस ।
रितु बसन्त आ पहुँचल लेले सुन्दर सरस सुबास ॥
फूल - फूल पर तितली, ओकरा साथे भौरा गबइत ।
प्रकृति - पुरुष के प्रेम - कहानी दुनो मिल दोहरबइत ॥
दखिन पवन मदमातल घुमइत लेले रंग अबीर ।
कोइली के पंचम सुर से होए सूतल रात अधीर ॥
चइत मास, सुकुल पख नउमी, पुनरबसु नक्षत्र ।
कर्क लगन के सुभ मुहुर्त में कौसिला जनलन पुत्र ।
राजा मगन, राजकुल हरसित, परजा परम प्रसन्न ।
जाचक जन मनवांछित पएलन सोना, चानी, अन्न ॥
आबे लगलक परजा जन ले ले के प्रिय उपहार ।
चारन, भाट, बन्दीजन हरसित जय जय राजकुमार ॥
कुछ अन्तर से केकई जनलन सुत साँबर सुकुमार ।
भाग सुमित्रा के उ जनलन जऊँआ राजकुमार ॥
चार-चार सुत एक्के बेरी ! ठीके लोक कहइअ ।
ईश्वर के किरपा जेकरा उ छप्पर फार पबइअ ।
हरस बिकल अबधेस खुसी से फूलल उ न समाथ ।
जग भर के सुख मानो प्रभुबर देलन हुनका हाथ ॥

नामकरण के संस्कार, गुरुवर धएलन सुभ नाम ।
 राम, भरत, लछुमन, सत्रोहन चार चाँद अभिराम ॥
 तीनों माता सुख से बिहबल पाके लाल अमोल ।
 राजा के मन पत्ता अइसन उरिआए बन लोल ॥
 रह-रह रूप निहारथ सुत के तृप्त न होए आँख ।
 मन के खग मरराए हर छन खोल कल्पना-पाँख ॥
 राम भरत साँवर जइसन दूभी के सुन्दर रंग ।
 रबि समान मुख कांति कमल सन कोमल मोहक अंग ॥
 गोर लखन सत्रोहन सुन्दर सोना अइसन रंग ।
 एक्के सूरत के दू मूरत अइसन ढालल अंग ॥
 देख पुत्र-मुख मन में जागे जनम - जनम के नेह ।
 कभी-कभी सुख से हो जाए तन-मन मगन विदेह ॥
 रिसि किरपा चउथापन में नृप पएलन अइसन मोती ।
 हुनका घर में परगट भेलक चान्द - सुरज के जोती ॥
 माई सब के सुख के कइसे करथ अरुन अनुमान ।
 बत्सलता जब तनले होए जग में नेह बितान ॥
 रुनझुन-रुनझुन गीत नेह के हरदम मन में बाजे ।
 मन में नित नूतन अभिलासा साज मनोहर साजे ॥
 चारो भाई किलकथ त माई के किलके प्रान ।
 तनिको रोअथ त आ जाए हुनकर नख में प्रान ॥
 नेह-लीन राजा - रानी अग - जग के ग्यान भुलएलन ।
 दूज जाँद सन चारो भाई के बढ़इत जब पएलन ॥
 अइसहीं हँसइत आ खेलइत मृग सन समय पलाएल ।
 एक दिन सुभ समय देख अन्नप्रासन गेल कराएल ॥
 धीरे-धीरे चारो भाई घुटुरन चले लगलन ।
 तुतली बानी से मइआ के हृदय जुराबे लगलन ॥
 जब से ठुमुक ठुमक के चले लगलन चारो भाई ।
 तब से आँखे तर रक्खथ हुनका के तीनो माई ॥
 ठुमुक ठुमुक के चलथ त ठुमके माई के प्रान ।
 अटपट सुर में गाबथ त गाबे बाबा के प्रान ॥
 चारो सुत के बाल - खेल देखथ जब - जब नरनाथ ।
 हुनका से बढ़ के दुनिया में लगे न केउ सनाथ ॥

गोदी में जब लथ त हुनकर मोछ उखारे लागे ।
 कहाँ रखथ, कइसे भोगथ सुख, हुनका समझ न आवे । ।
 तीनो मइआ नेहा - सोना के झारथ हुनकर केस ।
 काजर लगा डिठौना देके साजथ सुन्दर भेस ।
 कहिओ पहिराबथ हुनका के रंग - बिरंग झंगोला ।
 कहिओ लगा त्रिपुंड बनाबथ हुनका के बमभोला । ।
 कहिओ चारो रेन करथ कि चन्दा मामा चाही ।
 कहिओ ठुमुक - ठुमुक अंगना में उ पकरथ परछाहीं । ।
 कहिओ दासी - दास खेलाबे हाथी - घोरा खेल ।
 कहिओ छन भर ला झगरा आ दोसर छन में मेल । ।
 कहिओ आँखमिचौनी चन्दा - बादल के देखलाबथ ।
 कहिओ घुघुआ - मन्ना से हुनकर मन के बहलाबथ । ।
 साँझ खनी क सूते ला चारो भाई संझिआथ ।
 आँख-कान मइजथ आ रोअथ रह-रह के जम्हुआथ । ।
 तब माई स गोदी लेके मीठ-मीठ सुर गाबथ ।
 थपकी देके, लोरी गाके हुनका रोज सुताबथ । ।
 साँझ खनी जब दीप जरे आबथ पहलाद गोसाई ।
 तब चारो के निहुछ - निहुछ गाबथ कोसिल्या माई । ।
 आखो माई, चाखो माई, सोना दीआ, रूपा बाती ।
 बउआ हम्मर सुख से सोए, हे दीआ जरिहऽ भर राती । ।
 हँसनी खेलनी आगे अइहऽ, नजर गुजर तू पाछे जइहऽ ।
 हे पहलाद गोसाई हमरा बउआ सबके रच्छा करिहऽ । ।
 लोरी आउर पराती के संग होए साँझ - बिहान ।
 सुख से सूतथ, हँसइत ऊठथ जइसे पूरब में दिनमान । ।
 क्रीरा - सुख में परम मगन हरसित दसरथ - परिवार ।
 समय निकल गेल चुप्पे - चुप्पे अप्पन पंख पसार । ।
 पाँच बरस के हो गेलन जब चारो भाई राम ।
 भेल जनेऊ, पढ़े ला गेलन गुरु कन बिद्याधाम । ।
 जात्रा के बेरी हो गेलन कातर अबध नरेस ।
 माई सब के आँख भरल, हो गेलक लोर सनेस । ।
 आँख पोंछ माई - बाबा के चललन चारो भाई ।
 पाछे-पाछे बहुत दूर तक गेलन तीनो माई । ।

राजा दसरथ बहुत बिकल हुनकरा के समझावे !
प्रौढ़ बयस के पुत्र - नेह न समझे न समझावे ।।

गुरु आस्रम में पावे लगलन चारो भाई शिक्षा ।
तइआरी करे सब लगलन कठिन भबिस्य - परीक्षा ।।
गुरु सिखावे लगलन हुनका ओनामासी धंग ।
अग्नि - होम, यजन आ बन्दन, गायत्री के संग ।।
ओम भूः भुवः स्व तत् सबितुः भर्गो वरेण्य हे देव ।
हमरा बुद्धि के सतपथ पर प्रेरित करऽ देव ।।
स्वराघात के ग्यान, बेद - मंतर के मोहक गान ।
सुद्ध - सुद्ध उच्चारन आउर पाठ - बिधि के ग्यान ।।
गदा, सूल आ खड्ग - परिध संग धनुर्बेद के ग्यान ।
मल्ल युद्ध माया से मुक्ति, सब्दबेध के ग्यान ।।
प्रानायाम, ध्यान, धारना, स्वस्थ रहे के मूल ।
सत्रु के कल, बल, छल कइसे कएल जाए निरमूल ।।
रथ - संचालन, सैन्य - नियंत्रन, व्यूह - रचना के भेद ।
बिना सैन्य के सत्रु - बिजय के गूढ़ मन्त्रमय बेद ।।
अर्थनीति, सासन - प्रबन्ध, आ राजनीति के ग्यान ।
सन्धि - बिग्रह, छमा-दंड आ हित - अनहित-पहिचान ।।
नृत्य, गीत, संगीत, काव्य के कोमल मधुर बिधान ।
प्रिय भासा में सच बोले के मरम भरल बिग्यान ।।

शिक्षा से छुट्टी पएला पर खेलथ चारो भाई ।
गुल्ली - डंटा, चुरिआ - नुकिआ, मूसा आउर बिलाई ।।
कबहीं सरपट दउरथ, कबहीं पानी में सब तैरथ ।
कभी-कभी अपने में चारो भाई कुस्ती लरथ ।।
हँसी - खुसी बन में जाके उ गुरु के गाय चराबथ ।
रोज साँझ के अग्निहोत्र ला बन से लकरी लाबथ ।।
कबहुँ न थकथ चारो भाई जदपि करथ परिस्रम ।
हुनका कलरब से मुखरित हरदम गुरुबर के आस्रम ।।
जदपि चारो भाई सीखथ सब कुछ एक समान ।
बाकी हुनका प्रकृति-भेद के होए लगल पहचान ।।

राम धीर, गुनआगर, मोहक, सागर सन गंभीर ।
 हृदय - सीप में ग्यान सजावथ मोती सन मतिधीर ।।
 धनुर्वेद में प्रबल गति, मन में न तनिक अभिमान ।
 छात्र तेज में रवि समान, आ दृढ़ता में हिमवान ।।
 हर्स-सोक से उप्पर, मुँह पर खिलल मधुर मुसकान ।
 सहज नेह सब भाई पर बल - बुद्धि - सील - निधान ।।
 भरत धीर, गंभीर, सरल, चिन्तन में हरदम लीन ।
 अहंकार से दूर, मुक्त मन, जइसे जल में मीन ।।
 सील, विनय, संकोच भरल मन कोमल आउर उदार ।
 प्रेम, दया, ममता, करुणा लेले जइसे अबतार ।।
 लछुमन तेजबन्त अग्नि सन, रवि सन तेज प्रकास ।
 कुछ-कुछ उग्र सुभाव आउर अपना पर अति बिस्वास ।।
 कभी न थकथ, कभी न रोअथ, कभी न मानथ हार ।
 प्रस्तुत करथ हमेसा अप्पन कुछ स्वतंत्र बिचार ।।
 सत्रोहन, बलवान सील से मंडित हृदय उदार ।
 कम बोलथ बाकी सबसे रक्खथ सुन्दर बेहवार ।।
 विन आलस हँस-हँस के करथ सब भाई के काम ।
 कर्मठता से बनल रहथ सबके सनेह के धाम ।।
 साम-दाम आ दंड - भेद में हुनकर रुचि बिसेस ।
 राज-काज आ अर्थनीति में रक्खथ गति बिसेस ।।
 जइसे पेर बढढ़अ पाके पानी, हबा, प्रकास ।
 तइसे चारो भेलन बिकसित पाके सहज बिकास ।।
 छिति, जल, पाबक गगन, पबन के मानव होइअ मेल ।
 बाकी मात्रा के अन्तर से होइअ प्रकृति अमेल ।।
 जल गुन जादे रामचन्द्र में, नभ गुन भरत कुमार ।
 भू गुन जादे सत्रोहन में, पाबक लखन कुमार ।।
 गुरु आस्रम में रहइत, पढ़इत बीतल बारह बर्स ।
 गुनगर सिस्य देख गुरुबर के मन में अतिसय हर्स ।।

शिक्षा पूरन भेल बिदाई के बेरा लगचाएल ।
 सोच बिदाई के पीरा सबके मन भेलक घाएल ।।

उठे ज्वार सन खुसी मिलन के माता आउर पिता से ।
 भाटा सन उतराय अन्तर आस्रम के पीरा से ।।
 हर्स भरे उत्साह, बिदाई मन के बिकल बनावे ।
 दू ममता के बीच परल मन रह - रह के पछतावे ।।
 आखिर जाए से पहिले गुरु अपना पास बोलएलन ।
 हाथ फेर के सीस, पीठ पर सुन्दर बचन सुनएलन ।।
 बेटा तू सब चारो भाई रघुकुल के अबतंस ।
 तोरा सब से गौरव पाएत धीर बीर रघुवंस ।।
 जे कुछ हमरा पास रहल से ग्यान सिखइली तोहरा ।
 जोग्य सिस्य पाके मन गदगद गौरव अतिसय हमरा ।।
 आज बिदा के पहिले लेलऽ हमर अन्तिम शिक्षा ।
 पढ़े - लिखे के लक्ष्य कथी हए ले ल एकर दीक्षा ।।

पहिला ग्यान सदा तू करिह अप्पन जीवन रक्षा ।
 सतपथ से कबहीं मत हटिहऽ कभी न मंगिहऽ भिक्षा ।।
 आत्मा - तर्क - बिबेक - कसौटी पर जे उत्तम बात ।
 ओकरा माने में मत लइहऽ तू तनिको ब्याघात ।।
 बिना बिचारले कभी न करिहऽ जीवन में कोई काम ।
 पछतावे के कभी न परतओ कभी न घटतओ नाम ।।
 ऊँच बिचार, सरल जीवन के जे रखबऽ आदर्स ।
 न मर्मन्तिक पीरा पाएबऽ न पागल सन हर्स ।।
 सागर सन मरजादा रखिहऽ परबत सन संकल्प ।
 सोच-समझ के कदम उठएबऽ कहेला होतओ बिकल्प ।।

दोसर शिक्षा, माय - बाप - गुरु के करिहऽ सम्मान ।
 परिजन - पुरजन आ परजा के मत करिहऽ अपमान ।।
 सुखमय गिरहस्थी चाही त करिहऽ एक बिआह ।
 घर के कल्लह कभी न करतओ तोहर कठिन निबाह ।।
 बिस्वासी के दुखी न करिहऽ छल से रहिहऽ दूर ।
 बिना प्रमान दास - दासी पर कभी न बनिहऽ क्रूर ।।
 कनफुसकी से अल्लग रहिहऽ आँख बनइहऽ कान ।
 सावधान जे घर से रन तक उहे नृप बलबान ।।

तेसर शिक्षा तू समाज के हित के रखिहऽ ध्यान ।
 अपना सुख-स्वारथ ला केकरो मत करिहऽ अपमान ।।
 निन्दा आ परसंसा से मत करिहऽ हरस - बिसाद ।
 अहंकार में आके भूलिओ मत करिहऽ परमाद ।।
 बुद्धिमान सुभचिन्तक जन के बात जरूरे मानिहऽ ।
 मूर्ख, दुष्ट, नीच के कहिओ पास न फटके दीहऽ ।।
 जदि - अप्पन बिस्वास सही त मत सुनिहऽ अपबाद ।
 बे पेनी के लोटा सब से मत रखिहऽ सम्बाद ।।

चारिम शिक्षा सत्रु - मित्र के रखिहऽ मेही ग्यान ।
 सन्धि - बिग्रह, हानि - लाभ पर तत्परता से ध्यान ।।
 मित्र धरम के रक्षा करिहऽ सत्रु के मत छोरिहऽ ।
 बिना सील-कुल जनले केकरो कभी न मित्र बनइहऽ ।।
 सत्य-न्याय के पथ पर चलिहऽ सत्य न हए कमजोर ।
 सत्य-न्याय के सक्ति देओ तोहरा सदा ईजोर ।।
 सुख-सान्ति के बेला रखिहऽ बेद-सास्त्र पर ध्यान ।
 बाकी संकट में तू मानिहऽ अप्पन ग्यान प्रमान ।।
 समय गुरु सबसे लमहर उहे सब राह बततओ ।
 अन्धकार में स्वबिबेक साथी बन राह देखतओ ।।
 पुरुसारथ से मुँह न मोरिहऽ धीरज कभी न छोरिहऽ ।
 सुभ परिनाम सदा मिलतओ अपना पर आस्था रखिहऽ ।।

इहे सब सीक्षा - दीक्षा में बीतल सऊँसे रात ।
 पूरब में ऊसा के लाली ले अएलक परभात ।।
 गुरु आग्या से होए लागल जाए के तइआरी ।
 बिछरन के पीरा से गुरु के मन हो अएलक भारी ।।
 बिहबल होके फेरे लगलन रघुबर के सिर हाथ ।
 अनायास गुरुपद पर झुकलक रामचन्द्र के माथ ।।

ले अएलन सुमन्त्र रथ, साज राम के पास ।
 चललन चारो भाई जब, आस्रम भेल उदास ।।
 के समझत संसार में गुरु-आस्रम के पीर ।
 स्वागत के उल्लास में, भरल बिदा के नीर ।।

बिआह कांड

महालक्ष्मी सागरतनया बिस्तुप्रिया माँ कमला ।
 रिद्धि-सिद्धि, सुभ-लाभ प्रदाएक दिव्य रूपमय बिमला ॥
 दुःख-दलिद्वर-तम के सासक मंगल-जोत प्रकासक ।
 बिद्या, बुद्धि, धन के दाता सब दुख-सोक बिनासक ॥
 राजा के घर में धन-लछ्मी, नारी में गिरथाइन ।
 निरधन के घर दीपक-जोती, अनपूरना धनिकाइन ॥
 दुख से हारल दुनिया करे सादर तोहर ध्यान ।
 अन, धन, बिद्या, बल से भरके कर द माँ कल्याण ॥
 गुरु-आत्म से घर जा रहलन चारो भाई राम ।
 तूहँ साथे चलऽ कोसल हे माता सुखधाम ॥

आज अजोध्या के सोभा कुछ
 अलग-अलग निखरल हए ।
 हाट-बाट सब साफ, सजाएल
 बन्दनबार टंगल हए ॥
 सजल-धजल चारो भाई
 होके रथपर असबार ।
 आलोकित करइत आ रहलन
 ले बिद्या - भंडार ॥
 आगे - आगे बरस रहल हए
 खील, फूल के हार ।
 पाछे-पाछे गूँज रहल हए
 जय जय राजकुमार ॥
 आगे-आगे संख बजइअ,
 गुरुबर मंत्र पढ़इछन ।

हाथ जोरलो चारो भाई
 जन- अभिनन्दन लेइछन ।।
 भर उल्लास प्रजा स्वागत में
 हुनकर गीत गबइअ ।
 आउर झरोखा से ललना सब
 देख देख हुलसइअ ।।
 राजभवन में रथ आ पहुँचल
 नृप कएलन अगबानी ।
 आरती के थरिआ ले बढके
 अएलन तीनो रानी ।।
 तीनो माई आरती कएलन
 अच्छत आ चन्नन से ।
 अपना के नृप धन्य बनएलन
 गुरुबर के बन्दन से ।।
 धन्न-धन्न गुरुदेब बनइली
 माटी सब के सोना ।
 प्रग्या दीप जरा के रचली
 सुन्दर रूप सलोना ।।
 चारो भाई आदर से लगलन
 राजा के गोर ।
 छाती से लगबइत नृप के
 भरल आँख में लोर ।
 कहलन हए इ दिवस खुसी के
 उत्सव आज मनाबऽ ।
 सब भाई के स्वागत में
 दीपोत्सव सुखद सजाबऽ ।।

सुभ दिन में राजा दसरथ सजलन अप्पन दरबार ।
 न्योता दे के बोलबएलन सब मित्र, भूप, सरदार ।।
 रिसि, मुनि, तपसी, ग्यानी सबके सादर बोलबएलन ।
 गायक, नर्तक, कलाकार कुछ जादे आदर पएलन ।।

सेठ आउर सामान्त वीर जोन्दा सब बल के खान ।
 जिनका बल बुद्धि पर टिकल कोसल के सम्मान ।।
 सब अएलन हरिसित ले ले के भाँति - भाँति उपहार ।
 सबके स्वागत कएलन नृप परगट करइत आभार ।।
 सान, बान, ऐस्वर्ज तेज से गह-गह नृप दरबार ।
 लज्जित जेकरा आगे भेलक देबराज-दरबार ।।
 जथा समय आ चारो भाई, ले ले अप्पन नाम ।
 सकल सभासद के उ कएलन आदर से परनाम ।।
 मुग्ध सभासद देख सील-सोभा के प्रतिमा चार ।
 सब कोई उपमा ढूँढ़े ला मन में करे बिचार ।।
 पा नृप के संकेत सचिव कहलन सुभ समय बिचार ।
 “सिक्षा पा के गुरु-आस्रम से अएलन राजकुमार ।।
 पढ़लन बेद-सास्त्र आ पएलन धनुरबेद के ग्यान ।
 राजनीति के गूढ़ रहस आ अर्थनीति के ग्यान ।।
 सदाचार आ सील बिनय के पएलन कोमल शिक्षा ।
 सब भाँति परिपूरन बुझलन तब गुरु देलन दीक्षा ।।
 बाकी जीवन के अनुभव से अबहीं हथ अनजान ।
 ए लेल अपने सब दीउ अपना अनुभव के दान ।।
 राजसभा हए राजकाज के बेहवारिक चटसार ।।
 बल-बुद्धि पर सान चढ़इअ इहाँ पात्र अनुसार ।।
 ओकरा बाद कुँअर चारो से कहलन हे सुकुमार ।।
 रतन सभासद से जगमग इ दसरथ के दरबार ।।
 जाँचल परखल लोग इहाँ सब बुद्धिमान आ वीर ।।
 समय परे पर कालो से जूझेबाला रनधीर ।।
 हिनका सब के संगत में मिलतक जीवन के ग्यान ।।
 राज धरोहर परजा के एकर होएतक पहचान ।।
 राजकोस, सेना, सीमा के बारे में अब जानू ।।
 मंत्री आ सामन्त सेठ, जोन्दा सब के पहचानू ।।
 अनुचर, सहचर के पहचानू जन-जीवन में पड़ू ।।
 अपना ढंग से सत्ता के रथ पर आसन ले बइठू ।।
 आँख-कान दुन्नो के जे राजा उपजोग करइअ ।।
 ओकरे राज रहइअ असथिर, जनता सुख पबइअ ।।

परिचय राज - समाज से, रीति - नीति - बेहवार ।
सीखू कोसल के भविष्य ! चारो राजकुमार ।।”

गाधितनय मुनि बिस्वामित्र मनस्वी ।
गायत्री मंत्र के साधक बीर, तपस्वी ।।
दिव्य अस्त्र के ग्याता ब्रह्म - बिद्या के पंडित ।
तरह तरह के मंत्र सिद्ध तप-तेज अखंडित ।।
एक समय उ महाराज दसरथ कन अएलन ।
महाराज उठ सादर हुनकर स्वागत कएलन ।।
अर्घ्य-पादय से पहिले हुनकर पूजा कएलन ।
“कइसे कइली कस्ट? बाद में सादर पुछलन ।।
कहलन मुनिबर “करइत हती एगो जग्य महान ।
ओकरा में बरजित हए राजन लोभ-मोह-मद-मान ।।
हमरा आस्रम से सटले बन में कुछ असुर रहइअ ।
औसर पा उत्पात मचा के तप में बिघ्न करइअ ।।
अनायास हम मार सकइले ओकरा अपना तप से ।
बाकी क्रोध करम त सिद्धि मिलत न हमरा जग से ।।
ए लेल हम अइली ह राजन मांगे एगो दान ।
जग रक्षा ला राम-लखन सुत हमरा करू प्रदान ।।
राम-लखन सुत परम तेजस्वी महाबली अबधेस ।
ऊहे हरे में सक्षम हतन जग से असुर - कलेस ।।
रिसि बसिष्ठ के सिस्य, न हिनका केऊ हरा सकइअ ।
आर्ज सभ्यता के रक्षा ला हिनकर जनम लगइअ ।।
हमरा साथ लगा दू हिनका करू न चिन्ता व्यर्थ ।।
मानबता के रक्षा राजन राम-लखन के अर्थ ।”
सुनके राजा के मुख छन में हो गेलक सिरीहीन ।
चिन्ता से कातर हो अएलन कान्ती भेल मलीन ।।
सुखल मुँह से कहलन “मुनिबर दान कठिन इ भेल ।
असुर महाबली कइसे मारतन लछुमन-राम गदेल ।।
सजल सजाएल सेना लेके हमही साथ चलइले ।
भेली बूढ़ मगर बाहू में सक्ति बहुत रखइले ।।

अपने के जग के रक्षा में देम प्रान के दान ।
 बाकी पुत्र न मांगू बिनती हए हे! दयानिधान ।।
 चउथापन में हरि किरपा से पइली सुत के दान ।
 सुतइत-जगइत चारो सुत में बसल रहइअ प्रान ।।
 अलग करे के बात सोचइते जाए लगइअ प्रान ।
 ब्रह्मर्षि! ए कठिन परीक्षा से दे दीऊ त्रान ।।
 बज्र समान असुर मायाबी, दया - मया से दूर ।।
 मानब जन के कट्टर सत्रु, कपटी आउर क्रूर ।।
 कमल समान राम - लछुमन कइसे ओकरा से लरतन ।
 परबत सन काया देखिए के दुन्नो डर से भगतन ।।”
 सुनके मुनिबर हँसलन, कहलन, “हे रघुवंस प्रदीप ।
 अपने असुर - बिजेता बाकी भेली अब ब्यतीत ।।
 चाहे अपने सेना भेजम, चाहे धनुस उठाएम ।
 बाकी राकस दल से अपने जीत न राजन पाएम ।।
 लछुमन-राम भबिस्य देस के तेजबन्त होनहार ।
 हुनका चाही मंत्र-सक्ति से अभिपूरित हथिआर ।।
 हम थकली हमरे साथे न जाए हम्मर ग्यान ।
 ए ला हम सत्पात्र खोजइले सक्ति-सील-निधान ।।
 जग रक्षा हए महज बहाना हम चुपचाप चाहइले ।
 दे दू ग्यान राम - लछुमन के, हुनका पात्र बुझइले ।।
 ध्यान, धारना आ समाधि के लाइक लछुमन-राम ।
 बिमल - बुद्धि आ सील - सक्ति से भरल तेज के धाम ।।
 जीवन भर जे अरजित कइली जंत्र - मंत्र - बिग्यान ।
 दुन्नो भाई के अरपित कर पा जाएम हम त्रान ।।
 ए लेल अपने मन में राजन दुबिधा तनिक न लाऊ ।
 हमरा पर बिस्वास करू दुन्नो सुत साथ लगाऊ ।।
 हमरा अछइत कालो हिनकर बाल न बाँका करतक ।
 बायु के आगे बादल के दल कहमाँ तक टिकतक ।।
 कथनी के की बात, आँख से देख लेम परिनाम ।
 भानु किरन सन फइलत जग में राम-लखन के नाम ।।”
 मुनि के आग्या, मोह पुत्र के, चिन्ता पीरा देलक ।
 दुबिधा में हुनका मन के गति साँप-छुछुन्दर भेलक ।।

तब बसिष्ठ हुनका समझबड़त कहलन "हे नरनाथ ।
 राम - लखन के जाए दीऊ अपने रिसि के साथ ॥
 इ हतन सब लाइक हिनका पर रक्खू बिस्वास ।
 राम - लखन के जीवन के इहे रचतन इतिहास ॥"
 बहुत तरह से समझएला पर आखिर अबध नरेस ।
 जाए के आग्या देलन बाकी मन रहल कलेस ॥
 माता-पिता, गुरु, परिजन के सादर कर परनाम ।
 कौसिक के संग जग रक्षा ला चललन लछुमन-राम ॥
 तोरे ला संकोच रिसि कुछ - कुछ बतिआए लगलन ।
 कथा-कहानी, बात ग्यान के सहज सुनाबे लगलन ॥
 बाग - बगइचा, माल-मबेसी, नदी-खेत देखलबड़त ।
 पौधा-पेंर, चिरई चुरमुन्नी के परिचय करबबड़त ॥
 धीरे-धीरे छोर अबध के कौसिक बढ़इत गेलन ।
 तोर अपरिचय सहज नेह से दुन्नो के भर देलन ॥
 रस्ता चलइत मुनिबर से सादर कहलन सिरी राम ।
 "कुछ पूछे के आग्या चाही हे मुनि बिद्याधाम ॥"
 "पूछऽ पूछऽ बत्स ! तनिक संकोच न मन में लाबऽ ।
 "सील-सक्ति के धाम ! पूछ के हम्मर हृदय जुराबऽ ॥"
 "हे रिसिबर हए अस्त्र - सस्त्र के कमी न अपने संग ।
 अपने के तप दीप तुल्य आ राक्षस कीट - पतंग ॥
 तइओ एकरा छोर महामुनि कहेना हमरा लइली ।
 बीर एक से एक धरा पर हमरा में की पइली ?"
 कहलन कौसिक "सुनऽ राम, हए इ रहस्य के बात ।
 जोग्य पात्र के दरसन तोहरा में कइली हम तात !
 अग्नि धारन के छमता होइअ सागर में बीर ।
 आउर सीप पोसइअ मोती खारा सागर - नीर ॥
 घास - पात आ पेंर - पताई से न आग सम्हरइअ ।
 घोंघा - सितुहा में न मोती कहिओ बत्स फरइअ !
 हर रिसि आस्रम में हम्मर चर बन के सिस्य रहइअ !
 हर छत्रिय कुमार के प्रतिभा के सन्देश भेजइअ ॥
 तोरा ग्यान - सील - प्रतिभा के सुन भेलक बिस्वास ।
 तूही ग्यान सम्हारबऽ हम्मर पूरा करबऽ आस ॥

हम्मर ग्यान बिचित्र राम, ए में हए दिव्य प्रकास ।
 एकरा ग्रहन करे ला चाही परबत सन बिस्वास ॥
 सागर सन गहराई चाही, नभ सन हृदय विसाल ।
 अहंकार से मुक्त सहज मन जइसन गुनी मराल ॥
 हम अपना तपबल से कइली दोसर जग के सृस्टि ।
 स्वेच्छाचारी देबराज से करबइली जल - वृष्टि ॥
 छत्री हो के चुनली हम तप - बल के दुर्गम राह ।
 बाकी मन से दूर न भेलक अहंकार के दाह ॥
 मंत्र सिद्ध कइली माता गायत्री के, सबिता के ।
 नूतन पंथ रचइली हम जनभासा के कबिता के ॥
 अहंकार में सब कुछ कइली तप से ऊँचा उठली ।
 बाकी सब बेकार न मन के सान्ती तनिको पइली ॥
 हम्मर उसन प्रकृति, एकरा में अहंकार के आग ।
 सदा बेबस्था से लर के हम लेली अप्पन भाग ॥
 जइसे उग्र ब्राह्म तेज के भार्गव हथ प्रतिमान ।
 तइसे हमरा छात्र तेज के समझऽ तू प्रतिमान ॥
 तोरा चारो भाई में हए भरत सान्त, हिमवान ।
 त्याग, तपस्या, करुना, ममता के उज्ज्वल प्रतिमान ॥
 हम्मर ग्यान हृदय में ओकरा सो जाएत चुप सान्त ।
 जइसे थोरको पानी से बुझ जाइअ आग असान्त ॥
 सत्रोहन धरती सन सुन्दर बिसम आउर असथूल ।
 ओकरा से इ ग्यान न सम्हरत हो जाएत प्रतिकूल ॥
 लछुमन में रबि - अंस, आग से ओकर सीधा नाता ।
 रबि - पाबक दुनिया में रघुबर ! तेज-प्रकास बिधाता ॥
 समसीतोस्न प्रकृति तोहर मरजादित सिन्धु समान ।
 तोहरा में रहतक बरबानल सन हम्मर बिग्यान ॥
 तोरा दुन्नो में पइली सागर - पाबक के जोरा ।
 तोरा दुन्नो के चूने में मति न हम्मर कोरा ॥
 तोहर बंस प्रजापालक धरमात्मा आ गुनवान ।
 त्याग, तपस्या, परोपकार में हए अप्पन प्रतिमान ॥
 तोरा कुल के गुरु, पुरोहित रिसि बसिष्ठ मतिमान ।
 हुनका ब्राह्म तेज के आगे सब बल धूल समान ॥

तोरा कुल के पोस बनएलन सब पुरोहित साँच ।
 हुनका रहइत आ न सकइअ तोहरा सब पर आँच ॥
 जदपि हम लरली हुनका से कइली सदा विरोध ।
 मगर न हमरा से लेलन रिसिबर कहिओ प्रतिसोध ॥
 हुनका संरक्षण में बिकसित तू सुपात्र रघुनाथ ।
 तोरा से ऊँचा होएतक हम्मर दुन्नो के माथ ॥
 हमरा रहे लालसा जीवन में ब्रम्हर्सि कहाऊ ।
 छत्री बल से सेष्ठ ब्राह्म बल ओकरा के अपनाऊ ॥
 लेकिन अब अनुभव भेलक सब बल हए एक समान ।
 जाति - बरन से बल मापे के बुद्धि हए नादान ॥
 सुनऽ राम, जगत में जाति कहँउ न द्विज आ सूद्र ।
 एक्के मानब कहँउ बिप्र हए आउर कहँउ हए सूद्र ॥
 जब मानब सुभ ग्यान साधना में तल्लीन रहइअ ।
 प्रग्या दीप जराबे बाला ऊहे द्विज कहबइअ ॥
 उहे मानब जब रक्षा ला धारन सस्त्र करइअ ।
 छत से त्रान करइअ असली छत्री उ कहबइअ ॥
 जन - जन के पोसन ला उ जब कृसि-जग्य करइअ ।
 बिस्नु रूप मनुज उ जग में सच्चा बैस्य बनइअ ॥
 अहंकार से मुक्त उहे जब होइअ सेवा - लीन ।
 सेवाधरमी सूद्र बनइअ मन से मगर न हीन ॥
 ए लेल केकरो सूद्र आउर केकरो के बिप्र बताके ।
 नीच-ऊँच के भेद करइअ जे समता झुठलाके ॥
 जाति, धरम, आ धन के बल पर फइला देइअ भेद ।
 उ मानबता के हए सत्रु लोक मानइअ बेद ॥
 ए से खंडित होइअ नरता बैर - बिरोध फरइअ ।
 क्रान्ति, जुद्ध, बिरोध, असंगति के उन्माद बढ़इअ ॥
 ए लेल जाति - बरन - भेद तू मन में कभी न लइइऽ ।
 बिप्र, सूद्र सबके समान मन से तू हृदय लगइहऽ ॥”
 इहे सब बतिआइत तीनो अएलन सरजू तीर ।
 मज्जन क के थकन मेटएलन, निरमल भेल सरीर ॥
 तब कौसिक कहलन “हे रघुबर सुनऽ दुन्नो भाई ।
 तइआरी के बिना न जितबऽ राक्षस साथ लराई ॥

ए लेल सरजू के जल में चल, करऽ गुरुज के ध्यान ।
 तोहरा दुन्नो के हम देइले अस्त्र-सस्त्र के ग्यान ॥
 बला, अतिबला बिद्या से लगतओ न भूख - पिआस ।
 केतनो देर जुद्ध करबऽ पर बल के होतओ न हास ॥
 कभी न थकबऽ, कभी न हारबऽ, मलिन न होतओ कांती ।
 असुरी माया कभी न ब्यापओ कभी न होतओ भ्रान्ती ॥
 गुरु बसिष्ठ से पएलऽ रघुबर ब्राम्ह तेज के ग्यान ।
 हम देइलओ तपबल से अरजित अप्पन सब बिग्यान ॥
 ब्रह्मा के ब्रह्मास्त्र, इन्द्र के बज्र, संभु के सूल ।
 अग्नि के आग्नेय अस्त्र जे भसम करे सब तूल ॥
 सत्रु के नासेबाला ल रवि के तेज प्रभास्त्र ।
 ओकरा साथ मनु के भीसन ल सीतेसु अस्त्र ॥
 सम्मोहन, प्रस्वापन आउर मानबास्त्र ल मादन ।
 मोदकी खिरकी गदा साथ ल खंग स्नेष्ठ तू नन्दन ॥
 कालपास आ बरुनापास ल बन्दिहऽ तू अरिदल के ।
 आउर अनगिन दिव्य अस्त्र ल जे पइली तप बल से ॥
 ब्रह्म - दंड के छोर न कोनो अस्त्र सेस अब पास ।
 उ पएबऽ सरधा भक्ति से गुरु बसिष्ठ के पास ॥”
 एतना कह मुनि अस्त्र-सस्त्र सब राम-लखन के देलन ।
 परिचालन परिसोधन के सब बिधि हुनका बतलएलन ॥
 भक्ति भाव से राम-लखन गुरु पद पर रखलन सीस ।
 गदगद स्वर में गुरु देलन हुनका के सुभ आसीस ॥
 जीअ बत्स, बनऽ तू बिजई उत्तम बिस्व बिजेता ।
 तोहरा में देखे दुनिया सुभ सील सक्ति के नेता ।

रात बितएलन सरजू तट पर राम-लखन के साथ ।
 उहमाँ से चलके अएलन गंगा तट पर मुनिनाथ ॥
 सरधा से कएलन गंगा के हाथ जोर परनाम ।
 लगलन बहुत सराहे गंगा के सोभा अभिराम ॥
 राम - लखन के मुनि बतलएलन गंगा - गाथा सार ।
 आउर नाओ मंगा नाबिक से कएलन गंगा पार ॥
 गंगा तट से चलके तीनो ताटक बन लग अएलन ।
 जंगल के खिस्सा बतलबइत मुनिबर हुनका कहलन ॥

“राम तारका के बन इहे भीतर ओकर बास ।
 ओकरा डर से पसु-पक्षी तक जाए न बन के पास ।।
 सौ जोजन के जंगल में उ निरभय बास करइअ ।।
 जे एन्ने आ जाइअ ओकरा मार-मार के खाइअ ।।
 बरा दुष्ट ओकर सुत - साथी मारीच आउर सुबाहु ।
 हए आतंक मचएले दुन्नो जइसे केतू, राहु ।।”
 बात करइते रहथ कि पाके मानुस तन के गंध ।
 आन्ही-पानी लेखा अएलक उ राक्छसनी अन्ध ।।
 तन बिकराल, रूप भयकारी, आँख आग सन लाल ।
 जइसे नारी रूप बनाके परगट भेलक काल ।।
 बीर धरम-बिपरीत मान नारी-बध के आचार ।
 राम चढ़ा के धनुस तुरत कएलन भीसन टंकार ।।
 बाकी उ भागे के बदला हो गोस्सा से लाल ।
 पत्थर आ हड्डी बरसाबे लागल झट बिकराल ।।
 मुँह फइला के दउरल खाए ला लछुमन के ओरी ।
 लागल निश्चित काट देत रघुकुल के एगो डोरी ।।
 देख बिपत भाई पर झट से चढ़ा बान मतिधीर ।
 बिच्चे में ओकरा के रोकलन चतुर राम रनबीर ।।
 बाकी उ माया रच के पल में अदृश्य हो गेलक ।
 आउर धूरा पत्थर से सबतर अन्हार कर देलक ।।
 तब रघुनाथ सब्द-बेधी सर से ओकरा के घेर ।
 बान - सुंखला से पल में सऊँसे तन देलन मेढ़ ।।
 तइओ न घटलक तनिको ओकर आबेग प्रचंड ।
 बन्हला पर उ आउरो भेलक बहुत-बहुत उद्दंड ।।
 तब कौसिक कहलन “एकरा पर राम न दया देखाबऽ ।
 इ परपीरक बहुत भेआनक एकरा मार गिराबऽ ।।
 नारी मत समझऽ एकरा इ नारी - तन में काल ।
 दोस न एकरा मारे में इ नरभक्षी बिकराल ।।”
 छोर फलाफल गुरु आग्या पर रघुबर बान चलएलन ।
 बज्रवान से ओ सन्तापी के जीवन हर लेलन ।।
 बिस्वामित्र खुसी हो देलन बहुत - बहुत आसीस ।
 मिट गेलक आतंक राम तू जीअऽ लाख बरीस ।।

अति प्रसन्न बतिआइत मुनिबर आस्रम ओरी बढ़लन ।
 आस पास के हाल राम हुनका से पूछे लगलन ।।
 “कोन - कोन राक्षस हए आउरो जे आतंक मचएले ।
 धरम-करम में बाधक बनके जन के पीरित कएले ।।”
 कहलन रिसिबर “तन से राक्षस - मानव एक समान ।
 बाकी प्रकृति-भेद हए ओकर सोझ-मोट पहचान ।।
 एजमन नर-समाज के कुछ जन ताकत से उन्मत्त ।
 रिसि मुनि के सता रहल हए स्वेच्छाचारी मत्त ।।
 सासन-तंत्र, बेबस्था में हए ओकरा न बिस्वास ।
 ओकर एके काम कि सज्जन कइसे पाबे त्रास ।।
 मानवता के सत्रु पापी प्रेम, दया से दूर ।
 मनुज लहू के सदा पिआसल कायर आउर क्रूर ।।
 सभ्यता आ संस्कृति के सत्रु औगुन के औतार ।
 ओकरा मन में कभी न आवे सुन्दर नेक बिचार ।।
 सुख-सान्ती के सत्रु परपीरा में खुसी मानइअ ।
 अपना के राक्षस कहके अपने में फुच्च रहइअ ।।
 अहंकारी, पापी, हत्यारा मानवता के भक्षक ।
 राक्षस, असुर दैत आ दानव हए पसुता के रक्षक ।।
 प्रेम, दया, ममता करुना पर बन आतंक डटल हए ।
 हंस, कबूतर के गरदन पर बाझ बनल बइठल हए ।।
 तू अपना सक्ति से एकर सब आतंक मेटा द ।
 महावीर तू मानवता के पथ पर फूल बिछा द ।।”
 मन्त्र मुग्ध रघुनाथ रिसि के सुन ओजस्वी बानी ।
 हुनका मन में जाग उठल सूतल करुना कल्याणी ।।
 असुर - नास - संकल्प - भावना ले आस्रम में अएलन ।
 भरल-पुरल आस्रम के सोभा देख बहुत सुख पएलन ।।
 रिसि आस्रमबासी जन से हुनकर परिचय करबएलन ।
 कइसे मरल तारका एकर बिस्तृत कथा सुनएलन ।
 राम तारका के बध कएलन सुन उमरल सुख-ज्वार ।
 बार-बार सब कएलन पुलकित रघुबर के जयकार ।।

सुभ तिथि, सुभ नक्षत्र - जोग में

कौसिक जग्य रचएलन ।

रक्षा ला दुन्नो भाई तत्पर हो
 उहमाँ अएलन ।।
 देख जग्य के धुँआ सोन्हाइन
 गन्ध हबन के पाके ।
 मन्त्र - गान के क्रमसः उठइत
 स्वर पर कान लगा के ।।
 चलल सुबाहु दल - बल के संग
 साथ - साथ मारीच ।
 ताटक बध के बदला खातिर भरल
 क्रोध में नीच ।।

लागल फेंके कंकर पत्थर हड्डी लेहू मास ।
 गरजन तरजन से उ देवे लागल सब के त्रास ।।
 मानबास्त्र रघुनाथ चलएलन, मारीच ले के प्रान ।
 भाग चलल, बाकी न पएलक बली सुबाहू त्रान ।।
 अग्निबान से जर के भेलक ओतहीं पापी छार ।
 बाकी बच्चल संगी - साथी लछुमन देलन मार ।।
 भेल बिघ्न के नास मुनि के जग भेलक सम्पन्न ।
 इच्छित सिद्धि पा के कौसिक भेलन परम प्रसन्न ।।
 जगसाला में रात बिता, दोसरा दिन लछुमन-राम ।
 हो तइआर मुनि लग आके पुछलन "हे तपधाम ।।
 हती उपस्थित सेवा में, अब आगे की आग्या हए ?
 अपने के सेवा में मुनिबर जीबव इ अरपित हए ।।"
 कहलन "मुनिबर जनकपुरी से जनक निमन्त्रन भेजलन ।
 धरम जग्य में आबे ला उ बहुत निहोरा कएलन ।।
 हुनका हेतु हमरा मन में हए कुछ जादे नेह ।
 ए लेल सब कोई हमरा साथे चलऽ पुरी बिदेह ।।
 हुनका पास धनुस हए भारी सिब के देल महान ।
 केतना सक्ति हए ओ धनु में केकरो न अनुमान ।।
 कएले हतन बिदेह प्रतिग्या जे नृप धनु के तोरतन ।
 अप्पन बेटी सीता ला उ हुनकरे के बरतन ।।
 चलऽ देखिहऽ जग्य आउर अप्पन बिक्रम अजमइहऽ ।
 हो जएवऽ जति सफल त सोना अइसन सीता पइहऽ ।।

ओतहीं से हम आगे हिम परबत ओरी चल जाएम ।
प्रिय हिमालय के गोदी में बाकी समय बिताएम ॥

दोसर दिन दलबल के साथे होके रिसि तइआर ।
चललन जनकनगर के ओरी मन में सान्ति अपार ॥
रस्ता में सब सोनभद्र के तट पर रात बितएलन ।
दोसरा दिन सँझिआ तकले गंगा के तट पर अएलन ॥
गंगा के दरसन मज्जन से मिललक सान्ति अपार ।
गंगा-गंडक के संगम पर कएलन गंगा पार ॥
कहलन मुनिबर राम स्वर्ग सन इ सुन्दर असथान ।
इहमाँ के माटी में मुखरित हए लछमी के गान ॥
आगे जएला पर हम उतरब गंडक के जे घाट ।
तोहरा स्मृति में कहलाएत उ रमचउरा घाट ॥
ओतहीं कएलन ग्राह-कस्ट से हरि गज के उद्धार ।
कोनहारा के महिमा देखऽ प्रभु भेलन साकार ॥
संगम पर सुन्दर मंदिर ओ में हथ हरिहरनाथ ।
सोनपुरी के महिमा अद्भुत अनुपम हए रघुनाथ ॥”
गंडक पार उतर मुनिबर जब चललन उत्तर ओरी ।
धरती के सुन्दरता खींचे लागल मन के डोरी ॥
पग-पग पर धनखेत सोहाओन हरिअर, पीअर रंग ।
मंद पवन के झोंका पर झुमइत मद मातल अंग ॥
हरिअर कंचन खेत खिलल सनई, पटुआ के फूल ।
छानी पर छाएल कदुआ के चानी अइसन फूल ॥
जहाँ-तहाँ पोखरी, डबरा में करमी, कमल फुलाएल ।
लिच्ची, आम, कदम के गाछी दूर-दूर छितराएल ॥
जेन्ने दृष्टि जाए ओन्ने केरा के केरबानी ।
हरिअर पत्ता हिला - हिला कइतत जइसे अगबानी ॥
घउर बोझ से थम्ह लमल जइसे बिद्वान लमइअ ।
बरसे के बेरी बादल जइसे निच्चा हो जाइअ ॥
हरिअर धरती जइसे सिर पर हरिअर मुकुट लगएले ।
बिजय खुसी में जइसे नभ में हरिअर ध्वज फहरएले ॥
भरल ऊँख से खेत बाग में जहाँ-तहाँ कोल्हुआर ।
धरती के मिठास जेकरा में भेल सुलभ साकार ॥

जहाँ-तहाँ पर गाँव, गाय-भँइसी से भरल बथान।
 पोरा के ढेरी बतलबइत केतना कतिका धान।।
 दीपाबली के स्वागत में रंगल - पोतल घर - बार।
 हाथी घोरा लीखल आउर बनल फूल के झार।।
 चुन्ना, कोइला, गेरू आउर पत्ता के रस हरिअर।
 छोट-मोट रंग के दुनिआ, चित्र रचाएल सुन्दर।।
 हर दूरा पर पसराएल सुक्खे ला धान - पथार।
 ओकरा पर दूटे ला आतुर मैना पाँख पसार।।
 कतहूँ महाकाल के पूजा, कतहूँ छठ के गीत।
 रओना माई पुरइहऽ इच्छा, रखिहऽ सब पर प्रीत।।
 दीनानाथ अरक ला उगिहऽ लइहऽ सुभ परभात।
 धिआ-पुता ला अन-धन-लछमी, हमरा ला अहिबात।।
 कतहूँ चरबाहा सब लेले भँइसी - गाय चरबइत।
 हाथ कान पर देले मीठा सुर में बिरहा गबइत।।
 एन्ने ओन्ने खंजन डोलइत लेले सरद सनेस।
 सुख-सान्ति के मधुर पालना बज्जि देस बिसेस।।
 परम प्रसन्न रसिक मृदुभासी करम-लीन सब लोग।
 तन से स्वस्थ, सुखी मन से, न कतहूँ चिन्ता-रोग।।
 स्वागत के मुद्रा में धरती सबतर पलक बिछएले।
 कमला के पूजा ला जइसे कंचन - थार सजएले।।
 देखइत सोभा राम - लखन संग चललन मुनि अगारी।
 परल राह में पुरी बिसाला सुमति नृपति के प्यारी।।
 मालूम भेलक नृप के, अपने आगे बढ़ के अएलन।
 अप्पन अतिथि बने ला मुनिबर से अति आग्रह कएलन।।
 हुनका स्वागत से प्रसन्न मुनि ओतहीं रात बितएलन।
 राम-लखन के परिचय पा नृप बहुत-बहुत सुख पएलन।।

भेल बिहान बिदा होके मुनि अति प्रसन्न मन चललन।
 बैसाली के कथा पुरातन रघुबर के बतलएतन।।
 जहाँ-तहाँ रुकइत सब आखिर जनकपुरी लग अएलन।
 अति उदास सुनसान आस्रम दूर नगर से पएलन।।
 न गोधन, न सिस्य मंडली, अग्निहोत्र के धूम।
 पत्ता बिखरल, धूरा जम्मल, लगल उदासी घून।।

पुछलन राम “इ केकर आस्रम” कहेना हए सन्नाटा।
 कहँउ झार-झंखार उगल हए, कहँउ उगल हए काँटा।।
 रिसि कहलन- “इ मुनि गौतम के आस्रम हए सुनसान।
 समय-समय के बात, आज एकर डूबल दिनमान।।
 रिसि एकान्तबास में हतन पतनी के कर त्याग।
 एही लेल सून आस्रम हए कहँउ न जग के आग।।”
 “कहेला रिसि एकान्तबास में कहेला पतनी त्यागलन।
 कोन असुर के डर से गुरुवर ग्यान केन्द्र इ मिटलन?”
 “इहाँ असुर-आतंक न मचलक, इहाँ न राकस अएलक।
 ए आस्रम के अइसन दुरगत देबराज करबएलक।।
 रिसि के पतनी अहिल्या सुन्दर जुबती भोली-भाली।
 हरिनी सन चंचल, कोमल जइसन सोहजन के डाली।।
 देख लोभाएल देबराज कपटी निन्दा के जोग।
 रिसि के रूप बना के कएलक रिसि पतनी संग भोग।।
 जान कुकर्म नीच सुरपति के देलन रिसिबर साप।
 “जा सहस्र भग हो जा पापी भोग पाप के ताप।।”
 ओही गोस्सा में पतनीओ के रिसि देलन-दंड।
 “रे कुलटा तू निकल गेह से बन के पथर खंड।।”
 तहिए से उद्विग्न - चित्त मुनिबर लेलन एकान्त।
 ओन्ने आस्रम के कोना में परल अहिल्या सान्त।।
 जइसे घर के एक तरफ कूरा के ढेर रहइअ।
 तइसे एक तरफ बेचारी चुप जीवन बितबइअ।।
 ओकरा मन पर ए सब के हए जेतना अधिक दबाब।
 ओहू से जादे पीरक हए तिरस्कार के भाव।।
 रात-दिन पीरा में घुलइत उ आँसू बहबइअ।
 साँस-साँस पर बोझ लाज के अनुभव सदा करइअ।।
 पति-विजोग, लोकापवाद, न कोनो स्नेह-सहारा।
 बाढ़ - बिकल-जीवन धारा न बच्चल कोई किनारा।।”
 सुन के राम दुखी भेलन, मन में अएलक कुछ बात।
 गुरु से कहलन, “हो सक्के त एतहीं काटू रात।।
 हए इच्छा सत्संग करु ग्यानी गौतम मुनिबर के।
 अबला के उद्धार लेल भिच्छा माँगू रिसिबर से।।”

“जइसन तोहर इच्छा” कहके गुरुवर आग्या देलन।
 ओतहीं डेरा परलक, संध्या - पूजन ला सब गेलन।।
 कौसिक दुन्नो भाई के ले मुनिबर के लग आएलन।
 परिचय करबएलन तब दुन्नो रिसिबर के पग लगलन।।
 अति बिनम्र भासा में कएलन हुनकर राम प्रसंसा।
 न्याय, सांख्य, बेदान्त जोग-सम्बन्धित रखलन संसा।।
 होए लागल चरचा मुनिबर के कुंठित मन खुललक।
 रघुबर उकसा देलन बत्ती, ग्यान जोत कुछ जगलक।।
 मन के बोझ घटल चिन्ता के कुहरा भागे लागल।
 संचित अनुभव - चिन्तन मुनि के भासा पाबे लागल।।
 जिग्यासा में रघुबर - मुँह से झरल फूल सन बात।
 लागल सौरभ घोर रहल हए पुरबइआ में रात।।
 सन्नाटा आउर अन्हार के कन - कन टूटे लागल।
 बेद, सास्त्र, उपनिसद, ग्यान के दीआ बरे लागल।।
 अपना मधुर बानी में हुनका रघुबर घेर भुलएलन।
 ग्यान, तपस्या, तेज, सिद्धि के खूब प्रसंसा कएलन।।
 देख राम के प्रतिभा मुनिबर बहुत प्रभावित भेलन।
 हुनका सील - रूप - प्रग्या के धारा में बह गेलन।।
 खुलल क्रोध के गाँठ, सहजता तनिका - सा अँखुआएल।
 जइसे ऊसा के लाली से नील गगन ललिआएल।।
 निन्दा, हीन - भावना के कल्पित बन्धन सब टूटल।
 सुभ संकल्प-सक्ति के जूटे लागल तन्तु टूटल।।
 चतुर बैद सन दुखइत नस पर रघुबर फाहा रखलन।
 आउर मनोहर बानी में मुनिबर से सादर कहलन।।
 मुनिबर अपने के साथे जो घटलक दुखद प्रसंग।
 ओकर सच्चाई सब मालूम अबिदित कोई न अंग।।
 उ चिन्ता के बिसय न मुनिबर, न लज्जा के बात।
 ग्यानी में साहस चाही जे झोले झंझाबात।।
 अपने ग्यानी बहुत मगर साहस से हीन लगइले।
 ग्यान - दीप लेले कर में बाकी पथभ्रान्त लगइले।।
 मुनिबर! जदि अहिल्या माता के चरित्र में दोस।
 तब अइसन कुलटा नारी पर उचित एकदम रोस।।

लेकिन उ निरदोस अगर भेलन छल - छन्द - सिकार।
 निरपराध अबला पर मुनिबर कइली क्रोध वेकार।।
 देली अपने साप इन्द्र के तनिक न कइली अनुचित।
 बाकी त्यागली पतनी के मुनि बिना बिचारले समुचित।।
 सुबा-कमंडल जुबती नारी कभी न मुनिबर होइअ।
 एक जुबा सत्पात्र पुरुष के ओकरो चाह रहइअ।।
 ओकरा उर में सरिता लेखा काम प्रबाहित होइअ।
 त्याग, तपस्या, पातिव्रत के बाँध न रोक पबइअ।।
 सीधापन के पास कुटिलता के न काट कुछ होइअ।
 भोला - भाला लोग जगत में जल्दी बहुत ठगाइअ।।
 बिस हए बिस के दबा मुनि! हए काट काम के काम।
 नारी कभी न तप के साधन, हँस के कहलन राम।।
 तप के अमृत साधे में न देखली अपने काम।
 विषम पात्र से रस के होइअ रसभास परिनाम।।
 ए लेल क्रोध भेल अनुचित, हए डँसले अब पछताबा।
 जेतना अपने दबबइले छितराइअ ओतने लाबा।।
 अपने व्यर्थ दुखी हे मुनिबर! हीनभावना-ग्रस्त।
 लोकलाज के कल्पित भय अपने के कएले त्रस्त।।
 अपने एतना बिकल, तनिक सोंचू हुनकरो हाल।
 केतना डँसइत होएतक हुनका तिरस्कार के ब्याल।।
 हमर हए अनुरोध कि अपने दीपसिखा सन जागू।
 लोक लाज, उद्वेग, हतासा जीर्न बस्त्र सन त्यागू।।
 जदि अपने के दृष्टि में हथ माता जी निरदोष।
 तब दुनिया के दृष्टि से मत देखू हुनकर दोस।।
 अपनाउ हुनका के अप्पन जीवन सहज बनाऊ।
 वेद-मंत्र आ अग्निहोत्र से आस्रम मरल जिआऊ।।
 बैस्वानर में हे मुनि ग्यानी! कुंठा क्रोध जराऊ।
 बूझल जाइअ आग राख से ओकरा फूँक जगाऊ।।
 नारी अबला निरभर नर पर छमा जोग उ होइअ।
 धोए ला अपराध छमा से बढ़ के नीर न होइअ।।
 टूटल मनके रेसा - रेसा देइअ जोर सनेह।
 प्रेम, दया, ममता बसबइअ टूटल, उजरल गेह।।

अइसहूँ नारी के गलती छमा होए के चाही।
 उ घर के लछमी ओकर अपमान न होए के चाही।।
 अपने रूठम लेम कमंडल आ चल देम हिमालय।
 बाकी अपने रहब न त हुनकर कहमाँ हए आलय?
 दर-दर ठोकर खएतन बन में आस्रयहीन भटकतन।
 भुक्खल आउर पिआसल कहिओ कहँउ जा के मरतन।।
 बिना दोस उ सहतन दुनिया में पीरा, सन्ताप।
 हुनका कलपाबे, मारे के लगतक रिसिबर पाप।।
 बचन राम के मन्तर लेखा डाललक तुरत प्रभाव।
 बदल गेल मुनिबर के मन के अस्त ब्यस्त सब भाव।।
 मन के दाबानल पर बरसे लागल जल के धार।
 पनपे लागल हुनका उर के सुक्खल-झुलसल प्यार।।
 अन्धकार सब सिमट सिमट के भागे लागल दूर।
 छिटके लागल नेह चान्दनी कटुता भेलक दूर।।
 बोला अहिल्या के कहलन, “देवी हम भेली क्रूर।
 दरसन, ग्यान, तपस्या कएकल मानबता से दूर।।
 अपना ला सब ग्यान बटोरली दोसरा ला न सोचली।
 उर से उर सम्बाद न कएलक तोहरा बरा सतइली।।
 छमा करऽ सब दोस भुला द बीत गेल जे बात।
 हे कल्यानी! दामपत्य के अएलक नूतन प्रात।।
 ग्यानी के साहस चाही आ अपना पर बिस्बास।
 छमा दया से बढ़ के अमृत कोई न नर के पास।।
 उहे अमृत राम कृपा से अब हम कइली पान।
 एही से धुल गेलक पीरा, निन्दा आ अपमान।।
 ग्यान अगर संकुचित त बरको होइअ जग में छोट।
 छोटको मान्य जगत में होए जदि न कोनो खोट।।
 इ रघुनाथ सिद्ध बानी के हथ सुन्दर मनिदीप।
 हिनके किरपा से जरलक आस्रम में कंचन दीप।।
 कएलन राम सिद्ध बानी के परगट अइसन रूप।
 पति-पतनी में मेल करएलन, फइलल कथा अनूप।।
 बिहने खनी बिदा ले मुनि से खुसी-खुसी सब चललन।
 आउर दिबस बीते के पहिले जनकपुरी में अएलन।।

बाहर अमराई में देलन पहिले रिसिवर डेरा।
 ओकरा बाद सनेसा नृप कन भेजलन ओही बेरा।।
 सुनके हरसित राजा आएलन मंत्री, अनुचर साथ।
 “धन्न भाग प्रभु अपने अइली!” कहके टेकलन माथ।।
 पुछलन समाचार आस्रम के आउर जग के हाल।
 रिसि हरसित कहलन “अब सुख से बीत रहल हए काल।।”
 “इ दुन्नो नृप बालक के हथ?” उत्सुकता से पुछलन।
 कौसिक राम लखन के परिचय हुनका से करबएलन।।
 सुनके छन भर ला बिदेह के हो गेलक चित चंचल।
 सहज बिरागी मन में कोनो आग राग के लहकल।।
 कहलन “स्वागत जनकपुरी में हे अबधेस कुमार।
 बीर सिरोमनि, मुनि जग रक्षक! स्वीकारू आभार।।”
 मुनि से कहलन “अतिरिक्त किरपा इ अपने कइली।
 जग देखे ला कुँअर जुगल के अपना साथे लइली।।
 सेवा के सब उचित बेबस्था कइली ह सुखधाम।
 अपने सब जात्रा से थकल कर तनिक बिस्राम।।
 सेबक सब तत्पर समुपस्थित सेवा में मुनिनाथ।”
 हम फेनू बिहने आएब अब आग्या दीऊ नाथ।।
 “हँ, अपने जाऊ अब ढलइत जा रहलक ह बेरा।
 तनिके में पूरा हो जाएत दिबसमनि के फेरा।।
 ओन्ने नृप गेलन एन्ने मुनिबर देलन निरदेस।
 संध्या-पूजन के तइआरी करऽ राम बिसैस।।
 “जइसन आग्या” कह पालन में लगलन दुन्नो भाई।
 दूर कहँउ सिब - मंदिर से घंटा - ध्वनि परल सुनाई।।

संध्या-पूजन, भोजन-छाजन से निश्चित जब भेलन।
 लछुमन-राम गुरु कौसिक के गोर दबाबे गेलन।।
 गुरु बतलाबे लगलन हुनका जनक-बंस इतिहास।
 आउर परम बिरागी नृप के पावन चरित बिकास।।
 संभु-धनुस के कथा सुना रघुबर के मुनि बतलएलन।
 इ बिक्रम के बिकट कसउटी हए भारी, समझएलन।।
 चरचे के क्रम में सो गेलन गुरुबर सुख के नीन।
 गेलन सूते राम न आएल बाकी हुनका नीन।।

सोचथ धनु के बारे में आ करथ संभु के ध्यान।
 पता न कखनी निद्रा आएल, रहल न हुनका ग्यान।।
 भेलक भोर चिरई सब जागल आ फरकएलक पाँख।
 ओकरे साथे राम-लखन के खुललक मुद्रित आँख।।
 उठलन नित्य कर्म में लगलन रघुबर दुन्नो भाई।
 नगर तरफ से गीत पराती के कुछ परल सुनाई।।
 गुरुबर जगलन, आउर पाछे सिस्य मंडली जागल।
 दिनकर के धाही से जीवन जागल, आलस भागल।।
 हो तइआर हबन कएलन सब, गायत्री के जाप।
 नेओनगंधी पबन मनोरम सबतर गेलक ब्याप।।
 तिरपित भेलन अग्नि, आउर अरघ दिबाकर पएलन।
 फलाहार ला कन्द-मूल-फल सेबक सादर लएलन।।
 सुख निद्रा से मिट गेलक जात्रा के सब अबसाद।
 जग्य कर्म के बाद पेट भर मिल गेलक परसाद।।
 गुरु कहलन "हे राम-लखन हम करम तनिक बिस्राम।
 ताले नगर घूम तू आबऽ हे सोभा के धाम।।
 बहुत दूर मत जइहऽ आउर व्यर्थ न देर लगइहऽ।
 कलऊ के बेरा ले निश्चित घूम-घाम के अइहऽ।।"
 हरसित दुन्नो भाई चटपट हो गेलन तइआर।
 मन में बाजे लागल कोनो आकरसन के तार।।
 राजस भेस, धनुस-सर सुन्दर, नब बय मोछ-उठान।
 कटि पट पीत, तूनीर पीठ पर, मुद्रा सिंह समान।।
 अद्भुत रूप, अपरिमित सोभा, जइसे मंगल कलसा।
 आँख जुराए, मन में होए अमरित रस के बरसा।।
 चललन घूमे दुन्नो जइसे चान्द-गुरुज के जोरी।
 राग जगावे लागल मन में रूप-सील बरजोरी।।

सीता के स्वयंवर ला सजल रहे जनकपुर अइसन।
 देवलोक में अलका नगरी सजल रहइअ जइसन।।
 घर-घर रहे सफेदी पोतल, सुत्थर साफ बथान रहे।
 टाटियो मरई के घर हरसित, उत्सव के पहचान रहे।।
 घर के दरबाजा पर चित्रित कहँउ कमल आ संख।
 कहँउ रंग-रंग में चित्रित हँस, मोर के पंख।।

कहँउ केरा के थम्ह चित्रित ओ तर कलस बनाएल।
 कलसा पर पल्लो, पल्लो पर नारिअर रहे सजाएल।।
 कहँउ हाथी-घोरा, कहँउ पूरइन पात रचाएल।
 कहँउ-कहँउ सिब-पारबती के चित्रो रहे बनाएल।।
 तरह-तरह के भवन मनोहर सबके निज पहचान।
 सबसे परगट सुरुचि आउर सब सुन्दरता के मान।।
 दुन्नो तरफ़ दोकान भरल जे में सुन्दर समान।
 तरह-तरह के गहना-गुरिया, रंग-रंग परिधान।।
 जहाँ तहाँ नारी सब गबइत कोमल मंगल-गान।
 सरद रितु अपना सोभा के तनले सुखद बितान।।
 एन्नो-ओन्ने देखइत दुन्नो आगे बढ़इत गेलन।
 उत्सुक, आकरसित, मोहित जन हुनका पाछे भेलन।।
 राम लखन के पाछे मोहित चलल नगर जन अइसे।
 कमल कुसुम के पाछे लोभित भौंरा जाइअ जइसे।।
 परिचय आउर बतिआए के जागे मन में इच्छा।
 अँचरा फइला के मांगे मन सहज नेह के भिच्छा।।
 कहँउ लोग रोक के पूछे गोत्र, धाम आ नाम।
 कहँऊ अनायास कर जोरले केउ करे परनाम।।
 बिन पुछले केउ बरने लागे सोभा जनक नगर के।
 केऊ मुसका के बतलाबे रूप, सील सीता के।।
 केऊ आपस में बतिआए राम सिया के जोग।
 केऊ कहे बेकारे राजा ठनलन स्वयंवर रोग।।
 राम-लखन सन सुन्दर बर दुनिया में दुरलभ भाई।
 बाकी जबले धनुस परल हए कइसे बनत सगाई।।
 सुन-सुन राम-लखन एक दोसरा के ताकथ मुसकाथ।
 सिस्ट सभ्य बेहबार देख मने मन रीझल जाथ।।
 जनकपुरी के सोभा में दुन्नो भाई रम गेलन।
 अपना रूप-सील के अंकित छाप अमिट कर देलन।।
 घूम-फीर के जथा समय आ गेलन अपना ठाँओ।
 परम प्रसन्न गुरु के छूलन दुन्नो भाई पाँओ।।
 अंडाकार बिसाल स्वयंवर-भूमि रहे बनाएल।
 ओकरा बीच बिसाल अल्पना सुन्दर रहे रचाएल।।

ओही जगह लमहर गारी पर अजगर सन भारी।
 रक्खल रहे चुनउती अइसन धनुस देल त्रिपुरारी।।
 एक तरफ बइठल बिदेह ले अप्पन राज-समाज।
 दोसर तरफ सामने आसन पर सब भूप-समाज।।
 नृप के दहिना ओरी बइठल साधु-संत-मुनिनाथ।
 बाँया ओरी नृपकुल के बइठल सब तिरिआ साथ।।
 दूर-दूर चारो ओरी बइठल परजा आ परिजन।
 सेवा आउर सुरक्षा में फइलल सेना - सेबक जन।।
 नृप उठलन कर जोर सभा के सम्बोधित कर कहलन।
 “दिबस खुसी के, तप-फल अइसन, आज बिधाता देलन।।
 बीर, भूप, रिसि, साधु, सन्त सब के सम्मान करइले।
 स्वयंबर भूमी में हम स्वागत सादर आज करइले।।
 अपने सब के सम्मुख रक्खल धनुस बिराटाकार।
 भक्ति में संभु से पएलक हम्मर कुल उपहार।।
 महाबिकट इ धनुस सक्ति के हए अद्भुत प्रतिमान।
 रंगभूमि में परल चुनउती लेखा हे सिरीमान।।
 जाति, बंस के भेद न, तोरतन धनुष आज जे बीर।
 रमनी - रत्न सुपुत्री हम्मर पएतन उहे बीर।।
 एतना कह मंत्री से कहलन सीता के ले आऊ।
 रंगभूमि में जन-समाज के हुनकर छबि देखाऊ।।
 कएलन सचिव प्रबन्ध जानकी रंगभूमि में अएलन।
 सखी सेआनी आउर सेबिका के दल हुनका लएलन।।
 हाथ जोर सिर निच्चा कएले अएलन सीता सुन्दर।
 देखे लागल लोग उचक के अद्भुत रूप समुन्दर।।
 आँख टंगल रह गेलक मन में चंचल लहर समाएल।
 जेक्कर जइसन भाव रूप ओकरा ओइसन मन आएल।।
 लोग मुग्ध स्तब्ध मगर कबि के भासा बेचैन।
 चित्र उतारे ला आकुल जे अंकित कएलक नैन।।
 छूरी अइसन नाक, ओठ कुनरी के अइसन लाल।
 आँख कमल के पँखुरी सन दीपक सन दीपित भाल।।
 करिया लमहर केस घटा सन, नाचे पोसल मोर।
 डोलइत कुंडल लागे जइसे बिजली करे ईजोर।।

सुभ सीमन्त पुरुष-मन में सेनुर के बोध जगाए।
 अन्धकार में दीप सिखा के उपमा कवि मन भाए।।
 सरद चान सन मुँह देखिए के मन हरिअर हो जाए।
 बार-बार देखे के इच्छा मन में ज्वार उठाए।।
 तन के गढ़न सुगढ़ लागे जइसे निरदोस सुकविता।
 नारी रूप बना के धरती पर उतरल सुभ सबिता।।
 मुख के प्रभा प्रति छन नूतन, अभिव्यक्ति हैरान।
 लागे प्रातः काल पुरुष में फूटल नवल बिहान।।
 जइसे रूप सिन्धु से आके सुन्दरता के लछमी।
 दसो दुआर जनाबे मंगल मंडित बिजयादसमी।।
 जइसे अरुनोदय से होइअ अन्ध तिमिर के नास।
 तइसे फइलल सुन्दरता के सहज प्रसन्न प्रकास।।
 जइसे पहिला बरखा में धरती से गंध उठइअ।
 जइसे चाँद देख सागर में उन्मत ज्वार उठइअ।।
 तइसे बीर समाज सिया के रूप देख अकुलाएल।
 सीता के पाबे के इच्छा से तन-मन बउराएल।।
 रूप ज्वार में बीर भूप तिनका के लेखा बहलन।
 तोर सील, मरजादा आतुर एक्के बेरी उठलन।।
 तोर न देबे दोसर औसर निकल न जाए कर से।
 एही ला सब कोई व्याकुल भीतर आ बाहर से।।
 होए लागल धक्का-मुक्की आउरो हाथापाई।
 हम पहिले, त, हम पहिले, एकरे पर बढ़ल लराई।।
 पहुँच गेल जे पहिले धनु तक लागल धनुस उठाबे।
 पहिले सहज, बाद में सक्ति सब्भे लगल लगाबे।।
 कुथइत रहलक जोर लगा के बाकी धनुस न टकसल।
 एक-एक हारल राजा के लज्जा से मुँह लटकल।।
 बरका-बरका बीर भूप के भेलक साहस पस्त।
 बहुत लोग दुरगत देखिए के भेलक मन में त्रस्त।।
 देख दुरगति बीर भूप के राबन उठल सहर्स।
 हम तोरब सिब धनुस, बीरता के रक्खब उत्कर्ष।।
 फेंटा कसइत सिंह-गति से जब धनु ओरी बढ़लक।
 तब उठके बानासुर ओकरा के आदर से कहलक।।

“महाबली राबन तू हतऽ कवि, पंडित आ ग्यानी।
 अहंकार में मरजादा के मत तोरऽ बिग्यानी।।
 मेघनाद सन तोहर बेटा जुबक आउर बलवान।
 ओकरा के भेजे के चाही स्वयंबर में मतिमान।।
 बाकी ओकरा लंका में रख अपने इहमाँ अएलऽ।
 धनुस उठावे ला अब तत्पर बात न तनिको सोचलऽ।।
 मानली हतऽ बीर मगर अब भेलओ बयस अधेर।
 बय में बेटी दाखिल सीता, न बिआह के बेर।।
 दोसर बात भगत संकर के तू जग में बिख्यात।
 देब आराध्य पिता सन् होइअ मानल जग में बात।।
 सीता गिरिजा के उपासिका पुजलक सदा भवानी।
 जनक समान पिता ओकरा ला भोला औढ़रदानी।।
 एहू नाते तोरा-ओकरा कुछ सम्बन्ध बनइअ।
 धनुस तोर मरजादा तोरबऽ, नीति इहे कहइअ?”
 बानासुर के बानी से राबन के झटका लागल।
 दू भाओ के बीच बिकलता से उ अँइठे लागल।।
 आँख लाल कर ओठ चबएलक कसके गोर पटकलक।
 कुपित नयन से ओकरा ओरीं उम्मत सन उ तकलक।।
 एकरा बाद घुमएलक दृष्टि बेबस चारो ओर।
 चित्रित जन समाज के देखलक तकइत अपना ओर।
 अजगर सन फुँफकार झटकलक कसके अप्पन माथ।
 सीधे घूम सभा से निकलल स्वर्नपुरी के नाथ।।
 रह-रह पाछे ताके, रह-रह गोर बढ़ावे आगे।
 रूप सिया के पाछे खींचे ग्यान चलावे आगे।।
 तन बेचैन प्रान में आन्ही ओकरा कुछ न बुझाए।
 बिन्डोबा में पत्ता अइसन उ उरिआइत जाए।।
 ओन्ने बानासुर कहलक “हम जग देखे ला अइली।
 महादेव के धनुस देख, हम अप्पन हृदय जुरइली।।
 सीता पुत्री ला संभु से हम आसीस मंगइले।
 अपने सब के थक्कल बल के फेरू से जगबइले।।
 एक बेर अपने सब अपना मन के तेज जगाऊ।
 अच्छत छीटे ला हम आतुर केऊ धनुस उठाऊ।।

बीर भूप के बार बार न लागत मेला अइसन।
 आउर स्वयंवर ला न आएत नारी सीता जइसन।।”
 बहुत तरह से बानासुर उत्साहित सब के कएलक।
 बाकी सब निस्तेज, उठाबे धनुस न केउ अएलक।।
 सिथिल भेल उत्साह मन्द भेलक सब मंगल बाजा।
 तब अति छोभ निरासा से उठलन बिदेह के राजा।।
 बेटी रहल कुमारी एक्कर मन में बहुत न रोस।।
 बीर बिहीन धरा भेलक एकरे हमरा अफसोस।
 बरा साध से बीर भूप के नेओता भेजले रही।
 छत्री, विप्र, असुर, सुर के हम भेद न कएले रही।।
 कोई बीर उठाएत सिब-धनु, मन में अति बिस्वास।
 बीर एक से एक, न धरती करतक कभी निरास।।
 लेकिन आज न बाकी मन में बीर धरम के अर्थ।
 विधि के अजब विधान सिआ के स्वयंवर भेलक ब्यर्थ।।”
 सहल न गेलक बीर लखन से नृप बिदेह के बात।
 फरकल ओठ, नयन भेल रक्तिम, काँपे लागल गात।।
 कहलन “भइआ सहल न जाइअ नृप बिदेह के बात।
 बीर धरम के निन्दा होइअ, संजम जाइअ तात।।
 अपने के रहइत रघुकुल के गौरव के अपमान।
 उठा धनुस तोरु आ रक्खू नृप बिदेह के मान।।”
 कहलन राम “सान्त लछुमन ए में न कहँउ अपमान।
 हम सब त गुरु संगे अइली हुनकर आग्या मान।।
 जाले उ न कहतन ताले कइसे धनुस उठाऊ।
 सूर धरम के रक्षा-ला गुरु के मरजाद गमाऊ?
 सुनके कौसिक मुसकाइत कहलन रघुबर तू धन्न।
 सील बिनय के मूरत तोरा अइसन केउ न अन्न।।
 कुछ सोचिए के चुप्पे अबतक बइठल इहमाँ रहली।
 सील बिहीन बीरता के कुछ उत्तम दरसन कइली।।
 बाँह चढ़ा फुँफकारे से केउ बीर न जग में होइअ।
 ओकरा ला आत्मा के कन कन तेज जगाएल जाइअ।।
 मन के राग, प्रान के सक्ति, जब तन साथ मिलइअ।
 सहज बीरता मानब तन में पाबक सन उतरइअ।।

अहंकार, छुद्रता, स्वार्थ से सक्ति होइअ छीन।
 स्वार्थ बना देइअ मानव के दीप नेह से हीन।।
 देखलऽ कइसे अहंकार में तोर सील सुविचार।
 स्वार्थ बिकल नृप दल देखलएलक अप्पन छुद्र विचार।।
 हो गेल सान्त बाढ़ के पानी देखली असली रूप।
 उठऽ राम धनुस अजमावऽ बरा बिकल हथ भूप।।”
 उठलन सिंह समान राम गुरु के कएलन परनाम।
 फेंटा बान्ह धनुस लग अएलन लेलन सिब के नाम।।
 जब ले लोग कहे कुछ, सोचे, प्रबल पराक्रम कएलन।
 बिजली के गति से पल भर में सिब के धनुस उठएलन।।
 डोरी चढ़ा जोर से खींचलन भेलक नाद भयंकर।
 लागल रंगभूमि में आके हँसलन सिब प्रलयंकर।।
 एतना तेज लगल झटका कि टूट गेल सिब चाप।
 कम्पित भेलक बायुमंडल स्वर आघात अमाप।।
 अस्त-व्यस्त सब लोग अचानक जइसे भेल भूडोल।
 घबराहट में उलट-पुलट के कुछ जन भेलन गोल।।
 जब सब कुछ असथिर भेलक देखलन टूटल धनु हाथ।
 लेले रंगभूमि में खरा सिंह समान रघुनाथ।।
 उमरल जनमुख से स्वर भारी “रामचन्द्र के जय हो।
 सिबधनुभंजक महाबली के जीवन मंगलमय हो।।”
 संख बजल ओकरा साथे बाजल सब मंगल बाजा।
 हरसित सकल समाज साथ उठलन विदेह के राजा।
 आगे बढ़ के रामचन्द्र के सादर हृदय लगएलन।
 धन्न बीर कोसल किसोर” उ गदगद स्वर में कहलन।।
 आग्या देलन बेटी सीता अपने आगे आऊ।
 रामलला के कंबु कंठ में विजयमाल पहिराऊ।।
 मन प्रसन्न, संकोच-नमित मुख, सीता आगे अएलन।
 गम्मे गम्मे चलके रघुबर के माला पहिरएलन।।
 बार बार रघुवीर - सिया के गुंजल जय जयकार।
 अमर रहे जोरी, जाले गंगा - जमुना-जल - धार।।
 स्वयंवर हो गेल खतम लोग अपना निवास पर गेलन।
 आउर राम लखन के साथे महल ओर नृप भेलन।।

एन्ने हारल दुस्ट कुटिल नृप एगो गोल बना के।
 चाहलक भंग रंग में डालू कुछ उत्पात मचा के।।
 कल के छौरा तोर धनुस सीता के घर ले जाएत।
 आउर हमरा सबके ताकत पर इ लात जमाएत।।
 मिल के मारऽ आउर छीन ल एकरा से सीता के।
 मदत करे आबे त मारऽ सहजोगी राजा के।।
 सुनते लछुमन तुरत पलट के रंगभूमि में अएलन।
 आउर ललकारइत ओ राजा सब से डट के कहलन।।
 अगर प्रान के मोह त जा चुप्पे चापे घर अपना।
 सीता के पाबे के अब न भुलियो देखऽ सपना।।
 बरा साध हओ अगर लरे के त आके फरिया ल।
 ताकत हओ त सिंह-भाग हे नृप-सिआर! हथिआ ल।।
 मार बान के अभी करइले अहंकार सब चूर।
 मुँह अहसन आ इच्छा लमहर, चाही दाल मसूर।।
 एक्के बान बहुत तोहरा ला दोसर अगर चढ़ाएम।
 सपथ गुरु कौसिक के जग में दसरथ सुत न कहाएम।।
 एतना कहके मानबास्त्र धनु पर रखलन रनधीर।
 डर से भगलन रंगभूमि से सब नकली रनबीर।।

संकट के बादल छँटल, बढ़ल लखन के मान।
 बाजे लागल बाद्य सब, होए लागल गान।।

कौसिक साथे राम-लखन के राजभवन नृप लएलन।
 मंत्री, बृद्ध, पुरोहित, परिजन के सादर बोलबएलन।।
 कहलन “टूटल धनुस सिया बरलन सादर सिरी राम।
 भेल बिआह नियमतह बचलक सेस न कोनो काम।।
 बाकी लोक प्रसस्त पंथ, कइली न कन्या दान।
 एकरा बिना न बढ़तक जग में हमर कोनो मान।।
 ए लेल आगे कथी करू अपने सब मिल बतलाऊ।
 कइसे जुरतक दू समाज एक्कर रसता बतलाऊ।।
 सब कोई कहलक नृप दसरथ कन सादर दूत पेठाऊ।
 बरिआती लेके उ आबथ सुभ न्योता भेजबाऊ।।

उ अएतन परिजन - पुरजन के दल-बल सुन्दर साज।
 कन्यादान करम अपने आ मिलतक जुगल समाज।।
 राय पसन्द जनक के आएल खुस भेलन मिथलेस।
 चतुर दूत के पाती देके भेजलन तुरत सनेस।।
 आउर आग्या देलन आगे के करू तइआरी।
 सब सामान जुटाउ, गाबथ गीत सुमंगल नारी।।

ओन्ने राबन सोंचइत जाए भारी गलती कइली।
 बानासुर के झाँसा में हम स्वयंबर से चल अइली।।
 मरजादा के बना बहाना हमारा धोखा देलक।
 अपने तोर धनुस सीता पाबे के औसर लेलक।।
 सब राजा गेल हार रही हमही दुन्नो जन बाकी।
 एही से हमरा बेलगाबे ला उ देलक झाँसी।।
 कइसे मति भुलाएल हमर चक्कर में फँस गेली।
 तनी गो ऊ दाओ लगएलक हम पटकन खा गेली।।
 अपना उग्र प्रकृति के चलते खोइली औसर आप।
 अखनी ले जरूर उ तोरले होएतक सिब के चाप
 इहे सब सोचइत, पछतबइत राबन आगे जाए।
 बाकी रूप सिया के मन से बिसरे न बिसराए।।
 सपना अइसन रूप, सिया हए सब रानी के रानी।
 ओकरा आगे मन्दोदरीओ भरत रूप में पानी।।
 सीता से लंका के छबि में चार चान्द लग जाइत।
 हमारा बैभव के आगे लछमीओपति लजाइत।।”
 एतने में अनुचर आ कहल” महाराज के जै हो।
 राम धनुस तोरलन अब आगे जे प्रभु के आग्या हो।।”
 “राम कोन? इ कन्ने रहे? कइसे धनु के तोरलक?
 बानासुर की कएलक, ओकरा से न सिब धनु टुटलक?
 महाराज उ धनुस न छूलक, कहलक देखे अइली।
 जनक जग्य, आ पुत्री सीता ला हम अच्छत लइली।।
 विस्वामित्र मुनि साथे बइठल जे स्यामल गोर।
 दसरथ के बेटा धनु तोरलक उहे स्याम किसोर।।

मूढ़, न अपने तोरलक, न हमरे के तोरे देलक।
 मरजादा के चक्कर में इ रतन हाथ से गेलक।।
 बइठल रहे मेमना लेखा दुन्नो भाई साथ।
 रहे न कतहूँ गिनती में उ भट-समाज के माथ।।
 रिसि बसिष्ठ के ब्रम्हदंड के छाया में अबधेस।
 सब दिन रहल, न छूलक ओकरा, कोनो ताप बिसेस।।
 ओकरे बेटा राम निकललक आज महा बलवान।
 बीर-सभा में पा लेलक उ सस्ते में सम्मान।।
 आज खुसी से उ पागल, हम बिकल, दग्ध, बेचैन।
 उ सोभा के आस्रय हमरा मन में आज न चैन।।
 अच्छा हमहू रावन त ओकरो के बहुत रोआएम।
 सीता बिन ओकरा जीवन के हम बरसात बनाएम।।
 सुख के चान्द घिरत बादल से होएत रात अन्हार।
 बन, परबत, मरुथल में भटकत सीता नाम पुकार।।”
 इहे सब सोंचइत फोंफिआइत मलइत अप्पन हाथ।
 गेलक अपना रजधानी रावन अनुचर के साथ।।

ओन्ने दूत बिदेह के, पहुँचल जब साकेत।
 समाचार सुनके सुखद, हरसित रघुकुल केत।।

तुरत सचिब के कहलन “गुरुबर के लग अपने जाऊ।
 समाचार शुभ बतला के हुनका साथे ले आऊ।।
 रानी सबके कहू राम कएलन अति अद्भुत काम।
 माथा ऊँचा कएलन कुल के, बीर-जगत में नाम।।
 सब के मान मरदलन सिब के बिकट धनुस उ तोरलन।
 नृप बिदेह के पुत्री सीता सादर हुनका बरलन।।”
 राजमहल में बाजे लागल तुरत मनोहर बाजा।
 बरिआती साजे ला भेजे लगलन नेओता राजा।।
 गुरु बसिष्ठ निरदेसक भेलन सोधलन जात्रा-काल।
 मन में खुसी समाए न, अइसन भेलक नृप-हाल।।
 उ कबहूँ आदेश चलाबथ, कबहूँ भीतर जाथ।
 कबहूँ रानी, मंत्री, परिजन के साथे बतिआथ।।

आखिर सब तइआरी भेलक कुलदेओता के पूजलन।
 भारी भव्य बरात सजा अबधेस जनकपुर चललन।।
 हाथी - घोरा चलल पालकी, रथ, पैदल बरिआत।
 ढोल, संख तुरही सब बाजा बजइत चललक साथ।।
 नर्तक, भाँट, बन्दी आ चारन आगे गाबे नाचे।
 दीन-हीन जन अन-धन पाबे, जे राजा से जाँचे।।
 हँसी-खुसी बरिआत पहुँचलक जनकपुरी के पास।
 बढ़ के जनक सोआगत कएलन देलन सबके बास।।
 डेरा, समिआना के पाँती अइसन गेल सजाएल।
 लागे जनकपुरी में एगो दोसर नगर बसाएल।।
 बरिआती मन लाइक पएलन सुन्दर ठौर-ठेकान।
 नर्तक गाएक गाबे लगलन सुन्दर-सुन्दर गान।।
 दसरथ तब दरबार लगएलन तामझाम के साथ।
 भानु समान सुसोभित भेलन सचिब सभासद साथ।।
 सादर गुरुबर से कहलन “पूरन भेलक मनकाम।
 स्नेष्ठ पुरुष के आग्या मानली पइली जग में नाम।।
 राम-लखन के देखे ला अब मन जादे अकुलाइअ।
 कइसे टूटल बज्र फूल से मन न तनिक पतिआइअ।।
 ए लेल अब गुरुबर राजा कन सादर खबर पेठाऊ।
 रिसि के साथे राम-लखन के अब जल्दी बोलबाऊ।।
 एतने में मुनि-राम-लखन-संग जनकपुरी नरनाथ।
 आ गेलन अनुचर, मंत्री, परिजन के लेले साथ।।
 सिस्टाचार प्रनामा - पाती स्वागत के उपरान्त।
 जनक निवेदन कएलन सादर, भेलन जब सब सान्त।।
 “महाराज हम धन्न आज अपने मिथिला में अइली।
 भेल कृतार्थ जनकपुर अपने सबके दरसन पइली।।
 बीर सिरोमनि राम संभु के चाप महाबल तोरलन।
 बीर-सभा में हमरा मुँह के लाली बीरबर रखलन।।
 हिनके कारन आज सुखद अएलक इ मंगल बेला।
 निमि, रघु के बंस जुरल लागल उत्सव के मेला।।
 अब एगो हए नम्र निवेदन अपने मत ठुकराएम।
 अपने परम उदार सकारम, त हम गौरब पाएम।।”

महाराज दशरथ कहलन “हे प्रिय विदेह नरनाथ।
 अपने सील, ग्यान में उत्तम नृप समाज के माथ।।
 अपने जे कुछ कहम, करम ओक्कर सादर सम्मान।
 अपने प्रिय समधी सेवा में अरपित हम्मर प्रान।।”
 सुनके गदगद मिथिलापति के भरल आँख में लोर।
 “महाराज दसरथ के जय” के गूंजल सबतर सोर।।
 कहलन “हमरा अग्रज के हए दूगो सुन्दर बेटी।
 हमरो एगो आउरो चारु उरमिल नामक बेटी।।
 इहो तीनो रूप-सील में हथ बैदेही लेखा।
 चारो के बइठा दू त बन जाए चन्द्र के रेखा।।
 चार कुँअर अपनहू के हथ रूप सील गुनधाम।
 चारो के दे दू त हम्मर पूर्ण होए मनकाम।।
 एक्के मंडप तर चारो के हम सुभ ब्याह रचाएम।
 कन्यादान करम पाबन जीवन के सफल बनाएम।।
 कइसन स्वर्न सुजोग अबधपति मन में करु विचार।
 एन्ने चार पुत्री ओन्ने बिधि रचलन चार कुमार।।
 छन भर चुप होके राजा तब गुरु के ओरी तकलन।
 आसीरबादी मुद्रा में गुरु हाथ उठा के हँसलन।।
 अति प्रसन्न मुँह राजा कहलन हए हमरा स्वीकार।
 बेदी चार बनाऊ आउर करु उचित बेहबार।।
 अति प्रसन्न दुन्नो समधी तब गला गला से मिललन।
 आउर करे बेबस्था सब मिथिलापति वापस चललन।।
 अगहन माह सुकुल पख पँचमी मंगल के छन जागल।
 धूमधाम से बरिआती सब जनक दुरा पर लागल।।
 सुभ मुहुर्त में मंडप तर सब बर के गेल बोलाएल।
 गीत नाग के साथ नया बस्तर गेलक पहिराएल।।
 मिथिलापति तब बेद-बिधि से कएलन कन्यादान।
 एकरा बाद राम सब भाई कएलन सेनुर दान।।
 अब तक बाबा के जे बेटी रहलन इहाँ परान।
 हाय बिधाता! सेनुर परइत भेलन उहे बिरान।।
 केकरो भरल आँख आउर केकरो भहराएल गान।
 दूरा पर बाजा में रोएलक समदाओन के तान।।

गेलन कोहबर राम-सिया, साथे सब सखी सेआन।
 दुरमानी, बरछेंका, ठट्टा के मुखरित भेल गान।।
 कोहबर के सोभा बढ़ गेलक राम-सिया के रूप।
 छेर-छार मुस्कान हँसी से भेलक दृश्य अनूप।।
 बिहने खनौ कमल से पोखरी जइसे खिलल लगइअ।
 संझिआ में दीआ से जइसे जगमग गेह करइअ।।
 तइसे रूप-कमल-दीपक के लागल उहमाँ मेला।
 उठल भाव के लहर उहाँ किलकिंचित आउर हेला।।
 “सुभे सुभे बोलू सब जन” के होए लागल गान।
 हँसी-खुसी में पता न लागल कइसे भेल बिहान।।
 मरजादा से रहल बराती भेलक सब बेहबार।
 आखिर बिदा कराबे ला कुछ भेलक बात विचार।।
 तब रानी बेटी सब के अपना नजदीक बोलएलन।
 अति सनेह से मधुर बचन में हुनका के समझएलन।।
 बेटी करिहऽ सास-ससुर के सब दिन सादर सेवा।
 उहे तोरा ला गंगा आ उहे उत्तम मेबा।।
 स्वामी ला रखिहऽ हरदम मन में निच्छल अनुराग।
 स्नेह सदा सीतल रखतओ तोहर अमर सोहाग।।
 सेबक सबके आस्रित मानिहऽ दीहऽ सीतल नेह।
 सुख-दुख में सह अनुभूति से भरिहऽ मन के गेह।।
 कुलबधू के मरजादा के तू मानिहऽ प्राण समान।
 उहे करिहऽ जे से घर में बढ़े हमेसा मान।।
 जे से नइहर - सासुर के मुँह उज्वल से तू करिहऽ।
 नारी धरम न छोरिहऽ चाहे कतनो सुख-दुख सहिहऽ।।
 नेहा दूध से, पूतो फरऽ, रहे अखंड सोहाग।
 भरओ सुरभि से तोहर जीवन, बिखरो प्रेम-पराग।।
 तोहरा खोंइछा में हम देइले सुभासीस के धान।
 गिरजा से तोहरा ला मांगब सब दिन सुख-सम्मान।।”
 माँ के सुन आसीस भरल हुनका नैना में लोर।
 अँचरा से सब पोछे लगलन भरल आँख के कोर।।
 कहलन “माई ससुरा में हम नूतन राह बनाएम।
 अपना चाल-चलन से हम नइहर के कीर्ति बढ़ाएम।।

जे दिन हमरा करनी से घटतक मरजादा, मान।
 ओ दिन दुनिया में न रक्खम हम सब अप्पन प्रान।।
 सेवा, त्याग, तपस्या से हम रच्चम जीवन गान।
 हम सब मिलके रहम कि जइसे चार देह एक प्रान।।
 रघु बंस में हम सनेह के बीरा नया लगाएम।
 अपना करनी से नारी के हम इतिहास बनाएम।।
 बेटी हती, पराया धन, तोरा से बिछरल जाइले।
 बाकी जीए ला अप्पन बचपन हम छोरले जाइले।।
 अपना साथे पूज्य पिता के रखिहऽ माई ध्यान।
 उ बिदेह, हुनका पूजा में होए न कुछ ब्यबधान।।”
 इहे सब कहइत सुनइत में धीरे बीतल रात।
 अरुन उदित भेलन बाकी कुछ बदलल लागे गात।।
 अजब उदासी चारो ओरी भारी लागे ओस।
 लागे सिकुरल सिमटल मौसम, बन्द कमल से कोस।।

समदाओन

राजा दसरथ जब बिदाई लेल जोर कएलन
 होए लागल बिध बेहबार।
 सजे लागल डाला-दउरा, दानऽ आ दहेज लेल
 दास-दासी भेल तइआर।।
 रोई रोई कहे लगलन रानी हे सुनएना
 कइसे सिआ जएतन ससुरार।
 के बइठत माई पँजरा, के बइठत गोदिआ,
 केकरा भरम अँकबार।।
 केकर मधुर बोल कान हम्मर सुनतन
 तिरपित अँखिया निहार।
 सुगबा मएनमा के दनमा चुगतई के
 बछरु के करतई दुलार।।
 गिरजा के सँझिया में दीप के देखएतई,
 सिबजी के करतई प्रनाम।
 बाबू जी के पूजबा ला फूलबा के चुनतई,
 पूजा-घर में देतई के ठाम।।
 समबा चकेउआ के गीत के सुनतई,
 डोमकछ में धरतई रूप।

पेन्ह - ओढ़ के हमरा हँस के रिझतइ,
 सजतई रूप अपरूप ।।
 मइआ के अंखिया से ढर ढर लोर ढरे
 रोकलो न रुके लोर-धार ।
 बरा रे जतन से हम बेटी स के पोसली
 दूध में पिअइली पेआर ।।
 बेटी के बिजोग भाग लिखलन बिधाता
 करेजा न देलन कठोर ।
 कहमाँ सनेह टाँगू, कहाँ ओठँगाऊ मन,
 केकरा भिंजाउ धार लोर ।।
 लाल रंग डोलिया में सबुज ओहरबा
 लेके आएल भइया कहार ।
 डोलिया धरइते बिलखे लागल सखिया
 सब लोग भेल निरधार ।।
 भइआ के करेजा पथल सन भेलइन
 देलन उठा के डोली डार ।
 रोए-चिचिआए लगलन चारो जे बहिनिआ
 डोलिआ उठएलन कहार ।।
 पटुका से मुँह झाँप सिसके जनक लगलन
 भूल गेलन ग्यान आ विराग ।
 कुसध्वज रोए लगलन, सचिब, पुरोहितो,
 केक्कर बुझाबे केउ आग ।।
 रोए लागल नोकर-चाकर पउनी-पसरिआ
 रोए लागल नगर के लोग ।
 कठिन करेजा पर जेकरा घमंड रहे,
 रोए लागल उहो सब लोग ।।
 डोलिया उठा के आगे बढ़ल कहरबा,
 बड़े लागल पाछे-पाछे लोग ।
 हथबा उठा के केउ सिया के पुकारे,
 केऊ डूबल जाय दुख-सोग ।।
 बेटी के जनम काहे देलऽ हे बिधाता,
 कहेला बनएलऽ सिर भार ।

आगे बढ़ल डोलिया पछारी छूटल लोगवा
 रोइते रहल परिवार ।।
 गिरजा के मंदिर तर आएल जब डोलिआ,
 कहलन रुक जा कहार ।
 गिरिजा भवानी माँ से लेवे द असीसवा
 अँसुआ से चरन पखार ।।
 पोखरी के पनिआ सपन अब होतई
 केकरा में करबई बिहार ।
 कदम के गछिआ उदास अब होतई
 झुलुआ न लगतई डार ।।
 सीआ के अनुरोध पर रखलन डोली कहार ।
 गिरजा के मंदिर लगुन जेन्ने प्रमुख दुआर ।।
 चारो बहिन उतर के गेलन लगलन सादर गोर ।
 गिरजा से मंगलन बिदा भरल आँख में लोर ।।
 अएलन बाहर बइठलन, डोली उठा कहार ।
 चल देलन चुपचाप उ जेन्ने नगर दुआर ।।
 पाछे पाछे आ गेलन चारो भाई राम ।
 जाके कएलन उमा के सब सादर परनाम ।।
 बिदा बराती भेल सब पा समुचित सतकार ।
 चार दिन के चान्दनी मिथिला भेल अन्हार ।।
 बिहबल जनक उदास मुँह करथ न कोनो बात ।
 बिछुरे के पीरा सिथिल कएले हुनकर गात ।।
 सन्नाटा रनिबास में कुहके सबके प्रान ।
 आज उदासी बिकलता रहे जहाँ कल्ह गान ।।
 दान दहेज बिदाई से खुस सब्भे बरिआत ।
 कनिया बिदा करा चलल कोसलपति के साथ ।।

थोरके दूरी गेला पर भेल अमंगल पात ।
 आ गेलन पसुराम जी फँरसा लेले हाथ ।।
 घेर बराती के उ लगलन फँरसा के चमकाबे ।
 आँख लाल क्रोधित मुँह कएले लगलन उ बतिआबे ।।

के तोरलक सिब धनुस बतावऽ केवकर आएल काल?
 कोन मूढ़ के कारन जागल हम्मर क्रोध कराल?
 बतलावऽ हम सीस काट के गुरु के मान बचाएव।
 न त सब बरिआती के हम रन में आज सुताएव।।
 “इ की भेलक? संकट बन के अएलन छत्री - द्रोही।
 हिनका से के रक्षा करतक? महाउग्र आ क्रोधी।।
 सोच-सोच के भय से थर-थर काँपल नृप के पाँव।
 हाथ जोरले आगे अएलन छूलन हुनकर पाँव।।
 नाम धाम अप्पन बतलएलन सब्बे कथा सुनएलन।
 हमरे बेटा धनुस उठएलक हुनका के समझएलन।।
 सान्त करे ला क्रोध मुनि के लगलन करे चिरौरी।
 मने मने गोहराबे लगलन भोला संकर - गौरी।।
 देख पिता के दसा तुरत रघुबर आगे चल अएलन।
 हाथ जोर सीतल बानी में नम्र निवेदन कएलन।।
 हे भार्गव हमही तोरली ह सिब के धनुस प्रचंड।
 सेवा में सादर समुपस्थित दे दू अपने दंड।।
 अपने सिस्य संभु के हती ए लेल चरन छुअइले।
 बाकी चाहब समर त मुनिबर हमहू धनुस धरइले।।
 ब्रम्हर्षि बसिष्ठ आ कौसिक के हम सिस्य सुजान।
 सील, विनय आ सक्ति हुनकर हमरा में गतिमान।।
 ग्यात न अपने के बल हमरा, इ मत सोचब देब।
 लेकिन हमरो के मत समझब कोम्हरा, कदुआ, सेब।।
 चाहे अपने फँरसा तानू चाहे धनुस उठाऊ।
 बाकी पहिले एक बात अपने हमरा बतलाऊ।।
 धनु-भंजन जब टेक स्वयंबर के मिथिलापति रखलन।
 आउर जग में आबे ला नेओता सादर भेजबएलन।।
 तब अपने कहेना न भेजली हुनका कने मनाही।
 अगर धनुस टूटत त करतक हम्मर क्रोध तबाही।
 ओ बेर अपने चुप्पे रहली भेल न खंडित मान।
 आज अचानक कइसे लागल भेल संभु अपमान?
 “भइआ असली बात हए दोसर” लछुमन झट से टोकलन।
 वे मतलब के झंझट से उ तुरत क्रोध में अएलन।।

“हिनका रहे उमीद कि धनुही तोरतक बिप्र कुमार।
 आउर छत्री कन्या के ब्याहत बन राजकुमार।।
 दर्प दलन करतक छत्री के, हिनका देतक तोख।
 लेकिन भेल न मन के लाइक ए से लागल रोख।।
 एही से इ सोच-समझ के एतना दिन के बाद।
 फँरसा चमकबइत अएलन ह करइत भारी नाद।।”
 कहलन राम “अनुज चुप हो जा हए अनुचित इ बात।
 बिन आग्या गुरुजन के आगे कभी न बोली तात।।
 हम अपराधी सिब-धनु भंजक हिनका के समझाएम।
 न मानतन त आखिर में हम एतहीं समर रचाएम।।”
 परसुराम के ओरी मुर केँ कहलन “हे मुनिराज।
 अपने पूज्य, न क्रोध उचित हुए, त्यागू एकरा आज।।
 अपने सम्मानित बिदेह से, सीता हुनकर बेटी।
 बीर धरम से हम बिआहली ए में तनिक न हेठी।।
 अइसहूँ अब धनुस न जूटत खतम करु इ बात।
 सीता के माथा पर रक्खू आसीरबादी हाथ।”
 जुक्ति भरल इ बात मुनि के मिरचाई सन लागल।
 छत्री कुल पर क्रोध पुरनका फन-फन क के जागल।।
 आँख तरेर कुपित हो कहलन सुन रे छत्री कुमार।
 परसुराम के क्रोध पबइअ जुद्धे से सत्कार।।
 बिना रक्त के कभी न हम्मर गोस्सा ठंढा होइअ।
 आज रक्त तोहरे पीएला इ फँरसा तरपइअ।।
 एतना कहइत परसुराम झट फँरसा बिकट उठएलन।
 हाहाकार करइत कोसलपति हुनका ओरी बढ़लन।।
 बाकी राम बिना चिन्ता के निरभय चाप उठा के।
 कहलन अबहीओं औसर हए सोंचू तनी ठंढा के।।
 ब्राम्हन के बल तेज, तपस्या, ग्यान, छमा के दान।
 जग के चिन्ता, जन के मंगल, हए ओक्कर पहचान।।
 अपने परसु उठा के रचली जे इतिहास असान्त।
 उ बतबइअ अपने के मन क्रोध, अहं से भ्रान्त।।
 एक ब्यक्ति के गलती ला देली समाज के दंड।
 दोसहीन के रक्त बहइली कइली पाप प्रचंड।।

सहसबाहु के काट समझली जग में सूर निराला।
 पहिला बेर आज परतक छत्री से मुनिबर पाला।।
 आज एही सर से खंडित हम मुनिबर करम कुठार।
 बिप्र देवतां बतलाएँ हम छात्र-तेज के धार।।
 आज अगर एजमन हम धनु पर दोसर बान चढ़ाएँ।
 सपथ संभु के हे मुनि ग्यानी राम न नाम धराएँ।।
 अपने फँरसा नीच्चा करूँ हम अनुरोध करइले।
 न त साबधान फँरसा के हम दू दूक करइले।।”
 एतना कहइत राम चढ़ा सर खींचलन धनु के डोरी।
 सकता में सब बरिआती ताके चुप दूनो ओरी।।
 पता न कि सम्मोहन भेलक नचलक मुनि के माथ।
 अनायास निच्चा झुक आएल फँरसा बाला हाथ।।
 चकित मुग्ध उ रामचन्द्र के मुँह पर ताके लगलन।
 अस्त-ब्यस्त मन होए लागल-समझ न कुच्छो पएलन।।
 एकाएक धनुस दे अप्पन कहलन “बीर चढ़ाबऽ।
 तू अपना अद्भुत बल के हमरा परमान बताबऽ।।
 हमर धनुस चढ़ाबऽ त मानम तोहरा के बीर।
 न त काटब तोहरा के हे बाकछली रघुबीर।।”
 लेके धनुस चढ़ाएलन डोरी कौतुक से रघुनाथ।
 बिस्मय से तकते रह गेलन भिरगुकुल के नाथ।।
 “धन्न राम तू साँचो हतऽ महापुरुष बलसाली।
 तोरा उर में बास संभु-गिरिजा के गौरबसाली।।
 हम देइले आसीस सक्ति के तू सोपान बनएबऽ।
 धरती पर मानबता के नूतन इतिहास रचएबऽ।।
 आज दिबस से छत्री कुल पर हम न कुठार उठाएँ।
 छात्र धर्म के छोर आज से बिप्र धर्म अपनाएँ।।”
 एतना कहइत परसुराम उलटे पग वापस भेलन।
 संकट से मुकती मीलल बरिआती हरसित भेलन।।
 दसरथ के लागल गरदन पर से चल गेलक काल।
 धन्न भाग, बचली, मंगल कएलन संभु महकाल।।
 कहलन “जल्दी से चलऽ फेनू न संकट आबे।
 कोनो तप्त बेआर न हमरा पुत्रबधू के लागे।।

इहाँ अजोध्या कनिआ-बर-स्वागत में सजले साज।
 बिना समय लागे जइसे आएल रितुपति के राज।।
 बन्दनबार सजल सबतर दीया के पाँत सजाएल।
 राज भवन के सब खंभा तर मंगल कलस धराएल।।
 कनिआ सब के डोली पहुँचल बिखरे लागल फूल।
 होए लागल गीत मनोहर झरल सब्द मधु मूल।
 मंगल गीत आरती के संग कनिया सब परिछएलन।
 ले अँकबार माई सब बहू के मंगल कोहबर लएलन।।
 भेलक बिध - बेहबार बहू के मुँह देखलाएल गेल।
 देख मनोहर रूप लोग के नैना तिरपित भेल।।
 सब देलन आसीस कि जिअऽ, अचल रहओ अहिबात।
 रात चान सन उज्जर, सुरुज सन अरुनिम परभात।।
 भेलन बिदा कुटुम्ब अतमा सब चउठारी बाद।
 गहमागहमी खतम भेल रह गेलक बचल इआद।।
 राजकाज में राजा लगलन कामकाज में लोग।
 माई सब ला कनिया चारो भेलन सुख के जोग।।
 चारो बहू बिराजलन अपना सुन्दर सुखद महल में।
 दास-दासी सब लगलन सादर सेवा आउर टहल में।।
 रितु बसंत में जइसे नूतन पल्लो दल निकलइअ।
 सुन्दर सपना से मन के कोना कोना थिरकइअ।।
 बादल से भर जाइअ जइसे सून नील आकास।
 ओक्कर अन्धेरा छँट जाइअ बिजली के परकास।।
 तइसे प्रेम मनोरम सीता-राम-हृदय में लागल।
 नित नूतन आकांक्षा के पँखुरी बिकसाबे लागल।।
 जागल उस्न लालसा जौबन भेलक क्रीरा लीन।
 पानी में जइसे बिहरइअ मुक्त भाओ से मीन।।
 मीठ मनोहर बातचीत आ हँसी भरल खेलबार।
 पति-पतनी से आगे भेलक सखा-सखी सन प्यार।।
 मन के सीमा लांघ प्रान में पसर गेल अनुराग।
 लागल सीता-राम रूप में जगल राग के भाग।।
 भूल जाथ अप्पन सुध सीता जब रघुबर से देखथ।
 आउर राम के प्रान खिले जब रूप सिआ के देखथ।।

भरत-मांडवी नीर छीर सन एक प्राण दू देह।
 पति के सरल प्रेम में भुललन नइहर के सब नेह।।
 रागदेब के भरत पुजारी मांडवी हुनकर पूजा।
 एक दोसरा के सुख में सुख, भाव न मन में दूजा।।
 सरद रितु में जइसे सुन्दर सीतल सान्त सरोबर।
 भरत-मांडवी के जीवन ला मिले न उपमा दोसर।।

उर्मिला के प्रेम पिआसल हिरदय उरमिल चंचल।
 जइसे दखिन पवन में डोले नब किसलय के अंचल।।
 जौबन के पल्लो पर छिटकल अरुन राग के लाली।
 गोर हथेली पर सोभित जइसे मेहदी के लाली।।
 सहज सोहाओन दुन्नो जइसे कुमुद-कमल के जोरी।
 एक दोसरा ला रचलन जइसे बिधना बरजोरी।।
 एक चान सन सीतल दोसर में दिनकर के ताप।
 एक भाओ से भरल दोसरा में जीवन के दाप।।

स्रुतिकीर्ति - सत्रोहन के जीवन के अनुपम ढंग।
 रति-सिखा पर मँरराए धर रूप पतंग अनंग।।
 निरमल जल के झरना सन दुन्नो निस्छल आ चंचल।
 सहज भाव से परबाहित उभर-खाभर आ समतल।।
 दुन्नो क्रीड़ा में लागथ तोता - मैना के जोरी।
 रीझथ - खीझथ साथ रहथ, जीवन मंगलमय होरी।।

एही तरह से चारो दम्पति के जीवन चौरंग।
 लागे चार रूप में सोभित जोरी रति-अनंग।।
 राग - रंग क्रीरा - कौतुक में समय सपन समान।
 पता न कइसे भागल गेलक चंचल हरिन समान।।
 महाराज दसरथ हरसित मन सदा सराहथ भाग।
 प्रभु देलन इ चार सुफल कएलन अतिसय अनुराग।।
 प्रेम मगन परिवार देख माई के हृदय जुराए।
 केवकर के पुतोह, के बेटा, भेद न तनिक बुझाए।।

परिजन पुरजन करथ प्रसंसा देख नेह बेहवार।
 सब मांगथ प्रभु दीहऽ सबके अइसने परिवार।
 एक दिन केकय से मामा भरत कुँअर के अएलन।
 साथ भरत के ले जाए ला उ अति आग्रह कएलन।।
 भेल बिआह भरत न कएलन नाना के परनाम।
 नाती के देखे ला नानी रोजे लेइछन नाम।।
 दुन्नो भाई-बहिन मिलके कुछ एतना आग्रह कएलन।
 आखिर दसरथ केकय जाए ला आग्या दे देलन।।
 कहलन भरत “न असगर जाएम हम माई ननिहाल।
 मुँह बनएले रहम अकेले केउ न पूछत हाल।।
 ए लेल भाई सत्रोहन के हम ले जाएम साथ।
 घूमम - फिरम, खेलम - कूदम दुन्नो भाई साथ।।
 ओकरा बिना अकेले आधा अनुभव सदा करइले।
 छाया - काया लेखा दुन्नो भाई साथ रहइले।।
 ए लेल कहऽ पिता जी से दुन्नो ला आग्या चाही।
 सत्रोहन हम्मर आउर हम ओवकर प्रिय परछाँही।।
 आखिर दुन्नो भाई के जाए ला केकय साथ।
 बेमन से आग्या देलन हो बिबस अयोध्या नाथ।।
 जात्रा कठिन समाप्त कर, अएलन सब ननिहाल।
 नेह पिता के भूल के रह गेलन कुछ काल।।



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अभिसेक कांड

बन्दना

हे बक्रतुंड, हे महाकाय, हे लम्बोदर बिघ्नेस।
अइली तोहरा सरन में रक्षा करऽ गनेस।।
सिद्धि दाता विद्यासागर गिरजासुत सुखकंद।
अन्धकार के नास करे ला दे द जोति अमंद।।
दुस्ट, कुटिल छल-छन्द पास में बान्हे लेल चहइअ।
कइसे बज्र गिरे सुख-दल पर एकरे जुक्ति सोंचइअ।।
पकर सोंढ़ से, नचा गगन में मारऽ अइसन झार।
दुस्ट, कुटिल द्रोही के फेंकऽ सात समुन्दर पार।।
विघ्न बिनासक एकदन्त दुख के छाती दरका द।
मोदक-प्रिय संकर-सुत हमरा ला सुभ पंथ सजा द।।
बनथ राम जुबराज न एमें कोनो खोट लगावऽ।
जे से रघुकुल के पथ मंगल ऊहे दीप जरावऽ।।
बार बार बिघ्नेस चरन में तोरा हाथ जोरइले।
मोदक, अच्छत, अगर, फूल-फल पूजा में चढ़वइले।।

कुछ अधिक उमिर, कुछ राजकाज आ कुछ चिन्ता से हस्त।
हो गेलन अबधेस अचानक तनिक रोग से ग्रस्त।।
ठीक समय पर राजबैद के कएला से उपचार।
हो गेलन उ ठीक मगर मन में जागल सुबिचार।
अब हमरा छोरे के चाही जग के माया - मोह।
राजकाज से तोरे चाही धीरे-धीरे मोह।।
आ गेलक ह समय कि लीऊ अब आश्रम संन्यास।
बना राम के राजा, सौंपू हुनका जन के न्यास।।
राम जोग्य, परजा खुस रहतक पाके हुनकर छाँह।
राज सुरक्षित चारो ओरी पा हुनकर बल बाँह।।
ए बिचार से हुनका मन में भेलक बहुत हुलास।
जइसे अन्धकार में औचक पथ में मिले प्रकास।।

खुसी - खुसी उ सबसे पहिले गुरुबर के बोलबएलन।
 आउर अप्पन इच्छा हुनका के सादर बतलएलन।।
 गुरु कहलन "उत्तम बिचार इ हए समय अनुकूल।
 भुवन-भास्कर कुल में खिलतक एसे मंगल फूल।।
 सबके प्रिय रघुनाथ हतन आ सब गुन के आगार।
 सोना में सुगंध कि उहे हतन जेठ कुमार।।
 राजकाज में दक्ष, छमा आ न्याय जुक्त बेहबार।
 रामचन्द्र में सील सक्ति आ हए उत्तम आचार।।
 सुनके नृप सुख से चंचल तब सचिव सुमंत्र बोलएलन।
 अप्पन इच्छा, राय गुरु के हुनका के बतलएलन।।
 पूछलन तोहर की राय, हमरा स्पष्ट बताबऽ।
 परजा आउर सभासद सब के मन के बात बताबऽ।।
 सचिव खुसी से बिहबल होके कहलन हे राजेस।
 परजा के सौभाग्य कि बनतन रघुवर अब अवधेस।।
 अपने के सौभाग्य कि देखब प्रिय सुत के अभिसेक।
 बजत बधाई अबधपुरी में सजतक दीप अनेक।।
 अपना कर से राजमुकुट जे सुत के सीस धरइअ।
 उ राजा देबोपम जग में सुख सम्मान पबइअ।।
 राजमोह सबसे परबल एकरा से जे नर ऊँच।
 ओकरा कीरती से राजन हए स्वर्गो तनिक न ऊँच।।
 ए लेल अपने जथासीघ्र अप्पन दरबार बोलाऊ।
 ए सुभ कारज में स्वामी अब तनिक न देर लगाऊ।।
 हमरा हए बिस्वास सभासद हरखित सुन के बात।
 कोसल के सत्रुए करतक राम बिरोधी बात।।
 सुन के परम प्रसन्न अबधपति तब हँकार देलबएलन।
 बोला सभासद सबके अप्पन उ दरबार सजएलन।।
 भरल सभा में कहलन "हमरा चाही अब बिस्राम।
 अपने सब सहमत त अब इ राज सम्हारथ राम।।
 सुनके परम प्रसन्न सभासद कहलन हए स्वीकार।
 राम उठावे में हथ सक्षम राजकाज के भार।।
 तब राजा गुरुबर से कहलन सोधू लगन अनूप।
 सुभ तिथि, लगन, घरी में रघुबर बनथ अबध के भूप।।

सचिबं सुमन्त्र जोगार करु अपने साधन उत्सव के।
 न्योता लेके भेजू सबतर अपने प्रिय अनुचर के।।
 सबसे पहिले न्योता भेजू चारो के ननिहाल।
 ओकरा बाद पेठाउ मिथिला सुत सबके ससुराल।।
 ओकरा बाद सकल कुटमैता न्योता निश्चित जाए।
 रक्खब ध्यान न केउ परिजन पुरजन छूटे पाए।।
 केकय जे जाए ओकरा के अल्लग से आदेस।
 भरत आउर सत्रोहन के लाबे ला दू निरदेस।।
 उत्सव से पहिले आबथ निश्चिते दुन्नो भाई।
 चार चाँद लागत उत्सव में रहतन चारो भाई।।
 तइआरी ला जथाजोग लेलन सब कोई भार।
 जग होइअ जगदीश्वर के सब लोग पवइअ प्यार।।
 आउर बहुत निरदेस सुना नृप अन्तहपुर में गेलन।
 समाचार सुभ उत्सव के तीनों रानी के देलन।।
 सुन के सब अतिसय प्रसन्न, मन गहगह करे लागल।
 दूर कहँउ पर सूतल सपना सच्चा होए लागल।।
 बाजे लगल बधाई सबतर होए लागल गान।
 खुसिआली से खिलल कमल सन अबधपुरी के प्रान।।

सबतर गेलक दूत सनेसा लेले भरल हुलास।
 केकय गेलक दूत रहे जेकरा पर अति विस्वास।।
 पहुँचल दूत सनेसा अपना आबे के भेजबएलक।
 आउर आबे के परजोजन हरसित हो कहबएलक।।
 चिट्ठी देलक सेबक जा जुबराज जुधाजित हाथ।
 राजतिलक के बात जानके ठनकल हुनकर माथ।।
 राम बनत जुबराज न हुनका मन के निम्मेन लागल।
 कोनो बीनल सपना मन के तार-तार हो फाटल।।
 सोँचे लगलन ऊँच-नीच आ स्वारथ भरल बिचार।
 राजतिलक के रोके ला सोँचे लगलन उपचार।।
 अएलन बाहर आउर दूत से हँसी-खुसी उ मिललन।
 भीतर में जे भाओ न ओकरा मुँह पर आबे देलन।।

कहलन "बहुत खुसी के औसर आएल इ मन भावन।
 महाराज निरनए कएलन इ उचित समय पर पावन।।
 राम-भरत में भेद न कोनो सब पर हम्मर नेह।
 हम सामिल होएम उत्सव में ले उपहार सदेह।।
 ठहरएलन चर के आ कएलन बहुत - बहुत सत्कार।
 ओकरा के भर देलन देके बहुत - बहुत उपहार।।
 चर कहलक "दुन्नो भाई के अपने इहाँ बोला दू।
 स्वामी के आदेस साथ लाबे के, साथ लगा दू।।"
 समय बहुत कम हए जाए के बहुत दूर जुबराज।
 ए लेल हए अनुरोध बेबस्था करु चले के आज।।
 बरको महाराजा के दरसन हमरा के करबा दू।
 रानी जी के हए आग्या हुनका से तनिक मिला दू।।"
 चतुर जुधाजित बना बहाना कहलन "पिता बीमार।
 आउर भरत - सत्रोहन करे गेलन आज सिकार।।
 ए लेल भेंट न होतओ, करऽ आज इहँई बिस्त्राम।
 भोरे हमरा चर के साथे तू करिहऽ प्रस्थान।।
 हम्मर चर जाके दीदी से समाचार बतलाएत।
 ताकी हुनका होए न चिन्ता, न्योतो लेले जाएत।।
 दुन्नो भाई के बोलबाबे ला अनुचर पेठबइले।
 अबतहीं हुनका हमहू पीठे पर अबध अबइले।।
 तू चल सब सन्देश सुनाबऽ जल्दी उहाँ अगारी।
 आ रहलन ह मामा साथे दुन्नो भाई पछारी।।
 बिबस दूत कएलक उहे जे कहलन मामा बात।
 बाकी समझ न आएल ओकरा, साथ दूत के बात।।
 ओन्नो जुधाजित बिस्वासी अप्पन चर बोलबएलन।
 आउर अजोध्या जाए ला कुछ रहस बचन समझएलन।।
 कहलन जाके दीदी के समझइहऽ तू सब बात।
 राज हाथ से निकलल जाइअ दिबस बनइअ रात।।
 केकय से कोसल तक तक सोचली एकछत्र हम राज।
 सपना रह जाएत सपने जदि मिलत राम के राज।।
 पति प्रेम में औसर चूकत जिनगी भर पछताएत।
 रानी माय बने के सपना मने में रह जाएत।।

आउर मंथरा से तू कहिहऽ उहमाँ कथी करइअ।
 ओकरा अच्छइत हमरा भगिना के हक मारल जाइअ।।
 एही ला भेजले रही ओकरा दीदी के साथ।
 उहाँ बइठ कुब्बर देखलावे धरे हाथ पर हाथ।।
 बनल मंतरा से उ मंथरा खरहा भेलक कछुआ।
 अगुआई ला भेजली उहमाँ जा के बनलक पछुआ।।
 सउतिन बाला घर में देली जब बहिन के हाथ।
 तब कुच्छो सोचिए के बरली प्रौढ़ अबध नरनाथ।।
 भेल सोंच बेकार टूट के सपना गेल पिछारी।
 जे दिन भगिना के आसा में जलमल राम अगारी।।
 जा कहऽ अकिला फूआ से मारे कोनो मंतर।
 परे रंग में भंग लगावे अइसन कोनो तन्तर।।
 जइसे मिले मगर गद्दी भरते के मीले चाही।
 सह न सकम जब देखम ओकरा रघुबर के परछाँही।।
 उ निरीह भोला-भाला हए राम-रंग में रंगल।
 न हित आ अनहित समझइअ न सत्ता के दंगल।।
 ए लेल ओकरा बिना बतएले कोनो जुगुत लगाबऽ।
 साँप मरे लाठी न टूटे अइसन अकिल भिराबऽ।।

पहुँचल दूत अजोध्या मिललक जा चुप्पे कुबजा से।
 राजकुँअर के सब मंसा बतलएलक उ ओकरा से।।
 कुबरी सब सुनके कहलक हम खोल आँख आ कान।
 आठो पहर रखइले हुनके हित-साधन पर ध्यान।।
 राजतिलक के समाचार से हम्मर नीन हराम।
 एक्के बात सोंचइले कइसे बिगर जाए इ काम।।
 हानि - लाभ समझा रानी के रसता पर लइली ह।
 आउर सउतिआ डाह हृदय में ओकरा धनकइली ह।।
 दे के द्वेस खटाई फारली ह हम मन के दूध।
 अब न पहिले लेखा पएबऽ तू रानी के सूध।।
 चलऽ ओकरा दुन्नो मिलके फेरू ठोक बजाऊ।
 मांगे उ अप्पन हक एक्कर जुक्ति ठोस बताऊ।।

केकई लग दुन्नो आके सब समाचार बतलएलन।
 “आ रहलन ह मामा के संग भरत झूठ बतलएलन।।
 एकरा बाद घुमा के कहलन भाई के सन्देश।
 कोनो मन्त्र लगाऊ जे से भगिना बने नरेस।।”
 सुनके भेल मौन केकई चिन्ता में मन डूबल।
 साँप-छुछुन्दर के गति भेलक राह न कोनो सूझल।।
 कहलक “कइसे मरजादा के पथ में सूल बिछाऊ।
 बरका के अच्छइत छोटका ला राजतिलक सजबाऊ।।
 एक बेर टूटत मरजादा अन्त कहाँ पर जाएत।
 की कहतक सब लोग अजोध्या के न बात सोहाएत।।
 की सोंचतन राजा, हम कइली एकरा एतना प्यार।
 बदला में हमरा के अइसन दे रहलक उपहार।।
 पता न की बीतत हुनका पर कइसन लागत आग।
 कहँऊ क्रोध में आके उ देतन हमरे के त्याग।
 राम बिनय के मूरत कहिओ न सउतेला लागल।
 गोदी में बइठे पर भरते लेखा ममता जागल।।
 बिन अपराध छीन के हक हम लीऊ कइसे पाप।
 न इ हमरा से न होएत ए में भारी ताप।।”
 कहलक कुबरी “जब राजा बन राम निरादर करतओ।
 राजकाज में तोहर कोनो हाथ - पाथ न रहतओ।।
 तब राजा के साथे जंगल में संन्यासी बनिहऽ।
 कन्द मूल फल खाके तू जीवन अनमोल बितइहऽ।।
 दस दिन के रगराई में रानोपन जएबऽ भूल।
 इहमाँ रहबऽ त छाती पर सउतिन दरतओ मुँग।।
 तब रीति-नीति, मरजादा कुच्छो काम न अतओ।
 रानीमाय बने से सपना मन में घुट के मरतओ।।
 एक घरी के मोह - बिबसता, जीवन भर पछतएबऽ।
 कइसे भाग भरोसे अत्ती गो जीवन ले जएबऽ।।
 ए लेल मानऽ बात भरत ला माँगऽ नृप से राज।
 कोन समय ला रखले हतऽ दू-दू गो बर साज।।
 एक बेर भाबुकता छोरऽ मन के करा बनाबऽ।
 जीवन ठोस जमीन, पैर एकरे पर तनिक जमाबऽ।।

कीट-पतंग पसु-पंछीओ अप्पन भला तकइअ।
 अपना मुँह के कौर न दोसरा ला उ इहाँ छोरइअ।।
 आप भला त जग सुन्दर, सुत्थर आ भला लगइअ।
 दीन, हीन, निरधन ओरी कुत्तो न घूम तकइअ।।
 साधु, संन्यासी जे तप के बल पर फुच्च रहइअ।
 उहो रोटी पानी ला गिरहस्थे ओर तकइह।।
 मांग-चांग आ छीन-छोर, इ दुनिया के बेहवार।
 छीन न सककऽ त तू मांगऽ देबी हाथ पसार।।”
 चर कहलक “हमरो दृष्टि में इहे उचित लगइअ।
 समझदार पहिले अपने घर में दीपक जरबइअ।।
 मंगले बिना त बच्चो न माई से दूध पबइअ।
 आउर सीधा अँगुरी से त घीउओ न निकलइअ।।
 ए लेल औसर हए अप्पन करतब तनिका देखलाऊ।
 हए बरदान धरोहर ओ में राज भरत ला पाऊ।।”
 कुछ नारीगत दुरबलता आ कुछ सत्ता के लोभ।
 कुछ कुबरी के बहकावे से रानी भेल अबोध।।
 सील नेह मरजादा पर स्वारथ के कोहरा लागल।
 कल्पित दुख के भए से हुनकर छाती काँपे लागल।।
 कुटिल कूबरी के कर में गिरबी रखलन सब ग्यान।
 ओकरे पाछे चले में समझे लगलन कल्यान।।
 कहलन “हमरा के तू दुन्नो मिलके राह बताबऽ।
 कइसे मांगू राज भरत ला हमरा के समझाबऽ।।
 कुबरी कहलक पहिले जाके लेलऽ तू खटबास।
 एक्कर समाचार ले जाएम हम राजा के पास।।
 उ अएतन दउरल हुनका से पहिले मान करइहऽ।
 जब मुट्ठी में आ जत्थुन हुनका से सत करबइहऽ।।
 एकरा बाद भरत ला गद्दी पहिला बर में मंगिहऽ।
 आउर राम बनबास तू हुनका से दोसर बर कहिहऽ।।
 तापस भेस बना के रघुबर दंडक बन में जाथ।
 चउदह बरस उहँई रह के उ कंद मूल फल खाथ।।”
 केकई कहलक “ए सब के मतलब हमरा समझाबऽ।
 तपसी भेस, कंद - मूल - फल के रहस्य बतलाबऽ।।”

कुबरी कहलक "सुरुज के गति जोतिस के अनुसार।
 दैनिक आ बारसिक एही से निरदेसित संसार।।
 दैनिक गति में बारह रासि में रबि अयन करइअ।
 दछिनाएन, उतराएन दूगो बारसिक गति कहबइअ।।
 एकरा जोरे से रबि के कुल चउदह अयन बनइअ।
 एही चौदह संख्या से रबि कुल निरदेसित होइअ।।
 जेतना होइअ काम ओ सब्भे में चउदह के मान।
 लोकमान्य, एक्कर महिमा हए इहमाँ बेद समान।।
 लोक अनुस्रुति, लोक चलन आ लोकमान्य बेहवार।
 चउदह बरस अगर सत्ता से बंचित राजकुमार।।
 रह जाए जंगल में रक्खे तपसी सन आचार।
 तब ओक्कर सत्ता पर से खंडित होइअ अधिकार।।
 इहमाँ रहत राम त जनता ओकरे पाछे जाएत।
 क्रोधी लछुमन ओकरे छाया उ बिद्रोह कराएत।।
 ए लेल ओकरा बाहर भेजे ला मांगऽ बनवास।
 आउर हक खंडित करे ला तापस - जीवन - वास।।
 अगर दु - चार बरिस ला मंगबऽ रघुबर ला बनबास।
 आज न कल इ राज अबध के जाएत ओकरे पास।।
 ए लेल मांगऽ तू अइसन चउदह बरसा बनबास।
 जे से सत्ता लौट न जाए कहिओ ओकरा पास।।
 ए अबधि में लोग अबध के भूलत ओक्कर नाम।
 अएलो पर सत्ता बिहीन उ मारल फिरतक राम।।
 जनता के सुभाब सत्ता के आगे हाथ जोरइअ।
 मन में कुच्छो रहे, न डर से उ बिद्रोह करइअ।।
 जादे लोग चाहइअ दीऊ पीठ हबा के ओरी।
 जान बूझ के सत्ता से टकराऊ न बरजोरी।।
 राम न रहतक राजपलट के भागल रहतक संका।
 लर के राज बचाबे अइसन भरत न हए रन बंका।।
 ए लेल हर हालत में रघुबर के बनबास पेठाबऽ।
 रहे बाँस न बाजे बँसुली अइसन जुगुत लगाबऽ।।
 कुब्जा के सब बात जुक्ति - संगत केकई के लागल।
 रीति-नीति, नैतिकता ला सब ममता मन से भागल।।

मन के करा बना पेन्हलक निर्दयता - कबच कठोर।
 बान्ह - छान के बन्दी कएलक कोमलता के गोर।।
 तुरत उतार बस्त्र आ गहना सादा भेस बनएलक।
 कोप भवन में जाके बइठल आउर मुँह लटकएलक।।
 ओन्ने कुबरी जाके कहलक राजा से सब हाल।
 “पता न कहेना छोटकी रानी परल हतन बेहाल।।
 भारी दुख से दुखी परल हथ कोप भवन में जाके।
 हमरा से देखल न गेलक, कहली चिन्ता आके।।”
 सुन के राजा दउरल अएलन चिन्तित आ बेहाल।
 परल कहाँ से आके बाधा उत्सव के सुभ काल।।
 कोप भवन में जाके पुछलन “सुमुखि कहू की भेलक?
 कोन बात ला अपने कोपित, कथी कम्मी भेलक?
 के दुख देलक कहू हमरा अखनी देइले दंड।
 स्वर्ग जीत के लाबे ला उठबइले हम कोदंड।।
 हम अनुरोध करइले देवी तू मत मुँह फुलाबऽ।
 तारा तोर लबइले तू तनिका मुसका के मांगऽ।।”
 एकरा बाद प्यार से चहलन सोहराबे ला बाल।
 आउर हाथ में लेबे चहलन हुनकर हाथ मृनाल।।
 झटक हाथ, सिर के झटकारइत केकई करबट घुमलन।
 आउर विस बरसाबे ला उ सोना सन मुँह खोललन।।
 “झूठ - मूठ के प्रीत देखा के हमरा मत बहलाऊ।
 जोन काम में लागल हती ऊहे करे जाऊ।।
 हमर फूटल भाग कि ए सउतिनिआ घर में अइली।
 मुँह से प्रेम क्रिया से धोखा सब दिन इहमाँ पइली।।
 खेल प्राण पर महासमर में जेक्कर रच्छा कइली।
 ओ प्रियतम से कहिओ न सम्मान क्रिया में पइली।।”
 नृप कहलन “हे प्रिया न दसरथ दूगो बात करइअ।
 केतना प्यार करइले तोहरा, हमरे हृदय जनइअ।।
 अनजाने कोनो गलती भेलक त छमा मंगइले।
 जे से तू प्रसन्न होअऽ ऊहे उपचार करइले।।”
 “रहू - रहू भर गेल पेट सुन चिक्कन - चिक्कन बात।
 हमरा हो गेल ग्यात कि कतना हए हमर औकात।।”

“देबी ब्यंग, बुझौअल से तू हमरा न तरपावऽ ।
 अपना हालत से हमरा के अब मत बिकल बनावऽ ।।
 तोहरा सुन्दर मुँह पर तनिको कोप न सोभा देइअ ।
 सहज मधुर तोहर जीवन खटबास बरा खटकइअ ।।”
 केकई कहलक “आज न जादू चलत बात के नाथ ।
 आज हृदय बन्दी, न देतक पहिले लेखा साथ ।।
 आज न टूटत कोप भवन के हमर इ खटबास ।
 आज न अमरीतो से बुझतक हमर प्राण पिआस ।।”
 नृप हँस के कहलन “तोहरा के निश्चय आज मनाएम ।
 तोरा प्रेम परीच्छा में हम अप्पन प्राण चढ़ाएम ।।
 जे तोहरा मन में हए औकर आज गाँठ तू खोलऽ ।
 बोलऽ-बोलऽ सुमुखि आज तू हँसके तनिका बोलऽ ।।”
 एही तरह से मान मनउअल बहुत देर करबाके ।
 आखिर केकई मुँह खोललक राजा से सत करबा के ।।
 “असुर जुद्ध के बेरी देली हमरा जे बरदान ।
 अबले रक्खल रहल धरोहर आज चहइले दान ।।”
 “हमरा हए इआद तू लेलऽ हए तोहर जे थाती ।
 मांगऽ अभी जुरा देइले हम दे के तोहर छाती ।।
 हम रघुवंसी बचन न हारम कुच्छो मांगऽ दान ।
 बिना हिचक अरपित हम करम तोहरा कर में प्राण ।।”
 “अच्छा त, पहिला बर में प्रिय भरत बनथ जुबराज ।
 दोसर बर में राम जाथ जंगल के ओरी आज ।।
 दंडक बन में जाके करथ चउदह बरस निबास ।
 कंद मूल फल खाके रहथ ले तापस संन्यास ।।”
 बर सुनके राजा केकई के मुँह तकते रह गेलन ।
 बकझर लागल उ पत्थर के मुरुत अइसन भेलन ।।
 अइसन बर मंगतन केकई बिस्वास न हुनका भेल ।
 सोचलन ई परिहास हए साइत जाँचे के लेल ।।
 हँसइत पुछलन “सांचो हए बर कि परिहास करइछऽ ।
 बचन बीरता देखे ला हमरा के आज जँचइछऽ ।।”
 “देखू एही ला हम पहिले मुँह न खोलइत रही ।
 साँच बात परिहास जे समझे ओकरा के की कही !”

न होइअ बिस्वास त लौटा दू हम्मर बरदान ।
 अन्हरा के आगे रोएला में दीहा के अपमान ।।”
 अब भेलक बिस्वास नृपति के सच बरदान मंगइअ ।
 राज भरत ला आउर रघुबर ला बनबास मंगइअ ।।
 सोँचते धक्का लागल मन पर आहत भेलक प्रान ।
 मुरछा अइसन लागल छन भर बिसर गेल सब ग्यान ।।
 बाकी कके होस उ लगलन केकई के समझावे ।
 लोक, बेद, मरजादा, नीति, हानि - लाभ समझावे ।।
 कहलन देवी खुसी - खुसी हम राज भरत के देइले ।
 बाकी कोन दोस रघुबर के जे बनबास मंगइले !
 हम त राजनीति पर चलके देली ओकरा राज ।
 अपने पहिले मंगती त भरते ला सजती साज ।।
 हमरा मन में भाओ न दोसर, कपट न कोनो कइली ।
 जे दिन भेलक बात तिलक के ओ दिन काहे न मंगली ।।
 ए से जनली अपने के मत हए हमरा अनुकूल ।
 पता न कइसे आज बात भेलक अइसन प्रतिकूल ।।
 खैर, न एमें मीन - मेख देवी हम कोई करइले ।
 बस खाली रघुबर ला किरपा तनिका आज मंगइले ।।
 राम बिना हम जलबिहीन मछरी अइसन हो जाएम ।
 हाय बुड़ारी में हमरा तरपा अपने की पाएम ?”
 मगर अडिग अपना हठ पर केकई न कुच्छे सुनलक ।
 “खाएम त गेहूम न त रहम हम एहूम” कहलक ।।
 “न देवे के ताकत हए त बर हम्मर लौटा के ।
 रहू राम - लखन के साथे बरकी के घर जाके ।।
 बाकी हम न छोरम, अपने पर अभिजोग लगाएम ।
 बचन - भंग अपराध सभासद के सम्मुख ले जाएम ।।
 ए कलंक के टीका अपने के चरित्र पर लागत ।
 अपने के कारण रघुकुल मरजाद बचन के त्यागत ।।”
 सुन चिन्ता से पीरित नृप के हालत पातर भेलक ।
 एन्रै कुँआ ओन्ने खाई समझ साथ तज देलक ।।
 स्वारथ के ई रूप भयानक हुनका रहे न परिचित ।
 जेकरा देली प्यार उ देतक अइसन पीरा अनुचित ।।

कोप भवन हुनका ला हर पल भारी होए लागल ।
 छात्र तेज के सिखा प्रान में आखिर भक से जागल ।।
 कहलन "रानी बचन न हारम चाहे जाएत प्रान ।
 पुत्र मोह में कुल मरजादा के न करम अपमान ।।"
 एतना कह उ डगमग पग से चलके बाहर अएलन ।
 गुरुबर के आस्रम ले चलऽ अनुचर से उ कहलन ।।
 "जइसन आग्या" कह अनुचर झट सारथी के बोलएलक ।
 आउर सहारा दे के नृप के उ रथ पर चढ़बएलक ।।
 आस्रम के लग रथ रुकलक नृप गेलन गुरु के पास ।
 सिसक-सिसक सब ब्यथा सुनएलन होके बहुत निरास ।।
 अबधपति के दसा देख भर आएल गुरु के आँख ।
 राजहंस जइसे तरपे खो अप्पन दुन्नो पाँख ।।
 अति सनेह से उठा गुरु हुनका के हृदय लगएलन ।
 आउर कोमल कर से हुनका के सोहराबे लगलन ।।
 टूटल बान्ह फफक के राजा आउरो लगलन काने ।
 "राम बिना हमरा जीवन के गुरुबर की हए माने ।।
 तिरिआ हठ आ सुत सनेह में हम्मर राह भुलाएल ।
 कइसे बतलाऊ गुरुबर केतना हम्मर मन घाएल ।।
 जएतन राम अगर बन त हम जाएम हुनके साथ ।
 न त प्रान तेआगम निश्चित हे रबिकुल के माथ ।।"
 पुचकारइ हुनका के गुरुबर अपना लग बइठएलन ।
 आउर कोमल बानी में हुनका के तब समझएलन ।।
 "राजन अपने महाबीर देबासुर समर बिजेता ।
 धीरज, धरम, बीरता जस में नृप समाज के नेता ।।
 सिबि सन अपने दानबीर आ रघु समान निरलोभ ।
 नृप दिलीप सन संकट में कहिओ न मन में छोभ ।।
 प्रभु देलन सुत चार एक से एक सुभग बलसाली ।
 जेकरा कीरती से बढ़लक ह अपने के मुँह लाली ।।
 धन्न भाग अपने के कुल में पैदा भेलन राम ।
 जीवन के सब सुख पइली आ सार्थक भेलक नाम ।।
 अपने अइसन मुख त राजन केऊ - केऊ पबइअ ।
 अपनही अइसन दुनिया में भाग्यवान कहबइअ ।।

दुख हए सब कुछ पाके अपने पइली न सन्तोस ।
 चउथोपन में लोभ, मोह से भरल हृदय के कोस ।।
 देली बचन अगर त छत्री अइसन आज निभाऊ ।
 दू बर कथी हए राजन अपने सौ बचन निभाऊ ।।
 राम न अपने के बेटा उ जग के पूत, सपूत ।
 अबध न हुनकर सीमा उ हथ सील सक्ति के दूत ।।
 चाहे राजभवन में रहथ चाहे उ जंगल में ।
 हुनकर जीवन रहत समरपित दुनिया के मंगल में ।।
 तापस जीवन जीअथ चाहे रहथ राजा बन के ।।
 कुस कंटक पत्थर बनतक हुनका ला सेज सुमन के ।।
 त्याग तपस्या - सर में खीलल नीलकमल रघुनाथ ।
 अपने आप झुकत हुनका आगे दुनिया के माथ ।।
 ए लेल अपने राज भरत के देके बचन निभाऊ ।
 रघुबर के चिन्ता अपना मन से अब दूर भगाऊ ।।
 पुत्र मोह में बचन - भंग से निन्दा होएत जग में ।
 कोन मोह घेरलक जे अपने कातर एतना मन में ।।
 अपने बइठू इहाँ राम के हम एतहीं बोलबइले ।
 अपने के संकट के छन में हम उपचार करइले ।।
 देखम अपने बिना हिचक उ मानतन बचन पिता के ।
 राज तुच्छ केतना हुनका ला देखम नैन जुरा के ।।”
 एतना कह गुरु अपना चर से रघुबर के बोलबएलन ।।
 गुरु आग्या सुन राम तुरत गुरु आस्रम में चल अएलन ।।
 उहमाँ देख पिता के हालत चिन्ता में पर गेलन ।
 कहेना भेल अचानक अइसन बात समझ न पएलन ।।
 कहलन “गुरुबर सेवा में कहेला हमरा बोलबइली ।
 कहेना दुखी उदास पिताजी समझ न तनिको पइली ।।”
 गुरु कहलन हे रघुकुलभूसन हए पुरान इ बात ।
 देबासुर संग्राम भेआनक होएल रहे तात !
 प्रबल असुर से सुर समाज जब रन में पार न पएलन ।
 तब सहजोग करे ला सुरपति दशरथ के बोलबएलन ।।
 हुनका साथे छोटकी माई गेलन रन में राम ।
 घाएल नृप के प्रान बचावे ला कएलन संग्राम ।।

दू-दू बेरी हुनका कौसल से बचलक नृप - प्रान ।
 हुनका दृष्टि में बढ़ गेलक केकई के सम्मान ।।
 अति कृतग्य नृप कहलन "माँगऽ तू इच्छित बरदान ।
 तुच्छ लगइअ तोरा देबे में इ हम्मर प्रान ।।"
 लेलन न बरदान केकई ओकरा थाती रखलन ।
 जब इच्छा होएत त मांगब उ नृपवर से कहलन ।।
 पा के औसर आज नृपति से मंगलन उ बरदान ।
 हए बरदान कठिन एही से बेकल नृप के प्रान ।।"
 "हए कथी बरदान देब ! हम जाने लेल चहइले ।
 हमरा से पूरा होएत त अबहीं पुरन करइले ।।
 हए धिक्कार पुत्र के सम्मुख पाबे पिता कलेस ।
 दुख में छांह बने ला देबे जे न जीवन सेस ।।"
 "साधु राम! तोहरा लाइक हए तोहर बात - बिचार ।
 तू सांचो कुल दीपक तोहरा से रघुकुल उजिआर ।।
 "रानी मंगलन पहिला बर में भरत बनथ अबधेस ।
 मिले अबध के मुकुट न पाबथ कोनो दुख कलेस ।।
 दोसर बर, तू तापस बनके चउदह बरस उदास ।
 कंद, मूल, फल खाके करऽ दंडक बन में बास ।।
 राज भरत के देबे में हए नृप के तनिक न दुबिधा ।
 बाकी तोरा बन भेजे में हिनका बरा असुबिधा ।।
 तोरा मालूम हए, तोरे में हिनकर प्रान बसइअ ।
 ए लेल तोरा बन भेजे में हिनकर प्रान कँपइअ ।।
 बचनबद्ध नृप बचन भंग के निन्दा से भयभीत ।
 दुबिधा में ब्याकुल हतन, उमरइअ रह - रह प्रीत ।।
 एही ला नृप सुखल पीअर, राह न कोई सुझइअ ।
 निरपराध सुत के बन भेजे ला न हृदय कहइअ ।।"
 सुन के राम एक छन सोचलन कहलन हे प्रिय तात !
 जे ला अपने एतना ब्याकुल उ हए अदना बात ।।
 की हए राज अजोध्या के, कथी धरती के बात ।
 अपने के सुख ला सुरपुर पर मार सकइले लात ।।
 अपने महावीर, दानी, जग में उज्वल इतिहास ।
 त्याग बिभूसन हए रघुकुल के जगमग अमल प्रकास ।।

देलन पितर दिलीप गाय ला अपना तन के दान ।
 आउर भगीरथ गंगा लाके कएलन जन - कल्याण ।।
 ढकना - कुरबा छोर रघु कर देलन सब कुछ दान ।
 ओकरो बाद कौत्स हुनका से पएलन बांछित मान ।।
 एही से जोती के दाता भास्कर हथ कुल देओता ।
 दुनिया में करतक के एकर कोन बात में समता ।।
 अइसन कुल के पुरुष सिरोमनि होके अपने तात ।
 पुत्र मोह में कहइत हती कातर अइसन बात ।।
 राज भरत पएतन एकरा से अन्तर कोन परइअ ।।
 बरका या छोटका अपनहीं के सुत राज पबइअ ।।
 राज भरत पएतन हमरा ला हए इ सुख के बात ।
 सपथ माई के छोभ न तनिको हमरा मन में तात ।।
 अपने के परतिष्ठा ला हम खुसी - खुसी बन जाएम ।
 चउदह साल तपस्वी बन के जीवन उहाँ बिताएम ।।
 सुख होएत हमरा, जेकरा से इ मानुस तन पइली ।
 ओकरे आग्या पालन में एकरा के सार्थक कइली ।।
 रघुकुल में भेलक न कहिओ सत्ता लेल लराई ।
 अपनापन के डोरी में बान्हल रहलन सब भाई ।।
 पिता - वचन के रक्षा आ माता के मन सन्तोस ।
 छोट भाई के राजतिलक पापीए मानतक रोस ।।
 अपने के सम्मान - सुरक्षा हए हमरा ला मेवा ।
 अपने के आग्या पालन जग में सरबोत्तम सेवा ।।”
 एतना कहइत राम पिता के गोर छुए झुक गेलन ।
 बिकल महीप उठा के हुनका पाँजा में भर लेलन ।।
 बेटा राम! प्रानधन हमर !! कहइत बानी रूँधल ।
 आगे के सब सब बिकल हुनका आँसू में डूबल ।।
 तरह - तरह से हुनका के समझावे लगलन राम ।
 बाकी देख पिता के हालत बुझलन बिधि हथ बाम ।।
 “अवइत हती हम तनिका में” कहके रघुवर उठलन ।
 मन में कुछ निस्वय करइत अपना माई कन गेलन ।।
 माता नेहा - सोना के करइत रहथ हरि के पूजा ।
 अपना आउर पराया सब ला एके भाओ न दूजा ।।

संख चक्र आ गदा पद्मधर सोभित हरि के रूप ।
 परसादी ला फल आ मेवा, मह - मह करइत धूप ।।
 खुलल केस परिधान रेसमी सीधा - सादा भेस ।
 सहज प्रसन्न मनोहर मुँह पर तनिक न चिन्ता क्लेश ।।
 जा के रघुबर भक्ति भाव से हरि के सीस झुकएलन ।
 ओकरा बाद माई के पद में सादर माथ लमएलन ।।
 “जीअऽ बत्स, सुखी रहऽ नारायन मंगल करथ ।
 जगदीस्वर प्रभु सोक, अमंगल किरपा क के हरथ ।।”
 पूजा भेल खतम परसादी ले के चललन राम ।
 माई के पाछे बछरा लेका सुन्दर सुखधाम ।।
 अन्न ग्रहन कएलन माई के संग प्रसन्न आ सान्त ।
 लक्षित होए न देलन तनिको केतना सिन्धु असान्त ।।
 असथिर भेला पर कहलन “माई कुछ कहे चहइले ।
 कुछ दिन जंगल में रहे ला हम आदेस मंगइले ।।”
 कौसिल्या मुँह ताके लगलन समझ न आएल बात ।
 हए बिहान अभिसेक कहाँ से उठलक बन के बात ।।
 कहलन “पुत्र बुझउअल हमरा के मत व्यर्थ बुजाबऽ ।
 कहेला जंगल में तू बसबऽ हमरा के समझाबऽ ।।”
 कहलन राम “बिकल हथ माई राते से नरनाथ ।
 कुछ बिचित्र दुखमय घटना घटलक ह हुनका साथ ।।
 एही लेल अरन्यबास के आग्या माई चहइले ।
 बिस्तारित क के अपने के हम सब बात कहइले ।।
 एकरा बाद बतएलन रघुबर दुन्नो बर के बात ।
 पिता बचन - रक्षा ला बन जाए के कहलन बात ।।
 सुन के कौसिल्या के लागल धरती घूम रहल हए ।
 घर में आग लगल अंगना में बछरा--गाए बन्हल हए ।।
 छन भर मुँह से बोल न फूटल जइसे संग्या भागल ।
 हाए दइब! इ हरिअर बन में आग कहाँ से लागल ।।
 कातर स्वर में रोएलन “ईस्वर कहेला कोपित भेलन !
 राजदेखा जंगल भेजे के कोन चाल चल देलन ?
 केकर कथी बिगारली, भेलक कोन पाप हे नाथ !
 गला खुसी के घोंटे ला इ बढ़ल कहाँ से हाथ ?

राजपाट ला कभी न सोचली बहिन केकई के मानली ।
 राम-भरत में भेद न कइली ओकरा सौत न बुझली ।।
 राज लेबे के इच्छा हइ त ले लो भरत कुँअर ला ।
 बाकी हमरा सुत के दंडित कर रहलक ऊ कहेला ।।”
 “माई एकरा दंड न कहऽ, आग्या पूज्य पिता के ।
 एकरा में इच्छा मीलल हए छोटकी प्रिय माता के ।।”
 “सम्मति, इच्छा हम न जनइले हम्मर हए आदेस ।
 बिन कारन अधिकार छोर मत बन के सहऽ कलेस ।।”
 “राजा के आग्या पालन में बनत न ममता बाधा ।
 आउर हमरा पर छोटकी माई के हक हए आधा ।।”
 “बरा तपस्या से सुत पइली तोहरा सन सन्तान ।
 हमरा के तरपा के मत जा बन में सील - निधान ।।
 सुत पर माता के अथाह सागर सन होइअ ममता ।
 जग में अइसन भाव न कोनो जेसे ओकर समता ।।
 सुत पर माता के पहिला हक जग में मानल जाइअ ।
 ओकरे बाद पिता चाहे केकरो अधिकार बनइअ ।।”
 “माई राजा के आग्या में हक के प्रस्न कहाँ हए ?
 निष्ठावान प्रजा ला इहे उत्तम धरम इहाँ हए !”
 “अगर इहे मत तोहर त हमरो ले चलऽ साथ ।
 तोरा बिना न जीवन हम्मर रहतक हे रघुनाथ ।।
 एतना कहइत मुरछित हो कौसिल्या भू पर गिरलन ।
 कथी करू, कइसे समझाऊ समझ न रघुवर पएलन ।
 गोदी में माथा रख माई के कएलन उपचार ।
 ऊठे लागल हुनका मन में भाँती - भाँती विचार ।।
 बाकी दृढ़ क के मन के उ माई के समझएलन ।
 नीती के बदला भावुकता के उ जुगुत लगएलन ।।
 कहलन “माई बन न जाएम भारी अपजस लागत ।
 सत्ता लोभी, पापी कहके दुनिया हमरा त्यागत ।।
 हम बाहर में नजर चोराएम हीन भाओ से ग्रस्त ।
 तू सुत के निन्दा से रहबऽ हरदम घर में त्रस्त ।।
 पछतएबऽ बेकारे सुत के रोकली बन जाए से ।
 जस के सूरज के ढंक देली ममता के बादल से ।।

नीति सम्मत बात कि जाले जीवित पति रहइअ।
 पतनी ओक्कर आसित उहे ओक्कर भरन करइअ।।
 पति के न रहले पर नारी सुत के छाँह गहइअ।
 जे न चलइअ ए पथ पर उ नारी नरक पवइअ।।
 बाबूजी के अछइत कइसे तोरा बन ले जाऊ।
 तोरा ता तिरलोक इहे घर, कइसे माँ समझाऊ।।
 ए लेल तू एतहीं बइठऽ हमरा के द आसीस।
 ओही बल पर काट लेम बन में दस - चार बरीस।।
 तोहर ममता सागर अइसन ओ में ज्वार उठइअ।
 बाकी उ भावुकता में मरजाद न भंग करइअ।।
 तू छत्रानी सब दिन कएलऽ जब तप पूजा त्याग।
 कभी न लर के लेबे चहलऽ अप्पन स्वारथ भाग।।
 ममता के बस में होके मत पंथ त्याग के छोरेऽ।
 इहे स्नेह सूत्र संकट के, एकरा के तू जोरेऽ।।”
 जुगुत राम के तत्छन कएलक मन्तर लेखा काम।
 सूतल तेज कोसिल्या के जागल मुँह पर अभिराम।।
 कहलन “बेटा तोरा अपजस के न बनब हम कारन।
 भाबुकता के बलि चढ़ा के एक्कर करम निवारन।
 खुसी - खुसी तू बन जा बेटा हम पीरा सह लेम।
 कौसिल्या - सुत लोभी पापी, जग के कहे न देम।।”
 माता के बानी से बढ़लक रघुबर के बिस्वास।
 गोर लाग माई के चललन उ सीता के पास।।
 एतने में लछुमन आ गेलन क्रोधित बिकल उदास।
 “भइआ हमहू साथ चलम बन रहम तोहरे पास।।
 राजहीन तोहरा करे के इ लमहर खडजंत्र।
 छोटकी माई के चतुराई बनल मंथरा जन्त्र।।
 परम स्वारथी उ अपना के बुद्धिमान समझइअ।
 क्रूर हृदय माया ममता से ओकरा बैर रहइअ।।
 वचनबद्धता नाग फाँस बन बान्ह रहल रघुकुल के।
 राजनीति सत्ता के ए में खेल रहल हए खुल के।।
 ए लेल सील छोर के अप्पन भीसन धनुस उठाबऽ।
 बचनबद्धता के बिसधर से कुल के त्रान दिलाबऽ।।

हए तोरा संकोच त तनिका द हमारा आदेस।
 राज करइले दखल बना के बन्दी अबध नरेस।।
 चला रहल हथ मंत्र जे भाई अपना ममहर जाके।
 आबे द हुनको बतलाएम छन में बन्दी बना के।।
 अबही छोटकी माई के हम जा बन्दी बनबइले।
 आउर एक लात में कूबरी के कुब्बर ढहबइले।।
 रघुकुल के मरजाद न टूटत तिरिआ हठ के आगे।
 परजा के अरमान न कुचलत छल स्वारथ के आगे।।
 आज करब बिद्रोह अजोध्या के जन देतन साथ।
 बाहू बल से राजमुकुट हम रक्खम तोहरा माथ।।”
 “बन्धु प्रान प्रिय, इ औसर हए न करे के क्रोध।
 राजद्रोह से आज न होएतक ए पीरा के सोध।।
 सोंचऽ केकरा के तू बन्हबऽ मरनासन्न पिता के?
 आउर बन्दी करबऽ निरमल गंगा सन माता के।।
 भरत राज ला छुद्र बनत इ तनिक न संभव तात।
 भला चांद से आग लगे के सुनलऽ कहिओ बात।।
 गद्दी ला भाई से लरबऽ दुनिआ सब दिन हँसतओ।
 बाप-माए के बन्दी करबऽ पाप भेआनक लगतओ।।
 त्याग मनुजता के पूँजी हए एकरे आज बचाएम।
 सत्ता ला भाई के लेहू हम न इहाँ बहाएम।।
 सत्ता कादो, भँइसी लेखा ए में न लपटाएम।
 लोभ मोह से ऊपर उठके पंकज - धरम निभाएम।।
 आज पिता के दुख पर चाही सीतल चन्दन लेप।
 हुनका रक्षा ला चाही सुभ धीरज धरम बिबेक।।
 पिता दुखी एतना कि हुनका देख बिकल हो जएबऽ।
 अपने आप दया जग जतओ भुलिओ क्रोध न लएबऽ।।
 ए लेल क्रोध द्रोह बिसराबऽ पीरा के सोहराबऽ।
 चारो ओर अन्हार ग्यान के दीपक आज जराबऽ।।
 तू एतहीं रहऽ रक्खऽ माई बाबू के ध्यान।
 मांग बिदा सीता से बन्धु आज करम प्रस्थान।।
 अएतन भरत त सादर करिहऽ सब मिल के अभिसेक।
 भाव अन्यथा अपना मन में तू न रखिबऽ नेक।।”

एतने में लछुमन के माई जान दुखद सब हाल।
 खोजइत दुन्नो के उ अएलन चिन्तित आ बेहाल।।
 कहलन रघुबर तोरा साथे लछुमन जंगल जाएत।
 तोहरा छाया, तोरे सेवा में सुख असली पाएत।।
 तोरा सेवा में हम बेटा, एक पुत्र अरपइले।
 अपना अँचरा के सब ममता तोरा सुख ला देइले।।
 सब दिन तोरा साथ रहल इ, तोरे साथे जाएत।
 सुख - दुख में सहभागी बनके तोहर ब्यथा मेटाएत।।
 कन्द मूल फल ला के देतओ थकबऽ गोर दबतओ।
 सुतला पर ले धनुस बान रच्छा ला पहरा देतओ।।
 जंगल के कुस - काँट बने तोहरा ला कोमल फूल।
 सबिता देब कुसल से रखथुन दुख होए निरमूल।।”
 लछुमन से कहलन “बेटा तू जा उरमिल के पास।
 ओकरा से तू मांग बिदा आबऽ भाई के पास।।
 एकरा बाद करऽ तइआरी चीज बतूस समेटऽ।
 जाए के पहिले माता कोसिल्या से तू भेंटऽ।।
 माता के आग्या लछुमन गेलन पतनी के पास।
 एन्ने भारी मन से चललन रघुबर सिया-निबास।।

गेलन लछुलन उरमिल कने लेले हृदय असान्त।
 कइसे बतलाऊ न रहलक कोसलपुर अब सान्त।।
 आखिर सोच समझ के अपना मन के असथिर कएलन।
 “हए एगो गंभीर बात” उ पतनी के समझएलन।।
 कहलन “देबी, भइआ साथे बन में जाए चहइले।
 भाई के सेवा ला अपने से आदेस मंगइले।।
 छोटकी माई देलन भइया के तपमय बनबास।
 माई के आदेस कि जाउ हम हुनकरा साथ।।”
 “इ की भेलक बात समझ में हमरा तनिक न आएल।
 उत्सव हए राज्याभिषेक के बन कहमाँ से आएल?
 लछुमन कथा सुना बतलएलन बर मांगे के बात।
 कइसे केकई के बर बनलक घोर अन्हरिआ रात।।

आगे कहलन देवी हमर हए सुभाओ अति उग्र।
 देख अनर्थ तुरत हो जाइले क्रोधित आउर ब्यग्र।।
 इहाँ रहम त कहिओ निश्चित मच जाएत उत्पात।
 राम बिना समझाएत के हमरा नीति के बात।।
 भाई केकई भाई भरत पर कहिओ बरसत क्रोध।
 भाईद्रोह के अपजस से के करतक हमरा रोध।।
 क्रोध करम माता पर, होएत पुत्र धरम के नास।
 राज कलह करतक ए घर के सुख - सान्ती के नास।।
 दोसर बात, अकेले कइसे भइआ रहतन बन में।
 सब दिन साथे रहली हुनका की सोंचतन उ मन में।।
 जेकरा सब दिन बन्धु सहोदर प्रान सखा सन बुझली।
 साथे खइली - पीली, साथे खेलली सुतली उठली।।
 उहे भाई समय परे पर साथ न हमर देलक।
 सुख के साथी बनलक बाकी दुख में साथ न भेलक।।
 बन में कइसे रहतन कथी खएतन कहमाँ सुततन।
 भाबुक छन में केकरा साथे उ कुच्छो बतिअएतन।।
 ए लेल हमरा उचित लगइअ साथ जाए के चाही।
 तोहरा से आदेस मंगइले तू मत करऽ मनाही।।
 जेतना हमरा पर हए देवी भइआ के अधिकार।
 ओतने सीता भाभी पर हए तोहर निरमल प्यार।।
 ए लेल भाभी के दुख बाँटे ला तू आगे आवऽ।
 आ भाई के दुख बाँटे ला हमरा आगे लावऽ।।
 हमरा दुन्नो पर भइआ भाभी के उत्कट प्यार।
 आधा - आधा बाँट निभाएम हम दुन्नो जन प्यार।।
 नेह - दीप के छाया में तू चउदह बरस बितइहऽ।
 बिरह अन्हरिया से तू देवी एकरे बल पर लरिहऽ।।”
 उरमिल मुँह ताके लगलिन, आ बेकल भेलक प्रान।
 चउदह बरस बिजोग, हृदय पर गिरलक वज्र समान।।
 गेल डबडबा पंकज अइसन हुनकर सुन्दर आँख।
 तन काँपल छन भर जइसे घायल पंछी के पाँख।।
 प्रिय - नैन में देख जाचना भरल आँख ममता से।
 जगल बिबेक, तेज सब जागल, निस्वय के छमता से।।

कहलन प्रियतम भिन्न न तोहरा से हम्मर अस्तित्व।
 आग्या मान सहब दुख भारी रक्खम धरम सतीत्व।।
 खुसी-खुसी तू बन जा उरमिल मुँह पर आह न लाएत।
 तोरा लेल करम तप स्वामी, फेन कि औसर आएत।।
 चिन्ता मत करिहऽ हमरा ला, मत करिहऽ मन कातर।
 बस ले लीहऽ नाम कखनिओ जब मन होतओ पाँतर।।
 मन भुतलाएल रहतओ जब सेवा में लागल रहबऽ।
 हम्मर अतओ इआद रात में जब तू जागल रहबऽ।।
 अगर सती हम तपस्विनी त हम्मर तप बलबान।
 रक्षा करतओ, संकट हरतओ, करतओ ब्यथा-निदान।”
 कहइत - कहइत झुक के प्रिय के पद सादर छू लेलन।
 डबडब दू बूँद लोर आँख के, आँखे में पी गेलन।।
 लछुमन उठा लगएलन उर से चुमलन प्रिय के माथ।
 डाल करुन मुसकान पलट चललन जहमाँ रघुनाथ।।

ओन्ने सीता के कोठली में जब रघुनाएक अएलन।
 मलिन उदास लोर से मंडित मुँह सीता के पएलन।।
 पहिलहीं दासी से हुनका रहे बात सब ग्यात।।
 सोँच - सोँच ब्याकुल उ मन में कएलक दइब कुघात।।
 राम समझ गेलन सीता के हए मालूम इ बात।
 बचन निभावे के चिन्ता में ब्याकुल हतन तात।।
 बात बतावे ला खोजे लगलन भासा के राह।
 जे से बात बने आ मन में उठे न जादे दाह।।
 बाकी हुनका मुँह खोले के पहिलहीं बैदेही।
 कहलन अपने के पीरा मालूम हए प्रान - सनेही।।
 छोटकी माई के आग्या से मिललक ह बनबास।
 हमरा से आग्या मांगे अइली ह बिकल उदास।।
 ए में दुख - संकोच न स्वामी इ हए जस के राह।
 जे से घर - परिवार सुखी उ कभी न दुख के राह।।
 परतिष्ठा ला मानब दुनिया में सब कुछ अरजइअ।
 परतिष्ठे ला दुनिया में उ मानब देह धरइअ।।
 खुसी - खुसी बन चलू न एमें सोँचू कोनो बाधा।
 बाकी साथ चलू ले हमरो हम अपने के आधा।।

पति से अलग न पतनी ला जग में कोनो असथान।
 उ सुख - दुख के साथी सब में हए अधिकार समान।।”
 “इ कइसे होएतक देबी, इ नीतिहीन बिचार।
 केकरो दंड कस्ट केउ भोगे इ अनुचित आधार।।
 आउर अलाबे एकरा जंगल हए बिपत्ति के खान।
 ठीक न हए खाए पीए के सूते के न ठेकान।।
 तरह - तरह के हिंस्र जीव दिन - रात उहाँ बिचरइअ।
 आउर सुनइले नीच निसाचर मार मनुस के खाइअ।।
 जारा, गरमी, बरसा के परकोप अलग सतबइअ।
 कुस, काँटा, झंखार, झार जीवन के कठिन करइअ।।
 तू सुकमारी कइसे रहबऽ बन में कस्ट उठा के।
 राजमहल के रानी रहबऽ परनकुटी में जा के?
 न देबी, कुछ हो जाएत त हम सबदिन पछताएम।
 भाबुक निरनय पर बिचार के छाप कहाँ से पाएम।।
 तोरा बिना अजोध्या में माई कइसे क रहतन।
 तू रहबऽ त सुत - बिजोग के दुख में धीरज धरतन।।
 परम दुलरुआ तू पुतोह तोरे में हुनकर प्रान।
 तू न रहबऽ त उ कइसे रखतन अप्पन प्रान।।
 तोरे ससि मुख देख खिलइछन माई कुमुद समान।
 तोरे नेह गुँजइअ बन के हुनका मन में गान।।
 बाबूजी के आग्या - पालन हए हम्मर करतब्य।
 आ माई के सेवा तोहरो हए पाबन करतब्य।।
 बन में जएबऽ त देबी करतब्य बिमुख कहलएबऽ।
 माई के कुछ हो जाएत त जग में अपजस पएबऽ।।
 “नाथ न चिन्ता हमरा सुख के न जंगल के दुख के।
 न परिजन - पुरजन के चिन्ता न सासु के सुख के।।
 एक्के बात जनइले जे दिन नारी पति घर जाइअ।
 ओही दिन ओकरा ला जग में पति सरबस हो जाइअ।।
 माय - बाप जनमा के ओकरा दुख से बहुत पोसइअ।
 बाकी नारी ओकरो ममता सेनुर साथ तेजइअ।।
 अइसन हालत में ओकरा न सास - ससुर ला मोह।
 पति के छोर न केकरो ला ओकरा मन असली छोह।।

ओकर जीवन, प्राण - केन्द्र पति, बाकी सब बेमानी।
 पति के बिना सरोवर नारी जेकर सुखल पानी।।
 एकर पता लगइअ तब जब होइअ पति बिहीन।
 पीरा आ अपमान, उपेक्षा से उ होइअ दीन।।
 नइहर सासुर केउ न ओकरा देइअ नेह, सहारा।
 उ हो जाइअ नाओ न जेकरा मालूम नदी किनारा।।
 हए समाज के दोस कि पति से पतनी के सम्मान।
 पति बिहीन नारी दुनिया में सुखल पेंर समान।।
 नारी के पूजा में होइअ देब - पितर के बास।
 इ कहे के बात न एकरा पर जग के बिस्वास।।
 पति के छाँह हटइते नारी माटी मोल बनइअ।
 पति बिना सोना सन नारी पितर सन हो जाइअ।।
 ए लेल अपने जहाँ, उहाँ हमरा ला सब मंगल हए।
 अपने बिना अजोध्या हमरा ला भीसन जंगल हए।।
 अपने अगर चाहइले सीता जीबित रहे सनाथ।
 त हमरा के अपने साथे बन ले चलु रघुनाथ।।
 जइसे अपने रक्खम तइसे हम अपने संग रहम।
 अपने के इच्छा के पुतली हम स्वेच्छा से बनम।।
 मन, बानी आ किरिआ से हम अपने में लएमान।
 अपने के सेवा में खोएम हम अप्पन पहचान।।
 बनम न बोझ अभिन्न रहम झेलम सब सुख-दुख नाथ।
 जइसे हिम परबत पर गउरी साथे भोलानाथ।।”
 कहइत - कहइत कातर होके तकलन पति के ओरी।
 लागल करुना बान्ह रहल कोमल ममता के डोरी।।
 बहुत देर तक राम चुप्प सोचइत रहलन सब बात।
 समझ न पएलन कइसे सुलझत बन जाए के बात।।
 कहँऊ देतक प्राण सिया त दूना बत्था होएतक।
 हम जंगल में कुहकम आउर माई इहमाँ रोएतक।।
 आखिर कहलन “ठीक, चलऽ हमरे साथे बनबास।
 जे होएत से सहम रख के संभु पर बिस्वास।।
 पता न कोन गति में हमर भाग्यचक गतिसील।
 कोन मेघ बरसाएत हमरा जीवन पर नभ नील।।”

दुन्नो बेकती उठ उहमाँ से कौसल्या कन अएलन।
 सीता के अनुरोध दुखी मन से रघुबर बतलएलन।।
 माई कहलन “बेटा हमरा कुछ न तनिक बुझाइअ।
 दुख, निरासा, चिन्ता में मन हमर डुबल जाइअ।।
 उचित लगे से करऽ तू दुन्नो अपने गुनमान।
 हमरा हाथ न कुच्छो रक्षा करथुन हरि भगमान।।
 एतने में आ गेलन लछुमन ले के सब सामान।
 हाय दइब! लछुमनो! बोललन माई मरल समान।।
 हँ माई, भइआ के सेवा ला हमहू बन जाइले।
 माई से आदेस मिलल तोहरो आसीस चहइले।।
 कहइत - कहइत लछुमन छूलन कौसल्या के गोर।
 “जीअऽ” कहइत हुनका नैना में भर आएल लोर।।
 तीनो ले आसीस, बिदा चललन राजा के पास।
 तकइत रह गेलन कौसल्या पीरा - सुन्न, उदास।।

तीनो गुरु के आस्रम अएलन जहाँ अस्त अबधेस।
 सूतल उ पेटकुनिआ देले चिन्ता बिकल बिसेस।।
 पूज्य पिता के पद पर रखलन तीनो सादर माथ।
 “बन जाइले हम तीनो आग्या दीऊ अजोध्यानाथ।।”
 बिकल नृपति उठ बाँह पकर के कातर बिलखे लगलन।
 हाय पुत्र! तू नहिऐ मानलऽ, रो - रो के उ कहलन।।
 सीतो लछुमन के ले जाइछऽ बन में अपना साथ।
 केकरा असरे छोरले जाइछऽ हमरा के रघुनाथ।।
 कहलन राम “पिता अपने त्यागी तपसील उदार।
 धीरज - धन अपने के सरबस, छोरू सोंच बिचार।।
 आसीस दीउ बिदा खुसी से, सहू बीर सन पीरा।
 दुख से बिकल न खोऊ अपने बचन - बीरता - हीरा।।
 कुछ न बोललन नृप, सुमन्त्र के अपना पास बोलएलन।
 गुपचुप बानी में संकेते से हुनका समझएलन।।
 कहलन रघुबर- सीता के ले जा जंगल देखलाबऽ।
 बनबासी जीवन के दिनका अनुभव तनिक कराबऽ।।

हतन गुरु बसिष्ठ इहाँ हमरा धीरज बन्हवएतन।
 आउरो सचिव सभासद सब हमरा मन के बहलएतन।।
 सिर पर रख के हाथ बिदा तीनो के दसरथ कएलन।
 आउर साथे जाए ला सेबक सबके समझएलन।।
 बाकी हुनका जाइते मातर मन के बन्हन टूटल।
 हिचकी लेके रोए लगलन धार ब्यथा के फूटल।।
 बोलचाल भेल बन्द न लागे निम्नन केकरो बात।
 बदल गेल उज्जर दिन छन में करिआ कुचकुच रात।।
 राम - बिजोग रोग प्रानान्तक दृष्टि भेलक अन्ध।
 राम - राम रट औसधि के भेलक सब ताकत मन्द।।

फइलल समाचार फइलइअ जइसे बन में आग।
 परल रंग में भंग असुन्दर भेलक सुन्दर राग।
 जगह - जगह जुट जनससूह खुलके बतिआए लागल।
 केकई के करतब के निन्दा सबतर होए लागल।।
 केऊ कहे गलती राजा के, केऊ भरत कुँअर के।
 केऊ बिधि के दोस लगाबे, केऊ रोए हहर के।।
 केऊ कहे मंथरा कुटिल, रानी के मति बिगारलक।
 केऊ कहे रोए के मन त आँख में लकरी गरलक।।
 केऊ करे निन्दा नारी के बस में जे नर रहतन।
 बीच बुढ़ारी में दसरथ सन भारी दुरगत सहतन।।
 केऊ कहे जे बिना बिचारले देत बचन के दान।
 सुत बिजोग में पीरा सहतक उ अबधेस समान।।
 केऊ कहे रघुबर के साथे भेलक इ अन्याय।
 केऊ कहे जे बचन निभा के राजा कएलन न्याय।।
 केऊ कहे सब मिल के रोकऽ जाथ न बन रघुनाथ।
 राजघरम के छोर चलऽ अब हम सब हुनका साथ।।
 केऊ कहे मरजादा रघुकुल के हो गेलक अस्त।
 आगे अधिकारी के निरनय होएतक अस्त - ब्यस्त।।
 केऊ दुखी नृप के दुख से हुनकर पीरा सोहराबे।
 केऊ अजोध्या के बाउर दिन के संकेत बताबे।।

केऊ कहे राजा चाही हमरा रघुनाथ समान।
न त जन - बिद्रोह - आग से कोसल बनत मसान।।

राजभवन से निकल द्वार पर लछुमन सीता साथ।
अएलन सचिव गुरु के साथे धीर - वीर रघुनाथ।।
देख अथाह समुन्दर जन के हुनकर मन चकराएल।
कएलन उ अनुमान कि जनता के मन केतना घाएल।।
“महावीर जुबराज राम के जय” के उमरल नाद।
राम उठा के हाथ करे चहलन जन से सम्बाद।।
बाकी जन समूह के स्वर में डूबल हुनकर वात।
“जनमत के अपमान अगर जंगल जएतन रघुनाथ।।”
सबसे पहिले जगह बना के उ रथ पर जा चढ़लन।
ओकरा बाद लोग सब के उ बोला-बोला समझाएलन।।
परमप्रिय अपने सब हम्मर सुभचिन्तक आ मित्र।
भावुकता में बनली कहेना अपने आज अमित्र।।
सोंचू, मान नृपति के आग्या अगर न हम बन जाएम।
दुनिया भर में अपजस होएत हम लोभी कहलाएम।।
की इहे अपने के इच्छा, निन्दित होऊ जग में।
वचन - भंग के कारन बन के पाप उठाऊ जग में।।
राजभक्त परजा अपने राजाग्या के करु मान।
राजद्रोह से कभी न बढ़तक बन्धु! देस के मान।।
सान्त्नी आ सदभावे से कटतक इ दुख के जोग।
मिल - बेहबर के झेलू अपने सब इ विकट विजोग।।
रोके से कोई लाभ न, इ आग्रह भावुक अनुचित हए।
अपने के नृप अच्छा चाही एतने भर समुचित हए।।
भाई भरत सब लाइक हतन राजकाज में दक्ष।
सील बिनय के प्रतिमा हतन दयावान निसपक्ष।।
हुनका के अपने सब समझू हम्मर दोसर रूप।
हए हमरा बिस्वास उ साबित होएतन अच्छा भूप।।
सिस्ट नागरिक अपने सब नीति के पथ अपनाऊ।
दीऊ राह, बचन पालन ला हम जंगल में जाऊ।।

आखिर बहुत बुझाएला पर मीलल रथ ला कुछ राह।
 बाकी पाछे धारा लेखा चललक लोग अथाह।।
 समझा - समझा के लौटावे लगलन सब के राम।
 बाकी लोग कहे हम ओतहीं जहमाँ हम्मर राम।।
 राम बिना हए छूँछ अजोध्या इहमाँ कथी रक्खल।
 राम बिना हए पेंर अजोध्या फुनगी तक जे सुक्खल।।
 रथ बढ़लक आगे आ निकलल छोर नगर के द्वार।
 धीरे - धीरे पातर भेलक जन - समूह के ज्वार।।
 बाकी जेकरा नेह राम से उ न लौटल पाछे।
 भूख पिआस भुला के गेलक उ रघुबर के साथे।।
 धीरे - धीरे भेल साँझ रथ अएलक तमसा तीर।
 रथ रोकऽ एतहीं सुमन्त्र से कहलन सिरी रघुबीर।।
 घोरा सब थाकल ओकरा चाही पानी, आराम।
 आउर एतहीं आज करम सब जन रात्रि बिस्त्राम।।
 “जइसन आग्या” कह सुमन्त्र रथ से घोरा छिटकएलन।
 जथाजोग दाना पानी के उचित बेबस्था कएलन।।
 भूख पिआस थकान दुख से सब कोइ होके क्लान्त।
 भूल सुधि खाए पीए के भेलन निद्राक्रान्त।।
 बाकी भीतर से उत्साहित सब सोचथ इ बात।
 जंगल में मंगल हए भाई जहाँ राम रघुनाथ।।
 ओन्ने राम उदास खिन्न कुछ - कुछ चिन्ता में डूबल।
 ब्यर्थ साथ आएल समाज के भाबुकता से ऊबल।।
 सोचथ इ प्रेमी निरीह जन के कइसे समझाऊ।
 आगे जाए ला कइसे मुक्ति ए सब से पाऊ।।
 बइठल उ चुपचाप निहारथ चाँद भरल असमान।
 आउर मन में ज्वार उठे पूनम के सिन्धु समान।।
 बीते लागल रात आउर अऊँघाए लागल लोग।
 बेसुध नीन मेटा देलक सब दुख थकान आ सोग।।
 तेसर पहर रात जब आएल सब भेलन निसबइ।
 चारो तरफ सुनाए लागल खरराटा लयबद्ध।।
 तब रघुबर कहलन सुमन्त्र से “रथ जोतू हे तात।
 निकल चलू चुप्पे चापे अब आगे हमरा साथ।।”

“उठला पर की सोचत सब जन हे रघुबंस कुमार।
 इ सब जन अपने के प्रेमी उचित न छल बेहबार।।”
 “मालूम हए इ लोग न संघत समझएला से छोरत।
 हमरो मन कोमल, कठोर बन मोसकिल से मुँह मोरत।।
 एही लेल चहइले सुतले छोर पकर लू राह।
 उठला पर रो - धो के लेतक लोग अबध के राह।।
 जब बिबेक से हीन नेह हठधरमी पर तुल जाए।
 तब ओकरा से छुटकारा ला छल हए उचित उपाए।।”
 रघुबर के आदेस सचिब रथ के जोतलन चुपचाप।
 बाकी हुनका मन में होए रह - रह के परिताप।।
 जब ले साथ समूह रहे हुनका मन में कुछ आसा।
 चुप्पे निकले के आग्या से भेलक घोर निरासा।।
 तइओ मन के समझबइत उ आगे बढ़इत गेलन।
 जाले भेल बिहान निकल के बहुत दूर चल गेलन।।
 टेंढ़ - सोझ रस्ता से चलइत करइत नदी पार।
 दोसर दिन अएलन सब कोई गंगा नदी किनार।।
 सुन्दर सान्त कछार दूर तक चानी अइसन रेत।
 ओकरा पार सुखद हरिआली पर इतराएल खेत।।
 जहाँ - तहाँ पोरा के गोहिआ खेत अगोरइत लोग।
 पंछी के कलरब में हँसइत गीत किरन के जोग।।
 गोहूम के बाली हिल - हिल के अपना पास बोलाबे।
 पागल बायु सन - सन सुर में राग मनोहर गाबे।।
 लालमी, तरबुज्जा आ कखरी जहाँ - तहाँ ओघराएल।
 परबल आउर करइला पत्ता - पत्ता पर ढंगराएल।।
 नदी किनारे नइआ लेले केबट गबइत गीत।
 आ जा सोन मछरिआ फँस जा लौट चलू घर मीत।।
 सुरुज के लाली पानी पर सोना सन छितराएल।
 दूर छितिज पर तरु के फुनगी रस्मि - जोत - नेहाएल।।
 कहलन राम “तात रथ लेके अपने वापस जाऊ।
 ताकि गंगा पार उतर के हमहू जंगल जाऊ।।
 समझा - बुझा पिताजी के अपने धीरज धरबाएम।
 माता पर किरपा रक्खथ, हम्मार अनुरोध सुनाएम।।

कहम कि बचन निभा उ रखलन छात्र धरम के लाज।
 हुनका से गौरबसाली दुनिया में रघुकुल आज।।
 उ धीरज रखतन त हमरो मन पाएत सन्तोस।
 धीरज आउर धरम से कटतक कुटिल समय के रोस।।
 हाथ जोर कहलन सुमन्त्र "हे परम प्रिय रघुनाथ।
 महाराज कहलन ह लौटा लइहऽ सबके साथ।।
 घुमा - फिरा जंगल देखला के दस दिन में ले अइहऽ।
 भेल प्रतिग्या पूरन, चलू, रघुबर के समझइहऽ।।"
 कहलन राम "प्रतिग्या पूरन न गुरिआ के खेल।
 एकरा लेल परइअ काढ़े के बालू से तेल।।
 ममता कातर बाबूजी के भेलक बाल सुभाओ।
 बाकी अपने बुद्धिमान, कइसे उपजल इ भाओ।।
 लौट अबधपुर जाए के पहिले ग्लानि में गरम।
 लोग करत परिहास जगत में जीते - जी हम मरम।।"
 "खाली रथ ले के लौटम सब पूछतन कहमाँ राम।
 दुख से बिकल अजोध्या के कथी कहम सुखधाम?
 अपने न लौटम त हमरो रक्खू अपना साथ।
 अपने के सेवा में होएत मानुस देह सनाथ।।"
 कहइत - कहइत भरल आँख में डब- डब हुनका लोर।
 घुट के सब्द असब्द भेल हो गेलक कंठ - मरोर।।
 हुनका समझबइत कहलन रघुनाथ "सुनु हे तात!
 अपने नृप के सचिब, सखा सब नीति-धरम निस्नात।।
 अरथ बिना हए सब्द जगत में बस अच्छर के मेल।
 अरथबान बैखरी रचइअ भासा के सब खेल।।
 बानी के ब्यापार लोक जात्रा के दृढ़ बनबइअ।
 करम आउर संकल्प बानी के सक्ति के बढ़बइअ।।
 पुरुस करम से बानी के देइअ सार्थक आधार।
 करम बिमुख नर के बानी खाली भासा ब्यापार।।
 तात! पुरुस संकल्प धनी हम, अप्पन बचन निभाएम।
 कथनी करनी के अन्तर के सौ-सौ बार मेटाएम।।
 मूल्य जगत में दीप - सिखा, देइअ पथ के निरदेस।
 बिना मूल्य जीवन मानुस के पसुता के अबसेस।।

बचन बीर के जीत जगत में बचन हीन के हार।
 बचन बीर नर सदा पबइअ मानबता से प्यार।।
 हम सब छत्री बचन बीर बस एक्के बेर बोलइले।
 तिरिआ तेल समान जगत में एक्के बेर चढ़इले।।
 रघुकुल के मरजादा लाइक बचन न अपने बोलली।
 करम घरी में दुरबलता के गठरी कइसे खोलली?
 अपने जिनगी भर रहली दसरथ सन नृप के साथ।
 सचिब सारथी सखा सुहृद बन मानली हुनका माथ।।
 अपने गिरि सन दृढ़ अएलक कइसे अइसन कदराई।
 भेल पपीता तरु सन हालत साल तरु के आई।।
 अपने से बिनती हए फेनू बचन न इ दोहराऊ।
 रघुकुल के सुभचिन्तक अपने कोसलपुर अब जाऊ।।
 कट जाएत बनबास रात सन फेनू हँसतक प्रात।
 लौटम अबधपुरी अपने बिस्वास करू हे तात।।”
 सुन के बचन सचिब मन भेलक अब निश्चित बिस्वास।
 राम न जएतन अबधपुरी अब छोरऽ रे मन आस।।
 हाथ जोर, ले भरल आँख उ रथ समीप में अएलन।
 घोरा जोत दुखी मन से ओकरा के हाँके लगलन।।
 रथ हाँकथ आ पाछे ताकथ साइत राम पुकारथ।
 ममता उमर परे साइत त लौटे लेल बोलाबथ।।
 मगर उलटिओ के न तकलन हुनका ओरी राम।
 उ गंगा के ओरी तकइत करइत रहथ प्रनाम।।
 बेमन से रथ खिंचइत घोरा सब आगे चल देलक।
 धीरे-धीरे छितिज कोर पर रथ ओझल हो गेलक।।

अएलन सचिब सुमन्त्र नगर में तुरत सोर मच गेलक।
 जे जहमाँ, जइसे, ओतहीं से राजभवन चल देलक।।
 खाली रथ देखतहीं पर गेलक आसा पर पानी।
 उतरल मुँह सुमन्त्र के बतला देलक सेस कहानी।।
 जाले पूछे लोग, उतर उ राजमहल में गेलन।
 उत्सुक आ उदास मुँह लेले लोग खरा रह गेलन।।

सीधे महाराज लग जाके कहलन जय नरनाह।
 आगे बोल न फूटल उमरल एतना व्यथा अथाह।।
 महाराज करबट लेके हुनका ओरी कुछ घुमलन।
 देख उदास अकेला मने मन उ सब कुछ बुझलन।।
 कहलन “हम जनइत रही उ लौटत न पासान।
 सुमन समान सरीर मगर मन ओकर बज्र समान।।
 संजीवन जंगल चल गेलक घर में माहुर सेस।
 अब हमर उपचार काल हए” कहलन व्यथित नरेस।।
 हाय! जनती इ दिन आएत, बहुत बिआह न करती।
 सत्यानासी परथा के भुलिओ के दास न बनती।।
 तन - बिलास पर कभी न देती एतना जादे ध्यान।
 अनुसासित करती लोलुप मन के, होइत कल्यान।।”
 तनिका उठ के तकिआ के बल ओठंग बिकल अबधेस।
 पूझे लगलन बच्चा लेखा सुत के कुसल सनेस।।
 “हे सुमन्त्र, बतलाबऽ कइसे - कइसे कहमाँ गेलऽ।
 हमरा चान्द-सुरुज के बन में तू कहमाँ तज देलऽ।।
 की, हमरा ला उ संन्यासी कुछ सन्देश देलकओ।
 कि मुसका के तोहरो पर उ जादू - टोना कलकओ?”
 “नाथ इहाँ से गेली साथे बहुत लोग चल देलक।
 तमसा तीर पहुँचला पर दिनमान अस्त हो गेलक।।
 ओतहीं भेल पराओ, रात में सब निसबद जब भेलन।
 छोर चले ला सब कोई के रघुबर आग्या देलन।।
 कहलन “बाधक बन जाए जब जीवन - पथ में प्यार।
 ओकरा साथ करे में अनुचित न छल के बेहवार।।
 जगला पर इ लोग न हमर साथ छोर के जाएत।
 हमरा ला बाधक बनतक आ अपनहू दुख पाएत।।
 से छोरली सब जन के सूतल टेंढ़- सोझ पथ चलली।
 नदी - नाला गाँओ - जंगल छोरइत आगे बढ़ली।।
 आखिर में जब गेली हम सब माँ गंगा के तीर।
 उहमाँ से लौटा देलन हमरा के प्रिय रघुबीर।।
 कहलन तात तू नीतीबान आ अनुभव के भंडार।
 मूल्य बिना जीवन धारन हए दुनिया में बेकार।।

हम रघुवंसी बचन बीर बस एक्के बात बोलइले।
 तिरिआ तेल समान जिन्दगी में एक बार चढ़इले।।
 आउर कहलन तात पिता के अपने जा समझाएम।
 छत्री लेखा धीरज रखतन त हमहू सुख पाएम।।
 चउदहें बरस बिता के निस्वय हम जंगल से आएम।
 तप से कुन्दन बनके हुनका पद पर सीस झुकाएम।।
 हम समझइली बहुत मगर उ कहलन निस्वय एक।
 “प्राण जाय पर बचन न जाए” रघुकुल के हए टेक।।
 सुन के दसरथ अति उदास निस्वास छोर के कहलन।
 “मित्र समझ गेली, अब हमरा जाए के दिन अएलन।।
 राम बिजोग नाग सन हमरा हर पल आज डँसइअ।
 बिस से बिकल प्राण, ताप से तन हर पल डहकइअ।।
 रह-रह के हम्मर छाती में अजब उठइअ धाह।
 बुझा रहल केउ प्राण खिंचइअ रह - रह हम्मर, आह!
 हाय! राम तू कहमाँ होएबऽ सिआ लखन के साथ।
 सब कुछ हए, बाकी तोरा बिन भेली आज अनाथ।।
 हाय! पुत्र तू कइसे जनबऽ बृद्ध पिता के पीर।
 मन के पंछी घाएल खाके बिसम बिरह के तीर।।
 आह! सुमन्त्र पिआबऽ पानी लगल कंठ में आग।
 मरन घरी सुत पास न एक्को कइसन हम्मर भाग!
 हाय! कौसिल्या तू कहमाँ हमहीं तोहर अपराधी।
 दुख सहलऽ बाकी न बनलऽ तू कहिओ प्रतिवादी।।
 आउर सुमित्रा कहाँ तनिक ओकरो के इहाँ बोलाबऽ।
 फाटल जाइअ माथ तनिक कोमल कर से सोहराबऽ।।
 देख दसा स्वामी के दुन्नो बहुत बिकल हो गेलन।
 हाय बिधाता की होएतक दुन्नो दुख से रो देलन।।
 कहलन कौसिल्या “हम एतहीं नाथ न अइसे बोलू।
 सोहरबइत हए गोर सुमित्रा आँख तनिक प्रिय खोलू।।
 कहइत रोइत कौसिल्या सोहराबे लगलन माथ।
 रक्षा ला गोहराबे लगलन मन में कमलानाथ।।
 पीरा से छटपट करइत नृप रह - रह करथ प्रलाप।
 हुनके साथे दुन्नो रानी रोअथ करथ बिलाप।।

चिन्ता आ संका में डूबल बीते लागल रात।
 जीवन - मरन दोल पर झूले रह - रह नृप के गात।।
 चिन्तित मुँह सेबा में लागल दासी आउर दास।
 गुरु बसिष्ठ बइठल सुमन्त्र संग होके बहुत उदास।।
 कबहीं नृप के मुरछा आबे कबहीं बोलथ राम।
 सब उपचार बेकार न अएलक बिरह - रोग में काम।।
 भोर पहर में मुरछा टूटल पुछलन अएलन राम?
 एकरे साथे प्राण पखेरू उर गेलक सुरधाम।।
 मच गेलक कुहराम सुमित्रा कौसिल्या बेहोस।
 रघुकुल के सुख जर गेलक हा! कुटिल काल के रोस।।
 लगल हिलइअ राजमहल जन के कातर क्रन्दन से।
 चन्दन - बन में आग लगल हाय! सीतल चन्दन से।।
 रोए लगलन दुन्नो रानी बिकल करेजा फार।
 अस्त - ब्यस्त बस्तर भेलक आ बहल लोर के धार।।
 रह - रह उठे रुदन के स्वर जइसे सागर में ज्वार।
 आउर बेदना दारुन जे देबे पत्थर के फार।।

भेल बिहान द्वार पर उमरल सुन के भीर प्रजा के।
 सुत-बिजोग में मरन बरन सुन दसरथ सन राजा के।।
 दुखी प्रजा भींजल स्वर से नृप के गुन करे बखान।
 सुत-बिजोग में प्राण गमाबे के देखली परमान।।
 गुरु बसिष्ठ चिन्तित कि भेलक बिन राजा के राज।
 अखनी से आगे चलतक कइसे परजा के काज।।
 उ सुमन्त्र के भेज सैन्यपति, मंत्री, के बोलबएलन।
 आउर मान्य सभासद जेकरा उ सब लाइक पएलन।।
 मंत्री सब के साथ सभासद अएलन जे हितकारी।
 बइठल सभा बिचार करेला कथी होए अगारी।।
 निरनय भेलक भरत कुँअर के लाबे ला चर जाए।
 हुनका आबे तक नृप सब के रखल सुरक्षित जाए।।
 उ आके पहिले मिरतक के करतन सब संस्कार।
 ओकरा बाद मुकुट लेतन उ पिता -बचन अनुसार।।

निरनय के अनुसार तुरत चर गेलक केकय देस।
 आउर तेल - पात्र में नृप - तन रखल गेल बिसेस।।
 जन समाज सोक में डूबल भेलक नगर उदास।
 जीब- जन्तु आ पैंर- पताई ओकरो मलिन बिकास।।
 भरत आगमन के परतीक्षा में मन टंगले लोग।
 काटे लागल समय, अवध के मन में पड़ल सोग।।
 केकई भक्! पथराएल अइसन लेलक घर में वास।
 हो जाएत अइसन कुकांड ओकरा न रहे विस्वास।।
 बाकी अब की करो गेल उ जीतल बाजी हार।
 आग लगा देलक सेनुर में ओकर सत्ता प्यार।।
 उन्मादी सन हँसे कखनिओ आउर कखनिओ रोए।
 बाकी सत्ता लोभ न ओकरा मन के तनिको सोए।।
 सोंचे, आएत भरत राज पा सुख से जाएत फूल।
 हरखित वच्चा लेखा जाएत उ गोदी में झूल।।
 रानी माय बनके हमहू पति के सोक भुलाएम।
 जे विरोध कएलन फटकारलन हुनका मजा चखाएम।।
 बाकी टिके विचार न कोनो रह - रह पलटा खाए।
 पत्थर अइसन स्वार्थ, भावना लहर लेखा टकराए।।
 कुवरी के कुछ पता न जाके कहमाँ दुस्ट नुकाएल।
 खोजे लोग सनीचरी के जे कएलक सब के घाएल।।

केकय पहुँचल दूत हाल सुन दुन्नो कुँअर बेहाल।
 नाना-मामा से आग्या ले चल देलन तत्काल।।
 जुधाजीत सोचलन ठीके हए विधि पर केकर जोर।
 एक आँख में खुसिआली त दोसर में हए लोर।।
 सत्ता के सुख मद लेखा सब पीरा के भुलबइअ।
 बिना सोआरथी बनले सत्ता कभी न रास अबइअ।।
 ओन्ने भरत बिकल मन आन्ही लेखा चलइत गेलन।
 कहेला पिता बोलएलन जल्दी रह-रह सोचइत गेलन।।
 नगर समीप अबइते लागल घटलक कुछ दुखदाई।
 सबतर सन्नाटा कन - कन में लगल उदासी - काई।।

राजद्वार पर रथ रुकलक उ उतर भवन में गेलन।
 छाया लेखा सत्रोहन हुनका पाछे हो गेलन।।
 ताकथ दुन्नो भाई सबतर पाबथ न उल्लास।
 लागे राजमहल के चुप्पी रखले कुछ इतिहास।।
 मालूम भेल, सचिब स्वागत में दउरल आगे अएलन।
 “हाय! सुत बज्रर गिर गेलक” रो-रो के बतलएलन।।
 की भेलक, हथ कहाँ पिताजी, कहमाँ दुन्नो भइआ।
 कहेला अपने बिकल, कहाँ गुरु, कहमाँ तीनो मइआ।।
 कइसन बज्र कहाँ से गिरलक हमरा सीघ्र बताऊ।
 सचिब अमंगल से मन बेकल सीधे बात बताऊ।।
 सचिब लगा छाती से कहलन भेल बिधाता बाम।
 तोरा माई के मति मारलक दासी मंथरा नाम।।
 सबके इच्छा से नृप कहलन राम बनथ जुबराज।
 चारो भाई चलाबथ मिल के कोसल पुर के राज।।
 रहे मुहुरत लग्गे में, एही से जल्दी भेलक।
 बाकी तोहरा कन सबसे पहिले सन्देशा गेलक।।
 लौट बतएलक दूत कि तू मामा के साथ अबइछऽ।
 आउर बहुत उपहार मनोहर अपना साथ लबइछऽ।।
 एन्नो तोहर माई लेलन कोप भवन में बास।
 मंगलन अप्पन दुन्नो बर जे थाती नृप के पास।।
 पहिला बर में तोरा ला उं राज अबध के मंगलन।
 आउर दोसर बर में “जंगल जाथ राम” उ कहलन।।
 नृप समझएलन देबी सुत ला राज अबध के लेलऽ।
 बाकी बिना दोस रघुबर के जंगल में मत भेजऽ।।
 बाकी हुनका हठ के आगे चलल न केकरो बात।
 पिता-बचन पालन ला रघुबर गेलन जंगल तात।।
 हुनका साथे अपना मन से सीता जंगल गेलन।
 आउर दुन्नो के सेवा ला लछुमन पाछे भेलन।।
 हम गंगातट तक पहुँचा के खाली रथ लेके अइली।
 बचन बीर रघुनाथ न अएलन कतनो हम समझइली।।
 अब उ तपसी लेखा रहतन चउदह बरिस उदास।
 कन्द मूल फल खा के करतन दंडक बन में बास।।

उहमाँ से अइली स्वामी के सब्भे बात बतइली।
 आउर मिलजुल के हुनका के बहुत भाँति समझइली।।
 बाकी राम - बिजोग न सहलक हुनकर पीरित प्रान।
 भोर पहर में छोर देह उर गेलक हंस समान।।
 ओ दिन से हए बिकल अजोध्या राजा बिना अनाथ।
 अब तू अएलऽ राज सम्हारऽ होए लोग सनाथ।।
 तेल पात्र में स्वामी के तन रक्खल, तू सदगति द।
 परजा के पीरा मेटऽ, माथा पर राजमुकुट ल।।”
 हाय दैव! इ की भेलक! हमरा पितुहत्या लागल।
 कोन पाप कइली जे अइसन लांछन हमारा लागल।।
 कहइत - कहइत मुरछित भेलन कोमल भरत कुमार।
 पानी के छींटा दे करे लगल लोग उपचार।।
 सत्रोहन क्रोधित “इ सब छोटकी माई के खेल।
 संतालोभ रहे अपना त कुब्जा माध्यम भेल।।
 सत्ता लोलुप क्रूर हृदय सेनुर में आग लगा के।
 राजमहल में बइठल हथ सब चक्कर चाल चला के।।
 हम देइले आदेस कि हुनका बन्दी-घर में डालू।।
 पति हत्या के दंड लेल आरोप सभा में डालू।।
 अइसन नारी न पतनी न होइअ केकरो माता।
 अपना सुख स्वारथ के आगे झूठ करइअ नाता।।
 भाई उठू, सम्हारू मन के, रखू मुकुट अब माथ।
 पहिले न्याय करू, तब सोचब सोक - दुख के बात।।
 बेकती से पहिले हम सब परजा के हती न्यासी।
 परजा के इच्छा पालन से नृप होइअ बिस्वासी।।
 बर बन गेल बहाना, परजा से भेलक छल भारी।
 दुख हए ए में माध्यम बनलन पूजनीआ महतारी।।”
 देख क्रोध सत्रोहन के, अपना के भरत सम्हारलन।
 भाई न्याय करब हम सब के हुनका के पुचकारलन।।
 ओकरा बाद सचिब से कहलन मन हम्मर बेचैन।
 एक्के बेरी दू - दू पीरा कइसे पाऊ चैन।।
 अखनी मुकुट पहीने ला चाही पत्थर सन छाती।
 सचिब न दसरथ-सुमन रखइअ अइसन बज्रर छाती।।

कोन मुँह ले माई कौसित्याके लगुन हम जाऊ।
 आउर कोन मुँह से उरमिला के पीरा सोहराऊ।।
 मुकुट देखइते तात आग हमरा माथा में लागत।
 कहमाँ से हम लाएम मन में पत्थर अइसन ताकत।।
 भाई के हक मार जगत में कोन मुँह देखलाएम।
 पेन्हिओ लेम मुकुट त मन के सान्ति कहाँ से पाएम।।
 ए लेल एही छन एतहीं से हम दंडक बन जाएम।
 जहाँ राम लछुमन सीता ओतहीं अब सान्ती पाएम।।
 बिलग करे भाई - भाई के ओइसन राज न चाही।
 सून करे जे मांग माई के ओइसन मुकुट न चाही।।
 कहइत गरा - बुकुर लागल आ ढरलक दूनो नैन।
 देख भरत के पीरा भेलक सब कोई बेचैन।।
 गुरु समझएलन सान्त बत्स इ समय न हए रोए के।
 बीच धार में नाँओ परल साहस चाही खेबे के।।
 बेटा एतना बिकल न होअऽ तनिका धीरज धरऽ।
 सबसे पहिले माटी - मंजिल - स्राध पिता के करऽ।।
 ओकरा बाद सान्त हो सोचिहऽ तू आगे के बात।
 राजा के चाही दुख में धीरज रक्खे के तात।।
 एही तरह से समझा के गुरु ले चललन रनिबास।
 कहलन भरत न जाएम हम अपना माता के पास।।
 क्रोध आउर पीरा से ब्याकुल उ निस्तुर हो गेलन।
 दुन्नो भाई कौसित्या के घर ओरी चल देलन।।
 नजर उठाइओ के न तकलन केकई के घर ओरी।
 क्रोध काट देइअ पल में ममता के कोमल डोरी।।
 केकई घर के देहरी पर रह गेलन देखइत राह।
 सुत के लपटावे ला ब्याकुल रहिए गेलक बाँह।।
 जेकरा ला सब साज सजएलन उहे ठोकर मारलक।
 जेकरा जनलन पीरा सहके उहे मोह मरोरलक।।
 भरत बिकल जा गिरलन सीधे कौसित्या के गोद।
 भूल ब्यथा, चिपकएलन माता छाती से भर मोद।।
 "हमही दुख के कारण माता" भरत सुबुक के कहलन।
 "भाई भाभी जंगल गेलन पिता तरप के मरलन।।

हाय लेके अइली हम धरती पर कइसन भाग।
 बने के तरु से लग गेलक बन में भीसन आग।।
 कथी बिगारली माई के जे उ हमरा न चिन्हलक।
 कोन कुमति घेरलक ओकरा जे अप्पन सेनुर जारलक।।
 हम अपराधी हमरा मीले चाही भारी दंड।
 हमरा मर जाए के चाही हो के सौ - सौ खंड।।”
 “न बेटा, तू निरमल गंगा इ दुरदिन के दोस।
 बाम बिधाता हो जएतक त कइसे रहतक होस।।
 तू परजा परिजन के देखऽ भूलऽ अप्पन सोक।
 राजाहीन देस के तोहरा ओर तकइअ लोक।।
 बीतल बात भुला द बेटा, पी जा सब्भे दाह।
 छात्र तेज के जगा जराबऽ आँसू आउर आह।।”
 आँसू पोंछ भरत उठलन कहलन माँ अभी अबइले।
 मँझली माई से मिल के हम हुनकर गोर छुअइले।।
 उठ उहमाँ से चललन दुन्नो माई सुमित्रा पास।
 बहु उरमिला से बतिआइत बइठल मलिन उदास।।
 देख रोआइन मुँह भरत के उमरल सहज सनेह।
 उठ के छाती से चिपकएलन भरल आँख में नेह।।
 माई! बेटा! कहइत दुन्नो व्याकुल रोए लगलन।
 भाभी! कहइत सत्रोहन आ उरमिल सुबके लगलन।।
 एक्के बेरी उमरल आँसू के चौतरफा धार।
 सोक आउर करुना से मानब जाइअ सहजे हार।।
 रोइत पुछलन “माई, लखन के क्रोध कहाँ चल गेलक?
 ओकरा अछइत घर में एतना भारी घटना भेलक।।
 कइसे उफनाएल न ओकरा मन के क्रोध प्रचंड!
 कइसे न देलक उ हमरा माई के कुछ दंड?
 कहेना न उ बन्दी कएलक स्वार्थ-मलिन माता के?
 कहेना न अभिसेक सजएलक रघुबर सन भ्राता के!
 उ करितक जदि क्रोध त देखती आज न अइसन हाल।
 बन्धु-बिजोग पिता के बध के दाग न लगइत भाल।।”
 “चहलक उ बिद्रोह करे त रोकलन ओकरा राम।
 कहलन क्रोध बिगारत संकट - बेला में सब काम।।

मात - पिता के बन्दी के अप्पन धरम नसएबऽ।
 गद्दी ला भाई से लरके जग में नाम हँसएबऽ।।
 क्रोध असान्ती कल्लह दुख के एकमात्र हए मूल।
 छन भर ला सन्तोस मिलइअ जीवन भर ला सूल।।”
 हमहू सोचली बात राम के हए सुन्दर सुबिचार।
 जाग उठल हमरा मन में संचित हुनका ला प्यार।।
 हमहू रोकली लछुमन के आ कहली हे रघुनाथ।
 तोरा सेवा ला जंगल में जाएत लछुमन साथ।।
 तोरे साथ रहल त एकरा तोरे साथ भेजइले।
 एक पुत्र तोरा सेवा में बेटा हम अरपइले।।
 बनचारी बन गेलन तीनों पाबे मुक्त बिकास।
 हम सब राजभवन-पिंजरा में मरइत हती पिआस।।
 अब तोहरे दुन्नो के आसा, जोरऽ टूटल मन के।
 तूहीं सरबस हतऽ बेटा दुखिआ बिधबा जन के।।
 माई सुमित्रा के पीरा में उभ - चुभ भरत कुमार।
 सोंचे लगलन इ दुख नइआ कइसे लागत पार।।
 कहलन न लौटत सेनुर बाकी हम आँसू पोछम।
 आउर कइसे लांछन मेटत एकरा पर हम सोंचम।।
 कहइत उठ गेलन “माता हम स्नाध बाद बन जाएम।
 माई कोसिल्या आउर उरमिला के सुख वापस लाएम।।

बोला सचिब के कहलन सब गुरुजन के सभा बोलाबऽ।
 कइसे होएत संस्कार सब हमरा के बतलाबऽ।।
 अएलन सब कोई आ मिल जुल के इहे मत ठहरएलन।
 वेद बिहित सब कर्म पुरोहित करबाबथ, बतलएलन।।
 एकरा बाद चले सब कोई दल - बल ले के साथ।
 राजमुकुट ओतहीं जाए जहमाँ हतन रघुनाथ।।
 मिल-जुल के सब तिलक करम आ लौटा के ले आएम।
 जंगल में मंगल होएतक सब दुख आ सोक भुलाएम।।
 सब जन के मत भरत कुँअर के चन्नन अइसन लागल।
 मन सीतल, हल्लुक भेलक उत्साह हृदय में जागल।।
 कहलन भाई के भगती से पलटम बिधि के लेखा।
 हमरा जीवन के पथ बनतक रामचरन के रेखा।।

गुरुबर से कहलन साथे दुन्नो माई बन चलतन।
 आउर बहु उरमिला साथ में पति दरसन ला जएतन।।
 सत्ता लोलुप हम्मर माता एतही राजभवन में।
 गिनतन खम्भा आउर खिरकी कुब्जा साथ मगन में।।”
 गुरु कहलन “हे पुत्र न माता के द अइसन दंड।
 जीते जी न बनाबऽ हुनका अइसे पत्थर खंड।।
 पुत्र करे दंडित माता के हए इ दुख के बात।
 गंगा काट करइछन तइओ पूजित होइछन तात।।
 ए लेल उ जाए चाहथ त हुनको साथे ले लऽ।
 जे भेलक से भाग - दोस तू छमादान सुत दे दऽ।।”
 “गुरुबर अपने अभिभावक आ अबध राज के न्यासी।
 अपने पिता समान हती हम आस्रित आ बिस्वामी।।
 दुख हम्मर मति हरले हए बिचलित हए हम्मर ग्यान।
 ए लेल अनुसासन में रक्खू हमरा कृपानिधान।।
 जइसे शिक्षा दान समय कइली गलती सब सुद्ध।
 तइसे आज बनएले रक्खू हमरा देब! प्रबुद्ध।।

बोला के सचिब से कहलन

चलत गुरुदेब के आदेस।

होए काम सब ओइसे करथ

जे उचित उ निरदेस।।

चलू ले सब सजा अरथी

सजाऊ चिता चन्नन से।

मिले तन भूत पाँचो में, बनल

जे पंचभौतिक से।।

जलांजली दू, करु तरपन जे

आत्मा सान्त हो जाए।

लुटा दू कोस निरधन में जे

मंगल पंथ हो जाए।।

रिसि मुनि बिप्र गन के दू

जे गाए बत्स उ मांगथ।

जे संभव हए से सब दे दू

जे जाचक फेर न मांगथ।।

पितृ- सोक के रात ढरल, भाई - मिलन के भोर।

उत्साहित मन पंछी के मुखरित भेलक रोर।।

ॐ ओम नमः शिवाय ॐ

चित्रकूट कांड

परम पावन माई गंगा देवनदी सुखसार।
हे त्रिपथगा सिबप्रिया भागीरथी रसधार।।
पतितपावन पापनासक जननि सुख के मूल।
एक डुबकी में धुलइअ पाप - पंक समूल।।
पितर तारक साप नासक सुभ सजीवन धार।
सुरसरी जहनुसुता संभु जटा के हार।।
आज तोरा से मंगइले बिस्नुपदी आसीस।
सक्तिरूपा तू उरा द बिघ्न सब के सीस।।

गंगा तट पर पहुँच राम सीता लछुमन सुखधाम।
हाथ जोर कएलन तीनो माँ गंगा के परनाम।।
सीता से कहलन रघुबर तू पूजऽ माँ गंगा के।
सर्वमंगला से बर मांगऽ फइला तू अँचरा के।।
“जइसन आग्या” कह सीता तनिका गंगउटी लेलन।
आउर ठीक किनारा पर पिंडी सुन्दर रच देलन।
निहुँछ पबितर कएलन तन के आउर ध्यान लगएलन।
ले के अँचरा हाथ माई के आबाहन तब कएलन।।
“हे माता तोहरे पर आसा तोहरे पर बिस्वास।
देबर आउर पति के साथे जा रहली बनबास।।
चउदह बरिस बिता के लौटम जब हम कुसल समेत।
तोरा के पूजम माई सोलह उपचार समेत।।”
पूजा भेल खतम सब ओरी देख राम मतिमान।
कहलन लछुमन सृंगबेरपुर इ निश्चित हए असथान।।
पता लगाबऽ कहाँ रहइछन गुह निसादपति बीर।
अप्पन सखा परमप्रिय निस्छल सेवा - तत्पर धीर।।
आज रात हुनके आस्रय में हम सब इहाँ बिताएम।
सुख-बुख अप्पन बाँटम आउर हिलमिल के बतिआएम।।
“जइसन आग्या” कह के लछुमन पता लगाबे चललन।
आउर इंगुदी सुखद वृक्ष तर सीता-राम बिराजलन।।”

हरिअर छाँह, सुखद बायु आ सीतल गंगा धार।।
 जात्रा के थकान मेटलक मन पएलक सान्ती अपार।।
 तबले लछुमन के साथे आ गेलन गुह नरनाथ।
 सहज नेह से मिललन हुनका से सीता - रघुनाथ।।
 आकुल पुछलन "मित्र तपस्वी भेस, न सेना साथ।
 कइसे औचक इहमाँ अइली अपने हे रघुनाथ।।"
 सान्त भाओ से रघुबर हुनका सब घटना बतलएलन।
 भाई आ पतनी के साथे कइसे बन में अएलन।।
 उत्साहित निसादपति कहलन "बन के कथी काज।
 अपने के सेवा में अरपित हम्मर सजँसे राज।।
 अपने राज कर, सेवा में हम आ लखन रहइले।
 न जंगल, न अबधपुरी एतहीं हम साथ बसइले।।"
 कहलन रघबर "तोरा इच्छा के सम्मान करइले।
 बाकी भाबुकता में अप्पन बचन न तोर सकइले।।
 हम चाही त धनुस उठा के जीत ली तीनो लोक।
 बाकी सत्ता सुख ला हमरा मन में हरस न सोक।।
 पिता-बचन - पालन हमरा ला सबसे उत्तम काम।
 एकरा आगे स्वर्ग तुच्छ" कहलन मुसकाइत राम।।
 "बस तोहर सनेह चाही द रात खनी बिस्त्राम।
 बिहने गंगा पार करा द इहे लमहर काम।।
 तापस जीवन छोर अगर हम राजस भोग सजाएम।
 बचन पिता के दूटत सीधे पाप कुंड में जाएम।।
 ए लेल सखा - धरम के पालऽ बन के तू सहजोगी।
 छोरली राजस भाओ अबध संग अब हम सात्विक जोगी।।
 एही तरु तर घास-पात के एगो सेज बिछा दऽ।
 रात्रि के आहार लेल कुछ कंद - मूल - फल ला दऽ।।"
 गुह अपना अनुचर से कोमल घास - फूस मंगबएलन।
 आउर अपना हाथे रच - रच सुखमय सेज बिछएलन।।
 फल खा, गंगाजल पी सब कटलन ओजमने रात।
 गुह आउर लछुमन पहरा में जगलन सजँसे रात।।
 भेल बिहान राम सिय जगलन भेलन झट तइआर।
 कहलन भाई नाओ मंगा द उत्तरु गंगा पार।।

गुह सेबक के भेज नाओ एगो निम्न मंगवाएलन।
 दक्ष खेबइआ मन लाइक ओ पर चुन के बइठएलन।।
 चढ़लन तीनों नइआ पर तब गुह काएलन परनाम।
 ढरल आँख से लोर देख के बिधि के करनी बाम।।
 समझएलन रघुनाथ न रोअऽ, हँस के करऽ बिदाई।
 तोहर नेह इआद रहत जंगल में हमरा भाई।।”
 “गंगा माई के जय” साथे बढ़लक नाओ अगारी।
 केबट हाथ हिलबइत रहलक छूटल घाट पिछारी।।
 जल के चीरइत नाओ चलल जइसे हर खेत चीरइअ।
 चप्पु के छप - छप लागे जल में मछरी छपकइअ।।
 अएलन पार, खरा रेती पर भेलन तीनों साथ।
 की दिअओ खेबा केबट से पुछलन सिरी रघुनाथ।।
 एक - दोसरा के मुँह सब्भे केबट ताके लगलन।
 कथी खेबा मांगू कुच्छो समझ न उ सब पएलन।।
 आखिर मुखिआ हाथ जोर के कहलक हे नरनाथ।
 चरन धूल से घर पबित्र कर दू हम्मर रघुनाथ।।
 हम गरीब परजा अपने के आउर अपने राजा।
 अपने हमरा घर अइली इ बाजत जुग - जुग बाजा।।
 सात पुस्त तर जाएत आउर सात पुस्त सुख पाएत।
 हम्मर जाति बंस अमर ए धरती पर हो जाएत।।
 तुच्छ परजा गौरब पा जाएत बढ़तक हम्मर मान।
 घटबारी धन - धन हो जाएत सेबा के परमान।।
 अपने हमरा ओरी ताकम हम लमहर हो जाएम।
 अपने पारस छू देम तनिका हम सोना हो जाएम।।”
 कहलन राम “बन्धु, जग में राजा आ रंक समान।
 जेकर जहाँ महातम उहमाँ ऊहे हए पुजमान।।
 तू न तुच्छ जगत में, रक्खऽ मत तू छोट बिचार।
 तोरा बिना न पार उतरती हम गंगा के धार।।
 ए लेल तोहर आग्रह हम सुख से स्वीकार करइले।
 अखनी तोरा घरे हम सब तोरा साथ चलइले।।
 हरखित केबट आगे - आगे पाछे रघुबर चललन।
 हुनका पाछे सिया लखन आ बाकी केबट बढ़लन।।

केबट के घर आके देखलन राम गाँओ के रूप।
 टाटी - माटी के घर, जेकर उजरल भांगल रूप।।
 बंसी, जाल, आरसी, टापी रक्खल जहाँ - तहाँ पर।
 अधनंगा लरिका सब खेलइत पीपर आ पाकर तर।।
 कुत्ता सूतल, बछरा रँभइत, बकरी में - में करइत।
 पकोहा गीरल, कउआ बोलइत, बृधगन टापी बिनइत।।
 राजा अएलन सुन के भागल धिआ - पुता सब आगे।
 बूढ - पुरनिआ काम छोर के चललन ओकरा पाछे।।
 केबट खटिआ गिरा बिछएलन ओ पर गेन्डा चढ़र।
 मइल-कुचइल, पेओन लागल आ रुक्खर मोटिआ खढ़र।।
 सहज भाओ से राम बिराजइत कहलन सीता लछुमन।
 आ के बइठऽ, अइसहीं छोरत राजस भाओ तन - मन।।”
 केबट गंगा जल लाके तीनो के पाँओ धोएलन!
 आउर कन्द - मूल-फल एगो थरिआ में ले अएलन।।
 कहलन, “जे जुरलक से स्वामी कएले बिन उतजोग।
 सेवा में लइली अपने के नाथ लगाऊ भोग।।”
 रुक्खर भोजन, अद्भुत सरधा, अनुभव प्रथम बिचित्र।
 कुछ छन ला रघुबर सोंचइत बन गेलन जइसे चित्र।।
 फेन उठा दूगो फल सीता आ लछुमन के देलन।
 एगो रख अपना ला बाकी बाँट लोग में देलन।।
 गंगा जल पीलन आ कहलन रखली तोहर बात।
 अब हमरा तू राह बताबऽ आगे जाऊ तात।।
 केबट साथी ले के चललक हो के झट तइआर।
 राम बिदा लेलन सब जन से बरसा ममता प्यार।।
 बहुत दूर तक बाल - बृध नर - नारी गेलन साथ।
 बाकी सबके आग्रहपुरबक लौटएलन रघुनाथ।।
 बत्स देस के सीमा में जा केबट के लौटएलन।
 आगे के रस्ता सीधा तीनो बढ़इत चल गेलन।।
 रस्ता चलइत राघव कहलन सुख - सुबिधा के भूल।
 दुन्नो जन तइआरी करऽ सहे ला सब सूल।।
 अब न मिलतओ सेज मोलाएम, सेबक दासी दास।
 अब न मिलतओ राजस भोजन सुन्दर सरस सुबास।।

ए लेल कन्द - मूल - फल भोजन के डालऽ अभ्यास।
 ऊहो सब दिन सुलभ न होतओ परबऽ कभी उपास।।
 बन में अएलऽ ह अपनावऽ बन - जीवन के रंग।
 झक्खे के बदले सीखऽ सुख से जीए के ढंग।।
 दुन्नो कहलन जूझम बाकी मुँह पर आह न लाएम।
 दुख आउर पछतावा के हम हँस - हँस मार भगाएम।।
 देखला देम जगत के हम सब बन से अधिक कठोर।
 एक साथ हम कुसुम सुकोमल आउर बज्र कठोर।।
 तीनो हँसइत बोलइत चलइत रस्ता कटइत गेलन।
 भेल जहाँ सँझिआ ओतहीं कोनो तरु तर टिक गेलन।।
 दोसर दिन गंगा - जमुना के संगम पर जब अएलन।
 पूछ - पाछ रिसि भरद्वाज के आस्रम पता लगएलन।।
 जमुना पार उतर आस्रम ओरी बढ़लन रघुनाथ।
 परछाँही सन सीता - लछुमन चललन हुनका साथ।।
 आस्रम पर जा के अप्पन परिचय रघुनाएक देलन।
 आउर सरधा से हुनका पग के रज तीनो लेलन।।
 रिसि देलन आसीस आउर कएलन स्वागत सतकार।
 कहलन तोरा अएला से होएतक जग के उपकार।।
 सुख से बास करऽ इहमाँ हए सुलभ सुखद सतसंग।
 पावन तीरथ, पावन जीवन, भगती - ग्यान सुसंग।।
 रिसि कएलन परबन्ध सुखद तापस जीवन अनुकूल।
 सुख से रात बितएलन तीनो दूर भेल तन सूल।।
 दोसर दिन रघुवर कहलन हे रिसिबर कृपा निधान।
 काटे ला बनबास बताऊ उत्तम कोई ठेकान।।
 रिसी कहलन "तू एतहीं रहऽ हमरा अच्छा लगतक।
 तोहरा रहला से हमरा आस्रम के गरिमा बढ़तक।।
 कहलन राम इहाँ से रिसिबर अबधपुरी नजदीक।
 आएत जाएत लोग इहाँ हमरा न लगतक ठीक।।
 ए लेल हमरा बन बतलाऊ उत्तम आ एकान्त।
 जहाँ बिना बाधा के चउदह बरस बिताऊ सान्त।।
 सोच - समझ के रिसि कहलन हए तीस कोस पर तात।
 चित्रकूट रमनीए परबत बसऽ ऊँहई रघुनाथ।।

कन्द मूल फल बहुताएत में उहमाँ सदा मिलइअ।
 आउर निरमल मन्दाकिनी नदी ओकरे निकट बहइअ।।”
 ओकरा बाद बतएलन मुनिबर चित्रकूट के राह।
 ले आसीस बिदा तीनो चललन मन में उत्साह।।
 जात्रा पूरा भेलक तीनो चित्रकूट लग आएलन।
 मुनि जेतना बतलएलन ओ से जादे सुन्दर पाएलन।।
 रितु बसंत, सोभित पलास बन, झुकल फूल के भार।
 लागे चारो ओर खरा हए पीअर लाल पहार।।
 दखिन पवन के जोर आउर कोइल के मधुर पुकार।
 लागे धरती में बज रहलक फागुन राग धमार।।
 समतल भूमि तरु से पाटल चित्रकूट से रक्षित।
 जहाँ-तहाँ पर नीलगाय मृग कुंजर के दल लक्षित।।
 पेंर झुंड के झुंड लगल, जेकरा में फल भरपूर।
 केऊ कच्चा, केऊ डम्हक, केऊ रस से पूर।।
 रिसि मुनि के आस्रम सुन्दर बान्हल बछरा गाए।
 कोमल सुर में रँभा पुकारे आबऽ - आबऽ माए।।
 जहाँ - तहाँ बेदी के धुँआ सुखद चन्दनी गंध।
 फूल - फूल पर तितली भौरा घुमइत मद से अंध।।
 सुन्दर सुखद निरापद साधुजन सेबित असथान।
 भूख - पिआस मेटाबे के साधन - सुबिधा अनुमान।।
 कहलन राम “लखन भाई अब एतहीं कुटी बनाबऽ।
 चित्रकूट के गोदी में सुख से बनबास बिताबऽ।।
 साइत ए से सुन्दर आगे मिलतओ न असथान।
 चित्रकूट के सोभा से तिरपित हो गेलक प्रान।।”
 सीता आ लछुमन कहलन “अपने प्रभु ठीक कहइले।
 हमहू स ए से सुन्दर न जगह कहँऊ पबइले।।”
 ओकरा बाद कुल्हारी लेके लछुमन कटलन काठ।
 खम्हा गार चढ़एलन ओ पर घास फूस के ठाठ।।
 बान्ह - छान आ नीप- पोत के सुन्दर कुटी बनएलन।
 आन्ही - झक्कर से रक्षा ला चाँरी ठोस लगएलन।।
 काएलन सीता राम सतत ए में हुनका सहजोग।
 मेहनत लएलक रंग कुटी बन गेल रहे के जोग।।

बास्तु - सान्ति ला विधि - विधान के साथ वेद के मंत्र।
 पढ़लन रघुबर आउर कएलन जथा जोग सब तंत्र॥
 परनकुटी बन गेलक सुन्दर सीता - राम - निकेत।
 बन गेलन रघुबर घरबासी अबतक जे अनिकेत॥
 आस्रम-आस्रम घूम राम रिसि मुनि से परिचय कएलन।
 आउर बन आवे के कारन हुनका के बतलएलन॥

कएलन भरत सराध समापन दे के अन-धन दान।
 ओकरा बाद सचिव से कहलन अब बनला प्रस्थान॥
 रक्षा ला सेना सजबाऊ, सेवा ला सब दास।
 गुरुबार के साथे सब चलतन साधु, सन्त, उदास॥
 महामात्य आ सेनापति इहमाँ के भार संम्हारतन।
 कुछ मंत्री कुछ स्नेष्ठ सभासद हमरा साथे चलतन॥
 पथ-सोधक के आगे भेंजू पथ - सोधन कर रखतन।
 कल्यपाल सब करे बेबस्था हुनके पाछे जएतन॥
 धोबी, दरजी, पाचक, रंजक, गंधी आउर सोनार।
 बाम्हन, बैद, गोपाल, साथ कुछ भेंजू दक्ष कुम्हार॥
 खाए-पीए के करु बेबस्था होए न तनिक असुबिधा।
 जात्रा ला उपजोगी साधन रक्खू सब बिन दुबिधा॥
 हाथी, घोरा, रथ सजबाऊ बैलगरी जोतबाऊ।
 माई सब आ गुरुबर खातिर खरखरिआ मंगबाऊ॥
 सचिव सुमन्त्र बेबस्था कएलन केकई-सुत जे कहलन।
 सुभ मुहुर्त में सबके साथे भरत राम कन चललन॥
 चलइत रुकइत दल बल साथे अएलन गंगा तीर।
 कहलन “आज रात डेरा रहतक गंगे के तीर॥
 बाबूजी के अस्थि-कलस एतहीं गंगा में डालम।
 हुनका मुकती ला हम उत्तम संतति धरम निबाहम॥

ओन्ने गुह अपना चर के कहलन जा पता लगाबऽ।
 कोन नृपति सेना ले कहेना अएलक इहाँ बताबऽ।
 चर जा के सब पता लगएलक ले के अएलक हाल।
 राम-सिया के खोजे बन में जाइछन भरत बेहाल॥

अपना माई के करनी ला छमा जाचना करतन।
 आउर राजमुकुट आग्रह पुरबक हुनका लउटाएतन।।
 बाकी गुह के मन में भेलक तनिको न परतीत।
 आएल धन में टाटी लागे इ न जग के रीत।।
 निश्चित ए में केकई - सुत के हए कोनो खडजंत्र।
 सब दिन ला सत्ता पाबे के कुटिल केकई - मंत्र।।
 सेना जुद्ध करे ला आउर साधु - समाज छलाबा।
 जइसे निकलल दाँत हाथी के होइअ महज देखाबा।।
 इ सोंचइत आग्या देलन "हो जा सब जन तइआर।
 बिना समर के अबधपति न उतरथ गंगा पार।।
 भाई आज बिपत में परलन हम्मर बन्धु राम।
 इहे औसर हए कि आउ हुनका कोनो काम।।
 तोरा सब के पोसली सब दिन जौहर आज देखाबऽ।
 आज जुद्ध में प्रान दान दे ओकर मोल चुकाबऽ।।
 तू सब जुद्ध - कुसल टोली में बँट के ब्यूह बनाबऽ।
 जेतना नाओ किनारा पर ओ सब के तुरत डुबाबऽ।।
 महाबीर उज्जर गंगा जल के तू लाल बना दऽ।
 बन्धु - द्रोही केकई सुत के अप्पन बल बतला दऽ।।
 एन्ने करऽ तइआरी ओन्ने भेंट करे हम जाइले।
 की मंसा हए राम अनुज के जाने लेल चहइले।।
 जदि देखम अनुकूल भाओ त साथ बोलएले आएम।
 न त हम संकेत जुद्ध के ओतहीं से बतलाएम।।
 कहइत गुह मिसरी, फल, मधु के ले लमहर उपहार।
 चललन साथ लोग कुछ लेके दुबिधा भरल बिचार।।
 अबइत देख निसादपति के सचिब अगारी अएलन।
 हुनकर परिचय पुछलन आ अप्पन परिचय बतलएलन।।
 आबे के परजोजन कह कएलन सादर मनुहार।
 करु उपाय बन्धु जे से उतरु गंगा पार।।
 ओकरा बाद साथ ले हुनका अएलन भरत समीप।
 सचिब सभासद गुरु के साथे बइठल रहथ महीप।।
 सखा जान अग्रज के कएलन हरखित हो सतकार।
 बरा प्रेम से गरहन कएलन हुनकर सब उपहार।।

बड़कएलन अपना पैजरा में पुछलन कुसल सनेस।
 कइसे - कइसे रहलन भइआ पुछलन तनिक बिसेस।।
 भाभी आउर अनुज ला पुछइत भरल नयन में लोर।
 उत्तरीय से पोंछलन अपना भरत नयन के कोर।।
 देख भरत के दुख गुह के मन में भेलक परतीत।
 भाई ला साँचो हिनका मन में हए कोमल प्रीत।।
 बहुत-बहुत बतिअएलन दुन्नो मिटे न प्रेम पिआस।
 नृप के आग्रह पर गुह कएलन ओतहीं रात्री - वास।।
 देख चकित गुह दुन्नो भाई के निरमल अनुराग।
 सत्ता के ठोकराबे बाला अद्भुत अनुपम त्याग।।
 भेल बिहान उतारलन गुह सब के गंगा के पार।
 आउर कएलन बिदा नेह से दे आदर सत्कार।।
 राह देखाबे ला दू गो चर साथे चतुर लगएलन।
 आउर अरिआते ला अपने साथ दूर तक अएलन।।
 जमुना पार उतर सब अएलन भरद्वाज रिसिवर कन।
 आउर गुरु के साथे जाके कएलन हुनकर दरसन।।
 गुरु बसिष्ठ के देख रिसि हरखित हो आगे अएलन।
 कुसल पूछ के अर्घ्य पादय से सादर स्वागत कएलन।।
 टिकलन दल-बल साथ भरत आ ठंढएलन सुस्तएलन।
 तब अन्बेसी भासा में रिसिवर हुनका से पुछलन।।
 कोन प्रजोजन से चललऽ कहमाँ तोहर गन्तब्य।
 भरत अचानक आबे के बतलाबऽ तू मन्तब्य।।
 सुन के भरत करुन स्वर में रो अप्पन ब्यथा सुनएलन।
 भाई के लौटाबे अइली पिता न जीबित रहलन।।
 गुरु कएलन सम्पुष्ट बात रिसि के भेलक बिस्वास।
 हो प्रसन्न कहलन तू एतहीं करऽ निसा - निबास।।
 ओकरा बाद रिसि तप बल से कएलन सब सत्कार।
 भोजन, पान, सयन सुबिधा के अति सुन्दर उपचार।।
 भेल बिहान गुरु के साथे भरत रिसि लग गेलन।
 सुखमय सब सत्कार लेल उ धन्यबाद अति देलन।।
 आउर आग्रह कएलन मुनिबर पता तनिक बतलाऊ।
 मन ब्याकुल, भइआ-भाभी के दरसन सीघ्र कराऊ।।

रिसि बिदा करइत कहलन जा चित्रकूट हे बीर।
 ओतहीं परनकुटी में पएबऽ सिया लखन रघुबीर।।
 साथे देइले सिस्य पता तोरा पथ के बतलएतन।
 बिना बिघ्न-बाधा के तोरा चित्रकूट पहुँचएतन।।
 धीरे - धीरे रस्ता कटलक चित्रकूट लगिचाएल।
 भीर-भार कोलाहल से डर पंछी पसु पलाएल।।
 ठहरा देलन दूरे सबके आ कुछ जन के साथ।
 खोजइत चललन परबत ओरी जहाँ सिया रघुनाथ।।
 बन मंथन से भागे लागल मृग समूह आ हाथी।
 केऊ झारी में फँस गेलक केकरो बिछुरल साथी।।
 ओन्ने लछुमन राम सिया जंगल में घुमइत साथ।
 बन के सोभा देखइत रहथ खुस हो तीनों साथ।।
 एतने में आतंकित भगइत अबइत मृग के देखलन।
 कान खरा कएले, मुँह चंचल, खतरा भँपइत, पएलन।।
 राघब के लागल जंगल उद्वेलित आउर असान्त।
 सोचलन कोनो आफत कारन बन के जीब न सान्त।।
 कहलन "लछुमन साल बृक्ष पर चढ़ के जानऽ हाल।
 कहेला जंगल के पसु पंछी भेलक आज बेहाल।।
 साल बृक्ष पर चढ़ के लछुमन जब अबलोकन कएलन।
 एगो भारी सेना एही ओरी अबइत पएलन।।
 कहलन कोनो नृप के सेना एही तरफ अबइअ।
 पैदल, रथ, घोरा, हाथी के ताँता लगल लगइअ।।
 आग बुझा दू आस्रम के आ धनु पर डोर चढ़ा लू।
 आउर सुरक्षित खोह में भाभी के जल्दी पहुँचा दू।।
 एन्हरे आ रहलक ह सेना लच्छन बुरा लगइअ।
 छोट - छोट टुकरी सेना के कोनो चीज खोजइअ।।
 एगो बरा उँच हाथी पर राजध्वजा लहरइअ।
 ओकरा पाछे रथ के पाँती जेकर धजा उरइअ।।
 रंग - ढंग से अबधपुरी के सेना भाई लगइअ।
 साइत हमरे सब के खोजइत एन्ने तरफ अबइअ।।
 आ रहलन ह भाई भरत लरे ला सेना साज।
 मार समर में अपने के करतन असथाई राज।।

खंड-खंड में हो रहलक ह सत्ता ला खड्जंत्र।
 सोच समझ के मारइत हतन छोटकी माई मंत्र।।
 सत्ता के नाटक के भेलक सुरु दोसरका अंक।
 हटा अबध से अपने के बन में मारतन निस्संक।।
 चउदह बरसा राज न देलकइन मन में सुख - सन्तोस।
 "कुबरी - मंत्र" चढ़लकइन हुनका जुद्ध करे के जोस।।
 बाकी हुनका ग्यात न केतना रघुबर हतन समर्थ।
 राम-सक्ति आ राम - बान के समझ न पएलन अर्थ।।
 हमही बहुत समर ला हुनका से, अपने चुपचाप।
 देखू आज अनुज - रन - कोसल उरत सत्रु बन भाप।।
 आज क्रोध हम्मर छूटत बन के सर बिकट प्रचंड।
 सेना आउर समरथक साथे देम भरत के दंड।।
 चित्रकूट के धरती लेहू से भर आज नेहाएत।
 कुटिल बन्धु अपना करनी के फल हमरा से पाएत।।
 कहलन राम उतर के लछुमन तू निच्चा तनी आबऽ।
 बिना समझले - बुझले अप्पन रोस न तू धधकाबऽ।।
 बिना समझले बोले बाला होइअ न मतिमान।
 आउर बिना बिचारले होइअ काम न बुद्धि - प्रमान।।
 कोन अप्रिय घटना के चलते तू पूर्वग्रह ग्रस्त।
 अग्रज के निन्दा में तत्पर भेलऽ बन्धु ब्यस्त।।
 हमरा जनते भरत न कएलन तोरा प्रति अपराध।
 सब दिन पइली सब भाई ला मन में स्नेह अगाध।।
 भरत समर ला सेना साजत हमरा न बिस्वास।
 सीलबान धर्मग्य सनेही करत न गलत प्रयास।।
 हमरा मत से उ पीरा से ब्याकुल इहाँ अबइअ।
 हमरा सब के बिना अजोध्या ओकरा बहुत डँसइअ।।
 उ गंगा सन निरमल आउर द्रबनसील नबनीत।
 लउटाबे आ रहलक सत्ता बेकल बन्धु - पिरीत।।
 मान ल ओकरा मन में भारी हए सत्ता के लोभ।
 त सब दिन उ रहतक राजा ए में कोन बिरोध।।
 हमरा मन में चाह न तनिको पाउ अबध के राज।
 जे दिन जागत चाह अरज लेम दोसर कोनो राज।।

हम छत्री, बाहुबल सम्पत्ति, जब सर-चाप उठाएँ।
 धरती के कोनो टुकरी पर एगो राज बनाएँ।।
 आज उठा ली धनुस त सौ-सौ राज तुरत ली जीत।
 आउर जादे चाही त सऊँसे धरती ली जीत।।
 तोरा चाही त कहऽ हम मांग भरत से राज।
 दे देइले छन में कोसल के सासन तोहरा आज।।
 भरत कमल सन कोमल, सागर सन गंभीर उदार।
 दरपन सन उ स्वच्छ न मन में कोनो गूढ़ बिचार।।
 ओकरा पर ओतने जेतना अपना पर हए बिस्वास।
 भाई पर भाई के चाही परबत सन बिस्वास।।
 ए लेल तू संजम रक्खऽ आ आबे द नजदीक।
 बिना सचाई जनले कोनो निरनय कभी न ठीक।।
 लछुमन लज्जित होके कहलन “भइआ छमा मंगइले।
 छोटकी माई के करनी हम भूल न कभी पबइले।।
 एही से आबेसित मन न कएलक सोंच - बिचार।
 क्रोध नास बुद्धि के कएलक अएलक अधम-बिचार।।
 अब आगे से कभी न अपने हमरा अइसन पाएँ।
 संजम अनुसासन बिबेक से अप्पन क्रोध घटाएँ।।

ओन्ने खोजइत सत्रोहन आ भरत बेआकुल अएलन।
 दूर पेर के निच्चा तीनो खरा देखाई परलन।।
 भाई के तन पर बल्कल, उपजल भारी संताप।
 हाय, कोन घरी में माई कएलन अइसन पाप।।
 चिक्कन रेसमी बस्तर जेकरा तन पर सोभा पएलक।
 आउर अगर फुलेल गंध से केस सुगंधित रहलक।।
 उहे तन पर रुक्खर बल्कल आ लटिआएल केस।
 हाय राजपुत्र के तन पर तापस अइसन भेस।।
 भरत आँख में लोर भाई कहइत आगे चल गेलन।
 आउर दुन्नो राम चरन में जा सीधे गिर गेलन।।
 उठा राम दुन्नो भाई के लेलन उर में साट।
 जइसे संगम एक करइअ दू नद्दी के पाट।।
 रोए लगलन भरत सुबुक के बहल लोर के धार।
 आँसू बन के उमरल मन के दुख, ग्लानि आ प्यार।।

भरत राम के आँख भरत के समझएलन मतिधीर।
 ओन्ने रीता के नैना से झर - झर बहलक नीर।।
 लछुमन ग्लानि में डूबल आ मने मन पछताथ।
 भारी गलती हो जाइत जदि न रोकितन रघुनाथ।।
 आँसू बन के दुख उमरल जइसे सागर में ज्वार।
 चित्रकूट पावन हो गेलक नेहा नेह के धार।।
 सिसक - सुबुक के आखिर पाँचो भेलन तनिका सान्त।
 जइसे बरसा से जलधर के उमरन होइअ सान्त।।
 कुटिआ ओरी चलइत रघुवर कहलन कुसल बतावऽ।
 कहेना दुन्नो भाई दुब्बर, दुख से मलिन, बतावऽ।।
 माई-बाबूजी के भाई समाचार बतलावऽ।
 कइसे अनुजवधू सब हतन हमरा के बतलावऽ।।
 गुरुवर आ मंत्री, परजा के कुसल सुनावऽ भाई।
 राज सुरक्षित कि कोनो सत्रु से ठनल लराई।।
 “भइआ कुसल न अबधपुरी के, नृप गेलन परलोक।
 अबधपुरी डूबल पीरा में ब्याकुल कएले सोक।।
 तू, भाभी, लछुमन बन में हम एकाकी असहाय।
 पथराएल बुद्धि, न सुझलक कोनो उचित उपाय।।
 तब गुरुवर माई परिजन के साथे इहमाँ अइली।
 मानसरोवर के बासी के बन में जिअइत पइली।।
 हमरे कारन भेलक इ सब माता बनल बिमाता।
 अब न सहल जाइअ इ पीरा हे हमर दुख त्राता।।
 लौट चलऽ घरे अब भइआ जदि भरत से प्यार।
 तोरा बिना अजोध्या में छाएल भारी अन्हकार।।”
 “भरत ब्यथा समझइले तोहर, बाकी गलती कएलऽ।
 राजा बिना अजोध्या के तू छोर उचित न कएलऽ।।
 केकरा बल पर छोरलऽ उहमाँ अबधपुरी के राज।
 राजनीति के मंत्र भुलएलऽ कइसे भाई आज।।
 दुख में साधारन जन के बुद्धि कुंठित हो जाइअ।
 बाकी बुद्धिमान जन दुख में ग्यान दीप जरबइअ।।
 ब्यर्थ ग्यान जदि उ न उतरलक बन जीवन - ब्यापार।
 ब्यर्थ मनुस जदि कोमलता से पौरुस जाए हार।।

“अब जे कहऽ बाकी तोहर प्यार भुलएलक ग्यान।
 भाई के आगे न रहलक सत्ता - सुख के ध्यान।।
 तोरा ला जदि राज अबध के भोजन ब्यर्थ अलोना।
 त हमरो ला राज अबध के न हए भइआ सोना।।
 जेकरा चलते बाप मरल भाई पएलक बनबास।
 उ सत्ता भोगे से अच्छा एतहीं मरम पिआस।।
 हम गुरुवर के साथे अइली माई सब हथ साथ।
 सेवा आउर सुरक्षा ला कुछ सेना लइली नाथ।।
 न मानलक कुछ लोग प्यार में जे तोहरा पगलाएल।
 रोक न पइली ओकरा उ सब पाछे - पाछे आएल।।
 पूज्य सभासद आउर सचिव अएलन तोरा समझावे।
 बीत रहल कि अबधपुरी पर इ तोहरा बतलावे।।
 सेनापति के माथा पर छोरली रक्षा के भार।
 आउर सचिव कुछ रह गेलन देखतन दैनिक ब्यापार।।
 राज रहे चाहे जाए चिन्ता न तनिको हए मन में।
 तोरा ला सौ जनम बिताएम राज छोर के बन में।।
 देखऽ आ गेलन गुरुवर खोजइत हमरा के नाथ।
 सब माई अएलन उरमिल के लेले अपना साथ।।
 बाकी जन ओन्हरे ठहरल हथ आग्या पा के अएतन।
 तोहर इच्छा होएत त आके सब दरसन करतन।।”
 “अच्छा” कहइत राम गुरु के पद छुए ला बढ़लन।
 आउर हुनका पाछे - पाछे सीता लछुमन चललन।।
 तीनो गुरु के चरन धूल ले रखलन अपना माथ।
 ओकरा बाद चरन छूलन माई सब के रघुनाथ।।
 “बेटी हम्मर, सोना!” कहइत-कहइत फफक-फफक के।
 रोए लगलन कौसिल्या सीता के हाथ पकर के।।
 “माई!” कहइत लिपट सिया हुनका से, रोए लगलन।
 आउर सुमित्रा ओन्ने सुत के देख न आँसू रोकलन।।
 रोए लगलन राम - लखन के पकर सुमित्रा माई।
 पीछे खरा झुकएले माथा रहलन छोटकी माई।।
 उरमिला कुछ सोच न पएलन रुकल न बिकल रोआई।
 कौसिल्या के पीठ पकर रोए लगलन कह “माई”।।

अजब दृश्य चारो ओरी डूबल आँसू में नैन।
 हर केउ दुख से ब्याकुल केकरो मन तनिक न चैन।।
 असथिर राम, बिकल भितरी से, जइसे बिकल पहार।
 झेलइत चारो ओरी उमरल दुख आँसू के ज्वार।।
 एतने में सुमन्त्र आ कहलन अबइत हथ मिथिलेस।
 हुनका साथे रानी आउर दासी - दास बिसेस।।
 बँटल ध्यान सब कोई के थम गेलक तनिक कनाई।
 आँसू पोंछ बेबस्थित भेलन सब माई, सब भाई।।
 कहलन राम “कुटी से लछुमन लाबऽ तनिक चटाई।
 आसन देके आदर से बइठाबऽ सबके भाई।।
 सीता तू माई सब के भीतर कुटिआ में ले जा।
 मिथिलापति आ गुरुबर ला मृगछाला दू गो दे जा।।
 कहलन सचिव न चिन्ता एकर करु अपने नाथ।
 भोजन सयन बेबस्था के सब साधन लइली साथ।।
 खाए पीए के चिन्ता करतक सेवक समुदाय।
 नाथ न एकरा ला अब सोंचू अपने कोई उपाय।।
 बोझ बने ला केऊ न इहमा अएलक ह रघुबीर।
 सब के मन खा के घाएल हए राम - बिरह के तीर।।”
 एतने में दलबल के साथे आ गेलन मिथिलेस।
 आगे बढ़ के अनुज सहित स्वागत कएलन अबधेस।।
 चारो के छाती से चिपटा लेलन बिकल महीप।
 दुलका देलक दू गो मोती हुनकर नैन-सुसीप।।
 सीता आ उरमिल्ला आ के छूलन सब के गोर।
 नैन सुनैना के भर आएल रोक न पएलन लोर।।
 अर्घ - पादुय से स्वागत सब के सादर रघुबर कएलन।
 आउर सुनैना के सीता कुटिआ भीतर ले अएलन।।
 जनक बतएलन “मालूम भेलक तू बन अएलऽ राम।
 आउर सुत - बिजोग में गेलन अबधपति सुरधाम।।
 हम चल देली तात अजोध्या कुसल पुछारी लेल।
 बाकी आवे में हमरा तनिका बिलम्ब हो गेल।।
 ताले भरत अबध से तोरा खोजे ला चल देलन।
 तोरा लेल बिकल परिजन हुनका साथे हो गेलन।।

हुनका पाछे - पाछे हमहू सृंगबेरपुर अइली।
 पता बतएलक गुह, ओकरा प्रीती से हृदय जुरइली।।
 गंगा - जमुना पार करइत हम चिन्ता ब्याकुल राम।
 आखिर अइली सिद्ध तपस्वी भरद्वाज के धाम।।
 उहे बतलएलन कि तोहर चित्रकूट में बास।
 आउर भरत गेलन ह ओतहीं क के रात्रि - निवास।।
 उ रोके ला चहलन बाकी मन न हम्मर मानल।
 हुनका से आग्या लेके चल अइली इहमाँ भागल।।
 सिद्ध मुनि हथ भरद्वाज देलन हमरा निरदेस।
 आउर तोरा बारे में बतलएलन बात बिसेस।।
 हम प्रसन्न सन्तुष्ट तू बेटा कएलऽ उत्तम काम।
 मान पिता के आग्या जे बनबासी बनलऽ राम।।
 सोक न करऽ पिता मरन के उ अब पितर महान।
 हुनका आत्मा के सान्ती ला करऽ पिंड के दान।।
 उ करतब्य निभएलन दे अप्पन परान अनमोल।
 तू करतब्य निभावऽ बन में कस्ट सहे के मोल।।”
 सुन बिदेह के परबोधन धीरज धएलन रधुबीर।
 चललन पानी देबे लछुमन संग मंदाकिनी तीर।।
 जल के अंजली दे के अएलन कएलन पिंडा दान।
 जाचक जन पएलन हुनका से अन्न - बस्त्र के दान।।
 यथा जोग आहार ग्रहन कर जहमाँ - तहमाँ लोग।
 पटा गेल तरु के निच्चा पा छाँह सुखद मन जोग।।
 दिन ढललक आ सिमट गेल रबि किरन मनोहर लाल।
 रात चान्दनी लेके आएल सीतल संध्या काल।।
 चह - चह कके चिरंई सब भेलक खोंता में सान्त।
 झिल्ली के रब से मुखरित हो गेलक बन के प्रान्त।।
 उगलन चन्द्रदेब चानी सन भेलक बन के अँचरा।
 चानी के धारा में बहलक अन्धकार के कचरा।।
 जरल मसाल पराओ सब पर निखरल बन के सोभा।
 झाँके लगल ईजोर तनिक अलगा पत्ता के दोगा।।
 झोंझ - झोंझ के बेधे लागल उज्जर - पीअर तीर।
 चानी के आभा उपलाएल मन्दाकिनी के तीर।।

जथा जोग सब कोई कएलन संध्या - पूजन - बन्दन।
 आउर गुरु से कहलन जाके विकल केकई नन्दन।।
 “हे गुरुदेव दया क के अब अपने काम बनाऊ।
 जे से राम लउट घर चलथ अइसन जुगुत लगाऊ।।
 भइआ के आगे गुरुबर हम मुँह न खोल पबइले।
 कइसे समझाऊ हुनका के समझ न तनिक पबइले।।”
 गुरुबर कहलन “चलऽ राम लग तोहर बात रखइले।
 अपना भासा में तोरा मन के हम भाओ भरइले।।
 सफल अगर हो गेली त सार्थक भाओ आ भासा।
 न त पत्थर पर कब उगलक आँसू के अभिलासा।”
 ओकरा बाद गुरु कुटिआ लग आसन कुछ बिछबएलन।
 सचिव, सभासद, राम-लखन मिथिलापति के बोलबएलन।।
 बइठल सभा खँखर के गुरुबर कहलन “हे रघुनाथ।
 जे ला हम सब इहमाँ अइली मालूम तोहरा बात।।
 महाराज के बाद तुहीं अब हतऽ कुल के माथ।
 माई - भाई, परिजन - पुरजन तोरा बिना अनाथ।।
 कुल मरजादा के रच्छा तोहरे करे के परतओ।
 गृहनीती से राजनीती तक तोरे सोंचे परतओ।।
 राजाहीन अबध हए अखनी, आउर भरत कुमार।
 तोरा छाया में खोजे अएलन दुख के उपचार।।
 तोरा निरबासन में हिनकर तनिको न हए हाथ।
 हम हती साखी आउर तोरो मालूम रघुनाथ।।
 नृप रहितन जीबित त होइत आउर तरह के बात।
 बाकी ए बदलल हालत में सोंचऽ कुछ हे तात।
 सब जन के अनुरोध कि तू अब लौट अजोध्या चलऽ।
 भाई के पीरा समझऽ परजा के पालन करऽ।।
 पिता - बचन के पालन कएलऽ बन में आ रघुबीर।
 राज धरोहर तोहर लउटाबे ला भरत अधीर।।
 राजमुकुट साथे लएलन ह तू अभिसेक कराबऽ।
 एही में सब के सुख राघव एकरा मत ठोकराबऽ।।
 बिधवा माता ओरी ताकऽ हथ अँचरा फइलएले।
 आउर छोटकी माई हालत देखऽ कइसन कएले।।”

गुरु के बानी से उत्साहित हो के भरत कुमार।
 हाथ जोर कहलन "हे भाई, अपने परम उदार।।
 हमर सब के हार्दिक इच्छा करु न सोंच - बिचार।
 राजमुकुट कोसल के थाती भाई करु स्वीकार।।
 अपने अग्रज, पिता तुल्य, हम सब अपने के दास।
 हे स्वाती, चातक बन अइली करु न नाथ निरास।।
 बेकतीगत स्वारथ ला बनलन हमर माई ब्याध।
 रास्ट्र हेत के बलि चढ़ा के कएलन उ अपराध।।
 जनमत के अपमान करत जे निरमल जल के कीच।
 कतनो लमहर होएतक बाकी रहत नीच के नीच।।"
 सुन के रघुबर के मुँह पर करुना मिश्रित मुसकान।
 बिकस गेल जइसे बादल से झाँक गेल दिनमान।।
 कहलन राम गुरु से सादर "हे गुरुदेव महान।
 अपने रघुकुल के हितकारी परमपूज्य बिद्वान।।
 दसा पिता के देखली अपने जे में हम बन अइली।
 हुनके मान बढ़ाबे ला हम हुनकर ममता छोरली।।
 अब हम लौट समय से पहिले अगर अजोध्या जाएम।
 "चतुर नटकिआ" के सम्बोधन हम जनता से पाएम।।
 मुँह पर कहे न केऊ भले पर पाछे में बर - छोट।
 निन्दा करतक, झुट्टा कहतक मानत मन में खोट।।
 ए लेल करु न आग्या अइसन जे से गिरे चरित्र।
 रहू न घर के आउर घाट के जीवन बने बिचित्र।।
 अल्लग - अल्लग दू गो आग्या देलन अबध नरेस।
 राज भरत ला आउर बन ला हमरा के आदेस।।
 अब हथ पिता न जग में ए लेल पलटत कइसे बात।
 हुनकर आग्या पालन अब हए सील धरम के बात।।"
 दोस न ए में भरत कुँअर के न माँ के अपराध।
 मरजादा पर आस्था के इ हए परमान अगाध।।
 भाई बीतल दिन न अबइअ, नदी न लौटइअ।
 तीर समान पुरुष के बानी एके बेर चलइअ।।
 पिता परम धरमात्मा ग्यानी जग्यसील मतिमान।
 उ न बिबसता में देलन छोटकी माँ के बरदान।।

इ बरदान अमोल रहे हुनका ला प्रान समान।
 दे के उ खुस भेलन बन्धु बरसल मेघ समान।।
 ए लेल हुनका मरलो पर एकर सम्मान करइले।
 एकरा रक्षा ला अप्पन जीवन सरबस अरपइले।।
 सुखी आउर सन्तुस्ट मनुस ला जंगल महल समान।
 आउर लोलुप नर ला सुरपुर होइअ नरक समान।।
 हम सन्तुस्ट रहम बन में आ चउदह बरस बिताएम।
 देब समान पिता हुनकर आदेस न हम झुठलाएम।।
 तू लौटऽ परजा के पालऽ तन - मन आउर बचन से।
 बाबूजी के आत्मा तिरपित होएत नेक चलन से।।
 आउर एगो बात ध्यान से सुनऽ भरत मतिमान।
 हए रहस्य के बात न जेकर तोहरा तनिको ग्यान।।
 छोटकी माँ के साथ ब्याह के समय अबध नरनाथ।
 कएलन र परतिग्या तोरा नानाजी के साथ।।
 केकई से सुत होएत त उहे बनतक जुबराज।
 आउर ऊहे पएतक कोसलपुर के भाई राज।।
 आउरो जानऽ भेल रहे जब देबासुर संग्राम।
 ओ में नृप के प्रान बचाबे के माँ कएलन काम।।
 ओही बेर खुसी से बिह्वल नृप देलन बरदान।
 छोटकी माई ओकरा रखलन भारी निधि समान।।
 पा के उचित समय उ मंगलन यदि तोरा ला राज।
 तब तूँही बतलाबऽ कइसे कएलन अनुचित काज।।
 ए लेल हर हालत में भाई बचन पिता के मानऽ।
 आउर हमरा लौटाबे के अप्पन हठ तू त्यागऽ।।
 हमरा जंगल में रहला से हए सब ओर भलाई।
 ए लेल ल आसीस अबध जा राज सम्हारऽ भाई।।
 संतति के करतब पालन से मुकती पितर पबइअ।
 आउर अबग्या कएला पर उ जीते नरक भोगइअ।।”
 गुरु कहलन “हए ठीक मगर कुल के इतिहास कहइअ।
 जनमत न बिपरीत त निस्वय बरके राज पबइअ।।
 ए लेल तोरा माने चाही सुत जनमत के बात।
 हमरा ए में लाग रहल ह न कोनो ब्याघात।।”

कहलन राम "उचित कहली लेकिन इ तब के बात।
 जब सब कुंछ अनुकूल प्रकृति के चले सनातन तात।।
 लेकिन आपद धरन समय में नियम न मानल जाइअ।
 अपने के शिक्षा, बिबेक संकट में काम अबइअ।।"
 हम्मर ग्यान बिबेक कहइअ मान पिता आदेस।
 चउदह बरिस बिताउ बन में रह तापस के भेस।।
 जब अपने के सीख मान हम जीवन में गतिसील।
 तब अपने सब कहेना हम्मर भंग करइले सील।।"
 रघुबर के जुक्ति से गुरुबर के मुँह भेलक बन्द।
 मने मन कहलन जीअऽ तू निरमल रघुकुल चन्द।।
 तब केकई नन्दन ब्याकुल हो दोसर जुक्ति लगएलन।
 "हम एतही अनसन पर बइठम" सब जन के बतलएलन।।
 जाले मानतन बात न भाई अन - जल न अपनाएम।
 कुस के आसन पर मुँह ढँक के अप्पन प्रान गमाएम।।"
 सुन के लोग चकित सोचलन अब बनतक निश्चित काम।
 भरत मरन कोनो हालत में सहतन न सिरी राम।।
 बाकी राम अचंचल कहलन "मंगले मौत न मिलतओ।
 अनचाहल दुख जीवन में तोहरा सहे के परतओ।।
 बिप्र धरम जाचना आउर छत्रिए धरम हए भोग।
 अनसन करबऽ, धरम गमएबऽ मिलतओ ग्लानि सोग।।"
 सुन के भरत बिकल कहलन हे ग्यानसील पासान।
 अइसे भोंथ बनाऊ न हमरा जुक्ति के बान।।
 हे बानी के सिद्ध तपस्वी बिद्या के आगार।
 अपने से के जीतत जग में बानी के ब्यापार।।
 हम हारल, दुख से पिघलल अपने के चरन गहइले।
 जे सत्ता अपने ठुकरइली हमहू जहर बुझइले।।"
 सब कोई कहलक "धन्न-धन्न अइसन न देखली सुनली।
 सत्ता छोरे ला भाई में अइसन होर न पइलीं।।
 सुख स्वारथ ला देखली सुनली मार - काट बिलगाओ।
 बाकी ए दुन्नो भाई के देखली अजब सुभाओ।।
 गेन समान राज आज दुन्नो ओरी लुढ़कइअ।
 दुन्नो भाई में न केऊ पकरे लेल चहइअ।।

के लमहर के छोट न हमरा सब के तनिक बुझाइअ।
 बन्धु प्रेम के अइसन निरमल उपमा कहाँ मिलइअ।।
 आखिर कहलन गुरु "सुनऽ हे भरत सील गुन खान।
 त्याग - समर के जोद्धा हतऽ दुन्नो एक समान।।
 दुन्नो हठे काम न चलतक ए लेल राह खोजइले।
 मिथिलापति आ सचिव सभासद से हम बात करइले।।"
 ओकरा बाद गुरु जाके सब कोई से बतिअएलन।
 सोंच - बिचार अन्त में एगो निरनए ले के अएलन।।
 गुरु कहलन जदि दुन्नो पछ में होए उत्तम बात।
 तब छोटका के माने चाही बरका के प्रिय बात।।
 ए लेल लउटथ भरत अजोध्या आउर राज सम्हारथ।
 रहतन राम बने में हुनकर ममता भरत बिसारथ।।
 हिरदय पर पत्थर रख के करतब के पालन करऽ।
 अपना ला सब लोग मरइअ तू अनका ला मरऽ।।
 रामो के रक्खे के परतइन तोहर थोरका मान।
 खाली हाथ तोरा लउटएतन पएतन न सम्मान।।
 ए लेल दथ खराओन अप्पन तोरा के रघुनाथ।
 मान प्रतीक राम के रक्खऽ ओकरा के तू माथ।।
 ले चल के ओकरा कोसल के गद्दी पर बइठाबऽ।
 रामराज के प्रतिनिधि बनके बेटा राज चलाबऽ।।
 एही से दुन्नो भाई के हठ के रक्षा होतओ।
 एही से मरजादा बढ़तो सबके मंगल होतओ।।
 बेमन के, बरजोरी हठ से होइअ जे कुछ काम।
 कभी न केकरो ला हितकर होइअ ओकर परिनाम।।
 बुद्धिमान उहे जे लउटे कभी न खाली हाथ।
 एक लेल हो सुन्तुस्ट चलऽ ले राम खराओन साथ।।
 सुन के भरत निरास छोर निस्वास चतुरदिक तकलन।
 "जइसन आग्या गुरुजन सब के" उ कातर हो कहलन।।
 बढ़ के राम लगा छाती से कहलन भरत सुधीर।
 अनुत्साह के काढ़ऽ मन से हे भाई रनबीर।।
 "ठीके हए भइआ हम जाइले झेले कोसल राज।
 बाकी द आग्या हम छोखू राजस जीवन आज।।

कन्द मूल फल खाके आउर बल्कल वसन पहन के।
 चरन पादुका के आग्या से करम राज अबध के।।
 तोरे लेखा तपसी बन हम घर के बिपिन बनाएम।
 कमल - धरम से अबधपुरी के सासन नाथ चलाएम।।
 लेकिन एगो बात कहइलओ पुरला पर बनबास।
 दोसर दिन तू अबध न अएवऽ भइआ हमरा पास।।
 त निश्चित तोरा बिजोग में अप्पन प्रान गमाएम।
 इ हम्मर हए वज्र प्रतिग्या तनिक न देर लगाएम।।
 कहलन राम "न अइसन औसर आएत भरत सुभाग।
 प्रान समान प्रिय तू कइसे जारम दुख के आग।।"
 सब लोग हरखित भेल कि रहलक दुन्नो जन के बात।
 बीतल चिन्ता आउर अनिस्वय से भरिआएल रात।।
 सब कोई दू दिन रहलन बन में अपना मन से घुमलन।
 चित्रकूट के सोभा देखलन मन्दाकिनी नेहएलन।।
 आखिर आएल बिदा समय के भेलक लोग उदास।
 फिक्का भेल रंग बन के दिनकर के मन्द प्रकास।।
 रो धो के मिल जुल सब कोई पोंइतत अप्पन लोर।
 भारी मन से धीरे - धीरे चलल अबध के ओर।।



❀ ओम ब्रह्मणाय नमः ❀

अपहरण कांड

वन्दना

हे जग सिरजनहार चतुरमुख कमलासन करतार।
 हे दुनिया के भाग विधाता पहिला रचनाकार।।
 तोहर लीखल लेख जगत में केऊ न मेट सकइअ।
 बली एक से एक इहाँ कुस - काँटा में भटकइअ।।
 तोरा आगे पुरुसारथ के अस्व सिथिल हो जाइअ।
 भरल पुरल जीवन पत्ता सन आन्ही में उरिआइअ।
 बुद्धिमान के मति बउराइअ राजा रंक वनइअ।
 निम्न निम्न लोग भिखारी वन दर दर भटकइअ।।
 तू ताकऽ त टेंढ़-मेंढ़ जिनगी हो जाए सोझ।
 तू न ताकऽ त पहार दब जाए फूल के वोझ।।
 दूरदिन से रच्छा ला देओता सुभ आसीस मंगइले।
 सजन ला सुख आउर दुरजन ला दुख-त्रास मंगइले।।

महिमा देखू भाओ के पाहन भेल महेस।

रामचरन के पादुका वनलक अवध नरेस।।

गेलन भरत अजोध्या, एन्ने चित्रकूट भेल सान्त।
 भीर - भार से थाकल जंगल सूतल होके क्लान्त।।
 पेंर छाँह तर बइठल रघुवर गुमसुम आउर उदास।
 सीता तिनका नोचइत बइठल चुप्पे हुनका पास।।
 लछुमन बइठल तकइत जेन्ने मन्दकिनी के धार।
 साइत जोरइत मन के कोनो टूटल उलझल तार।।
 एकाएक राम कहलन "प्रिय भाई एन्ने आवऽ।
 टँगले हतऽ सुक्खेला जे कपरा लेले आवऽ।।
 अएला पर कहलन भाभी संग सब सामान बटोरऽ।
 चित्रकूट आ गेल अजोध्या फेनू फेनू आएत।
 वनवासी जीवन में रह रह के बाधा पहुँचाएत।।

दंडक बन चलऽ अब ओतहीं हम सब करम निवास।
 हए धनघोर भेआनक जंगल केऊ न आएत पास।।
 'जइसन आग्या' कहइत दुन्नो सब कुछ बान्ह-बटोरलन।
 परदेसी लेखा चुप्पे दंडक ओरी चल देलन।।
 न केऊ जनलक, न केऊ मिललक, न एगो पत्ता खरकल।
 मन्दाकिनी रोकइत रह गेलक करइत आतुर कल-कल।।
 चित्रकूट भेलक उदास सब सोभा भेल मलीन।
 जइसे लछमीं के गेला से होइअ घर सिरीहीन।।
 रस्ता में मालूम भेलक हथ एगो मुनि महान।
 सब प्राणी के हित ला तत्पर अत्रि अति गुनमान।।
 अनुसूया हुनकर पतनी पतिबरता आ तपसील।
 सब जन से पूजित, सम्मानित क्रोध लोभ से हीन।।
 ममता के मूरत तप बल से दप दप करइत देह।
 सब ला अपनापन आ ममता सब ला सीतल नेह।।
 हुनका ग्यान सील तप के परसंसा सुन के राम।
 सोचलन अइसन मुनि के दरसन होएतक सुख के काम।।
 ए लेल भाई पतनी साथे अत्रि आश्रम अएलन।
 आउर अप्पन परिचय दे के हुनकर बन्दन कएलन।।
 मुनि सादर स्वागत कएलन आ देलन सुभ आसीस।
 सुखी रहऽ आ बनऽ जसस्वी जीअऽ लाख बरीस।।
 जान राम के कथा रिसि ममता से दरबित भेलन।
 त्यागी निरलोभी सज्जन कह हुनका आदर देलन।।
 अपने कन ठहरएलन देलन पतनी के निरदेस।
 सीता पतिबरता अएलन ह द हिनका उपदेस।।
 बेटी लेखा सीता के अनुसूया देलन प्यार।
 लागल जंगल में सीता के मिललक माँ के प्यार।।
 अनुसूया कहलन बेटी बन आ के अच्छा कएलऽ।
 दुख में पति के साथ न छोरलऽ पतनी धरम निभएलऽ।।
 दुनिआ में पति से अल्लग न पतनी के असथान।
 पतिए के छाया में नारी ला सब सुख - सम्मान।।
 पति से स्नेह न बन्धु जगत में, न उत्तम हितकारी।
 पतिए से सोभा दुनिआ में पएलक सब दिन नारी।।

ए लेल जे पतनी सुख-दुख में पति से नेह रखइअ।
 उ नारी जीते जी जग में सब सुख स्वर्ग पवइअ।।
 जे नारी पति से बिग्रह रखके मनमान करइअ।
 उ सुख से वंचित एही दुनिया में नरक भोगइअ।।
 नारी आउर पुरुष पूरक जइसे गारी के पहिआ।
 गारी तब चलतक जब चलतक एक दिशा में पहिआ।।
 तोरा पर प्रसन्न हम बेटी अप्पन कथा सुनावऽ।
 कइसे बर पएलऽ रघुबर सन हमरा तनिक बतावऽ।।
 तब सीता संकोच नमित मुँह से मोहक भासा में।
 स्वयंबर के परसंग बतएलन हुनका से तनिका में।।
 सुन के सब परसंग रिसि पतनी विह्वल हो गेलन।
 साट करेजा में सीता के बेटो लेखा लेलन।।
 उठ के गेलन कुटिआ में आ लएलन कुछ उपहार।
 दिव्य बसन, आभूसन सुन्दर आउर उत्तम हार।
 कहलन बेटी गहना कपरा देओता से पहली र।
 देम सुपातर नारी के इहे मन में सोचली र।।
 तोरा देइत हमरा मन में हए ओतने सन्तोस।
 जेतना धरती पर बरसे से मेघ पवइअ तोस।।
 सीता सादर छू देलन बाकी कहलन हे माई।
 हम बनवासी की करम ले इ साधन सुखदाई।।
 आउर स्वामी से पुछले बिन कइसे लू उपहार।
 पतनी के लाइक न होएतक माई इ आचार।।
 सुन के अनुसूया मुसकाइत कहलन बेटी सीता।
 तू सचमुच पति के छाया तू साँचो प्रेम पुनीता।।
 हए तोहर संकोच उचित हम लेली सहज परीच्छा।
 तू साँचो निरलोभी मन में तनिक न राजस इच्छा।
 ओकरा बाद बोला रघुबर के कहलन बेटा राम।
 लेबे ला उपहार सिआ के द आग्या सुखधाम।
 धन्न भाग तू सीता अइसन पतनी पाबन पएलऽ।
 काएलऽ उत्तम काम कि हिनका बन में लेले अएलऽ।।
 सीता से कहलन तू पेन्हऽ करऽ सब सिंगार।
 यन तोहरा ला नइहर आउर बन तोहर ससुसार।।

पेन्हा ओढ़ला से न खंडित होएतक इ वनवास।
 असली बात कि मन में केतना हए केकरा संन्यास।।”
 इच्छा जान पति के सीता लेलन सब उपहार।
 पेन्हा ओढ़ पद छूलन आउर पएलन नेह दुलार।।
 अत्रि कहलन तीनो जन एतही तू रात बितावऽ।
 सुख से रहऽ आउर अप्पन कथा तनिक बतलावऽ।।
 एकरा से आगे जएबऽ त बन मिलतओ घनघोर।
 जहाँ तहाँ आस्रम रिसि के, बाकी निसिचर के जोर।।
 तू दुन्नो पौरुष के प्रतिमा छत्री धरम निभावऽ।
 राक्षस सब के अनाचार से जन के त्रान दिलावऽ।।
 रिसि आग्या अनुसार राम आस्रम में रात बितएलन।
 बिहने खनी बिदा ले दंडक बन के भीतर अएलन।।
 बढ़इत, कुस-काँटा से जुझइत बन के नव मेहमान।
 खोजे लगलन रात बिताबे ला कोनो असथान।।
 आखिर मन लाइक एगो जगह पएलन रघुनाथ।
 कुटी बनाबे में जुट गेलन सीता लछुमन साथ।।
 भेल कुटी तइआर लखन कुछ घास फूस ले अएलन।
 भइआ भाभी के सूते ला ओकरे सेज बनएलन।।
 भेल साँझ त हाथ - गोर धो संध्या बन्दन कएलन।
 पत्ता के दोना में ले के कन्द - मूल कुछ खएलन।।
 जगह अपरिचित मुखरित सबतर झिल्ली के झनकार।
 हिंसक पसु के परे सुनाई रह - रह गरज पुकार।।
 निसचर के आसंका अल्लग सूत न तनिको पएलन।
 बोलते बतिआइते तीनो आँखें में रात बितएलन।।
 भेल बिहान नित्य कर्म, सन्ध्या बन्दन सब कएलन।
 कन्द मूल आहार ग्रहन कर घूमे लेल निकललन।।
 आस पास के रिसि मुनि कन आश्रम - आश्रम गेलन।
 सादर अप्पन परिचय देके हुनकर परिचय पएलन।।
 देख तेजस्वी वीर धनुरधर बिनई राजकुमार।
 रिसि मुनि सब स्वागत कएलन दे आदर उपहार।।
 पुछलन राम रिसि सबसे कइसे जग-जाप चलइअ।
 धरम करम आ तप में कोनो बाधा न त अबइअ।।

कहलन सब थोरके दूरी पर भारी असुर - निवेस।
 रिसि पुलस्त के पोता रावन से सासित उ देस।।
 महाबली मायावी रावन सागर पार रहइअ।
 ओक्कर भाई खर-दूसन इहमाँ सासन चलवइअ।।
 उ सब बेद बिरोधी हमरा सब ला दोसर काल।
 ओकरा बल से सदा कैपइअ हम्मर सब के प्रान।।
 जप - तप में बाधक हमरा सब के भारी दुख देइअ।
 हमरा सबके कखरी - कोम्हरा उ पापी समझइअ।।
 जनस्थान खाली हो गेलक अनाचार से ओकरा।
 तप बल झूठ, बेकार साप बल, बाल न बाँका ओकरा।।
 देखू ओन्ने लागल रघुबर हड्डी के अंबार।
 इ सब रहथ रिसि-मुनि जेकरा देलक उ सब मार।।
 जन्ने जाएम तन्ने मिलतक सूनसान घर-बार।
 ओही से अनुमान लगा लू रावन के अतिचार।।”
 रघुबर देखलन सब जन के मुँह पर अंकित आतंक।
 आर्स चेतना खा के बेकल असुर - त्रास के डंक।।
 कहलन हम छत्री, रक्षा ला जीवन अरपित करम।
 साधु जन के रक्षा अब से हम्मर धरम - करम।।
 आग्या दीऊ अपने सब कुछ घूमे लेल चहइले।
 ए बन के भूगोल तनिक हम जाने लेल चहइले।।
 कह के घूमे ला जंगल के भीतर तीनों चललन।
 एकाएक भेआनक एगो राक्षस आगे पएलन।।
 दुन्नो भाई के धएलक उ मारे ला बलबान।
 देख महासंकट सीता चिल्लएलन, हे भगवान!
 देख बिकलता सीता के दुन्नो ले के तलबार।
 जोर जोर से लगलन करे राक्षस पर प्रहार।।
 बाकी असर न भेलक कुच्छो कटल न राक्षस धीर।
 तब चिन्ता से आतुर चंचल हो गेलन रघुबीर।।
 सोच-समझ तब पटक घसीटे लगलन दुन्नो भाई।
 ले गेलन आगे जहमाँ पर रहे भेआनक खाई।।
 ओही में धकेल देलन, करइत राक्षस चिक्कार।
 चल गेलक सुरधाम, भेल इ भारी संकट पार।।

संकट कटल खुसी से बिहल तीनो आगे बढ़लन।
 घुमइत फिरइत आखिर में सरभंग रिसि कन अएलन।।
 सादर अप्पन परिचय देलन हुनका के सिरी राम।
 मुनि कहलन मालूम हमरा कइसे बन अएलऽ राम।।
 तोरे दरसन ला हम रुक्कल इहाँ अजोध्यानाथ।
 न त कहिआ ब्रम्हलोक चल जइती हे रघुनाथ।।
 तू अएलऽ दंडक बन के हो गेलक भूमि पवित्र।
 तू रचबऽ इतिहास नया ए भू पर अति विचित्र।।
 तू भविस्य मानवता के, सुख - सान्ती दीप जरएवऽ।
 असुर सक्ति से पीरित धरती के तू बोझ हटएवऽ।।
 हम जाएम ब्रम्हलोक तू जा मुनिबर सुतीक्ष्ण के धाम।
 उहे तोहरा बतलएतन जीवन के पथ अभिराम।।”
 जोग - आग से देह जला के रिसि गेलन परलोक।
 हुनका मरला से न भेलक केकरो तनिको सोक।।
 हुनका जोती के प्रनाम कर राघव आगे गेलन।
 पहुँच सुतीक्ष्ण के आस्रम में हुनकर दरसन कएलन।।
 मुनि के आग्रह पर रघुबर ओतहीं रह रात बितएलन।
 बिहने खनी रिसि - दरसन ला आस्रम-आस्रम गेलन।।
 सबके एक समस्या पएलन सबके एक्के पीर।
 राक्षस दल के अनाचार से पीरित दुखी अधीर।।
 सब कएलन अनुरोध कि अपने एतहीं करु निवास।
 अपने सक्षम, दूर करु प्रभु दंडक बन के त्रास।।
 रघुबर आस्वासन देलन “हम करम बहुत प्रयास।
 अपने सबके नेह भरत हमरा में बल - बिस्वास।।
 घूमघाम के कुटिआ पर अएलन ले नूतन अनुभव।
 अनाचार - आतंक - मेघ छपले जप - तप के वैभव।।
 खा - पी के निश्चिन्त करे गेलन जब उ बिस्राम।
 चिन्तन के चक्कर घूमे लागल मन में अबिराम।।
 सोंचे लगलन बन दे के माई कएलन उपकार।
 मालूम भेलक टेंढ़ - सोझ जीवन के अगनित धार।।
 भेलक मालूम केतना लमहर, सुन्दर अप्पन देस।
 एकरा में केतना सुख - सोभा, केतना भरल कलेस।।

माई के गोदी सन सुन्दर सीतल एक्कर छाँह।
 राजमहल आ जंगल जइसे जीवन के दू राह।।
 रिसि मुनि हरिजन गिरिजन सब एक्के साथ रहइछन।
 सेवा आ सहयोग जिन्दगी के सुख - मूल बुझइछन।।
 थोरका साधन, थोरके इच्छा, उन्नत भाओ विचार।
 छल प्रपंच से दूर, न तनिको नीच, कुटिल, कुबिचार।।
 सब चेहरा में लखन, भरत, सत्रोहन के कान्ती हुए।
 तप से दीप्त रिसि के मुँह पर गुरुबर सन सान्ती हुए।।
 गिरिजन कोल किरात भील सब भाई सहोदर लेखा।
 सेबक स्वामी आ साधु में ऊपरी भेदक रेखा।।
 करिआ, गोर, कुरूप, सुमुख में बाहर से अन्तर हए।
 भीतर प्रेम, दया कोमलता मन दरपन निरमल हए।
 सुबह, साम पंछी के कलरब में संगीत गुंजइअ।
 आश्रम में मृग छौना सब सुख से चौकरी भरइअ।।
 प्रकृति करइअ साँझ - सबेरे नित नूतन सिंगार।
 सोभा देख फुटइअ मन में कबिता के रस धार।।
 एन्ने हरिन समान कुदइअ झरना से जलधार।
 ओन्ने ध्यान लगएले बइठल जोगी ब्रती प्रहार।।
 गाछ बिरिछ लेले स्वागत में पत्र - पुस्प उपहार।
 कोनो-कोनो डाढ़ झुकल धरती तक फल के भार।।
 कोनो तरु औसधि गुन लेले जन - जन के बोलबइअ।
 कोनो बल्कल खातिर अपना तन के दान करइअ।।
 बइठे सूते ला धरती हए कोमल घास बिछएले।
 गरमी बरसा से रक्षा ला छत्ता तार लगएले।।
 जेतना सोभा ओतने सुबिधा, ओतने प्यार दुलार।
 समिधा ला सुखल लकरी हए उप्पर से उपकार।।
 एक्के गो हए कस्ट कि राक्षस निरबल के सतबइअ।
 निरपराध साधु संन्यासी के उदबाछ करइअ।।
 तन बल के घमंड से हए सबतर आतंक मचएले।
 तामस बुद्धि, उग्र प्रकृति सदगुन के कुंठित कएले।।
 दया प्रेम ममता से ओकरा भेंट न हए जीवन में।
 भौतिक सुख स्वारथ के कूरा भरले अपना मन में।।

धरम करम से बैर, बेद से हए छत्तीस के नाता।
 सज्जनता सान्ती के सत्रु पर पीरा के भ्राता।।
 रिसि मुनि के देख अनेरे उ क्रोधित हो जाइअ।
 आउरो जग्य धूम देखितहीं पागलपन चढ़ जाइअ।।
 छली कुटिल मायाबी पापी पसुता के परमान।
 देह धरम के पोसन ओकरा जीवन के पहचान।।
 अन्धकार से जोती ओरी जाए जगत चहइअ।
 "तमसो मा ज्योतिर्गमय" के पावन मंत्र पढ़इअ।।
 बाकी इ सब दिन के बदला रात तरफ घसकइअ।
 सत के बदला असत ओर जाए में खुसी मानइअ।।
 अन्धकार के मित्र निसाचर दुरबुद्धि के खान।
 पतन पंथ के ओर गमन हए राक्षस के पहचान।।
 अगर न रोकल गेलक भीसन असुर सक्ति के बाढ़।
 चिबा मनुजता के जाएत इ दुरजनता के दाढ़।।
 सात्विक वृत्ति के रक्षा राजस वृत्ति के काम।
 तामस से गठबन्धन दुनिया ला दुखदाई काम।।
 ए लेल इहे उचित कि रोकू असुर सक्ति के बाढ़।
 अपना बाहूबल से तोरू एक्कर हिंसक दाढ़।।
 रिसि मुनि के रक्षा ला अप्पन सर - चाप उठाऊ।
 छत से जग के त्रान दिला के हम छत्री कहलाऊ।।
 ग्यान तेज तप बेद धरम आउर सुन्दर सुबिचार।
 रिसि समाज रक्षा कएले हए सुभ मानव आचार।
 जेकरा तप से बिकसित होए जीवन में बिग्यान।
 ओकरे रक्षा में तत्परता सक्ति के पहचान।।
 इहे सब सोंचइत जाने कखनी पर गेलक नीन।
 आँख खुलल त देखलन तारक दल के छबि मलीन।।
 उठलन राम उठएलन सीता के, आ बाहर अएलन।
 पूजा ला सामान जुटबइत लछुमन के उ पएलन।।
 नेहा धोआ के नदी में तीनो रबि पूजन कएलन।
 आउर ध्यान लगा सरधा से सबिता मंतर जपलन।।
 कन्द मूल फल के कएलन तीनो थोरका आहार।
 रिसि अगस्त कन जाए ला भेलन झटपट तइआर।।

एगो रिसि कुमार रस्ता देखलाबे आगे चललन।
 हुनका से बतिआइत तीनो रिसि के आस्रम अएलन।।
 "हए केऊ आस्रम में?" आके सादर लखन पुकारलन।
 सुन पुकार छन में रिसिबर के सिस्य उहाँ पर अएलन।।
 अप्पन परिचय दे कहलन हे सिस्य प्रिय सुखधाम।
 जाके कहू दरस ला अएलन ह रघुकुल के राम।।
 'अच्छा' कहइत सिस्य तुरत आस्रम के भीतर गेलन।
 सुना समाद मुनि से आग्या ले छनभर में अएलन।।
 कहलन आस्रम में अपने के स्वागत हए रघुबीर।
 अग्निसाला में स्वागत ला खरा महामुनि धीर।।
 सीता लछुमन के साथे रघुबर भीतर जब अएलन।
 सिस्य मंडली साथ खरा स्वागत में मुनि के पएलन।।
 आगे बढ़ के तीनो लगलन महामुनि के गोर।
 आउर बिनत भाओ से भेलन खरा उहाँ कर जोर।।
 अपना अतिथि भवन में तीनो के मुनिबर ले अएलन।
 अर्घ्य - पाद्य से हुनकर सब के सादर स्वागत कएलन।।
 कहलन तपबल से हमरा मालूम हए सब्भे बात।
 कइसे तू जंगल में अएलऽ कइसे मरलन तात।।
 हए सौभाग्य कि हमरा आस्रम में तू अएलऽ राम।
 सीता आ लछुमन के साथे ले अएलऽ सुखधाम।।
 सीता हथ थाकल हिनका चेहरा से स्रम झलकइअ।
 बाकी ओकरा पाछे पति के प्रेमजोति छलकइअ।।
 एतना कष्ट उठा के सीता बन अएलन नरनाथ।
 हिनकर हए पति प्रेम धन्य न छोरलन दुख में साथ।।
 सुखलोलुप चंचल नारी संकट में साथ छोरइअ।
 पंछी सन सुखल तरुबर से दुख में नेह तोरइअ।।
 सीता औगुनहीन परम पतिबरता कोमल नारी।
 परसंसा के बात, सहे ला तत्पर हथ दुख भारी।।
 अतिथि भवन में आज करऽ तीनो सुख से बिस्ताम।
 बात करम बिहने कि आगे कथी करबऽ काम।।
 कएलन रात्रिबास राम होके बिहने तइआर।
 गेलन मुनि समीप हिरदय में ले सरधा उपहार।।

रिसि स्नेह से बड़ठा कहलन हे रघुकुल अबतंस।
 तोरा जनमें से तर गेलक महाबली रघुबंस।।
 असुर - त्रास से जन रक्षा ला तोहर जनम पुनीत।
 तू दुर्जनता के सत्रु आ सज्जनता के मीत।।
 जीवन भर हम असुर त्रास से सब के रक्षा कइली।
 आउर रिसि मुनि ला दंडक बन के निस्कंटक कइली।।
 साथे - साथ अस्त्र - सस्त्र कुछ कइली आविस्कार।
 जे से असुर प्रबल न होए सके न हमरा मार।।
 अब हम थकली तू हमरा बदला इ बोझ सम्हारऽ।
 दंडक बन ओरी जे ताके ओकरा के तू मारऽ।।
 असुर जाति बलवान बढ़ल आगे ओक्कर विग्यान।
 ओकरा से जूझे ला चाही स्नेह अस्त्र मतिमान।।
 दिव्य अस्त्र काटे ला चाही अधिक प्रबल दिव्यास्त्र।
 ब्रम्ह अस्त्र से जूझे ला चाही संग में ब्रम्हास्त्र।।
 तू सुपात्र तोरा के देइले अप्पन सब दिव्यास्त्र।
 महाधनुस, अक्षय तुनीर आ दिव्य खंग, ब्रम्हास्त्र।।
 माया टोना जादू के परभाओ न ए पर होइअ।
 कतनो बलसाली राक्षस एकरा आगे न टिकइअ।।
 एक बात रखिहऽ धेआन बल सत्रु के अनुमान।
 ओकरा मारे लाइक चुनिहऽ तरकस से तू बान।।
 बली सत्रु पर व्यर्थ न तू साधारन तीर चलइहऽ।
 आउर गाजर मूली पर दिव्यास्त्र न कहिओ छोरिहऽ।।
 सक्ति आउर समय रन में मत करिहऽ तू बरबाद।
 केतना जल्दी मरे सत्रु इ रखिहऽ मंत्र इआद।।
 ओकरा बाद हाथ में लेलन अभिमंत्रित जल पूत।
 दिव्य अस्त्र रघुवर के देलन महामुनि घटपूत।।
 बाकी दे दिव्यास्त्र रिसि सन्तोस न पूरा पएलन।
 तब 'आदित्य हृदय' मन्तर देवे के निश्चय कएलन।।
 कहलन राम तोरा देइले अद्भुत एगो जय मन्त्र।
 एकरा आगे विफल जगत में अस्त्र सस्त्र आ तन्त्र।।
 सत्रु के जीते ला जब तू कोनो राह न पइहऽ।
 तब ए मन्तर के अद्भुत सक्ति तनिका अजमइहऽ।।

इ अमोघ सत्रुनासक, मंगलकारक परसिद्ध ।
 विधि - विधान से जप कण्ठ पर होइअ जल्दी सिद्ध ॥
 बिकट समय में तीन बेर जइसहीं करबऽ जाप ।
 जगतपति आदित्य हृदय में आ बसतथून आप ॥
 हो जतओ सब कुछ अभिपूरित सबिता के भक्ति से ।
 सत्रु के मारबऽ पल भर में मंतर के सक्ति से ॥
 असुर सक्ति के ग्यात न एकर कोनो दोसर काट ।
 घोर तमस में इ खोलतओ तोहरा जय के बाट ॥
 तू पबित्र आसन पर बइठऽ जोरऽ दुन्नो हाथ ।
 आउर हमरा साथ करऽ 'आदित्य हृदय' के पाठ ॥
 पाठ पूर्ण होएला पर देबओ हम संकल्पित नीर ।
 ओकरा करिहऽ पान प्रान में मंतर जगतओ बीर ॥
 एतना कह मुनि ध्यान लगा के मंतर पढ़े लगलन ।
 हुनका साथे तन्मय हो रघुबर दोहराबे लगलन ॥
 ॐ रस्मिमते नमः समुद्यते देबासुर आराध्य ।
 ॐ बिबस्वते नमः भास्कर भुवनेस्वर सुभ साध्य ॥
 हे आदित्य सुरुज खग पूसा भानु हंस दिवाकर ।
 हे हिरन्यरेता सबिता संभु हरिदस्व बिभाकर ॥
 हे मार्तंड हिरन्यगर्भ त्वस्टा रबि अंसूमान ।
 हे अदितिसुत कबि तेजस्वी सिसिरसत्रु दिनमान ॥
 हे मरीचिमाली घनवृष्टि अग्निगर्भ नभनाथ ।
 अपामित्र तापक नभगामी तमनासक ग्रहनाथ ॥
 जगभावन द्वादस आत्मा पिंगल परभा के पुंज ।
 ब्रह्मा बिस्नु महेस प्रजापति सहस किरन के कुंज ॥
 जयस्वरूप कल्याणप्रदाता जगतपति भगवान ।
 बल बुद्धि विद्या के दाता सारंग बीर महान ॥
 उदयाचल-अस्ताचल जात्री सिसिर कमल-कुल-नाथ ।
 किरपा कके हम्मर पूजा ग्रहन करु दिननाथ ॥
 सर्वसमर्थ प्रभु, हमरा मन में बन तेज समाऊ ।
 हे आदित्य हृदय में आके बिजयसिरी दिलबाऊ ॥
 भानु किरन से दीपे लागल आस्रम चारो ओर ।
 रिति आस्रम में परगट भेलन सबिता रथ के छोर ॥

मुग्ध चकित सीता लछुमन बिहवल हो जोरले हाथ ।
 अपना मन में जपइत सादर जै जै जै दिननाथ ॥
 किरिआ भेल समाप्त राम उठ लगलन रिसि के गोर ।
 “विजई होअऽ” के गूँजल आसीस भरल स्वर जोर ॥
 कहलन राम प्रभु बतलाऊ कहमाँ करु निवास ।
 जहाँ सुलभ आहार नीर के साधन होए पास ॥
 सोँच बिचार रिसि कहलन बस दू जोजन के वाद ।
 उत्तम जग्गह पंचबटी हए ओकरे करऽ अबाद ॥
 ओतहीं जा के कुटी बनावऽ सुख से करऽ निवास ।
 मृग समूह से मुखरित जंगल फूलल फरल सुबास ॥
 “जइसन आग्या” कह बन्दन कर राघव आगे बढ़लन ।
 बेर ढले पर आखिर तीनों पंचबटी तक अएलन ॥
 उत्तम जग्गह देख बनएलन कुटिआ पंचबटी में ।
 सुख सन्तोस बनल सोभा साधारन परनकुटी के ॥
 मन बहलाबे ला सीता सबके दुलार पुचकार ।
 पसु पंछी के मित्र बना कुटिआ कएलन गुलजार ॥
 आसपास के रिसि कन्या आउर सब कोल किरातिन ।
 तनिके दिन में बन गेलन हुनका सुख दुख के साथिन ॥
 अप्पन ग्यान सिखाबथ सीता सीखथ ओकर ग्यान ।
 सुख - दुख में सहजोग करे पर रक्खथ जादे ध्यान ॥
 कोनो बन से जरी - बुटी ला ओकर गुन बतलाबे ।
 कोनो खोंइछा भर फल हुनका ला जंगल से लाबे ॥
 कोनो बेनी गूँथे हुनकर कोनो गाबे गीत ।
 कोनो नाच रिझाबे कोनो बहुत जताबे प्रीत ॥
 सीता मगन न होए तनिको खालीपन के ग्यान ।
 बाकी पति के सेवा पर उ रक्खथ नियमित ध्यान ॥
 पतनी आ भाई पर रक्खथ रघुबर जादे नेह ।
 जंगल के दुख रहथ भुलएले देके बहुत सनेह ॥
 कभी सिला पर बइठ राम जूरा में फूल लगाबथ ।
 कभी जनकपुर के खिस्सा कह हुनका खूब चिढ़ाबथ ॥
 दुन्नो रीझ - खीझ के भूलथ सुख - दुख के सब ताप ।
 चिन्तामुबत सुखी बन पंछी सन दुन्नो निस्पाप ॥

लछुमन के जाए न दथ तनिको दृष्टि के ओट ।
एतना दुलराबथ जइसे उ लरिका होअथ छोट ॥
कभी उदास देख लछुमन के चुप्पे दुन्नो रोअथ ।
आउर मन बहलावे ला कुछ कथा मनोरम सोचथ ॥
भूल जाथ लछुमन पीरा भाई भाभी के देख ।
धीरे - धीरे रसगर भेलक बन-जीवन के लेख ॥
भूललन राजस भाओ प्राण में मुखिरत बन के गान ।
धनुधारी तापस बनबासी के बनलक पहचान ॥
सेबा तप, सेवा पूजा, लछुमन के जीवन भेलक ।
जीवन के नूतन सोआद सब रस फिक्का कर देलक ॥
उग्र सुभाव पिघल के भेलक सात्विक आउर सलोना ।
दोसरा ला ममता से भरलक जीवन के सब कोना ॥
रास-रंग सपना भेलक गंभीर भेल सुभ ग्यान ।
भाई आ भाभी भेलन देवी - देओता, भगवान ॥
बीते लागल समय - चक्र जीवन नियमित गतिमान ।
पंचवटी पर लागल चढ़े रितु - सोभा परबान ॥
बीतल ग्रीष्म, उमर छाएल जंगल पर करिआ बादल ।
बिजुली रह-रह आँजे लागल सुभग नयन में काजल ॥
पुरबा झकझोरे बन के पत्ता - पत्ता हहराए ।
कोएल मोर पखेरू सबके कलरब मन के भाए ॥
हरिअर - हरिअर लागे सबतर बन के कोना - कोना ।
तरह - तरह के फूल मनोहर खीलल सुखद सलोना ॥
परल पथार पेंर तर फल के जल भेलक बदरंग ।
सीता झुलुआ झूलथ लेले कोल किरातिन संग ॥
रस्ता पैरा भेल बन्द जीवन बन गेलक द्वीप ।
राम - लखन - सीता मोती, दंडक बन भेलक सीप ॥
निकल गेल आखिर बरसा के भरल तूफान जबानी ।
उरबर भेलक धरती, कन - कन अंकित रहल कहानी ॥
आएल सरद साथ ले आएल खंजन सुखद चिरँइआ ।
पानी भेलक साफ कमल से भरलक ताल तलइआ ॥
सामा, कउनी, धान, मकई के पाके लागल बाल ।
सीतल सान्त प्रकृति भेलक आएल सुखदाएक काल ॥

उजरल खंघरल आस्रम सब के होए लगल सिंगार ।
 जग्य जाग के धूमधाम से मुखरित बन - संसार ।।
 पहुँचल रितु हेमन्त साथ ले सीतलता उपहार ।
 आस्रम - आस्रम धुनी लगल बढ़लक उस्मा से प्यार ।।
 सिसिर रितु से बच्चे ला होए लागल तइआरी ।
 सुखल लकरी के ढेहुल लागल आस्रम में भारी ।।
 सिसिर रितु आएल ठंडा से सिकुरल जीवन छंद ।
 भानु किरन के ताकत घटल जोती भेलक मंद ।।
 ताल - तलैया के जल ठंडा पिअल न तनिको जाए ।
 कुहरा के चढ़र दिन भर धरती ढंकले रह जाए ।।
 आखिर चलल सिसिर जंगल से, आएल रितु बसंत ।
 खुले लागल सिकुरल जीवन खिललक फूल अनन्त ।।
 आ पहुँचल फगुआ धरती के कन - कन भरल उमंग ।
 नाचे - गाबे लगल लोग सब ढोल - झाल के संग ।।
 दखिन पवन के साथ चन्दनी गंध हवा में छाएल ।
 झन-झन-झन-झन बाजे लागल प्रकृति नटी के पाएल ।।
 लछुमन कहलन "अबधपुरी में होरी होइत होएतक ।
 ले ले साज बाज सब कोई फगुआ गबइत होएतक ।।
 सिब मंदिर के बुढ़ऊ पुजारी लेले डलिआ हाथ ।
 पहिला होरी उठएले होएतन फूल चढ़ा सिब माथ ।।
 ले के साथ सखा सत्रोहन गबइत होएतन बीर ।
 सउँसे अजोध्या रंग से भरल केकरा सिर डालू अबीर ।।
 बाकी राजभवन में छाएल होएतक बहुत उदासी ।
 रंग अबीर न घोरले होएतक कोनो सेबक दासी ।।
 हमरे सबके चिन्ता करइत होएतन तीनो माई ।
 पता न कइसे रहइत होएतन तपसी मझिला भाई ।।
 ठीके गुरुबर सिखलएलन जीवन रन अपने लरिहऽ ।
 समय बततओ जे रसता ओही पर निरभय चलिहऽ ।।"
 कहलन राम "अनुज हमरो माई के इआद अबइअ ।
 मानस पट पर नेह चित्र हुनकर रह - रह उमरइअ ।।
 कइसन खेल समय के देखऽ हम सब ले बनबास ।
 काम करे के बदले इहमाँ बइठल हती उदास ।।

काम करे के समय जबानी बइठल ब्यर्थ गमाएँ ।
 लोहा सन जीवन में रखले - रखले जंग लगाएँ ॥
 तपसी जीवन अपना ला चाहे कतनो उपकारी ।
 बाकी जग के लाभ न एकरा से होइअ कुछ भारी ॥
 दंडक बन अएला से हमरा लाभ न तनिक बुझाइअ ।
 एतना दिन बीतल कतहूँ आतंक न नजर अबइअ ॥
 लछुमन कहलन लाग रहल डर से राक्षस सब भागल ।
 मिलल सेर के सबा सेर ओ से आतंकित भागल ॥
 इहे सब बतिआइत में ढल गेलन दिन के नाथ ।
 संध्या बन्दन ला उठ गेलन भाई संग रघुनाथ ॥
 धीरे - धीरे खिलल मनोहर सुखद चान्दनी रात ।
 कन्द मूल फल खा सूतेला गेलन सीतानाथ ॥
 लछुमन बाहर सिला खंड पर बइठल ले धनुवान ।
 पहरा देबे लगलन रखले चारो ओरी ध्यान ॥
 लगे बीरता धएले सुन्दर तरुन रूप सुकुमार ।
 हर छन संकट से निपटे ला होए उ तइआर ॥
 एतने में लागल सबतर मादक संगीत गुंजइअ ।
 दिव्य सुरभि के झोंका बायु पर सबतर तैरइअ ॥
 मंदिर चाँदनी आउरो मादक होके फेरा देलक ।
 मानू पंचबटी पर चुप्पे रतिपति घेरा देलक ॥
 लछुमन के लागल धरती धएलक मायामय रूप ।
 सपना सच हो गेलक कोने लेके रूप अनूप ॥
 एकाएक प्रकट भेलक नारी एगो सुकुमार ।
 रूप सुधा में धोएल जइसे लछमी के औतार ॥
 लाल गोराई से दप दप तन ओठ लाल पल्लो सन ।
 नाक छुरी सन गाल गुलाबी आँख कमल पँखुरी सन ॥
 छाती पर दू कलस मनोहर खींचे रह - रह ध्यान ।
 मुसका दे त भूल जाए साधु संन्यासी ग्यान ॥
 सोंटल गूहल जूरा बान्हल करिआ लमहर केस ।
 नख से सिख तक धारन कएले सुभग राजसी भेस ॥
 खोजलो पर उपमा न मीले अइसन अद्भुत रूप ।
 विधना के सौन्दर्य - सृष्टि के दुकरी दिव्य अनूप ॥

चकित चमत्कृत लछुमन उठ के कुछ आगे बढ़ गेलन ।
 "देबी स्वागत, हम लछुमन" कह अप्पन परिचय देलन ।।
 के अपने, कइसे अइली, की हए अपने के नाम ?
 रात समय ए बीहर बन में अइली कोना काम ?"
 मधुर कटाक्ष डाल लछुमन पर उ नारी मुसकएलक ।
 लागल पाँचो बान मदन के एक्के साथ चलएलक ।।
 बीना के सुर के लजबइत बोललक उ अपरूप ।
 हम जंगल के रानी, तपसी तू नर सुभग अनूप ।।
 एन्ने से जाइत रही त देखली तोरा बइठल ।
 मन हो गेलक मुग्ध देख के मानुस तोरा अइसन ।।
 पहिला बेरी तोरा अइसन पुरुस मनोहर पइली ।।
 रूप - बान से घाएल भेली तोरा देख लोभइली ।।
 सुपनेखा हम असुरसुता बन में सबतर बिचरइले ।
 जनस्थान के रानी अपना मन के राह चलइले ।।
 तोरा बरन करे के जागल हए मन में अभिलासा ।
 अप्पन त्रिया बना के पूरऽ लछुमन हम्मर आसा ।।
 लछुमन देख बेलझ,ढीठ नारी कुछ क्रोधित भेलन ।
 बाकी संजम रख के मन पर धीरे उत्तर देलन ।।
 देबी तोहर इच्छा अनुचित दे न सकइले साथ ।
 हम सेबक हम्मर स्वामी हथ अबधपति रघुनाथ ।।
 दोसर, हती बिबाहित हम आ एकत्रिया ब्रतधारी ।
 आ न सकइअ ए जीवन में अब कोई दोसर नारी ।।
 ए लेल जाके देखऽ देबी कोनो दोसर द्वार ।
 दुनिया लमहर जोग्य पुरुस के हए ए में भरमार ।।
 बातचीत सुन राम सिया उठ के बाहर चल अएलन ।
 सुन्दर नारी से बतिआइत लछुमन के उ पएलन ।।
 परल दृष्टि सुपनेखा के पुछलक इ मानुस कोन ।
 नील कमल इ खिललक कइसे मधु राका में मौन ।।
 लछुमन कहलन हम्मर अग्रज आ स्वामी रघुनाथ ।
 पूज्या भाभी सीता हम्मर हतन हुनका साथ ।।
 बाह ! इ त तोरो से अच्छा एकरे पति बनाएम ।
 सोन कमल सेबइत भौरा के मन में चित्र सजाएम ।।

आगे बढ़ कहलक हे तपसी तू सुन्दर सुकुमार ।
 तोरा देख उमर आएल हमरा हिरदय में प्यार ।।
 तू तमाल सुकुमार आउर हम चम्पक लता नवीन ।
 देम तोरा के राजपाट न रहबऽ तपसी दीन ।।
 चलऽ चान्दनी रात बिपिन के क्रीरा छेत्र बनाऊ ।
 जौबन क्रीरा के सुख से जीवन के धन बनाऊ ।।
 कहलन राम "बहुत उच्छृंखल हए तोहर बेहवार ।
 सीलबती सुन्दर नारी ला अनुचित इ आचार ।।
 नारी के भूसन लज्जा ओही से मान पबइअ ।
 कुलवन्ती प्रस्ताव प्रेम के भुलिओ के न करइअ ।।
 सील आउर मरजादा नारी के गुन के पहचान ।
 लज्जाहीन त्रिया के देइअ केऊ न जग में मान ।।
 हमरा साथे त्रिया मनोहर रूप सील आगार ।
 ओकरा अच्छइत कर न सकइले पर नारी से प्यार ।।
 एक पत्नीव्रतधारी हम दोसर न कभी चहइले ।
 "एको नर एगो मादा" सम्बन्ध सहज समझइले ।।
 ए लेल कहलक अनुज ठीक, जा देखऽ दोसर द्वार ।
 पुरुष एक से एक धरा पर कामदेव औतार ।।
 सुन के सुपनेखा क्रोधित "एतना तोरा अभिमान !
 हमरा अइसन नारी के कएलऽ दुन्नो अपमान ।।
 अस्वीकार सुने के हमरा हए न तनिक अभ्यास ।
 जे हम चाहम से हम पाएम एतना हए बिस्वास ।।
 हमरा बल के तरुन तपस्वी तनिक न तोहरा ग्यान ।
 रिसि - मुनि से पूछे पर मिलतओ सहजे परमान ।।
 हम ज्वाला, हम बज्र, ढाह देम तोहर सब अभिमान ।
 न मानबऽ त पल में ले लेम तीनो जन के प्राण ।।
 अभी तोरा देखइले पल में अप्पन भीसन सक्ति ।
 डर के मारे नाक रगर के करबऽ हमर भक्ति ।।"
 एतना कहइत पल भर में उ धएलक असली रूप ।
 आँख लाल बिकराल मुँह आ नौह कि जइसे सूप ।।
 देह बिसाल रंग करिआ निकलइत आँख से आग ।
 सुन्दरता के उपवन बनलक कुस - काँटा के बाग ।।

हाथ बढ़ा सीता के ओरी बढ़लक उ मुँह फार ।
 जइसे खा जाएत पल भर में सीता के उ मार ॥
 मंसा भाँप राम सीता के अपना पाछे कएलन ।
 आउर ओकरा रोके ला उ आगे भुजा बढ़एलन ॥
 बिजली सन लछुमन अएलन लेले अप्पन तलवार ।
 आउर चला देलन ओकरा पर कएले बिना बिचार ॥
 तुरत झपट उ घुमलक आउर चाहलक पकर लखन के ।
 गिरा भूमि पर फारू पल में छाती अपना नख से ॥
 बाकी लछुमन पल में ओकरा देलन कस के धक्का ।
 गिर गेलक धरती पर रहलक पलभर हक्का - बक्का ॥
 ओकरा बाद उठल हुँकारइत कएलक बिकट प्रहार ।
 लछुमन खंगे पर रोकलन ओकरा मुक्का के बार ॥
 कटलक ओकर हाथ, क्रोध से उ हो गेलक लाल ।
 बार - बार झपटे लागल सीता ओरी बिकराल ॥
 सीता बिकल, राम चिन्तित नारी पर हाथ उठाऊ ?
 बिना उठएले सस्त्र इहाँ कइसे एकरा बेलगाऊ ॥
 बाकी लछुमन कहलन "भइआ करू न सोच बिचार ।
 नारी न मानू एकरा हए ताटक के औतार ॥
 जइसे कौसिक के आग्या से कइली ओकर अंत ।
 तइसे आग्या दीऊ, करइले एकर एतहीं अंत ॥
 चुप रह गेलन राम बिबस सीता के ओरी तकलन ।
 "लछुमन एकरा मारऽ जल्दी" सीता बेकल कहलन ॥
 भाभी के बेचैनी, लछुमन छोरलन सील बिचार ।
 ओकरा मारे ला उ कएलन तत्छन बिकट प्रहार ॥
 लागल घाओ नाक - कान पर बहल रक्त के धार ।
 भाग चलल सुपनेखा करइत अति भीसन चिक्कार ॥
 लछुमन दउर रगेदलन ओकरा, भागल ले उ प्रान ।
 ओघराइत उठइत टकराइत पथ के भूलल ग्यान ॥
 आएल मलय पवन के लेखा ले चन्दन के गन्ध ।
 गेलक लू के झोंका लेखा होके ब्याकुल अन्ध ॥
 रघुवर कहलन भेल न अच्छा सजग रहे के चाही ।
 की होइअ परिनाम अगारी देखे के अब चाही ॥

इ असगरे न हए बन में एतना निश्चित बात।
 संगी साथी ले के अएतक जुद्ध करे ला तात।।
 अनजाने सज गेलक भाई असुर - समर के साज।
 जनस्थान के इ रानी इहमाँ राक्षस के राज।।
 इ भागल गेलक ओतहीं अब सेना ले के आएत।
 हो जा तू तइआर तुरन्ते भीसन जुद्ध ठनाएत।।
 हर घुमान पर जीवन के कोनो नारी मिल जाइअ।
 अजब नियति के चक्र उहे हम्मर इतिहास रचइअ।।”
 एतने में चारो ओरी से बिकट असुर रनबीर।
 गरजन तरजन करइत घेरलक सिया लखन रघुबीर।।
 मारऽ काटऽ घेर पकर ल भाग न तपसी पाए।
 तीनों के पकरऽ बच के न कहीं इहाँ से जाए।।
 तत्पर लछुमन उठा धनुस कएलन भीसन टंकार।
 जेहू से आतंकित होके भागे असुर चुहार।।
 बाकी भागे के बदला छोरे लगलक हथिआर।
 तब क्रोधित लछुमन उत्तर में कएलन प्रबल प्रहार।।
 मरल दू-चार असुर, कुछ भागल, तब खर आगे अएलक।
 बज्र समान कठोर बचन दुन्नो भाई के कहलक।।
 “रे तपसी हमरा भगिनी के काट नाक आ कान।
 हमरा ताकत के कएले ह तू सीधे अपमान।।
 जनस्थान के स्वामी हम तोहरा के देबे दंड।
 तोरा मारे ला सेना ले अइली आज प्रचंड।।
 आज बधम तोरा दुन्नो के समर भूमि के बीच।
 नारी के अपमान करे के देम दंड नर नीच।।”
 कहलन राम “सुनऽ खर तोहर भगिनी हए बेभिचारी।
 सील आउर संकोचहीन स्वेच्छाचारी उ नारी।।
 बिन अपराध प्रिया के हमरा मारे ला उ चहलक।
 ओही चलते हमरा से उ दंड तनिक सन पएलक।।
 तू अएलऽ दंडित करे त अच्छा हए फरिआ ल।
 हम दू भाई, तू सेना संग, अप्पन बल अजमा ल।।
 एतना कहइत बिकट धनुस पर रघुबर बान चढ़एलन।
 सीता के रक्षा ला लछुमन के जुक्ति समझएलन।।

लछुमन तुरत उठा धनु रचलन सक्ति के दृढ़ घेरा।
आउर माया रोके ला देबे लगलन उ फेरा।।
ओन्ने बिकट असुर दल पर रघुबीर चलएलन बान।
उत्तर में खर, दूसन फेंके लागल बज्जर बान।।
फेंके लागल राक्षस दल सक्ति पत्थर आ सूल।
राम काट के फेंकलन ओकरा जइसे अस्त्र न फूल।।
खर क्रोधित छोरे लागल रघुबर पर मंत्रित बान।
तब रघुनायक कएलन अग्नि बान तुरत सन्धान।।
घास फूस सन जरल असुर, भागल पीछे चिचिआइत।
तब खर आगे अएलक भारी बिसधर सन फोंफिआइत।।
भीसन सक्ति उठा रघुबर पर कएलक बिकट प्रहार।
बाकी राम काट के ओकरा कएलन दुकरी चार।।
गदा उठा जब तरित बेग से हुनका ओर चलएलक।
जुद्ध - ज्वार रघुनाएक के मन में तब भारी छएलक।।
छिप्र बान से काट गिरएलन ओक्कर दुन्नो हाथ।
फेर चन्द्र बान से कटलन ओक्कर भारी माथ।।
खर के मरइत देख महाबली दूसन कर हुंकार।
कएलक बिकट गदा से रघुबर पर भारी प्रहार।।
लाघव से रघुनाथ चला सर कएलन ओकरा चूर।
आउर बान सक्ति से फेंकलन ओकरा काफी दूर।।
तब मायावी छिप के फेंके लागल तीछन तीर।
कन्हरो आग लगावे आ कन्हरो बरसावे नीर।।
दिव्य बान से रघुबर कटलन माया के सब फाँस।
फइला देलन घोर निसा में सबतर प्रखर प्रकास।।
मार बान से वेधलन छन में ओक्कर बज्र सरीर।
पीरा से व्याकुल हो गिरलक रथ में बीर अधीर।।
जाले उ उठलक ताले रघुबर सेना के मार।
दूसन से फेंनू लरे ला हो गेलन तइआर।।
दूसन उठ भारी सक्ति ले फेंकलक रघुबर ओर।
बीचे में ओकरा के रघुबर देलन छन में तोर।।
ओकरा बाद राम छोरलन एगो अभिमंत्रित बान।
रहे अमोघ, भेद तन के, हर लेलक ओक्कर प्रान।।

भाग चलल बच्चल राक्षस दल होके भय से त्रस्त।
 जनस्थान में राक्षस दल के सक्ति भेलक अस्त।।
 खरा रहे सुपनेखा पाछे, देख समर परिनाम।
 भाग चलल चुप्पे भय से भुललक अप्पन अभिमान।।
 लछुमन उठा सक्ति के घेरा भाभी साथे अएलन।
 समरजयी रघुबर के सादर बाँह सिया तब पुजलन।।
 लछुमन के मन लाइक भेलक कहलन "भइआ धन।
 रन कौसल देखली, तोहरा सन बीर न जग में अन्न।।
 बरा दुस्ट खर दूसन आउर बहुत कुटिल सुपनेखा।
 धरती ला इ सब रहलक ह बरा बिकट पनसोखा।।
 जर उखरल एक्कर सबके आतंक खतम हो गेलक।
 सुख के साँस आज से दंडक बन के प्रानी लेतक।।
 रात समेटलक अप्पन चदर फइलल बिमल प्रकास।
 डर से दुबकल रिसि मुनि सब अएलन राघव पास।
 कहलन जय हो महाबली आ जीऊ लाख वरीस।
 अहंकार आतंक त्रास के कटली अपने सीस।।

ओन्ने सुपनेखा रह - रह के मलइत जाए हाथ।
 गेल हाथ से जनस्थान खर - दूसन गेलक साथ।।
 रह - रह पीसे दाँत चले त चिबा राम के जाए।
 फार करेजा सीता के हुनकर लेहू पी जाए।।
 सोंचे कोन उपाय करु जे मारल तीनो जाए।
 आउर हमरा उप्पर एक्कर दोस न कोनो आए।।
 हम दुन्नो के मोम समझली, ऊ निकलल पासान।
 बस में न अएलक उलटे कएलक अतिसय अपमान।।
 बाकी हमहू सुपनेखा त पाछ न ओक्कर छोरम।
 कएलक उ अपमान बहुत हम बदला ले के छोरम।।
 सोंच समझ आखिर उ भाई राबन कन चल देलक।
 कहम नून मिरचाई लगा उ मन में निरनए लेलक।।
 एकरा में कुछ राजनीति के फेंटम गहरा रंग।
 तबहीं राबन पर चढ़तक गोस्सा के असली भंग।।

इहे सब सोंचइत उरइत आखिर लंका में अएलक।
 राबन के लग त्रिया चलित्तर के माया फइलएलक।।
 अपना के निरदोस बतबइत सब्भे बात बतएलक।
 खतरा में अब जनस्थान राबन के उ समझएलक।।
 खर - दूसन के मारलक तपसी छीनलक तोहर राज।
 बइठल रहबऽ लंका में त सिकुरल जतओ राज।।”
 पुछलक राबन “कोन तपसबी पहिले कहमाँ रहलक।
 एकरा बारे में खर- दूसन कहिओ न बतलएलक।।”
 कहलक सुपनेखा “दसरथ के बेटा - लछुमन राम।
 हाले में आ के कएलक ह पंचबटी में धाम।।
 ओकरा साथे नारी एगो सुन्दर चान्द समान।
 ओकरा देखबऽ त कहबऽ उ हए अपने उपमान।।
 हम गेली ओन्ने घूमे त छोटका पाछे परलक।
 बहला फुसला के हमरा से प्रेम करे ला चहलक।।
 हम कइली प्रतिकार त कएलक दुन्नो मिल अपमान।
 मारलक पिटलक आउर कटलक हमर नाक आ कान।।
 हमर दसा देख खर - दूसन कएलक घोर लराई।
 बाकी ओकरा हाथे मारल गेलक दुन्नो भाई।।
 जनस्थान चल गेल हाथ से कुल भेलक अपमानित।
 महाबली अब कोन प्रतिष्ठा से रहबऽ सम्मानित।।
 खर - दूसन के मार उ देलकओ तोरा सबल चुनउती।
 न चेतबऽ त एक दिन बचतओ तन पर सेस लंगउटी।।
 सिमटे लागे राज आ होए अबला के अपमान।
 तब समझे चाही सत्ता के डूब रहल दिनमान।।
 ओकरा बाद अगर नृप सोए डाल कान में तेल।
 समझे चाही सज गेलक ह साज नास के लेल।।
 हमरा बुद्धि में भाई अब एक्के बात अबइअ।
 जगती में अपमान के बदला अपमाने से होइअ।।
 कके रूप कुरूप उ कएलक हमरा के अपमानित।
 ओकरा नारी के हर के करऽ तूहूँ अपमानित।।
 ओकर नारी हए भाई बस सुन्दरता के खान।
 एक्को गो तोहर रानी न ओकरा रूप समान।।

देखबऽ त देखते रह जएबऽ भुलबऽ अप्पन ग्यान।
 कर द खरा अन्हरिआ में त बरे उ चान समान।।
 उ बेटी मिथिलापति के जेकरा स्वयंवर से भाई।
 अपमानित खाली हाथे वापस अएलऽ र भाई।।
 इहे हए औसर ओकरा हर अप्पन त्रिया बनाबऽ।
 दू दू गो बदला एक्के बेरी में बीर चुकाबऽ।।
 इंटा के उत्तर पत्थर से इहे नीति उचित हए।
 नारी के अपहरन न तोहरा ला तनिको अनुचित हए।।
 जार रहल हम्मर तन - मन भाई भारी अपमान।
 हमरा से हओ प्रेम त रख द आज बहिन के मान।।”
 सुपनेखा के बानी सुन के राबन सोंचे लागल।
 चित्र सिया - स्वयंवर के दृष्टि में सब घूमे लागल।।
 अहंकार के सुखल लकरी आउर क्रोध के आग।
 सुपनेखा के बात घीऊ सन उठलक भक से जाग।।
 बुद्धि पर परदा पर गेलक आएल कस के ताओ।
 सीता के हरे ला उपजल मन में निस्वय भाओ।।
 ओकरा के जाए ला कह लेलक अपने एकान्त।
 सोंचे लागल दाओ - पेंच उ क के मन के सान्त।।
 जइसे - जइसे सोचलक तइसे उलटा बुद्धि भेलक।
 बीर पंथ के छोर कुबुद्धि चोर पंथ पर गेलक।।
 सोंच न अपने से उ जुक्ति आखिर कोनो पएलक।
 तब अपना मामा मारीच कन उ सीधे चल देलक।।
 सागर तट पर रहइत रहे दुस्ट असुर मारीच।
 ताटक बन से भागल रहे रघुबर के डर नीच।।
 धएले रहे उप्पर से उ साधु के सब रूप।
 बाकी भीतर से उ रहे बगुला भगत अनूप।।
 सदा सताबे साधु सब के ले कौसल से काम।
 बाकी कहँऊ न जाए बाहर छोर उ अप्पन धाम।।
 अपने रथ हँकइत राबन मारीच कने चल अएलक।
 “कहमाँ हतऽ मामा प्यारे” बहरे खरा पुकारलक।।
 मारीच बाहर आएल देखलक खरा उहाँ लंकेस।
 बिना सारथी के असगरे, बुझलक बात बिसेस।।

भीतर बोला जथोचित कएलक भगिना के सत्कार।
 "कहेना चिन्तित हतऽ भगिना" पुछलक उ पुचकार।।
 कहलक "दसरथ सुत कएलक सुपनेखा के अपमान।
 आउर रन में हर लेलक खर - दूसन के उ प्रान।।
 ओकरा दीऊ दंड इहे हम्मर हए पहिला काम।
 तोरा से सहयोग लेल अइली ह तोरा धाम।।"
 "भगिना तू अपने बलसाली तिरलोकी के जेता।
 हम तुच्छ कोना लाइक हे राक्षस कुल के नेता।।
 खैर, तू हमरा जोग समझलऽ इहे बरका बात।
 कइसे तोहर मदद करू बतलाबऽ तू हे तात।।"
 "ओकरा पतनी के हरे ला कोनो जुगुत बताबऽ।
 तरप - तरप के उ मर जाए एक्कर राह बताबऽ।।
 मारीच कहलक "त्रिया हरन हए महापाप हे तात।
 महाबली तोरा मन में आएल कइसे इ बात।।
 तू त सब दिन समरभूमि में लर के सब कुछ पएलऽ।
 देव असुर गन्धर्व नाग के त्रिया जीत के लएलऽ।।
 समर पंथ के छोर बीर तू चोर पंथ पर जएबऽ।
 अपने हाथे रच्चल तू अप्पन इतिहास मेटएबऽ।।
 ए लेल मानऽ बात वीर दुरबुद्धि अप्पन त्यागऽ।
 लेबे ला बदला तपसी से सीधे समर रचाबऽ।।
 मारऽ दुन्नो दसरथ सुत के सीता अपने आप।
 तोहर हो जतओ जगजेता तनिक न लगतो पाप।।"
 "न मामा हम हरब सिया के आ लंका ले जाएम।
 डाल गोर पर सुपनेखा के ओक्कर मान बढ़ाएम।।
 ए लेल तर्क न करऽ अप्पन बुद्धि तनिक लगाबऽ।
 आस्रम से दुन्नो भाई के बाहर तू बेलगाबऽ।।
 ओकरा बाद उठा के सीता के हम रथ पर चहराएम।
 जाले दुन्नो आएत ताले हम लंका उर जाएम।।"
 मारीच कहलक "भुलिओ के ओकरा आगे न जाएम।
 एक बेर बचली एमरी निश्चिते मारल जाएम।।
 कहइत हतिअओ ओकरा से भाई न रार बढ़ाबऽ।
 जे भेलक से भूलऽ आगे अब न छति उठाबऽ।।

राबन कहलक "मामा न सूने अइली उपदेस।
 हमरा से तू बहस न करऽ आगे आउर बिसेस।।
 हमर बात न मानबऽ त तू एतहीं पहिले मरबऽ।
 राम बान से मरे के मामा न औसर पएबऽ।।
 ए लेल चुप्पे चापे चलके कोनो जुगुत लगाबऽ।
 दुन्नो छाया लेखा त छाया के चलऽ मेटाबऽ।।
 हम सोचली ह भिक्षुक साधु के सुभ रूप बनाएम।
 आउर भिक्षा मांगे ला ओकरा कुटिआ पर जाएम।।
 उ अएतक भिक्षा देबे बस ओकरा झपट उठा के।
 जाले चिल्लएतक ताले ले रथ पर चलम चढ़ा के।।
 उ दउरल अएबो करतक त कुच्छो न कर पाएत।
 नभगामी हमरा रथ के पाछे उ कइसे आएत।।"
 "छिः भगिना दिग्बिजयी होके छद्म रूप तू धरबऽ।
 एगो नारी ला निरधिन चोरी जीवन में करबऽ।।
 महाबली मत चोर कहा के जग में नाम हँसाबऽ।
 तू पंडित बेदग्य न कालिख जस, पर बीर लगाबऽ।।
 उत्तम पुरुस करत दुनिआ में अगर अधम के काम।
 ओकरा पर थूकत दुनिआ सब दिन जब लेतक नाम।।
 ए लेल मानऽ बात न बुद्धि के तू घास चराबऽ।
 सीता ला अइसन इच्छा त भगिना समर सजाबऽ।।"
 निम्न बात तीत सन लागल राबन क्रोधित भेलक।
 मामा के मारे ला भारी गदा हाथ में लेलक।।
 देखलक मारीच राबन पर हए सुपनेखा के रंग।
 काम अन्ध लंकापति के बुद्धि तज देलक संग।।
 इ मूरख लरिका लेखा छूए ला आतुर आग।
 नाध राम से बैर डुबएलक इ अप्पन सौभाग।।
 हम फेरा में परली एन्ने कुँआ ओन्ने खाई।
 दुन्नो ओरी मौत परइअ हमरा आज देखाई।।
 जब मरहीं के त कहेना न एक्कर काम बना दू।
 तारक आउर सुबाहु के बदला बस आज चुका लू।।
 सोचते - सोचते ओकरा मन में धधके लागल आग।
 राम बान के छूटल पीरा टभके लागल जाग।।

मृग के रूप बना मायाबी भेलक झट तइआर।
 तन के कान्ती सोना लेखा लेलक सहज सँवार।।
 झुरमुट-झुरमुट लुकइत छिपइत कुटिआ ओरी बढलक।
 साधु रूप बना के ओकरा पाछे राबन चललक।।
 उहाँ पहुँच सीता के आगे लगलक रह - रह आबे।
 आउर अटक - मटक के अप्पन चंचल कला देखाबे।।
 देख मनोहर सोना सन मृग सीता लोभित भेलन।
 ओकरा पाबे के इच्छा से अति चंचल हो गेलन।।
 सोंचे लगलन केतना सुन्दर चंचल इ मृगछौना।
 एकरा आगे बन के मृग सब जँचतक भारी बौना।।
 इ पकरा जाइत त आस्रम के सोभा बढ़ जाइत।
 आउर हमरा मन बहलाबे के साधन हो जाइत।।
 आह! बिधाता कइसन गढ़लऽ एक्कर रूप सलोना।
 देखते मातर लाग रहल मन में कुछ जादू - टोना।।
 बच्चा लेखा सीता होके चंचल आउर अधीर।
 अति सनेह से जाके कहलन हे प्रियतम रघुबीर।।
 चल के देखू नाथ तनिक कइसन अपरूप सलोना।
 एगो मृग अएलक आस्रम लग जेक्कर तन हए सोना।।
 अगर पकर देती एकरा त बान्ह कुटी में रखती।
 एकरा साथे क्रीरा में हम मन अप्पन बहलइती।।
 कोनो मोहन बान चला के पकरू एकरा नाथ।
 देर करम त हो जाएत प्रिय इ चंचल बेहाथ।।
 अगर न पकराए स्वामी त एकरा मार गिराऊ।
 पूजा ला राघब मृगछाला सुन्दर एगो पाऊ।।
 समझएलन रघुनाथ अहिंसक पसु के हिंसा अनुचित।
 कइसे एकरा के मारु जब कारन तनिक न समुचित।।
 बाकी सिया न मानलन कएलन पति से बहुत निहोरा।
 मोहग्रस्त बुद्धि भेलक समझाओन भेलक कोरा।।
 आखिर प्रिया-नेह से बेबस राघब ले धनु - बान।
 सोचलन सम्मोहित कके पकरम न मारम प्रान।।
 बढलन मृग के ओरी, बाकी देख बान आ चाप।
 भाग चलल मृग बदल पैतरा साइत खतरा भाँप।।

रघुवर तेजी से बढ़लन त ऊहो भागे लागल ।
 दहिना बायाँ सीधा तिरछा रसता काटे लागल ।।
 छीपे के मंसा से लेलक उ झुरमुट के ओट ।
 तब रघुवर कएलन ओकरा पर सर से तनिका चोट ।।
 बाकी मृग देलक गच्चा आ लक्ष भ्रस्ट भेल तीर ।
 बान अमोघ चुकल कइसे चिन्तित भेलन रघुवीर ।।
 दोसर बान निकाललन जाले ताले हिरन पलाएल ।
 एन्ने ओन्ने खोजे में हुनकर दृष्टि ओझराएल ।।
 तब तक दूर देखाई परलक उ बंचक अभिराम ।
 साध निसाना छोरे चहलन ओकरा पर सर राम ।।
 बाकी जाले तीर चलाबथ ताले फेर नुकाएल ।
 ओकरा कौतुक से रघुवर के मन तनिका झुँझलाएल ।।
 संकल्पित अमोघ सर ले के खींचलन धनु के डोरी ।
 आउर देलन छोर बेग से तीर हरिन के ओरी ।।
 लागल बान गिरल मृग करइत कातर करुन पुकार ।
 “भाई लछुमन दउरऽ परलक संकट बिसम अपार ।।”
 पहुँच राम देखलन मृग के बदला राक्षस बलवान ।
 छटपट करइत खाके हुनकर बज्रर अइसन बान ।।
 बुझा गेल हुनका राक्षस मृग बन के सहजे छललक ।
 बाकी समझ न पएलन ए से कोन लाभ उ पएलक ।।
 उलटे प्रान गमा के बंचक चल गेलक जमलोक ।
 उठा तीर मुर गेलन रघुवर मन में तनिक न सोक ।।

ओन्ने रघुवर के स्वर में राक्षस के करुन पुकार ।
 कुटिआ तक पहुँचल सीता के मन पर भेल प्रहार ।।
 घबरा उठलन सीता परलन कोन विपत में नाथ ।
 कहमाँ से आएल स्वर कातर तैर हवा के साथ ।।
 कहलन “देवर, सुनलऽ आएल कइसन करुन पुकार ।
 “भाई लछुमन दउरऽ परलक संकट बिसम अपार ।।”
 चिर परिचित स्वामी के स्वर चीन्हे में भूल न भेलक ।
 स्वर में मरन घरी के पीरा छाती चीरइत गेलक ।।

लाग रहल कोनो संकट में पर गेलन रघुबीर ।
 हुनका मदद करे ला जल्दी जा तू लहुरा बीर ।।
 पथ के ध्यान न रहलक साइत दुरगम बन में गेलन ।
 आ कि कोनो राक्षस हाथे उ घाएल हो गेलन ।।”
 लछुमन कहलन “भाभी चिन्ता से मत बनऽ अधीर ।
 भइआ के मारे बाला जनमल न जग में बीर ।।
 तू चिन्ता मत करऽ ए में हमरा चाल लगइअ ।
 असुरी माया के लच्छन कुछ - कुछ ए में झलकइअ ।।
 खर - दूसन के कोनो साथी कके स्वर अनुकार ।
 भरमावे ला कएलक ह इ कातर करुन पुकार ।।
 भइआ पर चलतक न कोनो जादू माया - जाल ।
 बाल न बाँका कर सकलक ह बैरी होके काल ।।”
 “न देबर, मन घरबाइअ तू देखऽ हुनका जाके ।
 कुसल सनेसा बतलाबऽ तू जल्दी सानी आ के ।।”
 “भाभी इ असथान अरक्षित तोरा छोर न जाएम ।
 कुच्छो हो जाएत त हुनका कोन मुँह देखलाएम ।।
 हुनका न रहला पर हमरा उप्पर तोहर भार ।
 तोहरा कहला पर न जाएम कएले बिना बिचार ।।
 देखऽ तनिका देरी, भइआ आ जएतन मृग साथ ।
 मृग हो चाहे माया लगतक उ हुनकरा हाथ ।।”
 “देखऽ छोट तू हमरा आगे चलत न तोहर बात ।
 हमर आग्या हए तू जाके देखऽ हुनका तात ।।”
 “भाभी मत आग्या द तिरिया हठ तोहर बेकार ।
 हम न जाएम रोअऽ चाहे करऽ करुन पुकार ।।”
 “रहऽ, तू न जएबऽ त पेन्हऽ चूरी हम जाइले ।
 काठ बाँस के करऽ अगोरिआ हमहीं धनुस धरइले ।।”
 एतना कहइत सीता लेके लछुमन के सर चाप ।
 बढ़ गेलन आबेसित होके ओही ओरी आप ।।
 “रुकऽ भाभी” कहइत लछुमन हुनका पाछे बढ़लन ।
 आउर लपक के हुनका आगे जाए से उ रोकलन ।।
 कहलन “रुकऽ, तोहर इच्छा त हम आग्या मान ।
 जाएम देखे, सहम न बाकी पौरुस के अपमान ।।

भाबुकता में हमरा पर तू देइछऽ व्यर्थ दबाओ ।
 संकट के कारन बन जतओ बुद्धिहीन इ भाओ ॥”
 ले सीता से धनुस बान लछुमन आगे बढ़ गेलन ।
 जइसे इआद परल कुच्छो उलटे गोरे आ गेलन ॥
 तरकस से ब्रम्हास्त्र निकाललन आ अभिमंत्रित कएलन ।
 कुटिआ के चारो ओरी ओकरे से रेखा खींचलन ॥
 कहलन जाले न आएम तू एकरे भीतर रहिहऽ ।
 एकरा लांघे के कोसिस तू भूलिओ के न करिहऽ ॥
 इ अदभुत रेखा एकरा केऊ न लांघ सकइअ ।
 एकरा भीतर थल से, नभ से सत्रु न पहुँच सकइअ ॥
 हारल राक्षस रच सकलक ह कोनो कुटिल कुचक्र ।
 अखनी ओकरा सब के दृष्टि हमरा सब पर बक्र ॥
 ए लेल तू केकरो बहकएलो पर न बाहर अइहऽ ।
 केऊ कोई बात बतावे तू बिस्वास न लइहऽ ॥
 स्थिर चित होके हमरा दुन्नो के रसता तकिहऽ ।
 अन्हरा आ बहिरा अइसन भाभी कुटिए में रहिहऽ ॥”
 लछुमन ओन्ने चललन एन्ने चिन्ता से अकुलाएल ।
 कुटिआ के मुँह पर सीता जा बइठ गेलन थहराएल ॥
 अतने में राबन तेजी से लमहर डेग बढ़बइत ।
 कुटिआ के पाछे आ धमकल चारो ओरी तकइत ॥
 टाटी फार कुटी में घुसे ला चहलक जब चोर ।
 लछुमन खींचल ब्रह्मरेख से सटलक ओकर गोर ॥
 लागल बिजली छू गेलक पीरा से काँपे लागल ।
 जल्दी से ऊ गोर खींच के पापी पाछे भागल ॥
 समझ गेल रक्षा ला खींचल रेखा चारो ओरी ।
 सीता के हम उठा न पाएम कुटिआ से बरजोरी ॥
 सोँच समझ उ जल्दी से साधु के भेस बनएलक ।
 ओम सिबाए नमः कहइते आगे ओरी अएलक ॥
 सान्त मीठ सुर में उ देलक भिक्षा ला आबाज ।
 माथ उठा के सीता देखलन खरा एगो रिसिराज ॥
 अनमनस्क उठलन कुटिआ से कन्द मूल ले अएलन ।
 देबे ला भिक्षा देहरीए पर से हाथ बढ़एलन ॥

राबन कहलक "देबी कहेला चिन्तित आउर उदास ।
 महाबली देबर आ स्वामी जब रक्षक हथ पास ।।
 हम त्रिकालदरसी हमरा हए भूत भबिस्यत ग्यात ।
 पति गेलन मृग के पाछे इहे चिन्ता के बात ।।
 बाकी तू चिन्ता न करऽ दुन्नो आ रहलन ह ।
 तोरा मनोरंजन ला साथे मिरगो ला रहलन ह ।।
 तोहर कुटिआ बान्हल हए मन्तर के अति सक्ति से ।
 खोल न केऊ सकइअ एकरा जंतर आ जुक्ति से ।
 हम अनिकेत पवन के लेखा जीवन मुक्त रखइले ।
 अपना तप जप से भोला दानी के नित रिझबइले ।।
 सरधा हओ त बाहर आके द तू देबी भिच्छा ।
 न देबऽ त जइसन मरजी जइसन तोहर इच्छा ।।
 तू दसरथ के बहू जनक के पुत्री प्रिय निस्पाप ।
 सीता देबी भीख न देबऽ लगतओ तोरा पाप ।।"
 छल प्रपंच से दूर जानकी सीधा सरल सुभाओ ।
 समझ न पएलन परपंची के मन के असली भाओ ।।
 हुनका लागल साधु साँचो तीनो काल जनइअ ।
 इहमाँ तक कि नाम धाम हम्मर तप से बतबइअ ।।
 ए लेल कर बिस्वास उ साधुपन पर, बाहर अएलन ।
 दोना में के कन्द - मूल झोरी में डाले चहलन ।।
 एतने में चीता लेखा फुरती से छली झपट के ।
 पकर सिआ के तेजी से उ चललक तनिक झटक के ।।
 छन भर ला सीता हतप्रभ उ कुच्छो समझ न पएलन ।
 जाले समझथ अपना के राबन के रथ पर पएलन ।।
 एक हाथ से धर सीता के दोसर से रथ हँकइत ।
 जनस्थान के ओरी बढ़लक बंचक सबतर तकइत ।।
 सीता चिल्लाए लगलन हो छूटे ला बेचैन ।
 कूदे ला रथ से चहलन बाकी न छूटल डैन ।।
 सिंह के पंजा में परल असहाए गाय के लेखा ।
 चिचिआइत छटपट करइत रहलन पागल के लेखा ।।
 हे लछुमन, हे राम बचाबऽ राक्षस लेले जाइअ ।
 हे देओता - पितर आबऽ हमरा के हरले जाइअ ।।

रिसी मुनि देखलन उहो डर से न चिल्लएलन ।
 राक्षस के आतंक न केऊ साहस तनिको कएलन ।।
 सीता के कातर पुकार से बन के कोना - कोना ।
 भर गेलक बाकी न पहुँचल राम लखन तक रोना ।।
 बिकल जानकी रह - रह के छूटे ला जोर लगाबथ ।
 बाकी महाबली राक्षस से छोरा न तनिको पाबथ ।।
 एतने में देखलन पंछी के भेस बनएले वीर ।
 मार झपट्टा रोक रहल ह राक्षस के रनधीर ।।
 कहलक उ "बेटी घबरा मत एकरा तुरत मारइले ।
 चोंच आउर पंजे से ए पापी के प्रान हरइले ।।
 हम्मर नाम जटायु, हती मित्र ससुर के तोरा ।
 हमरा जीते जी न बढ़तक एकरा रथ के घोरा ।।
 एतना कहइत चोंच पाँख से कके प्रबल प्रहार ।
 राबन के रथ के घोरा के पंछी देलक मार ।।
 देख प्रबल अबरोध क्रोध से भर गेलक लंकेस ।
 मारे ला चहलक बाकी उ देलक घाओ असेस ।।
 कहलक गीध "अरे राबन तू पढ़ले बेद बेकार ।
 ब्यर्थ ग्यान जदि सुधर न पएलक बेकती के बेहवार ।।
 तू अबला नारी पर देखला रहले भारी जोर ।
 बाकी राम - लखन के आगे पहुँच न सकले चोर ।।
 रिसि बिसरबा के कुल तोरा कारन भेलक हीन ।
 पंडित होके चोरी कएले कामुक पापी दीन ।।
 जइसन करनी तइसन भरनी मर तू हमरा हाथ ।
 बचिओ जएबे हमरा से त मारतन सिरी रघुनाथ ।।"
 "अरे मूढ़ तू बाधा देबे अएले हमरा बीच ।
 निस्वय तोहर मिरतु लएलक ह तोहरा के खींच ।।
 ले, तोरा हम परोपकार के मजा तुरत चखबइले ।
 अपना बिकट खड्ग से तोहर दुन्नो पाँख कटइले ।।"
 एतना कहइत खड्ग उठा के कएलक असुर प्रहार ।
 ओन्ने गीधो पूरा बल से कएलक भारी बार ।।
 भेल लराई भीसन दुन्नो के तन लहुलुहान ।
 झरना लेखा झरल रक्त न रहलक तन के ध्यान ।।

तब क्रोधित राबन अप्पन पुरुसारथ परगट कएलक ।
 महाबीर ओ पक्षीराज के दुन्नो पाँख कतरलक ॥
 आउर गरदन काटे ला कएलक भीसन प्रहार ।
 घाएल हो के गिरल गीध सह पएलक न उ बार ॥
 मरनासन्न बिबस पंछी पीरा से तरपे लागल ।
 आउर सिआ के प्रान निरासा के सर डूबे लागल ॥
 नारी के रक्षा ला देलक परउपकारी प्रान ।
 बाकी ओकरा दुख रहलक न सीता पएलन त्रान ॥
 भाग भरोसे छोरलन अपना के बेवस बैदेही ।
 हो गेलक बिस्वास कि छुटलन लछुमन राम सनेही ॥
 गलती पर पछताबे लाइक रहल न सक्ति सेस ।
 अब पीरा में घुट - घुट कटतक बच्चल जीवन सेस ॥
 रथ बिहीन राबन सीता के झट कन्हा पर लदलक ।
 आउर जोग सक्ति से अपना नभ पथ में उर चललक ॥
 सीता परल बिबस कन्हा पर ढर - ढर आँसू ढरइत ।
 बसन ब्यस्त बाल छितराएल अकसक कुछ न चलइत ॥
 पथ में एक जगह सीता देखलन कपि के समुदाए ।
 परबत के चोटी पर बइठल, लगलन उ चिल्लाए ॥
 कपिदल उप्पर तकलक देखलक राक्षस उरल जाइअ ।
 अपना कन्हा पर एगो नारी के लेले जाइअ ॥
 साइत बरजोरी हरलक ह ओही से चिल्लाइअ ।
 हमरा सब के देख उ अपना ओरी ध्यान खिंचइअ ॥
 एतने में गेरलक ओजमन कुछ कपरा आउर गहना ।
 बाकी कोनो कपि न टकसल रक्षा ला बन अपना ॥
 ले गेलक राबन सीता के खिस्सा भेलक सेस ।
 रौंदल घाएल पंचवटी रहलक साखी बन सेस ।

ओन्ने जइसे लछुमन के अबइत रघुनायक देखलन ।
 कोनो भारी आसंका से मने मन उ कँपलन ॥
 कहलन "छोर अकेले सीता के कहेला तू अएलऽ ।
 हम अबते रही तू धीरज तनिक न कहेना धएलऽ ॥"

लछुमन तनिके में भाई के सब्बे बात बतएलन ।
लाचारी अप्पन बतलएलन जोन दसा में अएलन ।।
कहलन "हुनका रक्षा ला मंत्रित रेखा खींचली ह ।
बाहर निकले से हुनका हम बहुत मना कइली ह ।।
बाकी रघुबर के मन में भेलक न कुछ सन्तोस ।
हुनका अपने उप्पर उठे रह - रह भारी रोस ।।
मान प्रिया - हठ बेकारे कंचन मृग पाछे अइली ।
सब बुद्धि रहइत राक्षस से भारी धोखा खइली ।।
कुटिआ ओरी बढ़इत लछुमन के मृग - बध बतलएलन ।
कइसे हरिन रूपधारी राक्षस से धोखा खएलन ।।
लछुमन कहलन मृग - प्रसंग हमरा खडजंत्र लगइअ ।
आउर ए में सुपनेखा के निश्चित हाथ लगइअ ।।
दुन्नो भाई बतिआइत जब कुटिआ के लग अएलन ।
अजब तरह के सन्नाटा उ चारो ओरी पएलन ।।
"सीता कहमाँ हतऽ ! कुटिआ से तू बाहर आबऽ ।
आ गेली हम दुन्नो मन से चिन्ता तुरत भगावऽ ।।"
कोनो उत्तर न अएलक त संकित लछुमन भेलन ।
डेग बढ़बइत जल्दी से उ कुटिआ में चल गेलन ।।
बाकी कुटिआ सून पता सीता के कहीं न पएलन ।
झूठ भेल सक्ति के रेखा उ चिन्तित हो अएलन ।।
आस पास खोजलन दुन्नो आ बारम्बार पुकारलन ।
बाकी कन्हरो से सीता के कोई पता न पएलन ।।
हर लेलक केऊ सीता के भेलक मन बिस्वास ।
रघुबर माथ पकर के बइठलन होके बहुत निरास ।।
एही ला सोना मृग बन के राक्षस रचलक तंत्र ।
प्राण गमा पूरा कएलक सुपनेखा के खडजंत्र ।।
लेकिन के कहमाँ ले गेलक, कइसे पता लगाऊ ?
जंगल मूक, पसु बिन भासा केकरा से बतिआऊ ।।
पालित मृग तन सूँघ राम के एक तरफ बढ़ गेलक ।
लछुमन कहलन साइत एनही भाभी के ले गेलक ।।
धीरे - धीरे ग्यात भेल जब हुनका कुछ - कुछ हाल ।
तब दक्खिन ओरी बढ़ गेलन लछुमन राम बेहाल ।।

आगे बढ़ला पर देखलन रथ टूटल जंगल रौंदल ।
 आउर एक बिसालकाय नर कटल हाथ के औधल ॥
 पंछी लेखा डैना आउर भारी लमहर चोंच ।
 सऊँसे देह लहू में डूबल लागल घाओ, खरोंच ॥
 उ तरपइत धीरे - धीरे रघुबर नाम पुकारइत ।
 हर पल टूटइत साँस मौत के निकट-निकट पहुँचबइत ॥
 रघुबर चीन्हलन बीर जटायु पूज्य पिता के मीत ।
 हाले जे परिचित भेलन आ देलन बहुत पिरीत ॥
 उठा गोद में धीरे से हुनका सोहराबे लगलन ।
 लछुमन तनिका पानी लाबऽ जल्दी से, उ कहलन ॥
 लछुमन पानी ला के देलन खुललक तनिका आँख ।
 बाकी पीरा से उ कँहरे रह - रह जाए काँप ॥
 बरा कस्ट से कुँहर मुँहर के गीध बात बतलएलक ।
 कइसे सीता के रक्षा में घाओ भेआनक खएलक ॥
 कहलक राबन हरलक सीता, गेलक दक्खिन ओर ।
 उ लंकापति, लंका बस्सल हए सागर के कोर ॥
 एतना कहइत गीधराज के बानी कुंठित भेलक ।
 आउर प्रान पखेरु तन के छोर गगन में गेलक ॥
 भरल हृदय से दुन्नो भाई कएलन ओकर दाह ।
 आउर अस्थि के नदी में मुकती ला परबाह ॥
 हुनका भेल न ग्यात कि नभ से गेलक पापी राबन ।
 एलेल दक्खिन ओरी बढ़लन खोजइत ओकरा बन-बन ॥
 एही में एक दिन मिल गेलक हुनका असुर कबन्ध ।
 लमहर हाथ, देह परबत सन आउर दृष्टि अन्ध ॥
 पकरा गेलन राम लखन हुनका खाए ला चहलक ।
 ओकरा की मालूम मिरतु राघव लछुमन बन अएलक ॥
 ओकर दुन्नो हाथ काट संकट से मुक्ति पएलन ।
 आउर पल भर में राक्षस के असि से काट गिरएलन ॥
 खोजइत पुछइत दुन्नो भाई आगे बढ़इत गेलन ।
 रसता में सबरी भीलनी के आस्रम सुन्दर पएलन ॥
 तपमय पावन जीवन आउर भगती से भरपूर ।
 अगर धूप सन - मह - मह करइत करुना से परिपूर ॥

देलन राम लखन परिचय आ पुछलन सादर माई ।
 नारी हरन के चरचा कतहूँ परलक तनिक गुनाई ॥
 हम्मर पतनी सीता ओकरा असुरपति लंकेस ।
 धोखा से हरलक, न मालूम ओकर पता बिसेस ॥
 लंका कहाँ, कोन पथ हमरा उहमाँ तक पहुँचाएत ।
 रसता में कइसन - कइसन बाधा आ संकट आएत ॥
 केतना उ बलवान अगर, मालूम त तनिक बताऊ ।
 हम पीरित अपने तपसीला तनिका दया देखाऊ ॥
 कहलक सबरी "बइठऽ रघुबर पहिले तू सुस्ता ल ।
 थकल-मादल भुक्खल पीरित कन्द मूल कुछ खा ल ॥
 पानी ल पग धोअऽ ताले हम बस तुरत अवइले ।
 पासे में हए पेंर बइर के ताजा तोर लवइले ॥
 मान बात दुन्नो सुस्तएलन धोएलन अप्पन गोर ।
 ताले सबरी ले अएलक कुछ मीठ बेर फल तोर ॥
 आदर से दोना में रख के बहुत नेह के साथ ।
 देलक बइर ग्रहन करु दुन्नो भाई रघुनाथ ॥
 खाए लगलन राम त कहलक "हे पुरुसोत्तम राम ।
 तोरे रस्ता देखइत अबले बइठल हम ए धाम ॥
 हम्मर गुरु मातंग रहथ तपबल के प्रखर प्रदीप ।
 ग्यान जोत से बरइत रहे हुनका मन के दीप ॥
 ऊहे कहल र एक दिन अएतन इहमाँ रघुनाथ ।
 पतनी के खोजइत आ लेले भाई अपना साथ ॥
 ज्ञान, बिराग तेज के मूरत भग से जुत भगवान ।
 सब ला ममता, सब ला समता, करुना दयानिधान ॥
 महाबीर त्यागी, गुनआगर लेतन उ बनबास ।
 हुनके से होएतक धरती पर राक्षस कुल के नास ॥
 सील बिनय आ त्याग स्नेह से रचतन उ इतिहास ।
 हो जाएत सब लोग अमर जे रहतक हुनका पास ॥
 तू हुनकर स्वागत सेवा के फल जगती में पएबऽ ।
 हुनका गाथा में जुर के अपना के अमर बनएबऽ ॥
 हे पुरुसोत्तम एही ला हम जोहइत तोहर बाट ।
 एही आसा में रहली ह घोर बुढ़ापा काट ॥

तू आ गेलऽ दरसन देलऽ मानुस तन तर गेलक ।
 आदर से माई कहलऽ जीवन सार्थक हो गेलक ।।
 बेटा इहमाँ से कुछ दक्खिन पम्पासर के बाद ।
 बाली बानर से सासित किस्किन्धा हए आवाद ।।
 बाली के छोटका भाई सुग्रीव सुरुज संतान ।
 रिस्यमूक परबत पर मिलतओ लीहऽ तू पहचान ।।
 ओकरा से दोस्ती करिहऽ उ करतो तोहर काम ।
 सीता के पाबे में उहे सब कुछ करतओ राम ।।
 सुन के राम तनिक खिललन कुछ मन में आसा जागल ।
 सबरी के सनेह से मन के पीरा कुछ - कुछ भागल ।।
 सादर आग्या मांग राम चललन पम्पासर ओरी ।
 आउर तन के छोर चलल सबरी ईस्वर गति ओरी ।।
 एगो दीप मिटइअ कतहूँ दोसर कहूँ जरइअ ।
 पीरा आउर निरासा से आसा के जोत फुटइअ ।।
 सीता के सनेह में बन्हले राघब अप्पन प्रान ।
 भाई के साथे चललन ले खोजे के अभियान ।।
 जीवन - लक्ष जानकी, जीवन के उहे पहचान ।
 हुनका सिबा न रघुबर मन में कोई दोसर ग्यान ।।
 राम प्रेम - साधक सीता सुन्दर सनेह के साध्य ।
 प्रेम सक्ति से साधे चललन रघुबर काम असाध्य ।।

❀ ओम मित्राय नमः ❀

मैत्री कांड

हे मित्र, जगतपति तेजपुंज बलसाली ।
 हे सुरुज देओता सहस्रांस गुनसाली ॥
 हे सप्त अस्वरथ - रथी जगत के रक्षक ।
 हे प्रभापूर्ण आदित्य तमस के भक्षक ॥
 हे प्रिय प्रभाकर भानु रोग - दुख नासक ।
 हे सुख समता के स्वामी जगत प्रकासक ॥
 हे रघुकुल के कुलदेव पिता सुग्रीव कपि के ।
 अरुनकिरन के धाम बिकासक कमल कली के ॥
 नर-बानर कुल-सेतु मित्र समता के सागर ।
 अंजनीनन्दन के गुरुवर बिद्या के आगर ॥
 काट अन्ध तम देव पंथ हमरा देखला दू ।
 सीता के खोजे ला कोनो राह बता दू ॥

जइसे सबरी बतलएलक तइसे गेलन सिरी राम ।
 रसता में आगे मिललक पम्पासर सोभाधाम ॥
 सोभा देख सरोबर के रघुपति के हृदय जुराएल ।
 लछुमन से कहलन "देखऽ त कइसन सोभा छाएल ॥
 स्वच्छ नीलमनि सन पानी में खिलल कमल बहुरंग ।
 तरह-तरह के जलपंछी क्रीरारत ओकरा संग ॥
 माधव मास बसंत चढ़एले सब तरुबर पर रंग ।
 कुसुम गंध से मातल भौरा लगल सुमन के संग ॥
 तरह - तरह के फूल पवन - झुलुआ पर मुक्त झुलइअ ।
 ताम्र - हरित पत्ता से सोभित पेंर - पेंर हुलसइअ ॥
 सीता के गुन सील रूप के बहुत इआद अबइअ ।
 सुमन - सुमन पल्लो - पल्लो में हुनके मुँह झलकइअ ॥
 कोन दसा में होएतन डँसइत हए चिन्ता के सौँप ।
 प्रिया-बिजोग भाग में लीखल पता न कोना पाप ॥

बन गेलक र राजभवन जंगल में सीता साथ ।
 अब इहे हए गुफा सरीखा सूझ न रहलक हाथ ।।
 हाय हमरा से अल्लग उ कइसे होएतक जीता ।
 हर पल प्रान हमर कुहकइअ सीता - सीता - सीता ।।
 भाई लछुमन अगर न मिलतक सीता ए जीवन में ।
 लेम समाधि तोरे सम्मुख हम एतहीं जंगल में ।।”
 सुन भाई के बात लखन के भरल आँख में लोर ।
 गम्मे से पोंछलन ओकरा अपना पटुका के छोर ।।
 समझबइत कहलन भइआ ए अन्ध मोह के त्यागू ।
 ब्रिह ब्यथा बल कुंठित करतक एकरा से अब भागू ।।
 जइसे होएत तइसे खोजम निश्चित हम भाभी के ।
 आउर मार गिराएम अपहरता राबन पापी के ।।
 अपने धीर बीर सुभ ग्यानी आ बिबेक के खान ।
 प्रनपालक जनरक्षक त्यागी दयासिन्धु भगवान ।।
 जे विक्रम से अपने तोरली सिब के महा कोदंड ।
 जे साहस से चुनली अपने बन के राह प्रचंड ।।
 जे उत्साह से मारली खर - दूसन सन महाबली के ।
 ओही साहस से खोजू भइआ अब जनक लली के ।।
 बीर पुरुस के हए दुनिआ में पुरुसारथ पहचान ।
 पुरुसारथ से हीन मनुस हए जीते मरल समान ।।
 ए लेल पुरुसारथ पर डालू मत पीरा के पानी ।
 भाभी के खोजू पौरुस से लीखू अमर कहानी ।।
 चलू इहाँ से पम्पासर के रूप न सुखद सलोना ।
 रितुपति के साथे करइत हए इ कुछ जादू तोना ।।
 सेबरी बतलएलक जे परबत ओकर पता लगाऊ ।
 ओकरा बाद सुकंठ भानु सुत से मिल बात बनाऊ ।
 चिन्ता आ निष्क्रियता छोरू ज्वाला बन के जागू ।
 तेजपुंज रघुनाथ सिआ के अन्वेसन में लागू ।
 कुंठा दुख निरासा सब के सुखल घास बनाऊ ।
 महाबली उत्साह सिखा से ओ में आग लगाऊ ।।
 दिव्य अस्त्र, तप - तेज साथ सक्तिसाली भुजदंड ।
 धरती आज हिला दू राघव ले कर में कोदंड ।।”

परम प्रेम उत्साह भरल सुन के भाई के बात ।
 सूतल तेज राम के जागल देखलक रात प्रभात ॥
 कहलन "भाई तोहर बानी भानु उदय सन लागल ।
 सीता के खोजे ला अब उत्साह सहज मन जागल ॥
 राग बरा उत्साही नर के मन में आग भरइअ ।
 रागहीन नर साँचो जग में तेजहीन हो जाइअ ॥
 सीते के अनुराग रहे जे सिब के धनुस चढ़इली ।
 सीते के अनुराग प्रेरना भेल जे बन में अइली ॥
 सीता के अनुराग कि मारली खर - दूसन बलवान ।
 साँचो सिया बिना खो गेलक हम्मर सब पहचान ॥
 अब बिजोग के चिनगारी से भाई राग जगाएम ।
 दुख से मन के कातर आगे बन्धु न तनिक बनाएम ॥
 उठा धनुस निरघोस करइले कुंठा के भगबइले ।
 सीता के खोजे ला हम सात्विक संकल्प करइले ॥"
 भाई के उत्साह देख लछुमन के मन में हर्स ।
 रिस्यमूक परबत खोजे ला चललन तुरत सहर्स ॥
 खोजइत-खोजइत आखिर दुन्नो रिस्यमूक गिरि अएलन ।
 कोन गिरि पर कपिबर मिलतन उ ठिकिआबे लगलन ॥
 ओही जग्गह घुमइत रहथ सुग्रीब आ हनुमान ।
 हुनका साथे जामबन्त मंत्री बुद्धि के खान ॥
 परल नजर रघुबर - लछुमन पर संका से मन छनगल ।
 तापस भेस धनुस सर कर में रूप देख मन उँचगल ॥
 लागल हुनका बाली कएलक फेन कोई खडजन्त्र ।
 हमरा मारे ला उ रचलक कोनो नूतन तन्त्र ॥
 भय से मुँह सुक्खल मन भेलक बहुत - बहुत बेचैन ।
 भाग तुरत आश्रम में गेलन तब पएलन कुछ चैन ॥
 जामबन्त हनुमानो हुनका पाछे लागल गेलन ।
 औचक चल आबे के कारन सादर पूछे लगलन ॥
 "हम देखली दू बीर मनोहर तापस एनही अबइत ।
 बरा गौर से एन्ने ओन्ने देखली ओकरा तकइत ॥
 हमरा हए बिस्वास उ बाली के भेजल बलवान ।
 तापस भेस बना के अएलक लेबे हम्मर प्रान ॥

राजा समर्थ होइअ लमहर होइअ ओकर हाथ ॥
 केकरो से केकरो लरबा के कटवा देइअ माथ ॥
 बाली चतुर बंचना के उ बहुत उपाय जनइअ ॥
 बल बुद्धि आ अहंकार से ओकर राज चलइअ ॥
 ए लेल हनुमत जा बतिआबऽ जानऽ ओकर हाल ॥
 सत्रु हए कि मित्र लगाबऽ पता अंजनी लाल ॥
 बाक् कला में चतुर बीर तू हतऽ बुद्धि - सागर ॥
 वेद सास्त्र के ग्याता जोगी ललित कला में आगर ॥
 सत्रु न होए त तू ओकरा हम्मर मित्र बनइहऽ ॥
 जे में हमरा होए लाभ ऊहे सम्बन्ध बनइहऽ ॥
 मतलब से मतलब निकलइअ आ काँटा से काँटा ॥
 बली व्यक्ति से मैत्री सुन्दर आ निरबल से फाँटा ॥
 तनिको खटका होए त तू संकेत तुरन्ते करिहऽ ॥
 संकट देखिहऽ त पल भर तू बीर न उहाँ अटकिहऽ ॥
 "जइसन आग्या" कहइत हनुमत तपसी भेस बनएलन ॥
 गिरि से उतर राम के सन्मुख छन भर में उ अएलन ॥
 हाथ उठा "जय" कहइत कहलन कामरूप हनुमान ॥
 बीर तपस्वी ए जंगल में स्वागत हए सिरीमान ॥
 रूप मनोहर बीर भेस तप से दीपित तन कान्ती ॥
 स्याम-गोर तन, नैन कमल सन मुँह पर कोमल सान्ती ॥
 भुज आजानू बझर छाती कटि केहरी समान ॥
 जोरी देख लगइअ अपने बिस्नु आ दिनमान ॥
 जटाजूट बल्कल से अपने तपसी जुगल बुझाइले ॥
 बाकी धनुस - बान से अपने राजकुमार लगइले ॥
 हम केसरी सुत अंजनीनन्दन हनुमत हम्मर नाम ॥
 सचिव सखा सुग्रीव कपि के परिचय लघु सुखधाम ॥
 अपने के परिचय जाने के इच्छा प्रबल रखइले ॥
 "स्वामी के आग्या" से अपने से अनुरोध करइले ॥
 हम्मर स्वामी रबिसुत ए परबत पर बास करइछन ॥
 सेना सचिव सखा के साथे उ निरभए बिचरइछन ॥
 हुनके बन के दूत तपस्वी अपने तक अइली ह ॥
 अपने चाहू त सन्देशा मैत्री के लइली ह ॥

चुप निहारे राम लगलन पवनसुत के रूप ।
 बज्र तन के छुए लागल कमल - बन के धूप ।।
 सुद्ध भासा, ग्यान निर्मल भंगिमा निरदोस ।
 सब्द कम अभिप्राय जादा भरे मन में तोस ।।
 कंठ में बैखरी ललित आ हृदय में सुभ भाओ ।
 अमृत सन परभाओ बदले सत्रु मन के भाओ ।।
 संस्कृत, क्रमबद्ध, लय से पूर्ण सहज प्रवाह ।
 हृदय मूर्धा कंठ से प्रस्नबित भासा, बाह !
 प्रकट कहलन "बिप्र हम्मर राम - लछुमन नाम ।
 पिता दसरथ अबधपति हम्मर अजोध्या धाम ।।
 पिता आग्या मान छोरली राज, ले बनबास ।
 अनुज आउर पत्नी साथे पंचवटी में बास ।।
 एक दिन छल से हटा हमरा कुटी से दूर ।
 पतनी के अपहरन कएलक असुर राबन क्रूर ।।
 बीर पक्षी जटायु कएलक प्रान दे प्रतिकार ।
 पर न भेलक असुर चंगुल से प्रिया उद्धार ।।
 खोज में बउआए लगली हम अनुज के संग ।
 बन गुफा गिरि खोज हारली थकित भेलक अंग ।।
 भाग से सबरी मिलल उहे बतएलक राह ।
 कपिपति सुग्रीब से मिल प्राप्त करबऽ राह ।।
 खोज में हुनके इहाँ तक आ पहुँचली बिप्र ।
 अब मिलाऊ कपिपति से देब हमरा छिप्र ।।
 धन हम्मर भाग अपने बन कृपा के कूप ।
 लग पिआसल के पधारली बिप्र हे अपरूप ।।
 लग रहल निश्चित बनत अब समय सुभ अनुकूल ।
 मित्रता के डाढ़ में फरतक मिलन के फूल ।।
 मैत्री के सेतु चलू हमरा तनिक मिलबाऊ ।
 कपिपति के दरस इच्छा देर मत लगबाऊ ।।
 साथ ले दसरथ तनय चललन कपि बलबान ।
 हर्सध्वनि संकेत कएलन मित्र के पहचान ।।
 सिखर - सिखर चढ़ के तीनो उप्पर परबत पर अएलन ।
 अतिथि - सिखर पर दुन्नो के सादर हनुमत बइठएलन ।।

अर्ध-पादय से स्वागत कएलन जल से पाँओ पखारलन ।
 उत्तरीए से बेनिया क के स्वेद निवारन कएलन ॥
 कहलन "अपने बइठू हम कपिपति के लेले साथ ।
 छन भर में आ रहली ह अपने सम्मुख रघुनाथ ॥
 जाके समझएलन हनुमत कपिपति के सब्भे बात ।
 मित्र बना लइली अपने ला चिन्ता करु न नाथ ॥
 सखा सचिव रक्षक साथे सुग्रीव उहाँ पर अएलन ।
 प्रिय भासा में परिचय आपस में हनुमत करबएलन ॥
 आउर कहलन अपने दुन्नो हती एक समान ।
 राजपाट आ पत्नीरहित दुरबल सहइत अपमान ॥
 ए लेल बन के मित्र जगाऊ सक्ति आ सम्मान ।
 अंध - पंगु न्याय से पाऊ दुख के सहज निदान ॥
 रघुबर के बल से अपने बाली से मुक्ति पाऊ ।
 आउर अपना सेनावल से सिय के खोज कराऊ ॥
 केसरीनन्दन के बाणी से दुन्नो हरखित भेलन ।
 अग्नि के साखी में मैत्री के सम्बन्ध बनएलन ॥
 बतलएलन सुग्रीव एक दिन एही गिरि सिखर पर ।
 बइठल बतिआइत रही त देखली नभ से भू पर ॥
 गिरलक गहना कपरा जे से उप्पर ओरी तकली ।
 नारी कन्हा पर लेले राक्षस के जाइत पइली ॥
 हमरा हए अनुमान उहे रहलन अपने के नारी ।
 बरा विवस रोइत चिल्लाइत रहलन उ बेचारी ॥
 मंगवा के बस्तर आभूषण रघुबर से चिन्हबएलन ।
 सीते के बस्तर आभूषण दुख से रघुबर कहलन ॥
 अप्पन दसा बतबइत कपिपति कहलन हे रघुनाथ ।
 इहे अतना संगी - साथी हतन हमरा साथ ॥
 हम निकलुआ राजहीन बाली के भय से भीत ।
 कइसे मदद करु अपने के व्यर्थ निबल के प्रीत ॥
 राजपाट रहितक त सबतर सेना के भेजबा के ।
 सीता के हम पता लगइती तीन लोक छनबा के ॥
 ए लेल अपने मदद करु बाली से त्रान दिलाऊ ।
 अपने के सेवा लाइक हम बल बिक्रम कुछ पाऊ ॥

भाई न हए उ, सत्रु हम्मर, दुरगत रोज करइअ ।
 ओकरा डर से एक्को पल ला नीन न तनिक अबइअ ।।
 “भाई सहोदर सत्रु भेलक कइसे कपि बतलाऊ ।
 कहेला मिरतु चहइले ओकर हमरा के समझाऊ ।।”
 कपिपति कहलन “अनजाने हम एगो गलती कइली ।
 ओही से अपना भाई के सत्रु नाथ बनइली ।।
 एक बेर मायाबी राक्षस बल से अति उमता के ।
 बाली के ललकारलक पापी किस्किन्धा में आके ।।
 बाली ओकरा मारे दउरल हमहू गेली साथ ।
 रात अन्हरिआ मायाबी अएलक न ओकरा हाथ ।।
 डर से असुर गुफा में घुसलक पाछे घुसलक बाली ।
 हम बहरे मुँह पर रह गेली बुद्धि भेलक खाली ।।
 बीत गेल कए दिबस गुफा से लउटल न उ बीर ।
 हम चिन्ता कातर दुआर पर रहली डटल अधीर ।।
 आखिर एक दिबस अबइत देखली लेहू के धार ।
 उठा - पटक पीरा से कातर सुनली चीख - पुकार ।।
 हम कइली अनुमान कि मारल गेलक भाई बीर ।
 अब निकलत हमरो के मारत असुर महा रनधीर ।।
 डर के मारे गुफा द्वार पर सिला - खंड अटकइली ।
 आउर भागल - भागल बन्धु हम किस्किन्धा अइली ।।
 हाल जान सब कोई हमरा अतिसय प्रेरित कएलक ।
 राजाहीन सिंहासन ओपर हम्मर तिलक करएलक ।।
 लौटल मार असुर के बाली देख इहाँ के हाल ।
 क्रोधित होके कांपे लागल आँख भेआनक लाल ।।
 हम सादर सब बात बतइली अप्पन भूल सकार ।
 हाथ जोर माफी ला कइली बारम्बार गोहार ।।
 जान - बूझ के गलत न कइली छमा करऽ हे तात ।
 सिंहासन बापस लेऽ आ भूलऽ बीतल बात ।।
 छोटका से गलती होइअ त बरका छमा करइअ ।
 छमादान से लमहर भाई पुन्न न जग में होइअ ।।
 बाकी गांठ परल बाली के मन में बज्रर अइसन ।
 केतनो खोलली पर न खुललक नागफाँस के जइसन ।।

गद्दी छोरलीं पर न घटलक ओकरा मन के रोस ।
 सचिव सभासद के कहलो पर न मानलक निरदोस ।।
 तंग करे लागल हमरा के छिनलक सुख सम्मान ।
 इहाँ तक कि छीन प्रिया के लेबे चहलक प्रान ।।
 पाके अति अपमान उपद्रव जंगल में हम भगली ।
 प्रान बचाबे ला हम रघुबर कोन दिसा न तकली ।।
 ए परबत पर रिसि सराप के डर से उ न अबइअ ।
 तइओ तरह - तरह के छल से हमरा के सतबइअ ।।
 चिन्ता, सोक, प्रान के डर से माछी नीन सुतइले ।
 पतनी आ धन धाम हीन एतहीं जीवन बितबइले ।।”
 सुन के राम दुखी भेलन कहलन “इ हए अन्याय ।
 बल हए बल के काट त्रास के इहे सिद्ध उपाय ।।
 हमरा अछइत तू मत डरऽ सूतऽ सुख के नीन ।
 हम्मर मित्र न रह सकलक ह दुख से दग्ध मलीन ।।
 जानऽ तू बाली रह गेलक दू दिन के मेहमान ।
 ओकर प्रान हरे ला हम्मर काफी एगो बान ।।
 भेज सनेसा बाली के तू अप्पन पतनी मांगऽ ।
 न देबे त समर निमन्त्रन बाली कन भेजबाबऽ ।।
 तोहरा रक्षा ला बाली से बन्धु समर रचाएम ।
 उ चाहे जमराज मगर ओकरा के मार गिराएम ।।
 बहुत तरह से समझएला पर आखिर सोंच - बिचार ।
 जुद्ध निमन्त्रन भेजे ला कपिबर भेलन तइआर ।।
 सुन के हँस बाली कहलक चिउटी के उगलक पाँख ।
 बकरी के साहस उ सिंह के चलल देखाबे आँख ।।
 उत्तर में उ गदा उठा के घर से निकलल बीर ।
 बरा जोर से गरजन कएलक बादल सन गंभीर ।।
 तारा के मालूम भेलक त बेकल दउरल अएलक ।
 हाथ जोर के प्रानपति के आदर से समझएलक ।।
 स्वामी जुद्ध - निमन्त्रन के मत समझू मूढ़ - बिचार ।
 देबर के स्वर के पाछे हए रघुबर के ललकार ।।
 बुद्धिमान सुग्रीब लगा तपसी के बल के थाह ।
 सोंच समझ के उ चुनलक ह द्वन्द्व जुद्ध के राह ।।

ए लेल अपने हँस के टालू उ हए छोटका भाई ।
 जोर समान देख के होइअ दोस्ती आउर लराई ।।
 उ हारतक ओकर न होएतक निन्दा आ उपहास ।
 बाकी अपने हारम त दुनिया करतक परिहास ।।
 हम सुनली ह दुन्नो तपसी हए भारी बलवान ।
 सीता स्वयंवर में इ तोरलक सिब के धनुस महान ।।
 जनस्थान में खर - दूसन के सब सेना के साथ ।
 मार गिरएलक असगरे रनभूमि में रघुनाथ ।।
 मृग बन के मारीच मरल ओकरा बल के हए सोर ।
 ओकरा भय से महाबली लंकापति बनलक चोर ।।”
 “देलक मूढ़ चुनौती त हम ओकरा मजा चखाएम ।
 ओकरा साथे तपसी दुन्नो के जमलोक पेठाएम ।।”
 कतनो तारा समझएलक न समझल उ अभिमानी ।
 कालगति से मूढ़मति हो जाइअ सहजे प्रानी ।।
 रिस्यमूक परबत लग आके देलक उ ललकार ।
 ताल ठोंक के गदा घुमबइत कएलक बज्र पुकार ।।
 कायर कपटी निच्चा आ तू भुरकुस आज करइले ।
 बाली के ललकारे के परिनाम तोरा बतबइले ।।
 रघुबर उत्साहित कएलन तब रबिसुत गदा उठएले ।
 परबत से उतरल संकाकुल साहस तनिक जुटएले ।।
 होए लागल जुद्ध गदा से गदा लगल टकराए ।
 गरजे लागल दुन्नो जइसे गरजे घन टकराए ।।
 रनचंडी चढ़लक सिर पर दुन्नो भाई पगलाएल ।
 गदाघात से अंग - अंग दुन्नो के भेलक घाएल ।।
 बाली के बल भेल तेज ओकर बढ़लक हुंकार ।
 रबिसुत सुने लगलक धीरे जम के बिकट पुकार ।।
 सह न सकल आघात प्रान ले बीर समर से भागल ।
 ओकरा पाछे गदा उठएले बाली जम सन लागल ।।
 दउर पकरलक ओकरा के आ देलक झपट पछार ।
 “राम बचाबऽ” रबिसुत के गूंजल कातर चीत्कार ।।
 गदाघात से बाली चढ़लक चूरे ला जब माथ ।
 देलन काट गदा बाली के उठा चाप रघुनाथ ।।

खंडित गदा, चकित बाली हो गेल क्रोध से लाल ।
 भैरो सन हुंकारे लागल, फुला देह के बाल ।।
 कहलक "रे तपसी धनुधारी मानुस मूसरचन्द ।
 ठहर बीच में टपके के हम बतबइले फल अन्ध ।।
 हस्तक्षेप अकारन तोरा सिर पर काल नचइअ ।
 जएबे तू सुग्रीब साथ जमपुर इ आज लगइअ ।।
 ठहर - ठहर तोहरे दुन्नो से पहिले हम निबटइले ।
 ओकरा बाद ए कायर के छन भर में आज बधइले ।।"
 कहलन राम "सुनऽ बाली सुग्रीब आसरित मित्र ।
 ओकरा से मैत्री कइली रख साखी अग्नि पबित्र ।।
 हम धनुधारी हमरा धनु के बान जहाँ तक जाइअ ।
 आरत, आस्रित आउर मित्र के रक्षा सहज करइअ ।।
 तू सुग्रीब के मारे चहलऽ ते से बान चलइली ।
 आस्रित के रक्षा कइली हम अप्पन धरम बचइली ।।"
 "ठहर मूढ़ हम मित्र धरम के मजा तोरा चखबइले ।
 अपना बन्धु के साथे तोरो जमपुर पेठबइले ।।
 बाली के बल ग्यात न तोरा अरे अभागल प्राणी ।
 राबन अइसन महाबली के इआद करइली नानी ।।
 एतना कहइत राम तरफ उ फेंकलक पेर उखार ।
 आउर जोर से गरजन कएलक जइसे फटल पहार ।।
 लाघब से रघुबीर चलएलन बान धनुस के तान ।
 टुकरी - टुकरी होके गिरलक तरुबर एक्के बान ।।
 देख पेर के हाल सिला ले रघुबर ओर चलएलक ।
 बाकी बान अमोघ राम के ओकरो धूरा कएलक ।।
 बिफल क्रोध में उन्मादी सन बाली मुक्का तान ।
 उछलल काल समान हरेला रघुकुलमनि के प्रान ।।
 जबले पहुँचे रघुबर तक ओकरा पहिलहीं बान ।
 बज्र समान घुसल छाती में हरलक ओकर प्रान ।।
 गिरलक, बाली धरती पर करइत भीसन चिक्कार ।
 मानू टूट परल धरती पर कोनो बिकट पहार ।।
 गिरलक, उठलक छटपट करइत कएलक बहुत प्रयास ।
 बाकी छोर चलल अभिमानी के तन ओकर साँस ।।

बाली के दल में मच गेलक भारी हाहाकार ।
 छाती पीटइत तारा अएलक अंगद बिकल पुकार ॥
 रबिसुत हतप्रभ कुछ देरी ला समझ न कुच्छो पएलक ।
 एक बान से मरतक बाली सोंच न कहिओ पएलक ॥
 छन भर पहिले जे सत्रु मरला पर भेलक भाई ।
 जेकर मिरतु चाहलक ओकरे ला अब छुटल रोआई ॥
 भाई - भाई कह रोए लागल बैर पिघल के बहलक ।
 लेकिन अब पछतएले कि जब चिरिया खेती चुगलक ॥
 ओन्ने तारा गिरलक पति के तन पर खाइत पछार ।
 "कहमाँ गेलऽ प्रानप्रिय उ कएलक करुन पुकार ॥
 केतना समझइली स्वामी बाकी नहिए तू मानलऽ ।
 आखिर तपसी के हाथे तू अप्पन प्रान गमएलऽ ॥
 हाय, स्वामी केकरा असरे छोरलऽ अप्पन तारा ।
 आऊर कइसे बन अनाथ रहतक सुत राजदुलारा ॥
 महाबली तोहर तारा केकरा कन आश्रय मांगत ।
 कोन किनारा बिना खेबइआ हम्मर नइआ लागत ॥
 एक बेर तारा कह बोलू खोलू अप्पन आँख ।
 देखू कइसे तरपइले पंछी सन हम बिन पाँख ॥
 परल दृष्टि राघब पर तारा तरप उठल पीरा से ।
 जइसे बिजली कौध जाए सहजे घुमरल बादल से ॥
 "निरपराध हमरा पति के कहेला मारलऽ रघुनाथ ।
 कहेला सेनुर से सूना कएलऽ तू हम्मर माथ ॥
 निरदर्ई, दुख के ज्वाला में हम्मर मन प्रान जरइअ ।
 देबे ला सराप तोरा मन में अति लपट उठइअ ॥
 दीऊ तोरा साप कि ए से पहिले धनुस उठाबऽ ।
 एक बान मारऽ हमरो स्वामी के लग पहुँचाबऽ ॥"
 कहलन राम देबि, अपने के पीरा हम समझइले ।
 बाकी हमहू छत्री धरम आ बचन मोल समझइले ॥
 हम बिन कारन न मारली ह तोरा प्रानपति के ।
 आउर सताबे के न इच्छा रहलक नारी सती के ॥
 बाली दोसी हठ क के उ अप्पन मरन बोलएलक ।
 अहंकार के कारन नीति मरजादा सब तोरलक ॥

तू नारी, तू समझ सकइछऽ नारी के अपमान ।
 ओकरा के न समझे चाही बकरी भेर समान ॥
 बाली कएलक पाप उ भाभो के बरजोरी रखलक ।
 जे बेटी-पुतोह लेखा, ओकरा के भोग्या बुझलक ॥
 नीच करम पर जबहीं कोनो पुरुस बली उतरइअ ।
 ओकर तेज घटइअ, अपने पापे अबस गलइअ ॥
 बाली के बल घटलक पाके ओकर पाप कमाई ।
 छमा न ओकरा से पा सकलक एक सहोदर भाई ॥
 ओकरा बल से कभी न रक्षा पएलक आरत प्रानी ।
 कभी न ओकर हिरदय सुनलक छमा दया के बानी ॥
 पहिले उ कएलक प्रहार बनलक हम्मर अपराधी ।
 हम छत्री अपना रक्षा ला मारली मान बिरोधी ॥
 मित्र - धरम के नाते हम रबिसुत के प्रान बचइली ।
 तोरा पति के मारे के कारन हम इहे पइली ॥
 जे चल गेलक लौट न आएत ओकरा ला मत रोऊ ।
 देवी काल बली जग में ओकरा पर क्रुद्ध न होऊ ॥
 धीरज धरु, लोर अब पोंछू सुत के ओरी ताकू ।
 अपने के परिजन सब व्याकुल हुनका उर में झाँकू ॥
 जुद्ध बिबिसता हए नर के नर घटले जुद्ध करइअ ।
 भल मानुस अपना भर रोके के प्रयास करइअ ॥
 अहंकार आ स्वार्थलिस नर जब अन्याय करइअ ।
 तब ओकरा दंडित करे ला केऊ निमित बनइअ ॥
 बाली पएलक दंड पाप के करु न देवी रोस ।
 हम निमित बनली एकरे हए हमरा मन अफसोस ॥
 हथ सुग्रीब उदार दयालु आदर से इ रखतन ।
 अपने रानी, इ संरक्षक जइसे चाहब रहतन ॥
 घूम मित्र सुग्रीब ओर कहलन हुनका रघुनाथ ।
 भाभी आउर भतीजा के घर ले जाऊ कपिनाथ ॥
 करु दाह संस्कार भाई के आउर जलांजलि दीऊ ।
 करु दान पिंडा हुनका आत्मा के सान्ती दीऊ ॥
 लछुमन जएतन साथ तिलक अपने के आज करएतन ।
 किस्किन्धा के गद्दी पर अपने के इ बइठएतन ॥

देबे के होएतक अंगद के बेटा अइसन प्यार ।
 परजा के सुख में नृप के सुख इहे धरम बिचार ॥
 जे राजा परजा ला मन में तनिक न नेह रखइअ ।
 असंतोस के दाबानल से ओकर राज जरइअ ॥
 साम दाम आ दंड भेद हए सासन के आधार ।
 बाकी सबसे उपपर बन्धु हए जनता ला प्यार ॥
 राज - पाट के बिधि - बेबस्था पहिले ठीक बनाऊ ।
 ओकरा बाद काम पर हमरो बन्धु ध्यान लगाऊ ॥
 एही परबत पर हमरा रहे के करु ठेकान ।
 आउर हमरा सेवा ला साथे दे दू हनुमान ॥
 इ ग्यानी, बानी के साधक, सुख - दुख कुछ बतिअएतन ।
 आउर कुछ उपचार प्यार से हमर पीरा हरतन ॥
 रबिसुत कहलन प्रसन्न बन गिरि हए एजमने पास ।
 सब लाइक सुन्दर प्रभु अपने ओतहीं करु निवास ॥
 तनिका देर रहू एतहीं हम अनुचर के भेजबइले ।
 आउर तपसी जोग बेबस्था उचित तुरत करबइले ॥

लछुमन ले सुग्रीब के गेलन सबके साथ ।

हनुमत रह गेलन सेवा में सादर रघुबर साथ ॥

कहलन "प्रभु आग्या दीऊ त चल के सिखर देखाऊ ।
 प्रसन्न बन पर से बन के सोभा सबतर बतलाऊ ॥
 जाले भाई लछुमन अएतन ताले कृपा निवास ।
 देख सुन लू जगगह जहमाँ अपने करम निवास ॥
 अपने के लाइक जगगह हए सोभा सुख के धाम ।
 बगले में हए गुफा मनोहर जहाँ निसा बिस्राम ॥
 नजदीके में सुलभ मूल फल कन्द बिबिध परकार ।
 जन्ने ताकम तन्ने मिलतक निरमल जल के धार ॥
 संग अनुज के सुख से अपने बरसा रितु बिताएम ।
 जब खोजम तब सेवा में हमरा के अपने पाएम ॥
 हो रहलक ह साँझ कहू त निरमल जल ला देइले ।
 आउर सन्ध्या बन्दन ला एजमने ठाँओ लगबइले ॥
 सिब पूजन के इच्छा हए त ला देइले हम फूल ।
 भोला के भगती से मिटतक तन मन के सब सूल ॥

कहलन राम "बालि बध से हए हम्मर मन कुछ खिन्न ।
 स्वार्थ द्वेस कर देइअ केतना भाई - भाई के भिन्न ।
 तू एतहीं बइठऽ आबे द परमप्रिय लछुमन के ।
 ओकरे बाद बात कुछ सोंचम सन्ध्या आ बन्दन के ।
 ताले अपना बारे में कुछ परिचय बात बताबऽ ।
 एतना ग्यान कहाँ से पएलऽ हमरा के समझाबऽ ।
 पता न कोन तार अनजाना तोरा साथ जोरइअ ।
 जनम - जनम के नाता बन्धु तोरा साथ लगइअ ।
 छू देलन रघुबीर तार कोमल हनुमत के उर के ।
 जाग उठल संगीत पवनसुत के भाबुक अन्तर के ।
 घुसुक प्रभु के पगतल तक अनजाने उ चल गेलन ।
 आउर खींच कमल कोमल पग सहज दबाबे लगलन ।
 पता न कि सोंचलन रघुबर न कएलन कुछ प्रतिकार ।
 हनुमत के स्पर्स बहाबे लगलक रस के धार ।
 कहलन हनुमत "प्रभुबर हम्मर पिता केसरी बीर ।
 माई अंजना सती - कोख से पइली मनुज सरीर ।
 महादेब के किरपा से पएलन उ सुत के दान ।
 पवनदेब सहजोगी बनलन तप में कृपानिधान ।
 एही से केऊ पवन पुत्र केऊ संकर सुवन कहइअ ।
 बाकी अंजनीसुत केसरीनन्दन सब लोग जनइअ ।
 अपने के कुलदेओता रबि से पइली बिद्यादान ।
 जे कुछ हमरा पास ग्यान सब हए हुनके बरदान ।
 हुनके से हम पइली प्रभुबर बेद उपनिसद सास्त्र ।
 इन्द्र बज्र देलन ब्रह्मा देलन अप्पन ब्रह्मास्त्र ।
 अग्निदेब के कृपा न अग्नि हमरा जरा सकइअ ।
 बरुनदेब के कृपा न सागर हमरा डुबा सकइअ ।
 पवनदेब के कारन जग में हम्मर गति अबाध ।
 कोनो पास न जग में अइसन सके जे हमरा बाँध ।
 तपबल से पइली सब सिद्धि तंत्र - मंत्र के ग्यान ।
 जोगसक्ति से नभपथगामी कामरूप पहचान ।
 जादू टोना माया कौतुक हमरा पर बेकार ।
 डाइन जोगिन भूत प्रेत ला बहुत एक ललकार ।

कविता, गीत, नृत्य से हमरा बहुत - बहुत हए प्यार ।
 मगर हाँक मारी कस के त सहम जाए संसार ॥
 नटखट बहुत रही बचपन में करी बहुत उतपात ।
 केतनो केऊ रोके - टोके सुनी न केकरो बात ॥
 मकई के मोचा से कहिओ दाढ़ी मोछ बना के ।
 आउर कहिओ माया पर चंदन तिरपुंड लगा के ॥
 कहिओ नकल करी रिसि मुनि के आउर ध्यान लगाई ।
 कहिओ - कहिओ मुनि लोग के हम कौपीन चोराई ॥
 कहिओ हुनकर पूजा के झोरी तरु पर लटका दी ।
 कहिओ आबे जोस त लमहर - लमहर पेर हिला दी ॥
 ओ पर खेलइत तरिका सब गिर जाए जइसे आम ।
 नकल पसु पंछी के स्वर के रहे बहुत प्रिय काम ॥
 आ के तंग रिसि सब देसन हमरा अजब सराप ।
 भूलल रहऽ अप्पन बल तू अंजनी सुत निस्पाप ॥
 जाले बल के इआद न तोहरा केऊ बीर दितओ ।
 ताले तोरा बल से जग में काम न कोनो होतओ ॥
 गुरु से सिखा पाके जब हम चले लगली गेह ।
 कहलन हमरा मुरुजदेव भर स्वर में बहुत सनेह ॥
 तू जा के किस्किन्धा रहऽ हमरा सुत के साथ ।
 सखा सचिव सेबक बन के तू रक्षा करिहऽ तात ॥
 इहे दच्छिना समझऽ चाहे इहे गुरु के सेवा ।
 एही में मिलतओ तोरा गुरुभक्ति के सब मेवा ॥
 चलली किस्किन्धा त जागल मन में दोसर इच्छा ।
 घूम - घूम के दुनिया देखू पाऊ जीवन शिक्षा ॥
 घूमे लगली देस - देस आ देखली बहुत समाज ।
 एके बात मिलल सबतर फइलल स्वारथ के राज ॥
 सुत - बित - दारा के सुख ला हए सऊँसे जग बेचैन ।
 लोभ मोह मत्सर के पट्टी बान्हल सबके नैन ॥
 सन्ततिहीन मनुस आतुर देउकुर में टेकले माथ ।
 सन्ततिवान बिकल, न पटरी सुत दारा के साथ ॥
 न जग में माया, ममता न केऊ बाबू भइआ ।
 जन्ने देखली तन्ने पइली सब से प्रबल रुपइआ ॥

जेकरा कम साधन ओकरा घर देखली बहुत खबड़आ ।
 जेकरा केऊ न भोगेबाला ओकरा बहुत रुपड़आ ।।
 भोजन निद्रा भय मैथुन में सिमटल जग - ब्यापार ।
 मूल्यहीन जीवन से बिकृत मूल्यवान संसार ।।
 गोरखधंधा देख जगत के भेलक बहुत निरासा ।
 बेद - सास्त्र के ग्यान निररथक बस स्वारथ के भासा ।।
 गिरहस्ती में तलछट कादो जागल हृदय बिराग ।
 मन में हरिभक्ति आ तन में जनसेबा के राग ।।
 सोंचली ब्रह्मचारी रह के सेबा के पथ अपनाऊ ।
 दुख पीरा आतंक त्रास से जग के त्रान दिलाऊ ।।
 बाकी गुरु के आग्या बन्धन ए ला एत्ते अइली ।
 देख सुभाओ सरल रबिसुत के नेह तनिक मन पइली ।।
 सेबा करम, धरम सेबा, सेबा जप तप आ पूजा ।
 दीन - दुखी ला नेह बहुत कोइ भाओ न मन में दूजा ।।
 तनी गो इहे परिचय प्रभु तनी गो पहचान ।
 अपने के प्रति सहज नेह मन में उपजल सिरीमान ।।
 एक बान में अपने मारली बाली के रघुनाथ ।
 आउर रखली छत्र रंक सुग्रीब कपि के माथ ।।
 पा गेली अतने में हम कुल सील सक्ति के थाह ।
 परम तपस्वी सील सक्ति में अपने उदधि अथाह ।।
 सेर बाली पर सबा सेर हम अपना आँखे देखली ।
 रावन चोर अगर सीता के तब ओकर गति बुझली ।।
 हथ सुग्रीब दयालु हिनकर छमासील बेहबार ।
 हिनका गुनग्राही मन में अपने ला बहुत पेआर ।।
 बरसा रितु के जाइते करतन उ अपने के काम ।
 रस्ता पैरा बन्द न निकलत अखनी कुछ परिनाम ।।
 हम मैत्री करबइली ह त हम मरजादा रक्खम ।
 सीता के खोजे में प्रभु हम उठा न कुच्छो रक्खम ।।
 हमरा हए बिस्वास सिया से होएत निश्चित भेंट ।
 आउर बानर सेना तोरत राक्षस दल के घेंट ।।
 रहे ध्यान दोसरा जगह राघव न कुच्छो सुनलन ।
 एकाएक प्रसन्न उ एगो पवन पुत्र से पुछलन ।।

“बालारुन सन रंग तरासल परबत अइसन देह ।
 ज्ञान, कला, नीति में पंडित उत्तम मानुस देह ।।
 तब कहेना अपना तन पर हतऽ लांगुल लटकएले ?
 आउर मुखौटा बन्दर के सुन्दर मुँह के पहिनएले ?
 कहेला रीछ भालु के बाना जामबन्त के तन पर ?
 पसु आकार लेल कहेना आग्रह एतना हए मन पर ?
 सभ्य समुन्नत सिक्षित जीवन तब कहेना बनबास ?
 किस्किन्धा के नगर सिल्प उन्नति के बिमल प्रकास ।।
 तू ग्यानी ए सब के मतलब हमरा के बतलाबऽ ।
 पति बानर आ त्रिया रूपसी नारी इ समझाबऽ ।।
 मुसका के कहलन हनुमत इ पुरावृत्त के बात ।
 पूर्वज के बिस्वास कि हम सब बानर कुल संजात ।।
 जामबन्त निछत्र लोक से अप्पन उत्स मानइछन ।
 एही से उ रीछपति ए धरती पर कहबइछन ।।
 मानुस बीर जटायु बाकी रहे गीध के भेस ।
 आउर अपने सूरजबंसी कहेना हे अबधेस ?
 चिन्ह सभ्यता के आदिम, जब मनुस प्रकृति के साथ ।
 जोरलक अपना उत्पत्ति के कथा, बीर रघुनाथ ।।
 केऊ गरह निछत्तर, केऊ पसु पंछी के मानलक ।
 आउर ओक्कर सूचक कोनो चिन्ह देह पर धारलक ।।
 सुरुज चान्द निछत्तर नद्दी आउर पेंर पहार ।
 साखत सत्य प्रकृति के आउर जग के पालनहार ।।
 एकरे गोदी में आदिम नर खोललक अप्पन आँख ।
 आउर एकरे संगति में पएलक बुद्धि के पाँख ।।
 एही से उ चान्द सुरुज के अप्पन पितर मानइअ ।
 दृढ़ आदिम बिस्वास, सभ्यता से न दूर हटइअ ।।
 अपनहू के राज - चिन्ह में हए इहे बिस्वास ।
 बिधि-बिधान जीवन-पद्धति में भानु हर पल पास ।।
 हमहू सब एही कारन लांगुल के चिन्ह धरइले ।
 आउर मुखौटा कपि प्रतीक अपना मुँह पर लगबइले ।।
 जाति, प्रकृति आउर संस्कृति के इ स्वतंत्र प्रतिमान ।
 एकरा से होइअ मानब के अलग - अलग पहिचान ।।

बन परबत से जुरल हम्मर सबके जीवन डोर।
 एही से सहजे हो जाइअ तोर फोर झकझोर।।”
 सुन्दर! अति सुन्दर जुक्ति! मुस्काइत कहलन राम।
 एतने में आ गेलन लछुमन पूरा कएले काम।।
 पुछलन राम “सिद्ध हो गेलक कपिपति के सब काम?”
 “हँ प्रभु, गूँज रहल किस्किन्धा में अपने के नाम।।
 भेल बिरोध न तनिको, देखली न हम कतहूँ रोस।
 जन समूह उत्साहित पढ़ली मुँह पर सुख - सन्तोस।।
 राजतिलक के तुरंत बाद कएलन कपिपति सुभ काज।
 बालि सुत अंगद के घोसित कएलन उ जुबराज।।”
 “उत्तम कएलन काम कपिपति हम सुनके खुस भेली।
 कएलन अनुपालन तत्पर हो जे शिक्षा हम देली।।”
 अपने ला सन्देशा कहलन “प्रभु न चिन्ता करथ।
 बरसा रितु के बीते भर मतिधीर प्रतीक्षा करथ।।
 चउमासा के बाद खोज में सबतर दूत पेठाएम।
 धरती के कोना - कोना में सिय के खोज कराएम।।
 जइसे हमरा के अपना के कएलन प्रभु उद्धार।
 तइसे हमहू मित्र धरम से हटम न लखन कुमार।।”
 सुन के राम प्रसन्न तुष्ट संध्या बन्दन ला उठलन।
 हनुमत लछुमन मिल पूजा के उचित बेबस्था कएलन।।
 बिदा मांग गेलन किस्किन्धा पवनपुत्र मतिमान।
 दुन्नो भाई करे लगलन दैनिक क्रिया-बिधान।।
 बीतल रात, सबेरा भेलक, दिन रुक - रुक ढल गेलक।
 ऊहे रात, उहे दिन दुखमय, दूर न चिन्ता भेलक।।
 एक - एक दिन मेघ भरल घसके लागल अति मन्द।
 प्रिय - बिरह से निरमित भेलक रघुबर-जीवन-छन्द।।
 घटा देख के उमरे मन में बिरह-ब्यथा के पीर।
 सीता के सुध बुन्नी बनके झरे नैन से नीर।।
 चातक मोर पपीहा के सुख - दुख से भरल पुकार।
 सून रात में झन - झन करे झिल्ली के झनकार।।
 पुरबइआ झकझोर हिलाबे बन के हरिअर अँचरा।
 जलमय भेलक ताल तलइआ आउर पोखरी डबरा।।

सुखल बन हरिआएल छलकल छुद्र नदी के गगरी।
 गिरि के माथ लपेटलक बादल धूसर करिआ पगरी।।
 सूतल बीज उठा के पपरी तनिका सा अँखुआएल।
 धरा सुहागिन के बज उठलक रुनझुन-रुनझुन पाएल।।
 लोट - लोट बन पसु नेहाए जहाँ - तहाँ भर मोद।
 बन के खुसी बनल हरिआली भरल धरा के गोद।।
 रजनी के करिआ सारी पर भगजोगनी के बुट्टी।
 बैरिन नीन सताबे खातिर करे रह - रह कुट्टी।।
 धरती हरिअर भेल मगर राघब - मुँह न हरिआएल।
 प्रेम पीर ऊ समझइअ जे प्रेम-तीर से घाएल।।
 देख भाई के दुख लछुमन के मन बेकल हो जाए।
 बाकी हुनका सूझ परे न कोई निदान उपाए।।
 हुनको परे इआद उरमिला रहे न मन में चैन।
 उत्तरीय से चुप्पे चापे पोंछथ अप्पन नैन।।
 बाकी भाई के न जाने दथ ऊ अप्पन पीर।
 जिनका मन में चुभल बेढ़ंगा सियाहरन के तीर।।
 सोचथ ओ दिन अगर न मानती हम भाभी के बात।
 आज न भइआ देखे पइतन अइसन करिआ रात।।
 कभी - कभी मन में जागे अइसन भीसन आबेस।
 उठा चाप राबन के कुल के खोज करू निःसेस।।
 सिन्धु उलीचू, परबत फोरू, उलट दीऊ आकास।
 भाई के सुख ला अरपित कर दीऊ अप्पन साँस।।
 लेकिन कुच्छो कर न पाबथ बिबस मलथ उ हाथ।
 हो जाए आबेस सान्त जब ताकथ चुप रघुनाथ।।
 सोँच - समझ के बात अजोध्या के जब कभी चलाबथ।
 ओकरो अन्त ब्यथा में डूबल आखिर लछुमन पाबथ।।
 समझ न पाबथ सुख के दू कन कहमाँ से ले आऊ।
 कोन उपाय करु जे से भइआ के ब्यथा मेटाऊ।।
 धीरे-धीरे लछुमन के चिन्ता आ दुख के बात।
 छिपल न रहलक राघब से सब कुछ हो गेलक ग्यात।।
 भेल गलानि केतना स्वार्थी अपने ब्यथा पहार।
 ध्यान न रखली भाई के जेकरा चाही सुख प्यार।।

हमारा खातिर उ घर छोरलक सुख - सुविधा परिवार।
 सब कुछ रखइत एक बिरह - दुख से भेली लाचार।।
 दोसरे ला तप तेज ग्यान अपना बेरी सब भुलली।
 सीता के खोजे के बदला बइठल दुख में घुलली।।
 सोंचइत - सोंचइत भागे लागल मन से मोह निरासा।
 जागे लागल तेज, बुद्धि, बल जागे लागल आसा।।
 मन के अमृत उमरे लागल तन के आलस भागल।
 बानी में उत्साह रुचि में रितु के सोभा जागल।।
 परिजन चरचा में रस मिललक जंगल मंगल भेलक।
 लछुमन ला उमरल दुलार, हनुमत - सेवा सुख देलक।।
 जागल रुचि जंगल पहार में आ बानर - जीवन में।
 बाली - राबन राजनीति में जन-जन के दुख-सुख में।।
 देख भाओ परिवर्तन हरखित लछुमन आ हनुमान।
 जागल नब उत्साह कि जइसे अरुन किरन के गान।।
 तरह - तरह के फल - फूल जंगल से लगलन लाबे।
 तरह - तरह से रुचि जगा के लगलन तनिक खिआबे।।
 नृत्य - गीत के गोष्ठी लगलन हनुमत रोज लगाबे।
 नायक - प्रतिनायक बन के नित नाटक नया रचाबे।।
 रूप - रंग के धूप छाँह में बीत चलल चउमासा।
 लगिचाए लागल सीता के खोजे के दिन आसा।।
 रोज प्रतीक्षा करथ रघुबर अब बानरपति अएतन।
 आउर सीता के खोजे ला सबतर दूत पेठएतन।।
 बाकी न सुनगुन, न आहट किस्किन्धा से आएल।
 तरप उठल तब हृदय राम के बिरह ब्यथा से घाएल।।
 कहलन लघुमन से भाई भेलक ब्यतीत चउमासा।
 कपिपति सूत रहल जाके कथी रक्खू अब आसा।।
 मतलब निकल गेल ओक्कर अब साइते उ पहिचानत।
 सत्ता मद में अन्धा, हमरा मित्र भला अब मानत।।
 लछुमन कहलन ओक्कर मद हम झार देम रघुनाथ।
 खरचा होएत एक बान उ रहतक बाली साथ।।
 अपने आग्या दीऊ हम तनिका किस्किन्धा जाइले।
 बान्ह पास में ओकरा के बस अपने पास लबइले।।

“हूँ, बाहिए के लइहऽ मारिहऽ मत ओकरा रनधीर।
 अग्नि के साखी रख ओकरा मित्र बनइली बीर।।
 साबधान तू रहिहऽ, सत्रु नगर मान के जइहऽ।
 की मंसा ओक्कर पहिले जाने के कोसिस करिहऽ।।
 आउर अगर लगे कुछ उलटा करे उ सक्ति प्रदर्शन।
 तब आग्यां के मत सोचिहऽ करिहऽ तू सर के बरसन।।”
 “जइसन अपने के इच्छा” कह लछुमन ले सर चाप।
 चललन किस्किन्धा के ओरी धरती गेलक काँप।।
 नगर द्वार पर आके कएलन भीसन धनु टंकार।
 डर से प्रहरी भागल मचलक भारी चीख पुकार।।
 सुनते धनु टंकार बिकल हो चिन्ता से हनुमान।
 सोंचे लगलन आ गेलक अब किस्किन्धा ला काल।।
 बार - बार समझइली कपिपति तनिक न देलन कान।
 राग - रंग में डूब भुलएलन मित्र - धरम के ध्यान।।
 सीता के खोजे ला अब ले भेल न ठोस उपाए।
 इहो न तय कएलन अब ले कइसे खोजल जाए।।
 जाले उ निकलथ ताले चिन्तित अंगद जुबराज।
 दउरल अएलन छोर - छार सब राजपाट के काज।।
 आदर पूर्वक हाथ जोर कहलन “हे राजकुमार!
 किस्किन्धा में स्वागत हए आतिथ्य करू स्वीकार।।
 कहेला क्रोधित हती अपने महाबीर बतलाऊ।
 आग्या दीऊ अपने के सेबा में प्रान चढ़ाऊ।।”
 कहलन लछुमन “दूत राम के बन किस्किन्धा अइली।
 बानरपति लां रामचन्द्र के हम सन्देश लइली।।
 बीत गेल चउमासा हमर भेलन न तनिको काम।
 की मन में हए कपिपति के पुछलन ह रघुबर राम।।
 हम पूछे अइली ह कपिपति सिय के खोज करएतन।
 आ कि राम बान पर चढ़ के बन्धु बालि कन जएतन।।”
 कहलन अंगद “अपने बइठू कपिपति से मिलबइले।
 केतना भेलक प्रगति काम में तुरत बीर बतबइले।।”
 गेलन ओन्ने अंगद एन्ने आ गेलन हनुमान।
 कहलन “महाबली लछुमन अपने बल तेज निधान।।

भेला उपेक्षा राम काज में इ स्पष्ट सचाई।
 बाकी ए में दोस न हए किस्किन्धापति के भाई॥
 सत्ता के मादक रस बन्धु भेद न तनिक करइअ।
 राजा रंक ग्यानी बुरबक के उम्मत सहज करइअ॥
 रहथ ललाएल कपिपति सुख ला जइसे जेठ पिआसल।
 परलन टूट भोग पर जइसे होअथ बहुत उपासल॥
 ए लेल अपने छमा करु उ आ रहलन ह बीर।
 हुनका साथे हम सब चलब जहाँ राम रनबीर॥

ओन्ने अंगद अन्तःपुर जा तुरत समाद पेठएलन।
 राजा से कहऽ क्रोधित रामानुज मीले अएलन॥
 सुन सुग्रीब बोलएलन पुछलन “कहेला लखन कुमार।
 क्रोधित हो किस्किन्धा अएलन हे प्रिय राजकुमार॥”
 “महाराज सौमित्र कोप से नगरी काँप रहल हए।
 जल्दी चल के मिलू न तऽ प्रान जाए के भए हए॥”
 देख बिकलता अंगद के मद भेलक नृप के दूर।
 नसा हिरन हो गेलक जइसे होइअ लुप्त कपूर॥
 कुछ न सुझलक त हरबर में कहलन तारा आगे।
 रूमा के ले के तू चलऽ आ रहली हम पाछे॥
 उ तपसी ब्रम्हचारी नारी देख नमित हो जाएत।
 ओकरा क्रोध आग से बेटा किस्किन्धा बच जाएत॥
 समझ परिस्थिति तारा रूमा अंगद साथे गेलन।
 पाछे - पाछे बस्त्र सम्हारइत बानरपति चल देलन॥
 लछुमन के लग आके सादर तारा जोरलन हाथ।
 कहलन “कइसन हती अपने, कइसन हथ रघुनाथ॥
 भूल चूक कुछ भेलक ह त तपसी छमा मंगइले।
 रक्षा ला अँचरा अपने के आगे बीर ओरइले॥”
 देख नम्र बेहवार सुमित्रासुत कएलन सम्मान।
 नमस्कार कह, खरा होके देलन हुनका मान॥
 तारा कहलन “क्रोध-हेत मालूम हमरा बलबान।
 देबर के ओरी से मंगइत हती जीवन दान॥

सत्ता - सुख सरिता साओन के भारी बेग रखइअ।
 धीरज ग्यान प्रतिग्या नाता ओकरा में बह जाइअ।।
 सत्ता सुख आन्ही, बिबेक ओकरा न रोक पबइअ।
 सुख लोलुप प्राणी दुरबल, तिनका लेखा उर जाइअ।।
 इहे हाल भेल देबर के भेलन उ मदहोस।
 गेलन भूल काम राम के, रहलन न निरदोस।।
 आ रहलन ह, क्रोध त्याग के हुनका के अपनाऊ।
 भला - बुरा जइसन हथ बाकी हुनका मत ठुकराऊ।।
 अपने हती मनस्वी साधु ब्रम्हचारी आ बीर।
 अपने के भ्रातृभक्ति के आगे जग नत सीर।।
 त्यागी अपने सन के मिलतक जे सुख राग भुला के।
 भाई के सेवा ला मारल फिरतक बन में आके।।
 अपने उ अग्नि जे घर आ बन के न जरबइले।
 पूजा के बेदी में जर के खीर हबिस्य पबइले।।”
 एही तरह से मधुर बानी में कके गुनानुबाद।
 तारा क लेलन प्रसन्न लछुमन के बिना बिबाद।।
 देख सान्त क्रोध लछुमन के रबिसुत आगे अएलन।
 हाथ जोर के बिनत भाव से सादर सीस झुकएलन।।
 देखते हुनका लछुमन के ठंढाएल गोस्सा भरकल।
 आँख लाल, कर चाप-बान पर, ओठ छुब्ध हो फरकल।।
 भोगी, पापी आ कृतघ्न कह ओकरा डाँटे लगलन।
 आउर किस्किन्धा के मटिआमेट करे ला कहलन।।
 कहलन “जे गद्दी देलक ओक्कर दुख मूढ़ भुला के।
 कोन कोना में तू रहबऽ ए दुनिया के जाके?
 काम भोग के नीती से चलतक कहिआ ले राज।
 पापी तोहरा कारन गिरतक बानर कुल पर गाज।।
 भइआ के किरपा से बच्चल हतऽ मूढ़ कपीस।
 न त लछुमन के सर अब तक काट गिरइतक सीस।।”
 देख क्रोध लछुमन के रबिसुत थर - थर काँपे लगलन।
 हम कृतघ्न न, साँच कहइले, किरिआ खाए लगलन।।
 अभी चलइले अपने के संग लेके हम उपहार।
 बतलाएम राघव के हम किरपा के हती भिखार।।

उ दयालु करुना के सागर करतन अभय प्रदान।
 जइसे उ कहतन हम करम जामिन हथ हनुमान।।
 तारा हनुमत अंगद के कहे पर लखन कुमार।
 हो गेलन कुछ सान्त आउर कपि चललन ले उपहार।।
 आगे - आगे लछुमन पाछे रबिसुत आ हनुमान।
 हुनका पाछे जामबन्त अंगद सब कपि बलबान।।
 अएलन रघुबर के सेवा में कहइत "त्राहि माम।
 पद पर गिरलन आउर कहलन "रक्षा करु हे राम।।"
 सील समुन्दर महाबली राघब रघुकुल अबतंस।
 लखन - क्रोध से रक्षा करु, बचे जे बानर बंस।।"
 देख दसा रघुबीर कपि के करुना कर मुस्कएलन।
 देके दान अभय के अपना पँजरा में बइठएलन।।
 अभय दान पाके मिटलक सब संका आ संताप।
 हाथ जोर के कहलन कपिबर हे राघब निस्पाप।।
 जदपि इहमाँ से दक्खिन में हए राबन के लंका।
 बाकी सीता ओतहीं मिलतन ए में हमरा संका।।
 राबन छली प्रबंचक दोसरो जग्गह छिपा सकइअ।
 धोखा देबे ला दक्खिन जा फेन घूम सकइअ।।
 ए लेल हम्मर मत हए कि कपि दल जाए सब ओर।
 देखे कहमाँ सीता के रखले हए पापी चोर।।
 भेज समाद बोलइली ह हम सब बानर दल बीर।
 हमरा हए अनुभव केन्ने केकरा भेजम रनधीर।।
 पूरब बिनत आ सतबलि उत्तर, पच्छिम बीर सुसेन।
 लेके अपना साथे जएतन मन लाइक कपि सेन।।
 दक्खिन ओरी जएतन अंगद के साथे हनुमान।
 देतन साथ गबाक्ष बीर आ जामबन्त मतिमान।।
 आउरो साथे ले जाए ला जेकरा के उ चहतन।
 ऊहे कपि सब हुनका साथे दक्खिन ओरी जएतन।।
 जाँचल, परखल, बल - बुद्धि में इ सब हतन अगाध।
 जल, थल, गगन, पहार मरु में हिनकर गति अबाध।।
 हमरा हए बिस्वास कि इ सब पता सिया के लएतन।
 रोके आएत काल त ओकरो से डट के फरिअएतन।।

सुन के राम प्रसन्न धन्न कहलन "बन्धु कपिराज।
 हम भेली सन्तुष्ट कि हमर होएत निम्बित काज।।"
 तब सुग्रीव एक - एक सबसे परिचय करबएलन।
 आउर नाम धाम गुन सक्ति के मात्रा बतलएलन।।
 सबके दे आसीस राम सबसे मिलके बतिअएलन।
 कइसन रूप - रंग सीता के हुनका के समझएलन।।
 कहलन "राम दूत बन के अपने सब सबतर जाऊ।
 पता लगे त आ के सीधे हमरा के बतलाऊ।।"
 सब खुस आ उत्साहित होके कएलन विनत प्रनाम।
 राघव कहलन "सकुसल लौटऽ आउर बनावऽ काम।।"
 सब कोई के गेला पर कपिपति से कहलन राम।
 अपनहू जाके किस्किन्धा बन्धु करू बिस्राम।।
 होएत कोनो काम त हम बन्धु लछुमन के भेजम।
 अपनहू कपिदल के लौटे पर सन्देशा भेजम।।"
 सब कोई के गेला पर जाए लगलन हनुमान।
 कहलन राम ठहर जा तनिका अंजनी सुत मतिमान।।
 रुक गेलन त हुनका से कहलन सीतापति राम।
 महाबली सपना एगो राते देखली अभिराम।।
 अएलन आसुतोस औढ़रदानी भोला त्रिपुरारी।
 हुनका साथे - साथे अएलन गिरिजा सती सुनारी।।
 मुख प्रसन्न, मुद्रा अभय, आ देइत सुभ आसीस।
 जगत पितर के प्रति झुकइली हम आदर से सीस।।
 लागल कहइत हतन "सीता के खोजतन हनुमान।
 चिन्ता न करऽ जीता हथ सीता, हे मतिमान।।"
 ए लेल तू हमर अँउठी लेले जा साथ चिन्हासी।
 एही से सीता के आगे बनबऽ तू बिस्वासी।।
 तोरा सुबिधा ला सीता के बतबइलओ पहिचान।
 खोजे में आसानी होतओ पवनपुत्र हनुमान।।
 देवी अइसन रूप गाल पर तिल के छोट निसान।
 पातर ठोढ़, नासिका उन्नत, चेहरा चान्द समान।।
 सिखरदसन आ कमलनयन, सुभ लच्छन कोमल अंग।
 पातर छरहर देह मनोहर सोना अइसन रंग।।

अनुसूया के देल बस्त्र तन पर होएतक अमलीन।
 बाकी बिरह बेदना तन के कएले होएतक दीन।।
 अब लगइत होएतक पातर तन दूजचन्द्र के लेख।
 चित्र मनोहर बच्चल होएत रंगहीन अब रेख।।
 तोरा की बतलाऊ हनुमत तू ग्यानी मतिमान।
 एतने से लेबऽ तू सहजे सीता के पहिचान।।
 ओकरा देख हृदय में तामस भाओ न कभी उठइअ।
 कुटिल दुराचारी सेहो छन भर ला नत हो जाइअ।।
 सात्विकता के सर में ऊगल स्वर्न कमल अभिराम।
 प्रेमलता सुन्दर तन धएले ओकरे सीता नाम।।
 मिलनसेतु, जा, रहत प्रतीक्षा, जथासीघ्र तू अइहऽ।
 बिरही राम बिरहिनी सीता संकर - सुबन मिलइहऽ।।
 ले अँउठी रघुनाथ से चललन जब मतिमान।
 राम गाल पर ढलकल पएलन दू मोती हनुमान।।
 दुन्नो मोती दीपसिखा सन हनुमत मन में बरलक।
 सीता के खोजे ला इहे लोर प्रेरना बनलक।।



❀ ॐ नमः शिवाय ❀

अम्बेसन कांड

रतनखान रसबन्ती ऊर्बि रसा मही सुखधाम।
 धरती माता प्रियबी देवी धरा भूमि सुभ नाम।।
 तू माता, हम बेटा तोहर नित उठ गोर लगइले।
 तोरे सेबा, तोरे पूजा, तोरे ध्यान धरइले।।
 जंगल नदी पहार मरु सागर सब तोहरे अंग।
 गोंएरा उस्सर कोमल बज्जर तरह-तरह के रंग।।
 कीट पतंग पसु पंछी नर जलचर जे जीबान।
 सब तोरे ममता से उपजल सब तोरे सन्तान।।
 पता न कइसे एगो होइअ देओता कृपानिधान।
 दोसर उलटा हो जाइअ तन भोगी पसु समान।।
 एगो पैदा होके माँ बढबइअ तोहर भार।
 दोसर पैदा होके तोहर हर लेइअ कुछ भार।।
 तोरे बेटी के हरलक ह तोरे एगो पुत्र।
 ओकरा खोजे ला बतलाबऽ माई कोनो सूत्र।।
 तोरे पर सब आसा अँटकल तोरे पर बिस्वास।
 कोनो कपिदल के पहुँचा द माई सिआ के पास।।

चललक कपिदल अम्बेसन में ले मन में उत्साह।
 गाँओ नगर अगम बन परबत गहन गुफा के राह।।
 कन्द मूल फल खाइत बढलक तोरइत सब अबरोध।
 ध्यान काम पर, भुतला गेलक बीर समय के बोध।।
 पूरब पच्छिम उत्तर से आखिर थक के, बउआ के।
 सतबलि बिनत सुसेन लौट अएलन, न सीता पाके।।
 बाकी दक्खिन दल न लौटल बीतल पूरा मास।
 ओही पर केन्द्रित रह गेलक सब कोई के आस।।
 एन्ने लंघइत नही परबत खोजइत बन घनघोर।
 भारी कस्ट उठबहत पहुँचल कपिदल सागर छोर।।

देख बिसाल समुन्दर कपिदल के बुद्धि चकराएल।
 अब आगे कहमों जाऊ कुछ समझ न केकरो आएल।।
 सोंचे लगलन सबतर खोजली मिलल न कतहूँ लंका।
 परी-कथा के देस कि सौँचो, मन में भेलक संका।।
 जब कोनो जुक्ति न सूझल कपिदल के मन हारल।
 गेल बइठ ओतहीं रेती पर थहराएल आ थाकल।।
 पूछे लगलन अंगद बतलाबऽ सब राय बिचार।
 सीता के खोजे ला भाई होए कोन उपचार।।
 केऊ कहलक लौट चलऽ खोजनाई हए बेकार।
 केऊ कहलक ग्यात न धरती कहमों सागर पार।।
 अंगद कहलन “खाली हाथे किस्किन्धा जदि जाएम।
 बीत गेल हए अबधी निश्चित प्राण दंड अब पाएम।।
 ए से अच्छा हए एतहीं भुक्खे सब प्राण गमाऊ।
 जब दुन्नो ओरी मिरतु त कहेला गोर थकाऊ।।”
 सुनके चुप सब कोई भेलक, छा गेलक सन्नाटा।
 सेस रहल उम्मत सागर के बिकट ज्वार आ भाटा।।
 “अरे बाह! एतना भोजन एक्के बेर! जागल भाग।
 धन्न बिधाता मरु में लागल फूलल फरल बाग।।”
 परल कान में स्वर त कपिदल तकलक सीस उठा के।
 भेल चकित मानब तनधारी गीध भेआनक पाके।।
 गदा उठा के साबधान सब हो गेलन तत्काल।
 सोंचे लगलन कहँमा से इ आएल दोसर काल।।
 पुछलन अंगद “अरे कोन तू मायावी नरभक्षी।
 हमरा के तू कथी समझले कोम्हरा - कदुआ पक्षी!
 अरे हाथ में गदा प्राण में सक्ति जाले हमरा।
 ताले हमरा सब के छुए के ताकत हए केकरा।।
 रामकाज ला कएले हती हम सब तन के दान।
 बीर जटायु लेखा लर के देम समर में प्राण।।
 नाम जटायु के सुन पुछलक गीध चौंक के बात।
 तू सब के? की भेल जटायु के? बतलाबऽ बात।।
 अंगद कहलन “राम लखन दसरथ सुत कोसलबासी।
 पिता बचन पूरा करे ला बनलन दंडक बासी।।

पतनी आउर अनुज के साथे सुख से पंचवटी में।
 रहइत रहलन र धनुधारी तपसी पर्नकुटी में।।
 एक दिबस छल से हुनका के भेज कुटी से दूर।
 हुनका पतनी के हर लेलक रावन राक्षस क्रूर।।
 दउरल बीर जटायु सुनके सिय के चीख - पुकार।
 चोंच आउर पंजा से कएलक डट के प्रबल प्रहार।।
 रावन के घाएल कर देलक चोंच आउर चंगुल से।
 बाकी बचा न पएलक सीता के ओकरा चंगुल से।।
 हुनकर दुन्नो हाथ पाँख कटलक पापी लंकेस।
 दम तोरे ला छोरे चलल उ राक्षस अपना देस।।
 खोजइत अएलन राम लखन त गिनइत अन्तिम साँस।
 बीर जटायु के उ पएलन भेलन बिकल उदास।।
 टुटइत स्वर में हुनका के सब बात गीध बतलएलन।
 आउर छोरलन प्रान, न पीरा जादे उ सह पएलन।।
 पिता समान मान राम कएलन हुनकर संस्कार।
 पानी पिंडा देलन कएलन वेद बिहित आचार।।
 ओकरा बाद सिया के खोजइत उ किस्किन्धा अएलन।
 बाली के भाई से मैत्री पबन पुत्र करबएलन।।
 मार बाली के, देलन रबिसुत के रघुनायक राज।
 आउर हम अंगद बनली किस्किन्धा के जुबराज।।
 इहे हम्मर कथा सिया के खोजइत इहमाँ अइली।
 बाकी अबले न लंका न सीता के हम पइली।।”
 सुन के कथा दुखी सम्पाती कहलक “बानर भाई।
 हम सम्पाती, रहे जटायु हमरे छोटका भाई।।
 पर उपकारी बीर काम भारी जस के उ कएलक।
 अबला के रक्षा में लरइत अप्पन प्रान गमएलक।।
 हे भाई तू पाबऽ मुक्ति इच्छा इहे करइले।
 दू बुन्नी आँसू तोरा तरपन में हम चढ़बइले।।”
 कहइत भेलक मौन गीध बढ़ गेलक दुख के भार।
 ओकरा दुख से दुखी कपिदल, भेलक समय पहार।।
 बहुत देर तक मौन रहल आखिर सम्पाती धीर।
 कहलक हमरा पता सिया के, हे बानरदल बीर।।

एही सागर में बससल हए सौ जोजन पर लंका।
 ओक्कर राजा राक्षस राबन उ भारी रन बंका।।
 सोना के नगरी लंका सागर - सीपी के मोती।
 ओतही ले गेलक ह राबन राम - नैन के जोती।।
 दुर्गम राह, महाबली राबन, सेना अति बलवान।
 कइसे जा के लएबऽ सीता के तू सब भतिमान?
 हम दुरबल आ पंखहीन कुछ मदद करे में अक्षम।
 पता न तू सब ए कारज ला होएबऽ केतना सक्षम।।
 सीता के पाबे के हओ त साहस बीर जुटाबऽ।
 सागर से लंका जाए ला कोनो राह बनाबऽ।।
 हमर हए आसीस अगर कर लेबऽ तू सब काम।
 अजर अमर हो जतओ भाई जग में तोहर नाम।।
 एतना कहइत सम्पाती चल देलक परबत ओरी।
 कपिल बिनइत रह गेलक मन में चिन्ता के डोरी।।
 बालिपुत्र कहलन सादर "हे जामबन्त भतिमान।
 राह बताऊ अब आगे के, अपने बुद्धि - निधान।।
 टपक बीच में एगो बानर कहलक "हे जुबराज।
 लागल पता, सिद्ध हो गेलक हमर सब के काज।।
 अब की, बापस लौट चलू आ चलके खुसी मनाऊ।
 पता सिआ के मिल गेलक चल राघव के बतलाऊ।।"
 अंगद आँख तरेरलन त उ छन में भेलक मौन।
 हनुमत से कहलन "बजरंगी तूँहूँ तोरऽ मौन।।
 तोरे दुन्नो पर टिक्कल हए हमर सब्भे आस।
 तोरे बुद्धि से पथ निकलत हमरा हए बिसवास।।
 पवन पुत्र कहलन "आरसी पर हमरा न बिस्वास।
 बन्धु कर में कंगन चाही पहिले अपना पास।।
 आँख मून के सुनल बात पर जे बिस्वास करइअ।
 कतहूँ न कतहूँ जीवन में निश्चित धोखा खाइअ।।
 बिना आँख से देखले सिय के जाएम रघुबर पास।
 उ कहतन से कहबे करतन लोग करत उपहास।।
 लंका गेले बिना न होएत गीध - बचन परमान।
 देखले बिना न होएत सीता के दुख के अनुमान।।

की मालूम जीता हतन कि राबन मारलक हुनका।
 कइसे जानम कि लंका में कहमाँ रखले हुनका।।
 ए लेल लंका गेले बिना न हए कोनो उपचार।
 सागर लांघ चलू लंका अब छोरू सेस बिचार।।
 जामबन्त कहलन "हे हनुमत उचित कथन हए तोहर।
 लेकिन उत्तर सेस कि गाएत के संकट में सोहर।।
 पहिले निश्चित करऽ जाएत के सिन्धु के पार।
 अंगद नायक हुनका भेजल नीति बिरुद्ध बिचार।।
 हम भेली बलहीन बूढ़ सौ जोजन लांघ न पाएम।
 लांघिओ गेली त लंका से लौट न वापस आएम।।
 दोसर केऊ बीर न सक्षम लांघ सके सौ जोजन।
 बिच्चे में गिर के बन जाएत उ जलचर के भोजन।।
 एक मात्र तूही सक्षम तू अप्पन तेज जगाबऽ।
 लांघऽ सागर जा लंका सीता के पता लगाबऽ।।

लाल देह लाली के स्वामी
 हे केसरी नन्दन हनुमान।
 सिद्ध पुरुष वानी के साधक
 हे बजरंगबली मतिमान।।
 कौतुकप्रिय दुखहरता साथी
 बलबुद्धि करुणा के खान।
 अंजनीनन्दन संकटमोचन
 जागऽ-जागऽ हे बलवान।।
 रुद्र अंस मारुतसुत पावन
 तेजपुंज तू सीलनिधान।
 सत्रुनासक विपतिबिदारक
 मंगलमूरत मित्र महान।।
 सीता के जीवन दुख - भींजल
 डूबल जीवन के दिनमान।
 रामचन्द्र के जीवन ठहरल
 तनिक न दिसा-दसा के ग्यान।।
 सुरुज सिस्य हे ज्योति पुरुष तू,
 अप्पन जोत जगाबऽ आज।

दुख - सागर से राम - शिया के
 बन्धु बली निकालऽ आज ।।
 कहेला बल बिसरएले हतऽ
 कहेला भूतलएले सब ग्यान ।
 कहेला तोहर पानी जम के
 आज बनल हए हिम हनुमान ।।
 इआद करऽ अपना पौरुष के
 सिद्ध करऽ रघुबर के काम ।
 तोहरे पर अँटकल अब आसा
 तोहरे पर आस्रित परिनाम ।।
 चमत्कार देखलाबऽ अप्पन
 जस के ध्वजा उरा द बीर ।
 बानर जाति के पौरुस के
 गाथा अमर बना द बीर ।।

जामबन्त के बचन मन्त्र सन, परलक तुरत प्रभाओ ।
 महाबली के पौरुस जागल आएल मन में ताओ ।।
 मन के सब उत्साह आँख में लाली बन के उभरल ।
 रोम - रोम के तेज सिमट के चिनगी लेखा छिटकल ।
 एकाएक खरा हो गेलन भरलन बिकट हुँकार ।
 जइसे नभ से टूट अचानक बिजली गिरे पहार ।।
 एक्के बेरी कुदुक गिरि के चोटी पर चढ़ गेलन ।
 आउर सिन्धु लांघे के संकल्प प्राण में लेलन ।।
 खींच प्राण के केन्द्रित कएलन भारहीन तन भेल ।
 कूदे के पहिले हुनकर मुद्रा भीसन हो गेल ।।
 गरूर समान झपट्टा मारइत पबनपुत्र हनुमान ।
 एतना तेजी से उरलन जइसे भीसन तूफान ।।
 हाथ गोर के धक्का से कुछ पेंर पताई टूटल ।
 आउर परबत के कुछ टुकरी एन्ने ओन्ने फूटल ।।
 चल गेलन हनुमान कि जइसे जाइअ नभ राकेट ।
 अथवा बाज उरइअ नभ में मारे ला आखेट ।।
 कपिदल जाइत देखलक जइसे जाइअ नभ में तारा ।
 धीरे - धीरे दूर भेल परबत आ सिन्धु किनारा ।।

जोजन पर जोजन तए करइत बड़ गेलन हनुमान।
लागे नभ में जा रहलक ह कोनो जीबित यान।।
धीरे-धीरे सिन्धु गोद में लंका परल देखाई।
जइसे अपना बच्चा के गोदी में लेले माई।।
दृष्टि से अँटकारलन हनुमत लंका के बिस्तार।
पेंर पताई हरिआली आ नदी नगर पहार।।
देखलन सोन सिखर से फुटइत कोमल पीत प्रकास।
किरन डोर बन्हले बन्धन में धरती आ आकास।।
दृढ़ गढ़ रचना देख चकित हो गेलन पबन कुमार।
सिल्प कला से झँकइत पएलन सोभा के संसार।।
जगह देख एकान्त पबनसुत धीरे उहाँ उतरलन।
आगे के करनी सोंचइत सुस्ताए तनिका लगलन।।
सोंच समझ के कएलन सँझिआ तक ओतहीं बिस्राम।
राते में उ उचित समझलन अन्बेसन के काम।।
आखिर दिन बीतल आ फइलल नभ में चन्द्रप्रकास।
साबधान हनुमान बनएलन असुर रूप बिन्यास।।
तिरस्करी बिद्या के बल पर अप्पन रूप छिपबइत।
चललन घुसे नगर में हनुमत एन्ने ओन्ने तकइत।।
सहसा पहुँचा लंकिनी पुछलक अरे कोन तू चोर।
हमरा अछइत कइसे घुसबे लंका में बरजोर।।
ठहर अभी तोहरा के देइले हम चोरी के दंड।”
एतना कहइत बान्हेला उ फेंकलक पास प्रचंड।।
बाकी ओकरा पहिलहीं बिद्युत गति से हनुमान।
एक्के घुस्सा में हर लेलन ओक्कर कोमल प्रान।।
ओकरा बाद चपल गति से रक्षक के नजर बचा के।
घुस गेलन हनुमान नगर में कौसल तनिक लगा के।।
सुन्दर नगर राजपथ उत्तम उँचगर भब्य मकान।
जगह - जगह पर प्रहरी तत्पर कार्जदक्ष बलबान।।
कहँऊ देखलन बिकइत मदिरा कहँऊ भूँजल माँस।
सबतर देखलन नर नारी में मुक्त मिलन अभ्यास।।
कहँऊ मदिरा पीले उम्मत जन के चीख पुकार।
कहँऊ नारी सजले धजले कएले बहुत सिंगार।।

भौतिकवादी जीवन दरसन के सबतर अहसास।
 गरजन तरजन दंभनाद से भरल भेआनक हास।।
 कहँउ बज्रांकुस अंकित आ कहँऊ कमल के फूल।
 कलापूर्ण आ भव्य बनाबट राजभवन सुखमूल।।
 स्नेष्ठ सिल्प के भरल नमूना चित्रित संख मृनाल।
 घर - घर पर अंकित संभु के प्रतिमा भव्य बिसाल।।
 जहाँ तहाँ आपान गोस्ठी आ गीत नृत्य के रंग।
 चमक दमक बैभव के मेला मद से बिह्वल ढंग।।
 अबइत जाइत जन के पीछे उ भीतर चल गेलन।
 भवन - भवन में झाँक - झाँक सीता के खोजे लगलन।।
 क्रीराघर, उद्यान, गली न छोरलन कोई ठेकान।
 बाकी नारी सीता अइसन पएलन न हनुमान।।
 एगो भव्य भवन में देखलन राजपुरुष बलबान।
 स्याम रंग बिकराल मोछ आ चेहरा बाघ समान।।
 गरदन में रुद्राक्ष मनोहर मूल्यवान परिधान।
 प्रतिमा सन दासी सब लागल सेवा में गतिमान।।
 ओकरा से बतिआइत एगो नारी रति के लेखा।
 दुन्नो के जोरी जइसे बादल में बिजली रेखा।।
 साइत ईहे राबन हए हनुमत कएलन अनुमान।
 बाकी नारी कोन? प्रौढ़ बय, सुन्दरता के खान।।
 रघुबर बरनित सिआ छबि से मेल न एक्कर खाइअ।
 उमिरो से सीता लेखा अनुमान न तनिको होइअ।।
 मुँह पर दुख के छाँह न तनिको न जंगल के धूप।
 मातापन के कोमलता घेरले हए एक्कर रूप।।
 हो न सकइअ इ सीता हनुमत निस्कर्स निकाललन।
 आउर दोसर छन उहमाँ से उ बाहर चल अएलन।।
 एही तरह से खोज ढूँढ़ में अधरतिआ हो आएल।
 धीरे-धीरे लंका नगरी सूते ला अऊँघाएल।।
 पान गोस्ठी दउरी दोकान सब होए लागल बन्द।
 राजमार्ग के दीपक सब के जोती भेलक मन्द।।
 धीरे-धीरे मौन भेल सब नृत्य गीत के साज।
 प्रहरी सब के गूँजे लागल रह-रह के आबाज।।

एक तरफ़ एकान्त देख हनुमन ओनही चल गेलन।
 देख सघन एगो तरु ओही पर धीरे चढ़ गेलन।।
 असथिर चित होके उ लगलन करे गहन विचार।
 सीता के खोजे ला करू कोन उचित उपचार।।
 पता न कोन गुफा में पापी बंचक हुनका रखलक।
 जीतो हथ कि मार अधरमी अतल सिन्धु में फेंकलक।।
 गलत भेल खोजे के पद्धति निकलल न परिनाम।
 अब जनता के बातचीत में ढूँढ़म सीता नाम।।
 साइत कोनो नर - नारी सीता के बात चलाबे।
 आऊर छीपे के जगह के कोनो नाम बताबे।।
 इहे सब सोंचे में धीरे - धीरे भेलक भोर।
 चिरई चुरमुन्नी सब जागल बढ़लक सबतर सोर।।
 हनुमत उतर उहाँ से चुपे चललन पनघट ओर।
 मन्द - मन्द अबइत जहमाँ से नर - नारी के सोर।।
 केऊ घइला लेले जाइत रखले अपना माथ।
 केऊ लोटा धोती दतुअन लेले अपना हाथ।।
 जाके पनघट लग छिप गेलन एक तरफ़ हनुमान।
 आउर देलन पनघट के बतरस पर अप्पन कान।।
 सुरुज के धाही से फइलल चारो तरफ़ प्रकास।
 चान्द कुमुद मुरझाएल फूटल कमल कुसुम के हास।।
 धीरे - धीरे पनघट पर के भीर लगल पतराए।
 घइला भर - भर राक्षस ललना लगलक घरे जाए।।
 एकाएक कान में हुनका परल सिआ के नाम।
 दूगो ललना बतिआइत ले ले के हुनकर नाम।।
 एगो कहइत दोसरा से "सीता नारी अनमोल।
 कोनो बल से लंकापति न पएलक ओकरा तोल।।
 कस्ट सहइअ रोइअ बाकी तनिक न मन डोलबइअ।
 छोर राम के नाम न कुच्छो सूने लेल चहइअ।।
 हटा महल से प्रमदा बन में रखले हए लंकेस।
 तइओ अबले मिलल न ओकरा कोनो लाभ बिसेस।।
 जाइअ रोज डेरा धमका के सीता के मनबइअ।
 बाकी ओ सतबन्ती के आगे न तनिक चलइअ।।

हरा - हरा के केतना नारी ए लंका में आएल।
 केऊ मर्माहत केऊ चिन्ता पीरा से घाएल।।
 बाकी धीरे - धीरे टूटल सबके मन के नेम।
 हार दार के कएलक सब्भे लंकापति से प्रेम।।
 बाकी सीता सबसे अल्लग अद्भुत एक्कर छमता।
 एकरा सन होएतक न दुनिया में नारी पतिबरता।।”
 हनुमत हरखित सोंचे लगलन बनलक आधा काम।
 बाकी कहमाँ हए प्रमदा बन पूछू कइसे ठाम।।
 अच्छा, बात न कोनो, हम्मर पबन पुत्र जदि नाम।
 त निश्चित खोजम सीता के रहथ कोनो ठाम।।
 एतना भेलक ग्यात कि सीता जीता हथ लंका में।
 आउर दुखमय जीवन हुनकर डूबल हए चिन्ता में।।
 प्रमदा बन हए नाम त निश्चित उपवन कोनो होएतक।
 आउर नगरी से बाहर उ जग्गह निश्चित होएतक।।
 निकल इहाँ से बाहर सब उपवन देखे के चाही।
 आउर ओ में कोन प्रमद बन इ जाने के चाही।।
 इहे सब सोंचइत हनुमत कर पार नगर के द्वार।
 चल देलन डूबल अपने में करइत बिबिध विचार।।
 अनजाने अपना के एगो सुन्दर पथ पर पएलन।
 जेकरा दुन्नो ओरी तरु के पाँत मनोहर पएलन।।
 हो गेलक पथ सेस त उहमाँ पएलन पबन कुमार।
 प्रहरी से रक्षित सुन्दर एगो उपवन के द्वार।।
 एक तरफ़ जा सहजे फनलन उ उपवन के घेरा।
 भीतर जाए पर उ पएलन रितु बसंत के डेरा।।
 जेन्ने दृष्टि उठाबथ सोभा बान्हे हुनकर प्रान।
 छन्द - बन्ध में फूटे चाहथ रह - रह कबि हनुमान।।
 छन भर ला सब सोंच फिकिर हुनका मनके भुतलाएल।
 प्रकृति नटी के सात्विक सोभा बहुत - बहुत मन भाएल।।
 एतने में सुन परलक हुनका रथ के घर - घर नाद।
 ओकरा पाछे साज - बाज के कोमल मधुर निनाद।।
 देखे लगलन उत्सुकता से रथ पर कोन अवइअ।
 आउर ए उपवन में आके कहमाँ कथी करइअ।।

आगे बढ़ के रथ रुकलक उतरल राक्षस बलबान।
 ऊहे जेकरा राजकक्ष में देखलन र हनुमान।।
 बरा जोर से प्रहरी सब ओक्कर जयकार मनएलक।
 "जगत बिजेता लंकापति" कह के अभिबादन कएलक।।
 इहे हए राबन हनुमत के मन भेलक विस्वास।
 बाकी इहमाँ उपवन में इ अएलक केकरा पास।।
 रक्षक दल रुक गेलक राबन बढ़ल अकेला आगे।
 पेंर - पेंर तर छिपइत हनुमत चललन ओकरा पाछे।।
 कुछ दूरी पर जाके देखलन तरु असोक छतनार।
 चारो तरफ चबुतरा बान्हल लगल फूल के झार।।
 तरु के निच्चा बइठल नारी छीन कला ससि लेखा।
 मन मारले चिन्ता में डूबल मुँह पर दुख के रेखा।।
 आसपास राक्षसनी प्रहरी लेले कर में खंग।
 पहरा में तत्पर, चुस्ती से दप - दप सबके अंग।।
 पहुँच उहाँ रुक गेलक राबन तकलक नारी ओर।
 'महाराज के जय' कह प्रहरी हटलक दोसर ओर।।
 नारी के सम्बोधित करइत कहलक हँस लंकेस।
 "सीता देबी हमरा ओरी ताकऽ तनिक बिसेस।।
 तोहर रूप चान सन सुन्दर जग के लेल अनूप।
 तोरा ला तरसइअ जग में बरका - बरका भूप।।
 हम राबन राक्षस के राजा सुर गन्धर्व बिजेता।
 हमरा आगे तेजहीन सब महाबली जगजेता।।
 नर बानर रिंसि मुनि तपस्वी डर से सदा कँपइअ।
 हए कुबेर आ बरुन कथी सुरराजो त्रास मानइअ।।
 सोना के नगरी के मालिक धन के कोई न थाह।
 हम चाही त बनबा दी सोना - चानी के राह।।
 रत्नाकर डर से उगलइअ रोज रतन के ढेरी।
 प्राण सूख जाइअ दुनिया के सुन हम्मर रनभेरी।।
 महाबली सुत इन्द्रजीत आ कुम्भकरन सन भाई।
 केकरा में साहस हमरा से ठाने बैर लराई।।
 हमरा बल के दसो दिसा में डंका आज बजइअ।
 अजर अमर हम हमरा भय से मिरतु रोज मरइअ।।

हम बेदग्य, सास्त्र के पंडित उत्तम कुल आ गोत्र।
 हम कवि, रचना अमर जगत में 'सिब तांडव स्तोत्र'।।
 हम द्रष्टा पंडित बलसाली तू अति सुन्दर नारी।
 एगो छन्द - सुमन नित अरपित तोहरा पर सुकुमारी।।
 तोहर रूप सिआ हमरा ला सिब के मंतर साबर।
 तोरा रूप - सील पर हम्मर सौ - सौ प्रान निछाबर।।
 हम ब्रम्हा के किरपाभाजन त्रिपुरारी के भक्त।
 हम प्रसन्न कइली हुनका के चढ़ा सीस आ रक्त।।
 तू बन जा पटरानी हम्मर सीता जनक किसोरी।
 निस्वित मानऽ हम तू लागब हरि - लछमी के जोरी।।
 बल प्रजोग से छन में तोरा अप्पन बना सकइले।
 बाकी प्रेम आउर पूजा से जीते लेल चहइले।।
 एही से एक बार फेर अनुरोध करे अइली ह।
 हृदय - सुमन तोरा पूजा ला अँजुरी में लइली ह।।
 हे भामिनी मानिनि तू छोरऽ मोह राम के ममता।
 उ तपसी भिखमंगा कथी करतक हम्मर समता।।
 बहुत बेर समझइली तोरा तू न मानलऽ बात।
 बाकी क्रोध न कइली कबहीं मान त्रिया के जात।।
 अन्तिम बेर कहे अइली ह सुन्दरी हठ के त्यागऽ।
 दिग्बिजई राबन जाचक हए एकरा मत ठुकराबऽ।।
 नीचे मुरी कएले सीता कहलन "सुनऽ लंकेस।
 बदलत बात न हम्मर चाहे कतनो मिलत कलेस।।
 ए हिरदय में छोर राम के दोसर कभी न बसतक।
 हमरा हुनका से अल्लग जमराजे एगो करतक।।
 दुनिया में कदली फल राबन एक्के बेर फरइअ।
 मतबन्ती तिरिआ सिर सेनुर एक्के बेर चढ़इअ।।
 तोरे मुँह से तोहर गाथा सुन के भेली धन्न।
 तोहरा से बलबान न दुनिया में हम देखली अन्न।।
 ग्यात भेल तोरा से कि चोरी बलबान करइअ।
 जगत बिजेता परनारी के छल से हरन करइअ।।
 साधु भेस अकेला नारी, जन से हीन असथान।
 तोहरा छोर हरन में सक्षम के दोसर बलबान।।

अरे मूढ़ हम सिंहप्रिया तू लोलुप चोर सिआर।
 पापी अन्याई तनभोगी तोहरा हए धिक्कार।।
 तू की जनबे प्रेम कथी, की होइअ प्राण समरपन।
 पतिव्रता के महिमा कथी, की आत्मा के अरपन।
 कोन तार नारी के उर में नेह राग बजबइअ।
 एक जनम के बन्धन कइसे जनम - जनम के होइअ।।
 तू की जाने गेले कथी नारी के सम्मान।
 प्रेम दया से कहिआ भेलक पत्थर के पहचान।।
 अरे भिखारी तू की जनबे कथी होइअ दान।
 गीधो तोरा से उत्तम जे देलक पर ला प्राण।।
 बरा घमंड तोरा बैभव के त सुनले तू बात।
 लंका से लमहर गद्दी पर रघुबर मारलन लात।।
 सुख भोगे के इच्छा रहइत कभी न बन में अइती।
 बइठ अजोध्या में रानी बन बहुत राजसुख पइती।।
 मुट्ठी भर के राज आउर मुट्ठी भर सोना चानी।
 एतने में इतराएल एतना अरे छुद्र तू प्राणी।।
 अरे अचारहीन के पाबन कर न सकइअ बेद।
 उत्तम आउर अधम में होइअ आचारे से भेद।।
 अपना जस पर अपने हाथे तू जे करिखा पोतले।
 मिलत न तोहर उपमा पापी दुनिया भर में खोजले।।
 तोहरा जीए के इच्छा त पहुँचा दे प्रभु पास।
 न त कुल परिवार सहित निश्चित हए तोहर नास।।
 अग्निबान जब गिरत राम के लंका होएत राख।
 सर्वनास होएले पर पापी खुलतक तोहर आँख।।”
 सुन के गोस्सा से थर - थर कँपइत कहलक लंकेस।
 “मूरख तोहरा प्यार करइले तू देइछे उपदेस।।
 लिख असोक बन में आँसू से अब तू विरह कहानी।
 राम - राम रट ले तू कुछ दिन अरे अभागल रानी।।
 तोरा देइले एक माह के समय मात्र नादान।
 एतना दिन में अप्पन नियति ले मूरख पहचान।।
 ओकरा बाद बरन न करबे त तोहरा के मारम।
 आउर जलचर के भोजन ला हम सागर में डालम।।

रहत बाँस न बाजत बँसुली तपसी कथी पएतक।
 आएबो करतक इहमाँ ले त हाथ डोलएले जएतक।।”
 एतना कहइत फुँफकारइत लंकेस पटकलक गोर।
 बिफल मनोरथ चल देलक उ क्रोधित रथ के ओर।।
 छिप्पल हनुमत गोस्सा से बेकल आ थर - थर गात।
 चाहथ परगट हो के मारू राबन के दू लात।।
 इच्छा होए उछल उठा के फेंक दीऊ सागर में।
 एकरे साथ उलट दू लंका डूब जाए सागर में।।
 बाकी अपना के उ रोकलन औसर अनुचित जान।
 बिसम समय में होइअ बुद्धि आ बल के पहचान।।
 सोंचलन राबन के गेला पर कोई उपाए लगाएम।
 कइसे हम अइली इहमाँ सोता के प्रगट बताएम।।
 अबहीं अति असान्त आ दुख में डूबल हथ वैदेही।
 ए लेल सब परिनाम उलटतक बनम न सुखद सनेही।।
 ए लेल चुप्पे तरु पर बइठल पबनपुत्र हनुमान।
 उचित समय के करे प्रतीक्षा लगलन उ मतिमान।।
 ओन्ने सीता दुख से बिहबल हो के बहुत निरास।
 सुबुक - सुबुक के रोए लगलन छोर राम के आस।।
 “हाय प्रिय, तोरा की मालूम हम लंका में इहमाँ।
 आउर हमरा के तू खोजइत होएबऽ बन में कहमाँ।।
 तोरा की मालूम कइसे इ पापी हर के लएलक।
 आउर ए प्रमदा बन में हमरा के बन्दी कएलक।।
 दे गेलक ह धमकी मारत एक मास के बाद।
 प्राण पंछी उर जएतक बाकी मिटत न तोहर इआद।।
 न केऊ साथी न सुभचिंतक केकरा दूत बनाऊ।
 स्वामी कइसे अप्पन पीरा तोहरा तक पहुँचाऊ।।
 एतना लमहर सागर केऊ पहुँच न कभी सकइअ।
 पंछीओ सन्देशा ले के पार न पहुँच सकइअ।।
 पबनदेब, हे मीत सुरभि के, तोहरे एक सहारा।
 तूँही जा सकलऽ ह देओता सागर पार किनारा।।
 किरपा कके झोंका बन के चल जा दंडक बन तक।
 संदेशा पहुँचा द हमारा प्राणप्रिय रघुबर तक।।

तोहर प्रानप्रिया बन्दी हओ लंका में रघुनाथ।
 न बइठऽ, तू रख के रघुबर इहाँ हाथ पर हाथ।।
 धनुस उठा के सागर सोखऽ मारऽ बान प्रचंड।
 लंका में तू आग लगा के द राबन के दंड।।
 जब सहजे तू संभु धनुस के स्वामी उठा सकइछ।
 आउर खरदूसन पापी के पल में मार सकइछ।।
 तब तोहरा ला कयी राबन पापी कीट - पतंग।
 कुल अपमानित कलकओ तोहर मारऽ कुल के संग।।
 अमरित घट जेकरा मानलऽ उ सीता तोहर नैन।
 ओकरा आज जुठाबे ला आतुर राबन बेचैन।।
 एक माह के भीतर स्वामी तू न खोजइत अएबऽ।
 ए जीवन में सीता के दरसन न प्रियतम पएबऽ।।”
 कहइत - कहइत दुख से सीता मुरछित होके गिरलन।
 आउर हुनका पीरा से हनुमत बेकल हो उठलन।।
 हुनकर आँख मुनाएल लागल दिव्य जोत छिटकइअ।
 आउर माई अंजना हुनका से अनुरोध करइअ।।
 “बेटा इ सीता बेटी भारत के दोसर रूप।
 एकरा में संचित भारत के गरिमा अमर अनूप।।
 एक्कर हरन देस के इज्जत के बेटा अपमान।
 एकरा रक्षा ला तू अरपित कर द अप्पन प्रान।।
 सीता नारी जाति के महिमा के मोहक रूप।
 एकरा के तू मानऽ बेटा हमरे दोसर रूप।।
 सक्ति असिब कन बन्दी इहे हए संकट के मूल।
 अन्याई के सीस उरा तू हरऽ संकट - सूल।।”
 जोती भेलक लुप्त आउर हनुमत के सपना टूटल।
 बल बुद्धि तप नेह तेज के सूत्र एक में जूटल।।
 कर अभिचार पवनसुत प्रहरी के मुरछित कर देलन।
 आउर मंत्र सक्ति से सीता के मुरछा हर लेलन।।
 एकरा बाद प्रगट हो कहलन “हे माता परनाम।
 राम दूत बनके अइली ह हनुमत हम्मर नाम।।
 लंका असुर नगर एक्कर सब हए तामस आचार।
 भेलक होइत अपने साथे निश्चित छल बेहवार।।

ए लेल अपने के हमरा पर होएतक न बिस्वास।
 बाकी हम न जादू - टोना, न माया के फाँस।।
 अपने से अनुरोध कि सुन लू तनिका हमर बात।
 ओकरा बाद उचित जे लागत उहे करम मात।।
 इआद करु उ जगह जहमाँ अपने गिरि सिखर पर।
 बानर दल के देख गिरइली आभूसन आ बसतर।।
 ओतहीं के रहबइआ हम सुग्रीब उहाँ के राजा।
 हुनके उहाँ टिकल हथ बनके अतिथि राम रघुराजा।।
 लछुमन अनुज गोर हथ हुनकर अपने साँओर रंग।
 तपसी भेस मगर धनुधारी सुगढ़ तरासल अंग।।
 नील कमल सन सोभा जेकरा देख अनंग लजाए।
 आकरसन अइसन देखे जे से देखते रह जाए।।
 हुनके भेजल हम खोजइत अइली सागर के पार।
 देख बिसाल सिन्धु हो गेली हम संब बिन आधार।।”
 हनुमत के बानी सुन सीता उत्सुक हो के तकलन।
 दृष्टि में जिग्यासा फूटल आगे सूने लगलन।।
 हनुमत कहइत गेलन “उहमाँ मिलल गीध सम्पाती।
 जइसे घोर अन्हरिआ में जरलक आसा के बाती।।
 हरि के कृपा जटायु के उ निकलल बरका भाई।
 उहे जटायु जे अपने ला कएलक घोर लराई।।
 सम्पाती से ग्यात भेल लंका सागर के बीच।
 ओही में अपने के रखले हर के राबन नीच।।
 संगी साथी छोर उहाँ हम लंघली सिन्धु अपार।
 अपने के खोजइत आ गेली ए उपवन के द्वार।।
 अपहरता राबन के देखली ओक्कर धमकी सुनली।
 आउर अपने के दृढ़ता साहस के दरसन कइली।।
 अपने के जीता पाके हरखित हो गेलक प्रान।
 लइली ह बिस्वास दिलाबे ला एगो पहिचान।।”
 एतना कहइत फेंटा से अँउठी निकाल हनुमान।
 गुरका देलन सीता ओरी देबे ला परमान।।
 अँउठी लेके उलट पुलट के सीता देखे लगलन।
 साँचो रामदूत कि माया मन में सोंचे लगलन।।

हाथ जोर के हनुमत कहलन "करे ला बिस्वास।
 जे इच्छा से पूछू माता हम रघुबर के दास।।"
 सीता सोंचे लगलन माया से तन रचना संभव।
 बाकी आत्मा के रचना माया से कभी न संभव।।
 ए लेल पूछे के चाही आत्मा से जुरल बिचार।
 माया के खंडन ला सबसे उचित ग्यान - उपचार।।
 पुछलन "हनुमत मानुस तन पर कहेना बानर रूप।
 कहेला पूँछ लगा के कएलऽ अप्पन बिकृत रूप?"
 हँस के कहलन पबनपुत्र "देबी इ अद्भुत बात।
 इहे प्रस्न एक दिन हमरा से पुछलन रघुनाथ।।
 ए में कोइ रहस्य न माता न कुछ रूप बिकार।
 जाति बंस पहचाने के इ हए एगो आधार।।
 हम अपना के बानरबंसी मान दोम लगबइले।
 आउर मुखौटा लगा कपि के अप्पन जात कहइले।।
 अपनहू के पति रघुबंसी सुरुज के सन्तान।
 राजचिन्ह में अङ्कित हतन भानु बनल निसान।।
 अन्तर एतने अपने सीमित गद्दी आ झंडा पर।
 बाकी हम सब धारन कएले बंस चिन्ह काया पर।।"
 "काया आउर जातचिन्ह जदि मानुस के पहचान।
 तब आत्मा के कोन अर्थ बतलाबऽ तू हनुमान।।
 आत्मा के स्वरूप कइसन आ की की ओक्कर धरम।
 आत्मा करमलिप्त कि काया, की सुख-दुख के मरम?
 हनुमत ग्यान दीप्त हो कहलन "तन भौतिक पहचान।
 भौतिक करम जगत में सब कुछ जीवन के प्रतिमान।।
 सुख-दुख तन के धरम आउर मन हए एक्कर भोगबइआ।
 इहे बिकल बिकारग्रस्त इहे तन के चलबइआ।।
 मन के गति अबाध मनुस एकरे अनुपालक दास।
 एकरे कहना मान करइअ भब में भोग बिलास।।
 बाकी जे ग्यानी नर उ मन पर अंकुस लगबइअ।
 मन के इच्छा झुठला उ आत्मा के बात सुनइअ।।
 आत्मा चेतन अमल धबल तिरगुन से मुक्त महान।
 तन में रह के तन से अल्लग जल में कमल समान।।

भेद न आत्मा के कारन प्राणी - प्राणी में माई।
 भेदक तन - मन, इहे कारन सुख-दुख बैर मिताई।।
 सात्विक राजस तामस तोनो हए तन मन के भाओ।
 एकरे कारन कहँऊ धूप आ कहँऊ मिलइअ छाँओ।।
 आग - आग में भेद न कोनो बैस्वानर दाबानल।
 ए में भेद करे जे उ हए दुरबुद्धि आ पागल।।”
 “तोहरा दृष्टि में के लमहर आत्मा आ कि देह।
 केकरा पर रक्खे के चाही जादे ममता नेह?”
 हनुमत कहलन “दुन्नो में माता हए पूरक भाओ।
 एक बिना दोसर में होइअ निश्चित बहुत अभाओ।।
 देह बिना आत्मा के सत्ता होइअ पबन समान।
 आउर आत्मा बिना देह के कौरी भर न मान।।
 आत्मा सिब आ सब सरीर, जग में आत्मे हए स्नेष्ठ।
 पूरक होएलो पर आत्मा हर तरह देह से स्नेष्ठ।।”
 उत्तम हनुमत! उत्तम!! तू सचमुच ग्यानी गुनमान।
 साँचो रामदूत तू, हमरा हो गेलक पहचान।।
 बाकी रामदास हतऽ त एक बात बतलाबऽ।
 हमर बस्तर मइल न कहेना उत्तर में समझाबऽ।।
 “माई, इहे दिव्य बस्त्र त अपने के पहचान।
 रिसि पतनी अनुसूया से पइली र उत्तम दान।।”
 “साधु हनुमत, तोहरा पर अब हो गेलक बिस्वास।
 रामदास तू आबऽ बइठऽ तनिका हमरा पास।।
 बतलाबऽ कइसन हथ स्वामी आउर देबर लछुमन।
 बिसरा देलन कि हमरा के कहिओ इआद करइछन।।
 “मत पूछू माता कइसन हए दुन्नो जन के पीरा।
 उर-दरपन के छलनी कएले वज्रब्यथा के हीरा।।
 साधारन जन रोइअ दुख में उत्तम जन कुहकइअ।
 आह न आबे देइअ मुँह पर भितरे टीस सहइअ।।
 जइसे सिब के कंबु कंठ पर अड्डित बिस के छाप।
 तइसे राघव के मुँह पर अड्डित नित ब्यथा अमाप।।
 किस्किन्धा में देखली आँसू में डूबल चउमासा।
 एक्के तार जिआएले हुनका सिआ मिलन के आसा।।

मुँह में सिआ, प्रान में जानकी तन - मन में बैदेही।
 देवी, अइसन पुरुस न पइली जइसन राम सनेही।।
 लछुमन के मत पूछू हुनकर जीवन सुलगल आँबा।
 जेतना भाई ला दुख ओतने अपने ला पछताबा।।
 कहलन "हनुमत मानती न जदि हम भाभी के बात।
 आउर सह लेती चुप्पे अपमान लाँछना तात।।
 त कपटी मृग के पुकार के पाछे कभी न जइती।
 आउर ओ पापी राबन के कुटिए पर हम पइती।।
 ओकरा बाद त उ जाइत हमरा हाथे जमलोक।
 कभी न होइत सिआ हरन न उपजित एतना सोक।।
 हुनका देखली चिन्तित रह - रह सोँचइत एक्के बात।
 कइसे राबन लांघ रेख कुटिआ में अएलक मात।।"
 सिर निच्चा कएले सीता लज्जित कहलन "हनुमान।
 हमरे से गलती हो गेलक रहल न छल के ग्यान।।
 साधु भेस बना के पापी आ के हमरा ठगलक।
 हम चिन्तित, उन्मन, उ हमरा बाक कला से छललक।।
 साधु समझ के कन्द मूल ले भिच्छा देबे अइली।
 आउर रेखा के भितरे से ओकरा तरफ बढ़इली।।
 कहलक बान्हल भीख न लेइले साधु धरम बिपरीत।
 बाहर आके भिच्छा द जदि धरम - करम पर प्रीत।।
 हम बिदेह के बेटी आउर रघु बंस के नारी।
 दुन्नो कुल में उत्तम शिक्षा पइली सबसे न्यारी।।
 तापस जीवन में केऊ साधु मिलतक छली सेआन।
 एक्कर त सपनो में हनुमत कइली न अनुमान।।
 छल प्रपंच राजस तामस जीवन के बिकृत अङ्ग।
 सात्विक जीवन के अभ्यासी, भेल न कहिओ सङ्ग।।
 आउरो पति आ देबर पर एतना जादे बिस्वास।
 दुष्ट जीव केऊ छाँहो छुए आ न सकइअ पास।।
 लेकिन कुटिल बुद्धि से हारल हम्मर सब बिस्वास।
 चोर बना साधु के बाना कएलक चान्द गरास।।
 जाल फँसल हरिनी सन इहमाँ हम निसदिन तरपइले।
 आउर अपना गलती पर हम अपने सीस धुनइले।।

कहइत - कहइत गिरे लागल टप-टप सिय के लोर।
 हनुमत समझएलन त पोंछल उ अँचरा से लोर।।
 "माता अब मत रोकू बीतल दुख के रात अधीर।
 अब इहमाँ से चलू जहाँ हथ बिकल लखन - रघुबीर।।
 सुन हनुमत प्रस्ताओ सिआ के सूतल संका जागल।
 छन भर पहिले साफ गगन जे ओ में बादल लागल।।
 समझदार अदमी जदि गलती से धोखा खा जाइअ।
 दूध जरल उ साबधान मट्टो के फूँक पिअइअ।।
 सीता हँस के टालइत कहलन "कइसे तू ले चलबऽ।
 सेना बली, प्रबल राबन, एकरा से कइसे लरबऽ।।"
 हनुमत कहलन "जइसे अइली तइसे उर के जाएम।
 आउर अपना पिट्टी पर हम अपने के ले जाएम।।"
 "महाबली तोरा बल के जदपि भेलक अन्दाज।
 बाकी उचित लगइअ न हम जाऊ तोहरा ब्याज।।
 संभव हए कि तोरा साथे गेला पर हे तात।
 रघुबर अपना मन में सोँचथ कोनो दोसर बात।।
 इहो संभव हए कि तोहर बेग सम्हार न पाई।
 सागर पार करे के पहिले सागर में गिर जाई।।
 चोरी से हर के राबन लएलक हमरा हनुमान।
 नारी के बदला धन बुझलक कएलक उ अपमान।।
 हम्मर स्वामी सक्षम, ओकरा देबे दंड चहइले।
 आउर अजोध्या तक डंका बजबइते जाए चहइले।।
 ए लेल हम्मर इच्छा हए कि तू किस्किन्धा जाके।
 सेना सहित राम - लछुमन के लाबऽ इहाँ बोला के।।
 जा कहऽ "कहमाँ सूतल हए हुनकर सक्ति प्रचंड।
 कोन समय ला रखले हतन दिव्य बान कोदंड।।
 मारथ बान ढाह दथ लंका के बज्जर प्राचीर।
 बरा सतएलक राबन पापी मारथ सिरी रघुबोर।।"
 "जे अपने के इच्छा ऊहे हम्मर करतब माता।
 बस गेली आ लइली साथे राम - लखन जुग भ्राता।।
 अपने मिल गेली त हमरा मिल भेलक तिरलोक।
 भेल सफल अभियान आउर मिट गेलक चिन्ता सोक।।

जाए से पहिले अपने के पग के धूल चहइले।
 साथे साथ चिन्हासी कोनो प्रभु के लेल मंगइले।।
 "तोरा कारन जेठी जीवन साओन भेल कपीस।
 हे हनुमान हृदय से हम देइले तोरा आसीस।।
 जीअऽ लाख बरीस पबनसुत बन के संकटमोचन।
 जेक्कर केऊ सहाएक न तू बन जा ओक्कर लोचन।।
 चूरामनी चिन्हासी देइलओ ले जा प्रभु के पास।
 हो जत्थुन प्रसन्न आ सहजे कर लेत्थुन बिस्वास।।
 हम्मर दसा देखइते हतऽ हुनका सब बतलइहऽ।
 तू ही सेतु तू ही बेटा, हुनकर दरस करइहऽ।।
 तन से इहाँ मगर मन से ओतहीं दिन रात रहइले।
 हुनके आसा में जीवन के पल - पल बिकल कटइले।।
 एक बार हुनका दरसन ला तरप रहल हए प्रान।
 एक माह के बाद न दरसन होएतक हे हनुमान।।
 हमरा बदला हुनके के तू पीठ चढ़ा के लाबऽ।
 रामदास बेटा साँचो तू राम दरस करबाबऽ।।"
 छू सीता के चरन आउर लेके हुनकर आसीस।
 उरे के बदला हुनका से कहलन चतुर कपीस।।
 "माई आग्या दू त फल खा अप्पन भूख मेटा लू।
 उरे से पहिले जल पी के तनिका प्यास बुझा लू।।"
 सीता कहलन "उपबन पर हम्मर कथी अधिकार।
 बरजोरी खएबऽ रक्षक झंझट करतओ बेकार।।
 अपने खाली 'हँ' कह के माता दे दू आदेस।
 एकरा कारन अपने के देतक न असुर कलेस।।
 अपने माता अपने स्वामी हम अपने के दास।
 आग्या बिना न कुच्छो छुअम चाहे रहम उपास।।"
 "जइसन तोहर इच्छा बाकी करिहऽ मत उतपात।
 बली असुर कुछ बात न सुनतो करतओ बहुत अघात।।
 'अच्छा माँ' कहइत हनुमत चल गेलन जादे दूर।
 आउर घूम पहुँचलन उहमाँ जहमाँ रक्षक कूर।।
 भूख पिआस त मात्र बहाना इच्छा रहे और।
 राबन तक पहुँचेला हनुमत खोजइत रहथ ठौर।।

बुद्धिमान हनुमत चाहइत रहथ सत्रु के थाह।
 आउर राम बिजय के सोचइत सुगम बनावे राह।।
 सत्रु बल के मेरुदंड तोरे के दृढ़ संकल्प।
 हुनका मन में नचइत रहे रह - रह बिबिध बिकल्प।।
 देख प्रमद वन के छबि कएलन हनुमत मन अनुमान।
 एकरा सुन्दरता में वस्सल हए राबन के प्रान।।
 सीता के हर के उ जइसे कएलक ह सिरीहीन।
 तइसे ए बन के उजार हम कर देइले सिरीहीन।।
 बन उजरत त सेना लेके निश्चित राबन आएत।
 आउर हमरा मारे ला उ पूरा जोर लगाएत।।
 एही से ओकरा छल बल के हो जाएत सब ग्यान।
 आउरो ओकरा जुद्ध - बिधि के हो जाएत पहिचान।।
 एक तरफ ए रन से होएत बहुत असुर बल ध्वस्त।
 दोसर ओरी राघब जय के राह बनत परसस्त।।
 ई सब सोच प्रबल पुरुसारथी पवनपुत्र हनुमान।
 लगलन पेंर उखारे तोरे साजल लता बितान।।
 कोनो पेंर उखारलन कोनो के सब डाढ़ मरोरलन।
 काँच-काँच फल तोर-तोर रक्षक के ओरी फेंकलन।।
 देख बाग के दुरगत दउरल रक्षक दल बलबान।
 भाला मुगदर फँरसा आउर खंग धनुस ले बान।।
 कुछ मारे ला हुनका ओरी लागल बान चलावे।
 आउर कुछ हुनका पकरे ला लागल जुगुत लगावे।।
 बाकी बाग उजारे से हनुमत के रोक न पाएल।
 उलटे कुछ मारल गेलक आ कुछ हो गेलक घाएल।।
 आखिर भाग चलल रक्षक दल करइत चीख - पुकार।
 त्राहिमाम कहइत जा पहुँचल राबन के दरबार।।
 सुनके राबन किंकर राक्षस के नाएक से कहलक।
 सेना ले के जा देखऽ कहमाँ से बानर अएलक।।
 गेलक सेना लेके नाएक आ कएलक संग्राम।
 बाकी सेना साथे अएलक ऊहो रन में काम।।
 तब प्रहस्त सुत जम्बूमाली के भेजलक लंकेस।
 ओकरो मार गिरएलन हनुमत बिना प्रयास बिसेस।।

तब आग्या लेके चललक राबनसुत अक्षकुमार।
 बीरा उठा दर्प में फूलल मारे पवनकुमार।।
 आके समर रचएलक भारी कएलक बिकट प्रहार।
 हनुमत मार गिरएलन घोरा कएलन रथ बेकार।।
 तब उ माया रच के भारी आसमान में उरलक।
 अस्त्र-सस्त्र बरसएलक बाकी बस न कुच्छो चललक।।
 उछल पवनसुत धएलन आउर लगलन नाच नचाबे।
 भूलल सब्भे दंभ लगल तिरलोक नजर में आबे।।
 आखिर एगो तरु के जर में ओकरा के दे मारलन।
 उखरल पेंर असुरसुत सीधे जा जमलोक पधारलन।।
 भाग चलल सेना करइत भारी रोदन चीक्कार।
 त्राहिमाम प्रभु प्रान बचाऊ मरलन अक्षकुमार।।
 सुनके पुत्र - निधन राबन हक्का - बक्का रह गेलक।
 "मारऽ बानर के" बरका बेटा के आग्या देलक।।
 भाई - बध से क्रोधित चललक मेघनाद बलबान।
 देखू कइसन बानर आएल बन के काल समान।।
 अस्त्र-सस्त्र से सज्जित होके रथ पर चढ़ के अएलक।
 भारी परिध उठएले बइठल कपि के तरु पर पएलक।।
 देखिते ओकरा माथा पर चढ़ गेल क्रोध के पारा।
 गरजन से थर्राए लागल बाताबरन बेचारा।।
 सीधे धनुस उठा के लागल बरसाबे उ बान।
 बाकी सब के निष्फल कएलन कौसल से हनुमान।।
 ओकरा मारे चहलन अप्पन परिध चला हनुमान।
 बाकी खंडित कएलक पल में इन्द्रजीत बलबान।।
 तब हनुमान उखार पेंर ओकरा रथ ओर चलएलन।
 जाले पेंर गिरे ताले ओकरा अदृश्य उ पएलन।।
 छिप - छिप नभ से लगल चलाबे उ हनुमत पर बान।
 ओक्कर चाल समझ के उरलन पवनपुत्र हनुमान।।
 तुरत मंत्र से माया कटलन असुर प्रगट हो गेलक।
 आउर हुनका मारे ला ऊ ब्रम्ह अस्त्र ले लेलक।।
 हनुमत सोंचलन देबे चाही ब्रम्ह अस्त्र के मान।
 न त हो जायत अमोघपन के एकरा अपमान।।

एही बहन्ने हो जाइले अखनी यदि हम बेहीस।
 उत्साहित राक्षस लंका में ले जाएत भर औस।।
 अपराधी कह निश्चित हमरा दंड देत लंकेस।
 ओही औसर पर हम तउलम ओक्कर सकित बियेस।।
 इहे सोंच पवनसुत लगते सर मुरछित हो गेलन।
 आउर ओकरा मनमानी के सब्बे औसर देलन।।
 हरखित मेघनाद हुनका के नागफाँस में बन्धलक।
 आउर रथ पर लाद खुसी से लंका ओरी चललक।।
 हनुमत खेखना कछले चुपे रथ पर परल रहलन।
 राक्षस दल के हरस नाद उ हँसइत सहइत चललन।।
 राजभवन तर आके हुनका रथ से अमुर उतार।
 बन्हले छनले ले अएलक जहमाँ राबन दरबार।।
 बन्हन खोलइत मेघनाद कहलक "हे लंकानाथ।
 ब्रम्ह अस्त्र से मुरछित कके लइली बानर साथ।।
 इहे हए अपराधी इहे मारलक अक्षकुमार।
 आउर इहे उत्पाती कएलक उपवन संहार।।
 अपराधी अपने के सम्मुख करु दंड निर्धारन।
 परमद बन के सरबनास के इहे दुष्ट हए कारन।।"
 राबन कहलक "पूछऽ ए उत्पाती से तू तात!
 हए इ कोन कहाँ से अएलक सच बतलाओ बात।।"
 मेघनाद कहलक "रे बानर तू अप्पन मुँह खोल।
 महाराज जे पुछलन ओक्कर उत्तर जल्दी बोल।।"
 मुँह फुला सीना तनइत कहलन हनुमत "लंकेस।
 रामदूत हम बजरंगी हए हम्मर नाम बिसेस।।
 केसरीनन्दन पवनपुत्र हनुमानो हम्मर नाम।
 सखा सचिव सुग्रीव कपि के किस्किन्धा हए धाम।।
 महावीर दसरथसुत राघव रूप सील गुनरासी।
 पिता बचन ला राजपाट तज ऊ बनलन बनबासा।।
 हुनका पतनी के लंकापति हरलऽ बनके चोर।
 सह न पएलऽ रामचन्द्र के बल के तनिक ईजोर।।
 ऊहे सीता के खोजइत हम लांघ समुन्दर अइली।
 आउर तोरा उपवन में हुनका के बन्दी पइली।।

रही भुक्खल आउर पिआसल फल खइली लंकेस।
 उछल कूद में टूट गेल कुछ कोमल डाढ़ बिसेस।।
 तोहर रक्षक मारलक हमरा हमहू ओकरा मारली।
 जे मारे अएलक ओकरा से अप्पन रक्षा कइली।।
 बिन छेरले बिसधरो राबन मानब के न डँसइअ।
 आउर छेरला पर चिंउटिओ काटे लेल चहइअ।।”
 “अरे बाह! निरदोस सिरोमनि बानर भोला भाला।
 बात बनाबे में अति माहिर तोहर ढंग निराला।।
 अरे मूढ़ हए कोन कमी जे हरन करब परनारी।
 हमरा राजमहल में भरल सुन्दर-सुन्दर नारी।।
 जेकरा हिरदय में कबिता आ भक्ति ग्यान प्रकास।
 जेकरा बल बिक्रम से कम्पित धरती आ आकास।।
 ओकरा पर लगबइत हते चोरी के अछरंग।
 रे बानर तू मंगइत हते अपना ला जम-संग।।”
 कहलन हनुमत “बुझइत रही तोहरा खाली चोर।
 बाकी खाली चोर न तू संगे संग सीनाजोर।।
 भरल सभा में मिथ्या भासन कएलऽ लगल न लाज।
 तोहरा करनी से पंडित कुल भेलक लज्जित आज।।”
 “अरे चुप्प बकबासी ए से तोहर जान न बचतक।
 आउर हम्मर क्रोध न बानर कोनो भाँती घटतक।।
 बाग उजारले सुत के मारले तोहरो मारम आज।
 सीता के अन्बेसन के पूरा हो जाएत काज।।”
 क्रोधित हो हनुमत कहलन “तू सुन ले राक्षसराज।
 जानबूझ के हम कइली ह बागध्वंस के काज।।
 तोरा राजसभा में आबे ला हम बाग उजारली।
 आउर तोरा क्रोध उभारे ला सेना के मारलीं।।
 तोहरा के बतलाबे ला अइली ह रे अभिमानी।
 तोहर नास समीप न बचतक देबेबाला पानी।।
 राम बान गिरतक लंका पर मरतक असुर समूह।
 तोहर टेढ़ी काम न आएत बनतक लंका दूह।।
 नारी - चोर छली पापी तोरा सौ - सौ धिक्कार।
 रामदूत हनुमत के सुन ले राबन तू ललकार।।

ग्यानी होके चोरी कएले छूटल लोभ न काम।
 होके बली न कएले अबले कोनो अच्छा काम।।
 अरे ग्यान के अर्थ जगत में होइअ सील चरित्र।
 दुराचार से जुक्त ग्यान के केऊ न कहत पबित्र।।
 पेंर लमइअ फल पाके तू बिद्या पा न लमले।
 बीर मरइअ दोसरा ला तू अपने ला नित मरले।।
 अहंकार आतंक न होइअ सक्ति के परिभासा।
 हत्या लूट हरन न होइअ बीर पुरुस के भासा।।
 तू कायर ढोंगी मिथ्या तोहर सब बल बिग्यान।
 ब्यर्थ ग्यान - शिक्षा - कविता जे पसुता के पहचान।।
 तोरा अहंकार के ढाहत सील सक्ति के बान।
 तोहर तामस संस्कृति जारत आत्मतत्व बिग्यान।।
 रामकोप से लंका के रक्षा जदि तोहरा चाही।
 रामबान से बंस नास के भय से मुक्ति चाही।।
 त सादर सीता के लेके चल तू हमरा साथ।
 तोहरा के माफी दे देतन सीलसिन्धु रघुनाथ।।”
 “अरे बाह! बानर उपदेसक, देखली अपना आँख।
 मौत समय में चिंउटी के उग रहलक मोहक पाँख।।
 अरे पुत्र उठ इन्द्रजीत तू अप्पन खंग निकाल।
 सुनली बात बहुत बानर के अब आ गेलक काल।।
 बुट्टी - बुट्टी काट फेंक दे एकरा सिन्धु अगाध।
 मृत्यु दंड से कम लाइक न हए एक्कर अपराध।।”
 मेघनाद से पहिले उठ के जोरइत सादर हाथ।
 लंकापति के अनुज बिभीसन कहलन “सुनु हे नाथ।।
 बली पुरुस के नीतिहीन आचार न सोभा देइअ।
 राजनीति के पंडित अपने, दूत न मारल जाइअ।।
 मार देब त कइसे जाएत इ स्वामी के पास।
 अपने के सक्ति के कइसे करबएतक बिस्वास।।
 ए लेल दुइए राह कि चाहे एकरा बन्दी बनाऊ।
 चाहे अंग भंग कके एकरा बापस भेजबाऊ।।
 भेजू प्रबल चुनउती अपने जेक्कर इ हए दास।
 हम हरली सीता के, रखले हती अपना पास।।

साहस हए त ले जा तू अपना पतनी के आके।
 न त ओतहीं करऽ तपस्या कंद मूल फल खा के।।”
 बात बिभीसन के जँचलक देलक राबन आदेस।
 अंग भंग क के भेजऽ एकरा के एकरा देस।।
 ले जा बाहर मारइत पिटइत सबजन के बतलाबऽ।
 लंका में सत्रु के पूजा की होइअ देखलाबऽ।।”
 राबन के आग्या राक्षस सब हनुमत के धकिअबइत।
 ले चललक बाहर हुनका हुतका - मुक्का से मारइत।।
 समाचार सुन जुटलक उँहमाँ लरिका बूढ़ जबान।
 पवनपुत्र के मारे - पीटे लागल कुछ बलबान।।
 ओही में एगो कहलक कि “दुम में आग लगा द।
 आउर पीछे से रगेदइत रस्ता पर दउरा द।।
 जरतक पोंछ करत इ छटपट भागत एन्ने ओन्ने।
 घेर - घेर के मारब हम सब आखिर जाएत केन्ने।।”
 भेल भरस्ट बुद्धि सबके ओकरे मत अच्छा-लागल।
 आग पोंछ में, कुदइत बानर, खूब तमासा लागल।।
 मेघोनाद के अच्छा लागल कहलक बस्त्र मंगाबऽ।
 बान्ह पोंछ में तेल पटा के ओ में आग लगाबऽ।।
 पोंछहीन होके जब जाएत अपना स्वामी पास।
 तब एकरे दुरगत से करतक सक्ति के एहसास।।
 गेलक आग लगाएल छिटकल कपि - मुँह पर मुस्कान।
 देह सिकोर झटक देलन सब्भे बन्धन हनुमान।।
 जाले राक्षस सब कुछ समझे ताले उछल कपीस।
 चढ़ गेलन एक्के बेरी में राजभवन के सीस।।
 घुमा - घुमा के पोंछ लगाबे लगलन सबतर आग।
 लपट भेआनक उठलक डर से राक्षस चललक भाग।।
 धू - धू क के जरलक घर सब उठल पवन उनचास।
 चारो ओरी फइले लागल भारी बिकट हहास।।
 उछल एक घर से दोसर पर जा - जा पवन कुमार।
 आग लगाबे लगलन सबतर मचलक चीख पुकार।।
 भाग चलल नर नारी बच्चा बूढ़ा लेले प्रान।
 प्रान बचाबे ला सब कोई खोजे लगल ठेकान।।

केऊ कहइत पानी लाबऽ केऊ दइआ मइआ।
 केऊ चिचिआइत बउआ ला केऊ खोजइत भइआ।।
 केऊ बच्चा गोदी लेले केऊ मोटरी काँख।
 केऊ धूँआ से करुआएल मलइत अप्पन आँख।।
 जेन्ने - जेन्ने जाए तेन्ने - तेन्ने आग बुझाए।
 लपट आउर धूँआ से रस्ता पैरा नजर न आए।।
 चारो तरफ पुकार चीख चटचट फटफट के सोर।
 जेन्ने नजर घुमावे ओनही हनुमत भय हहरोर।।
 केऊ घइला लेले फेंकइत जरइत घर पर पानी।
 केऊ चीज - बतूस निकालइत ठेलइत छप्पर छानी।।
 केऊ छाती पीटइत केऊ रख कपार पर हाथ।
 कहइत राबन के अछइत लंका हो गेल अनाथ।।
 केऊ कहे अग्निए धएले हए बानर के रूप।
 केऊ कहे परनारी हर के पुन्न गमएलक भूप।।
 गाए बैल घोरा गदहा आ जरलक भँइसी हाथी।
 अस्त्र - सस्त्र भंडार जरल सब जर के भेल लुआठी।।
 कोठी में रक्खल अन्न जरलक पेटी में के सोना।
 पिघल - पिघल माटी में मिललक सुन्दर रूप सलोना।।
 तप - तप के सोना जे पिघलल तेक्कर फूटल धार।
 कंगूरा माटी में लोटल अजब समय के मार।।
 मेघनाद के बल कुंठित राबन के बकझर लागल।
 लंका के लीले ला जइसे अग्नि भेलन पागल।।
 बरबोला जोद्धा सबके हो गेलक बन्द ढेकार।
 जर के राख भेल लंका के दुरगम बज्र के मार।।
 लंका के लीलला पर आखिर अग्नि तनिक ठंढाएल।
 मद्धिम भेलक जोर पवन के आउर लपट बुझाएल।
 सोना के लंका अधजरू भेलक रूप कुरूप।
 काल बली कुंठित कर देलक राबन अइसन भूप।।
 सोँचे लगलन हनुमत बचलक सेस न कोनो काम।
 रीढ़ तोर देली राबन के भेलक दुर्ग बेकाम।।
 माल मबेसी सोना चानी अन से भरल बखार।
 जार राख कइली आधा रन राबन गेलक हार।।

हतप्रभ हए लंकेस आउर जनता में हए आतंक।
 अहंकार के गढ़ लंका अब सुततक न निःसंक।।
 जाले सम्हरत सक्ति समेटत ताले अएतन राम।
 कोना बल से राबन करतक राघब से संग्राम।।
 अब सीतो के छुए के जल्दी न हिम्मत करतक।
 हमरा दहसत में कुछ दिन ला जी - जी के सब मरतक।।
 अब चले के चाही सीता से ले बिदा प्रनाम।
 मन चंचल सुभ सन्देशा सुन खुस हो जएतन राम।।
 छन भर में केसरीनन्दन वापस असोक बन अएलन।
 आउर तनिका में सीता के समाचार बतलएलन।।
 कहलन माता रामबिजय ला कइली लंका डाह।
 अब अपने सुख से सूतू आ सत्रु भरतक आह।।
 कुछ दिन ला धीरज रक्खू मंगल करतन गौरीस।
 राम भानु उगतन आ कटतक राक्षस तम के सीस।
 अएतन राम मरत राबन अब एतना निश्चित जानू।
 राबन के अन्तिम दिन आएल माता एतना मानू।।
 हमरा दीऊ बचन कि जबले लेके राम न आएम।
 ताले अपने सब दुख सहके अप्पन प्रान बचाएम।।
 हमरा हए बिस्वास न करतक राबन अत्याचार।
 आउर उ कायर न सकतक अपने के अब मार।।
 अब आग्या दीऊ हम जाऊ माता सागर पार।
 हमर साथी सब डूबल होएतक चिन्ता के धार।।

जानकी के छू चरन उरलन बली हुनमान।
 चकित सीता देख सक्ति के प्रबल तूफान।।
 प्रिय मिलन के प्रबल आसा बरल मन के दीप।
 स्नेह मोती से भरल मन के सुकोमल सीप।।
 जीए के उत्साह जागल दुख सहे के सक्ति।
 पवनसुत पर नेह आउर प्रानप्रिय पर भक्ति।।
 नयन में झलकल पिया के धनुस तोरइत रूप।
 अरक बन के चढ़ल मन तन भेल छठ के सूप।।

ओन्ने हनुमत लांघ उदधि अएलन कपिल के पास।
 किलकारी गूँजल हुनकर बन सिद्धि के बिस्वास।।
 लउटल प्रान, पलट सब देखलन नभ से पवनकुमार।
 गम्मे - गम्मे उतर रहल हथ जइसे मन्द बेआर।।
 अंगद दउर लिपटलन कहइत "हे भाई हनुमान।
 तोरे चलते पइली हम सब नूतन जीवन दान।।"
 पिठ्ठी ठोके लगलन हरसित जामबन्त मतिधीर।
 किलकारी से सागर तट भर देलन वानर बीर।।
 केऊ दउर ले अएलक खाए ला कुछ फल आ मूल।
 आउर केऊ स्वागत में ले अएलक सुन्दर फूल।।
 हनुमत सुस्ताइत कहलन "फल मिललक वानर बीर।
 सीता जीबित हथ लंका में देखली दुखी अधीर।।
 सुन्दरता के मूरत जइसे ढँकल राख से आग।
 हुनका मन से फुटइत पइली रामचन्द्र ला राग।।
 पिंजरा में बन्दी पंछी सन बेकल आउर निरास।
 तरह-तरह से हुनका राबन देइअ हरदम त्रास।।
 धीरज धरा दिला के आसा आउर जरा के लंका।
 अइली ह बजबा लंका में अपना बल के डंका।।
 राबन के सक्ति के पा लेली हम असली थाह।
 रोक न पएतक केऊ रन में राम - बिजय के राह।।
 अब चलऽ किस्किन्धापति के समाचार बतलाऊ।
 आउर सीता के सब पीरा रघुबर के समझाऊ।।"
 अंगद कहलन समाचार के पाछे करिहऽ बात।
 पहिले चल के मारऽ राबन लाबऽ सीता तात।।
 सेना लेके राम आउर सुग्रीब अगर चढ़ जएतन।
 आ राबन के मार सिआ के लंका से ले अएतन।।
 तब हमरा सब के रह जाएत भाई कोन बराई।
 हमही सब काफी जीते ला राबन साथ लराई।।
 राबन उहे न जेकरा हमर तात काँख तर रखलन।
 छौ महिन्ना तक लंकापति ओतहीं कुथइत मरलन।।
 हमहू सब ए ला फाजिल तू हनुमत बीर अकेले।
 चाहितऽ त चल अइतऽ मुठ्ठी में लंका के लेले।।

पता न कहेना जीता छोरलऽ रावन सहित समाज।
 महाबीर तोरा ला जग में कोन असंभव काज।।
 आउर न त सीता के अपना पीठे पर ले अइतऽ।
 बार - बार सागर लांघे के झंझट व्यर्थ न रखितऽ।।”
 हनुमत कहलन “भाई इहे हमरो रहे बिचार।
 बाकी माँ सीता एकरा ला भेलन न तइआर।।
 जेतने सुन्दर ओतने बुद्धि देख के सरधा जागल।
 अनजाने माई माने के इच्छा होए लगल।।
 उ हमरा के समझएलन जब ऊँच नीच कुछ बात।
 हमहू सहमत हो गेली न लइली हुनका साथ।।
 हुनका दृष्टि में इ गौरब पर कलंक के टीका।
 इ मिटतक जब राम भाल पर लगत बिजय के टीका।।
 समय बहुत कम चलऽ जल्दी प्रभु के बात बताऊ।
 लंका पर चढ़े ला बन्धु तइआरी करबाऊ।।”
 मान बात हनुमत के सब कपि हँसइत आ बतिआइत।
 नचइत खेलइत गबइत चललन कंद मूल फल खाइत।।
 रस्ता में किस्किन्धापति के उपबन रहे मनोहर।
 फल फूल से लदल मधु से भरल न उपमा दोसर।।
 अंगद कहलन बिजय दिबस हए चलके खुसी मनाऊ।
 मधुबन में मधु पीऊ आउर फल फूल कुछ खाऊ।।
 सुन के अति प्रसन्न कपिदल उपबन पर भौंरा लेखा।
 टूट परल फल खाए ला रक्षक के कर अनदेखा।।
 केऊ नीच्चे से फल तोरलक केऊ उप्पर चढ़लक।
 केऊ पेंर हिलावे लागल डाढ़ पकर केऊ झुललक।।
 देख दुरगति बन के रक्षका दधिमुख सब के रोकलक।
 बाकी उम्मत अंगद के दल ओक्कर कुछ न सुनलक।।
 उलटे लागल रक्षक दल के पटके आ धमकावे।
 आउर बुढ़ऊ दधिमुख के टंगरी ध के घिसिआवे।।
 हाथ गोर धएलक दू गो कपि “दधिमुख जी के गत हए।
 आउर जोर सोर से कहलक हरि नाम भई सत हए।
 देख दुरगति दधिमुख के सब ताली पीटे लगलन।
 हरि नाम मत हए सब कह के आउर चिढ़ावे लगलन।।

जान छोरा के भागल दधिमुख कएलक त्राहि गोहार।
 "महाराज! अंगद करबएलन मधुबन के संहार।।
 हमरा के घिसिआ के कहलन हरि नाम के सत हए।
 आउर बुढ़ऊ दधिमुख जी के जीते जी प्रभु गत हए।।"
 हरखित कपिपति समझा के कहलन "जा ओकरा डाँटम।
 काम बना के अएलक उ सब कइसे ओकरा मारम।।"
 रघुबर से दउरल जा कहलन "बन गेलक प्रभु काम।
 अंगद के हरकत से इहे लक्षित होइअ राम।।
 बिना सफलता के न संभव हए अइसन उन्माद।
 जामबन्त के अछइत उपवन उजरल, इ अपवाद।।
 दधिमुख से कहलन जा के भेजऽ तू सबके इहमाँ।
 हो गेलक हुरदंग बहुत अब कथी करइअ उहमाँ।।
 एतने में कपिदल आ कहलक "महाराज के जय हो।
 महाबली रघुनाथ बीर, भाई लछुमन के जय हो।।"
 अंगद कहलन "पता लगा के अएलन ह हनुमान।
 ऊहे कुसल बतएतन सीता जी के हे सिरीमान।।"
 हरखित कपिपति कहलन "हनुमत कुसल सनेस सुनाबऽ।
 सीता के जीबित रहे के सुभ संवाद सुनाबऽ।।
 कइसे गेलऽ कइसे खोजलऽ खिस्सा सब बतलाबऽ।
 जेठ समान दग्ध रघुनायक साबन सुखद बनाबऽ।।"
 हाथ जोर के हनुमत कहलन "नाथ जानकी माता।
 लंका में बंदी सन हतन हे रघुबर दुखत्राता।।
 हम सब इहमाँ से खोजइत दक्खिन सागर तक गेली।
 आगे न रसता कोनो पा सब हतास हो गेली।।
 भाग बली उहमाँ मिल गेलक गीघ बीर सम्पाती।
 ऊ जटायु के बरका भाई बनलक मित्र संघाती।।
 ऊहे पता बतएलक सागर में हए लंका द्वीप।
 ओतही राबन बन्दी रखले रघुकुल के मनिदीप।।
 जोगसक्ति के बल पर उर के हम लंका चल गेली।
 आखिर खोजइत प्रमदा बन में सीता के पा लेली।।
 घोर निरासा के सागर में डूबइत पोत समान।
 तिल-तिल बीत रहल हए जीवन बुझइत दीप समान।।

साम दाम आ दंड भेद के लेके विविध सहारा।
 सीता के अनुकूल बनावे ला बेकल बेचारा।।
 बाकी उ सतबन्ती गिरि सन दुख में अडिग रहइछन।
 राम प्रभु के दरसन ला उ कुररी सन कुहकइछन।।
 जइसे घोर तमस में जरे एगो दीप अकेला।
 जइसे सिन्धु ज्वार में उभचुभ एगो द्वीप अकेला।।
 तइसे सीता के समझू उ तम से लरइत हतन।
 पीरा आ आतंक बेग से असगर जुझइत हतन।।
 सुन के ब्याकुल लखन उठा के धनुस चढ़ा के बान।
 कहलन "ध्वस्त करइले लंका एतहीं से हनुमान।।
 हनुमत कहलन "एक्कर कोनो काम न लछुमन भइआ।
 लंका जरा डुबा अइली हम राबन के बल - नइआ।।
 मारली ह सेना बहुते आ. तोरली दुर्गम द्वार।
 आउर राख बना अइली ह अस्त्र सस्त्र भंडार।।
 राबन के सुन्दर असोक बन सुख सोभा आगार।
 देख सिया के दसा क्रोध में ओकरो देली उजार।।
 कहलन राम "परमप्रिय हनुमत खाली लंका जारलऽ।
 कि सीता से भेंटो भेलओ बातचीत कुछ कएलऽ।।
 हनुमत कहलन "रामदूत न करत अधूरा काम।
 अपना बुद्धि भर हम छोरली बात न कोनो राम।।
 सीता माता से बतिअइली हुनकर आसिस पइली।
 आउर अपने ला सन्देशा चूरामनि हम लइली।।
 कहइत फेंटा से निकाल चूरामनि देलन हाथ।
 कहलन अपने ला समाद कुछ हए बिसेस रघुनाथ।।
 हम हुनका के लाबे चहली बाकी साथ न अएलन।
 ऊँच नीच समझा अपने ला माता एतने कहलन।।
 "जा कहऽ कहमाँ सूतल हए हुनकर सक्ति प्रचंड।
 कोन समय ला रखले हतन दिव्य बान कोदंड।।
 हम अपमान ब्यथा से ब्याकुल हो दिनरात जुझइले।
 पौरुस अनल जगाबथ हम आँसू के घीऊ भेजइले।।
 तोरा साथे गेला पर बढ़तक न हम्मर मान।
 रावन बध के बिना न मिटतक रघुकुल के अपमान।।

ए जिनगी में असुरबिजेता रामप्रिया कहलाएम्।
 न त एतहीं बन्दी रह के अप्पन प्राण गमाएम्।।”
 हनुमत के बानी में सुन के सीता मन के भाओ।
 महाबली लछुमन के मन के जाग उठल तब ताओ।।
 कहलन “भइआ देर कथी ला सेना जुटल जुटाएल।
 हनुमत अइसन पथ निरदेसक, राह न हए भुतलाएल।।”
 सब के मन भएलक लछुमन के सुत्थर साफ बिचार।
 जागल रन उत्साह कपिदल कएलक जय जयकार।।
 लछुमन उठा धनुस अप्पन कएलन भीसन टंकार।
 ओकरा पाछे गूंज उठल बानर दल के हुंकार।।
 उत्साहित सुग्रीब बोला देलन सब के आदेस।
 तोहर प्राण मंगइअ भाई तोहर आज नरेस।।
 मित्र धरम के रक्षा ला सब अप्पन प्राण लगा द।
 बानर जाति के सत्ता दुनिया में अमर बना द।।
 धरती एक, माई एक्के, एक्के सब के सम्मान।
 सिआ हरन रघुकुल के साथे हमरो हए अपमान।।
 आज राम कपि, हम सब रघुबर, एक प्राण बहु देह।
 अत्याचार अधर्म अनीति के राबन हए गेह।।
 आज मेटा द महाबली तू अन्यायी के सत्ता।
 चलऽ डुबा दू सागर में लंका के पत्ता-पत्ता।।”
 धीर बिबेकी बीर राम कहलन “बन्धु सुग्रीब।
 बालू पर रक्खे के चाही कभी न भारी नींब।।
 सच हए पवनपुत्र कर देलन अन्बेसन के काम।
 एतना दक्ष दूत के दुनिया सुनत न दोसर नाम।।
 स्वामी के इच्छा से आगे बढ़ के प्रिय करे जे।
 दुस्कर के जे सुगम बनाबे हनुमत सन होएत के।।
 हमरा पास न अइसन कोनो मूल्यबान उपहार।
 जे हिनका के दे हम हल्लुक करु प्राण के भार।।
 पवनपुत्र के देबे ला त प्रानो छोट लगइअ।
 बन्धु, सखा, सहायक साथी केऊ न बरा लगइअ।
 दुनिया में मिलतक न हिनका अइसन बीर महान।
 हनुमत के उपमा घरती पर रहतन बस हनुमान।।

बाकी इ उत्साहित सेना सागर तट तक जाके।
 की करतक? सागर में जाएत सागर से टकरा के?
 आखिर सब कोई त न हए जोग सिद्ध हनुमान।
 जे उर के चल जाएत लंका होके पबन समान।।”
 कहलन कपिपति चलू सिन्धु तट ओतहीं करम बिचार।
 भारी से भारी संकट के निकलइअ उपचार।।
 हमरा ग्यात सक्ति अपने के, जब प्रभु धनुस उठाएम।
 डर के मारे सागर के पहिलहीं सुखल पाएम।।
 न त हए उपाए दोसर, सागर पर सेतु बनाएम।
 ओही से हो के हम सब लंका पर प्रभु चढ़ जाएम।।
 बानर दल में नील आउर नल दू गो सिल्पी बीर।
 जगह देख बतएतन कइसे बनत सेतु रनबीर।।
 अगर न इहो संभव त हम आउर बली हनुमान।
 दुन्नो भाई के ले उरम लंका तक सिरीमान।।
 अंगद जामबन्त सौ जोजन लांघे लेल समर्थ।
 हम सब छौ जन लंका जाके पलट देम सब अर्थ।।
 जहाँ प्रबल संकल्प उहाँ बुद्धि के पट खुल जाइअ।
 आउर असंभव सब क्रिया में जा संभव हो जाइअ।।
 ए लेल अपने करु न राघव जादे सोंच - बिचार।
 क्रियासीलता से हो जाएत बेरा सागर पार।।”
 लछुमन कहलन “भइआ कपिपति के हए उचित बिचार।
 चिन्तन से न सदा चलइअ जीवन के बेहबार।।
 कुछ न बनतक बात त हम सब लौट इहाँ चल आएम।
 कुच्छो न कएला के पीरा से न कभी पछताएम।।
 डूबे से डरे बाला त सौ - सौ बेर डुबइअ।
 बाकी लहर से जूझेबाला निस्वय सिन्धु तरइअ।।”
 कहलन राम “जे सबके इच्छा उहे हमारो मत हए।
 चलऽ आज दुपहर में भाई बिजय के मुहुरत हए।।”
 सहमति मिलते कपिदल में भर गेल सहज उत्साह।
 बानर सेना-नद्दी चललक सागर तरफ़ प्रबाह।।
 महादेव के जय के साथे प्रेरित मंगल मति से।
 चललक रामचन्द्र के सेना उत्साहित द्रुत गति से।।

आगे - आगे जामबन्त अंगद आउर हनुमान।
 हुनका पाछे राम लखन कपिपति चललन बलबान।।
 कन्दमूल फल खाइत आउर पिअइत निरझर नीर।
 धीरे - धीरे सेना पहुँचे लागल सागर तीर।।

ओन्ने राबन चिन्तित लज्जित की से की हो गेलक।
 हमारा प्रभुता के लतिआ के बच बानर चल गेलक।।
 अगर कहीं कुछ चमत्कार से तपसी लंका अएतक।
 सोँचे के चाही इहमाँ उ कइसे मुँह के खएतक।।
 हर के लइली अपना ला हम नारी बहुत कुमारी।
 बाकी पहिला बेरी हरली एक बिआहल नारी।।
 साधारन नारी बुझली सीता के गलती भेलक।
 बढ़ के बात बतंगर बनतक इ अनुमान न भेलक।।
 लउटा देइले सीता के त लोग समझतक डर के।
 महाबली लउटा देलक तपसी के नारी हर के।।
 दुनिया डर से आज कैमइअ हमरा काल्ह कैपाएत।
 तिरलोकी में हमरा बल के धाख सहज उठ जाएत।।
 ए लेल एक्के राह बचइअ जुद्ध राम से ठानू।
 समर भूमि में अपने मरू चाहे ओकरा मारू।।
 सुपनेखा के बहकाबा से भेलक भारी भूल।
 सिया हरन के गलती चुभतक सब दिन बन के सूल।।
 आ जएतक बानर के साथे तपसी सागर पार।
 तब पएतक निश्चित हमरा से सत्रु सन उपचार।।
 बाकी राय सभासद सबके जान लेबे के चाही।
 आउर सब जन में बल के बिस्वास भरे के चाही।।
 लंका के जरला से जनता आतंकित आ फूटल।
 अन धन से हए हीन बहुत बिस्वास रहित आ टूटल।।
 एकरा लेल अलापे परतक रास्त्रभक्ति के राग।
 आउर सुलगाबे के परतक जुद्धप्रेम के आग।।
 धर्म जाति संस्कृति रक्षा के ओजस्वी सम्बाद।
 जनता के गुमराह बना के उपजाएब उन्माद।।

तबही जनता पगलाएत देतक सेना के साथ।
 आउर सेना प्रान हाथ में लेके जूझत साथ।।
 इ सब सोच बोलएलक मंत्री-जोद्धा के दरबार।
 सबे बात बता के पुछलक हुनकर राय बिचार।।
 सब मंत्री जोद्धा एक सुर से कहलक "हे लंकेस।
 अपने से कथी खा लरतक ऊ तपसी अबघेस।।
 एगो सागर पार कठिन दोसर जदि लांघिओ जाएत।
 आबे दू लंका में आके सब भोजन बन जाएत।।
 अपने आग्या दू त हम सब जा सागर के पार।
 राम लखन आउर बानर के देइले ओतहीं मार।।"
 सुन के इ सब बात बिभीसन से न भेल रहाई।
 हाथ जोर के कहलक "हे लंकापति हम्मर भाई!
 इ मंत्री सब लबरा झुट्टा डर से झूठ कहइअ।
 पाछे में स्वामी अपने के निन्दा रोज करइअ।।
 देतक प्रान भले रन में पर मुँह पर साँच न बोलत।
 मूढ़मति तामसबृत्ति के ग्यान कहाँ जे खोलत।।
 अपने ध्यान न दीऊ, इ सब ठकुरसोहाती बात।
 राम न कदुआ कोंहरा राजन राम न खर आ पात।।
 जब हनुमान जरएलक लंका हमरा सब के आगे।
 कहाँ रहे इ बीर बली सब भेल न कहेना आगे।।
 लांघ सिन्धु सौ जोजन लंका आ गेलक जे बीर।
 उहे लंका में ले आएत लखन राम रनबीर।।
 अपना बल तोलिए के केऊ जोद्धा समर सजइअ।
 सत्रु बल के ग्यान बिना न जय अभियान करइअ।।
 सेना मार उजार बाटिका डाह नगर हनुमान।
 अपने के बल के ले गेलक बुद्धिमान अनुमान।।
 कुछ न बिगरलक अपने से पूँछो न ओक्कर जरलक।
 उलटे सँऊँसे लंका पर ऊ असगर भारी परलक।।
 ए लेल हम्मर राय कि अपने छोर लाज अभिमान।
 सीता दे के संधि कर लू रघुबर से सिरीमान।।
 अपना ओरी से गलती हए ए लेल छमा निवेदन।
 अपनहीं के करे चाही हे राक्षस कुल केतन।।"

सुन के गोस्सा में फोंफकारइत राबन साँप समान।
 भाई के ईटइत कहलक राक्षस कुल के दिनमान।।
 "सुनऽ बिभीसन तूँही एगो हतऽ न बिद्वान।
 भला - बुरा रीति - नीति के तोहरे पास न खान।।
 बहुत न अपना के तू समझऽ हे ग्यानी अभिमानी।
 कोदो दे के न पढ़ले हथ इ मंत्री सब ग्यानी।।
 हमहू बेद सास्त्र पढ़ली ह आउरो तप कइली ह।
 अपना घोर तपस्या से सिब ब्रम्हा बस कइली ह।।
 होके अनुज सिखाबऽ मत हमरा के जादे ग्यान।
 आगे से तू रक्खल करऽ मरजादा के ध्यान।।"
 "भइआ हम मरजादे के अपने से बात करइले।
 आउर मरजादे के रक्षा ला अनुरोध करइले।।
 अपना ओरी से न कएलन राम कोई अपराध।
 आउर अपने के रसता में बनलन कहँऊ न बाध।।
 स्वेच्छाचारी सुपनेखा अपनहीं गलती कएलक।
 जानबूझ के छेरे गेलक अप्पन नाक कटएलक।।
 ऊहे उकसएलक, खर - दूसन करे गेल लड़ाई।
 ओकरे त्रिया चलित्तर में अपनहू अइली भाई।।
 परनारी अपहरन न अग्रज नीति समरथित राह।
 आउर बिआहल से हए अनुचित करे में फेन बिआह।।
 अइसन चाह रहे सीता के त कहेना चल अइली।
 स्वयंबर में गेली कहेना न सिब के धनुस उठइली।।
 अपने ग्यानी जगत बिजेता करम न उत्तम कइली।
 दुनिया के अपनाबे लाइक राह न सुखद बनइली।।"
 टपक बीच में मेघनाद कहलक "चच्चा चुप हो जा।
 चल जा उठके राजसभा से अपना घर में सो जा।।
 एतना नीति ग्यान बधारलऽ कि बुद्धि सठिआएल।
 तोहरे अइसन द्रोही से भइआरी होइअ घाएल।।
 राजा परम स्वतंत्र, नीति होइअ ओक्कर आचार।
 उ जे कह देइअ से होइअ नीति नियम बिचार।।
 चच्चा न रहितऽ त अबले तोहर सीस उरइती।
 सशु के परसंसा के हम तोहरा मजा चखइती।।"

पी अपमान बिभीसन कहलन "इन्द्रजीत रनबीर।
 अबहीं तोहर बुद्धि अज्जु मन के क्रिया अधीर।।
 सील सम्पदा मिलल न तोहरा अहंकार भटकएलक।
 आदरनीय जन से तोहरा बात करे न अएलक।।"
 राबन कहलक "सील बिनय के राग न बहुत अलापऽ।
 रक्खऽ सब उपदेस पास आ जल्दी रस्ता नापऽ।।
 तोरा बानी से कायरता के दुरगन्ध अबइअ।
 तोरा भाई कहे में हमरा भारी लाज लगइअ।।
 बीर बंस के माथा पर तू कायरता के टीका।
 नीति न्याय के माला जप्पऽ क के चन्नन टीका।।"
 "भइआ तोरा बुद्धि पर हओ अहंकार के परदा।
 आउर भरल आँख में तोरा लोभ काम के गरदा।।
 ए लेल निम्नन बात न तोरा मन में तनिक टिकइअ।
 जइसे पक्कल घइला पर से पानी झट बह जाइअ।।"
 "अरे मूढ़ एतना साहस! हमरा से मुँह लगएबे।
 लाग रहल हमरा हाथे तू अबहीं जमपुर जएबे।।
 तोरे अइसन जन के उप्पर जग में उक्ति चलइअ।
 लात के देओता बात के अनुसासन न कभी मानइअ।।"
 "भइआ, तू मारऽ काटऽ बाकी न मानम हार।
 निम्नन बात कहम समझाएम तोरा सौ - सौ बार।।
 जा रहली ह बाकी तोरा एतने कहले जाइले।
 राक्षस - कुल ला सीता के हम धूमकेतु समझइले।।"
 एतना कहइत धीर बिभीसन ब्याकुल दग्ध परान।
 चल देलन चिन्तित हो पीके पीरा आ अपमान।।
 घर आके सोंचलन लंका पर मररा रहलक काल।
 राबन के डँसले हए कस के दुरबुद्धि के ब्याल।।
 इन्द्रजीत बल में अन्धा मन्त्री सब तम साकार।
 सेनापति सब सत्रु ग्यान के नाओ न लागत पार।।
 इ न समर होएत लंका के जस आउर सम्पत ला।
 इ न समर होएत अन्याई सासन से मुक्ति ला।।
 राज बढ़ाबे ला न हए इ अहंकार के आग।
 जनमुक्ति संग्राम न एक्कर मंगलदायक राग।।

इ होएत संघर्ष न्याई आ अन्याई के बीच।
 ए में कमल बिरुद्ध लरत तलछट के कादो - कीच।
 स्वेच्छाचारी के बिरुद्ध इ अनुसासित के जुद्ध।
 ठोकले ताल अनाचारी हए नीति - नियम - बिरुद्ध।
 धर्म - अधर्म पुन्य - पाप आ सदाचार - अतिचार।
 जुद्ध न होएत, महाकाल के होएत मन्त्रोच्चार।
 साफ झलक रहलक ह हमरा राक्षस कुल के नास।
 ब्रम्हा आ सिब कभी न देतन दुराचार में साथ।
 जे कुछ ग्यान सुलभ धरती पर बेद, सास्त्र आ लोक।
 ओक्कर हए सारांस कि जीवन जए जात्रा आलोक।
 ले आचार दीप कर में चल तमसो मा ज्योतिःगमय।
 बेद न सक्षम पूत करे में असतो मा सदगमय।
 अगर क्रिया में ग्यान न उतरल त जीवन हए झूठ।
 बेद सास्त्र के ग्यान बिफल जीवन बबूर के ठूँठ।
 भाई कुकरमी कइसे पछ ले अप्पन धरम बिगारू।
 आउर ओक्कर साथ निभा अपना के कतना मारू।
 चाहे निन्दा करो जगत चाहे मानो कुलद्रोही।
 न्याय धरम के साथ न छोरम बनम आज बिद्रोही।
 लंका में रहम, बरजोरी देबे परतक साथ।
 करम बिरोध त निश्चित मारत हमरा राक्षसनाथ।
 ए से अच्छा हए लंका तज दूर कहँऊ चल जाऊ।
 लेकिन कहमाँ, कोन जगह, हम जहाँ ठेकाना पाऊ।
 बहुत सोँच के निरनए-कएलन पाप धोए के चाही।
 लंका बचे सिया लौटथ ऊ जुगुत होए के चाही।
 धरम जुद्ध इ साथ राम के देबे ला हम जाएम।
 राम अगर धर्मात्मा त हुनकर आस्रय पा जाएम।
 अगर न ऊ आस्रय देतन आ करतन न बिस्वास।
 त राजस जीवन तज के ले लेम सान्त बनबास।
 भोला के भगती में अप्पन बाकी समय बिताएम।
 ए पापी सब के मुँह देखे फेर न लंकां आएम।
 इहे सब सोँचइत चल देलन साधु बीर बिभीसन।
 सागर तट रघुबर से भेंटे राक्षस कुल के केतन।

सागर पार पहुँच नभ पथ में होके खरा पुकारजन।
 रामचन्द्र के आश्रय में आबे ला आग्या मंगलन।।
 पा सन्देशा पवनपुत्र से कपिपति कहलन तात।
 कोन काम से राक्षस अएलक जानऽ जाके बात।।
 जा के जान - समझ आ कहलन हुनका से हनुमान।
 रावनबन्धु बिभीसन आश्रयप्रार्थी कृपानिधान।।
 प्रभु कन आके कपिपति कहलन हे किरपा के सिन्धु।
 अपने कन आश्रय ला अएलक ह रावन के बन्धु।।
 कहलन राम "जामवन्त, लक्ष्मन, कपिपति, हनुमान।
 अप्पन - अप्पन राय बतावऽ हमरा के मतिमान।।
 जुद्ध - समय में आश्रय मांगे बन्धु सत्रु के अएलक।
 कारन कोन भेल अइसन जे साथ सहोदर छोरलक।।
 सब कोइ कहलक सरन न दीऊ इ हए जाल कपट के।
 जाने ला रहस्य इ आएल सत्रु रूप बदल के।।
 पुछलन राम "पवनसुत तोहर राय कथी बतलावऽ।
 रावनबन्धु राहु कि मंगल हमरा के समझावऽ।।"
 हनुमत कहलन "नीतिबान हथ लंकापति के भाई।
 मुँह मन के दरपन त पइली हम न मइल बुराई।।
 भरल सभा में निहुर होके देलन उचित बिचार।
 हिनका में हम पइली बुद्धि सील ग्यान आचार।।
 संकट के बेला में छोरलन ह रावन के साथ।
 ए से हमरा लाग रहल हथ सक्तिहीन अनाथ।।
 घर छोरे के अरथ कि हथ इ रावन से भयभीत।
 भेल अबस अपमान जे आहत कएलक हिनकर प्रीत।।
 ए लेल हमरा दृष्टि में आश्रय देबे के चाही।
 बाकी हिनका गति-विधि पर नजर रखे के चाही।।"
 "साधु पवनसुत तोहर उत्तर हमरा अच्छा लागल।
 इहे हमरो मत, दुबिधा के झोंका मन से भागल।।
 अगर छली रावनबन्धु त एक्कर कपट प्रपंच।
 हरा न सकतक हमरा के सज गेल भैरबी मंच।।
 अइसहूँ हम छत्री कइसे केकरो करम निरास।
 आ जएतक जाचक बन के जदि आश्रय मांगे पास।।

कहलन कपिपति से "जाके सादर हुनका के लाबऽ।
 चिन्ता भय के कोई न कारन हुनका के समझाबऽ।।"
 अएलन लंकापति के भाई कहइत "त्राहि माम।
 हम निस्कासित हमरा अप्पन आस्रय दीऊ राम।।
 राबन हीन चरित्र बहुत अन्यायी हए रघुबीर।
 सीता के देलक ह पीरा बहुत - बहुत हे बीर।।
 हम बिरोध कइली आ कहली सन्धि करे के बात।
 एही पर ऊ क्रोधित होके मारलक हमरा लात।।
 हम अपमानित बहुत सोंच के अपने कन अइली ह।
 अपने आस्रय में रक्खू इहे आसा लइली ह।।
 जदपि राक्षस कुल में हम्मर जनम भेल रघुनाथ।
 बाकी राक्षस बृत्ति मन में कभी न उपजल नाथ।।
 ब्रम्हा के तप कइली त हुनको से ग्याने मंगली।
 भोला के अर्चन कइली त भगती पाबन चहली।।
 ए लेल कभी न राबन साथे मिललक तनिक बिचार।
 बाकी अग्रज के प्रति छोरली कभी न सिस्टाचार।।
 सीता - हरन भेल समझइली, नीति बिरुद्ध बतइली।
 हनुमत के मारे चहलक त राजनीति समझइली।।
 जब उ राजसभा बोलबएलक अपने साथ समर ला।
 तब हम ओकरा के समझइली सीता दे सन्धि ला।।
 एही पर उ सब मिल कएलक हमरा के अपमानित।
 आउर राजसभा से कएलक धक्का दे निस्कासित।।
 हम सोंचली इहमाँ रहनाई अबिस्वास के घर हए।
 हर पल उन्मादी राबन से प्रान जाए के डर हए।।
 ए ला सोंच समझ अपने के आस्रय में अइली ह।
 अप्पन ग्यान सील निष्ठा उपहार साथ लइली ह।।
 अपने धीर बीर धर्मात्मा छत्री परम कुलीन।
 हम सरनागति के जाचक सब भाँति दीन मलीन।।
 अपने देम न आस्रय त प्रभु हम बापस चल जाएम।
 जा कैलास संभु - भक्ति में जीवन सेस बिताएम।।"
 एतना कह कर जोर खरा हो रहलन मौन बिभीसन।
 ओन्ने दू छन मन में सोंचइत रहलन रघुकुल भूसन।।

राजनीति के पंडित राघव निरनए कर कुछ बात।
 लघुमन से कहलन सागर से जल मंगबाबऽ तात।।
 केऊ समझ न पएलक उत्तर के बदला जल राम।
 मंगबा रहलन ह सागर से पता न कोना काम।।
 जल आएल त कपिपति से कहलन "करऽ अभिसेक।
 सुभ कारज में बन्धु होए चाही देर न नेक।।
 लंका के गद्दी पर हम हिनका अभिसिक्त करइले।
 राबन दू दिन के अतिथि हम ओकरा मरल बुझइले।।
 बन्धु बिभीसन राम मैत्री के ल लघुतम उपहार।
 महाबली सुग्रीब करऽ लंकापति के जयकार।।"
 साधु बिभीसन के सब्भे अक्किल सुन के भुतलाएल।
 मांगे अएलन टाट इहाँ पर मिललक पलंग बिछाएल।।
 रामनीति केऊ समझ न पएलक कुंठित सबके ग्यान।
 बाकी पवनपुत्र मुस्कएलन भेद भरल मुस्कान।।
 चकित प्रसन्न बानरी सेना कहलक कृपानिधान।
 सत्रु के आश्रय दाता जय रामचन्द्र भगवान।।
 साथ बिठा राबनबन्धु के कहलन राम "बताबऽ।
 सागर पार करे के बन्धु कोनो राह सुझाबऽ।।
 एतना भारी सेना करतक कइसे सागर पार।
 आउर कइसे होएतक हमरा सीता के उद्धार।।"
 बुद्धिमान बिभीसन कहलन हे रघुकुल के राय।
 सेतुबन्ध के सिबा बुझाइअ न कोई अपर उपाय।।
 इहमाँ से लंका तक सागर में पसरल गिरिबर हए।
 कहँऊ डूबल कहँऊ निकलल उब्भर आ खाबर हए।।
 अगर सिला से पाट गर्त के कएल बराबर जाए।
 आउर बल्ला गार - गार तरु से जदि पाटल जाए।।
 तब इहमाँ से लंका तक बन जाएत लमहर सेतु।
 ओही पर से सेना जाएत लेले रघुकुल केतु।।
 मगर बनाएत पुल के?" ए पर झट कहलन सुग्रीब।
 "हम्मर सिलपी नील आउर नल रखतन एक्कर नीब।।
 नजदीके हए बन पहार उहमाँ से तरु आ पत्थर।
 ला के देतन कपि समूह बन जाएत सेतु सुत्थर।।"

कहलन राम "नील नल दुन्नो करऽ निरीक्षण जाके।
 हए संभव सेतु - रचना त बतलाबऽ तू आके।।
 तब्बे हाथ लगाएम न त सोचम अपर उपाए।
 अइसन काम करम न जे से दुनिया हँसी उराए।।"
 दुन्नो उर के नभ में गेलन आ अन्दाज लगलन।
 सेतु रचना के संभावित रूप बनाबे लगलन।।
 आके कहलन "सेतु रचना संभव हए रघुनाथ।
 जेतना जल्दी चाहम ओतना जल्दी लगतक हाथ।।"
 कहलन राम "कपिपति पत्थर आ तरुबर मंगबाबऽ।
 अपना रेख-देख में बन्धु सेतु - बन्ध कराबऽ।।
 सुभ दिन लगन घरी में पहिले भूमि पुजाएल जाए।
 घरती माँ से आग्या ले के नेओ देलाएल जाए।।
 कपिपति कहलन "पंडित उत्तम कहमाँ से प्रभु आएत।
 कहँमा से साधन अएतक आ के मुहुर्त बतलाएत।।"
 हनुमत कहलन मुनि बिसरबा के प्रिय पुत्र बिभीसन।
 सदाचार आ सील ग्यान में इ ब्राम्हन कुल भूसन।।
 मिलत पुरोहित कहमाँ हिनका से ग्यानी गुनबान।
 रहलक साधन, त ले आएम कतहूँ से सिरीमान।।
 सुभ मुहुर्त ऊहे जे में जागे मन में संकल्प।
 आउर लगन ऊहे सर्वोत्तम सिद्धि में न बिकल्प।।
 ए लेल प्रभु जुटाबे दीऊ पहिले सब समान।
 ओकरा बाद भूमि पूजन आ सेतु के निरमान।।"
 कहलन राम "जुटाबऽ साधन मन में चाह जगइअ।
 भोलानाथ बिराजतन इहमाँ कुछ संकेत मिलइअ।।
 सागर तट पर महादेव के बन्धु करम असथापित।
 रामेश्वर बनके इहमाँ पर ऊ होएतन बिग्यापित।।"
 हनुमत कहलन "अपने ब्रत ले इहमाँ ध्यान लगाऊ।
 हमरा आग्या दीऊ पूजन के साधन ले आऊ।।"
 "हँ, अंजनीनन्दन तू पूजा के सामान जुटाबऽ।
 आउर सिब प्रतीक कतहूँ से बन्धु एगो लाबऽ।।
 हम पावन तन मन से होके सिब के ध्यान घरइले।
 आउर ओम सिबाय नमः के मन्तर जाप करइले।।"

हनुमत उर गेलन लाबे ला पूजा के सामान।
 आउर एन्ने राम लगएलन आसुतोस के ध्यान।।
 खोज - खोज के अंजनीनन्दन सब सामान जुटएलन।
 उचित बिधि से साधु बिभीसन सिब पूजन करबएलन।।
 सागर तीर बिराजलन आके संभु भोलानाथ।
 भक्ति भाओ से बिनती कएलन सादर सीतानाथ।।

हे नीलकंठ दयाल संकर त्रिनयन कामेस्वरम्।
 सूलपानी बृसभबाहन आसुतोस बिसम्भरम्।
 हे महाकाल बिसाल गंगानाथ संभु जटाधरम्।
 गौरीपति नटराज सोभाधान हे ससिसेखरम्।।
 हे महादेव पिनाकपानि सुर असुर नर पूजितम्।
 सदासिब कल्यानकरता भुजगमाल विभूषितम्।
 हे बिस्वनाथ कृपाल जगदाधार पूज्य महेस्वरम्।
 चंद्रभूसन मुंडमाली पापहर त्रिपुरेस्वरम्।।
 सिन्धु के तट पर बिराजू साथ गौरी प्रिया परम्।
 आज से कहलाऊ अपने रामप्रिय रामेस्वरम्।।
 प्रार्थना स्वीकार कर आसीस दीऊ सदासिबम्।
 सेतुबन्ध सफल बने बर बिजय के पाऊ परम्।

प्रार्थना के सब्द उमरल संख ध्वनि के साथ।
 सदासिब के प्रान छूलक द्रबित भेलन नाथ।।
 'बिजई होऊ' सब्द गूँजल मेघ मन्द्र समान।
 रहल अनुगुंजित सतत उ बन उदधि के गान।।
 काम चललक रात-दिन लएलक परिस्रम रंग।
 बनल सेतु दृढ़ मनोहर बढ़ल सेना संग।
 मनुज के अभियान टूटल सिन्धु के चिर दंभ।
 सिन्धु पर पुल! सेतु जुग के भेल नब आरंभ।।
 गजरीसंकर के प्रनाम कर ले गनपति के नाम।
 सेना साथ बिजय जात्रा पर चललन लछुमन राम।।



❀ ॐ चंडिकाय नमः ❀

जुद्ध कांड

हे लछ्मीपति सारंगपानी महाबली देवेस।
 हे नाराएन कमलनएन हे सक्ति सिन्धु सुरेस।।
 संख-चक्र आ गदा-पद्मधर हे जग के प्रतिपालक।
 हे त्रिभुवनपति असुरबिजेता सरनागत उद्धारक।।
 मेघबरन तन स्यामल सुन्दर चतुरभुजा सुखकारी।
 धेनु धरा सज्जन के रक्षक परम सक्ति असुरारी।।
 हे गरुरासन भुजगसयन हे तेज बीर्ज जयरूप।
 मायापति नीलाम्बुज कोमल सोभा सिन्धु अनूप।।
 असुर अरि हरि समर घरी में सादर आज टेरइले।
 बिसुनदेव तम नास करे ला सुभ आलोक मंगइले।।
 अपना गदा चक्र आ धनु के दीऊ सक्ति जगदीस।
 अन्याई राबन के मारे ला उत्तम आसीस।।

सीस पटक सेतु पर सागर - सक्ति भेल बेकार।
 लछुमन के सर-छाँह तर, सेना उतरल पार।।
 राबन के अबरोध के चलल न एक्को चाल।
 समाचार पल - पल के पाके भेलक बहुत बेहाल।।
 मान बिभीसन के मति, गिरि सुबेल पर राम।
 देख सुलभ आहार जल कहलन करु बिस्राम।।
 बाकी जगह अपरिचित, सेना भारी, सत्रु समीप।
 आग्या देलन सजग रहू तनी हे सुग्रीब महीप।।
 कस्ट न होए के चाही सेना के हे कपिनाथ।
 बीर बिभीसन जामबन्त अंगद के रक्खू साथ।।
 सबसे पहिले माँ सक्ति के पूजम हम धर ध्यान।
 हुनका से मांगम राबन के जीते ला बरदान।।
 ओकरा बाद बइठ के हम सब करब राय बिचार।
 कोन नीति से आगे होएत सीता के उद्धार।।

हनुमत पूजा ला खोजू कोनो उत्तम असधान।
 आउर जुटाऊ अरचन ला जे होए सुलभ सामान।।
 रघुबर के आदेस कपिपति सबतर घूमे लगलन।
 सेना के खाए पीए रहे के सुबिधा देखलन।।
 हनुमत खोज - खाज के लएलन पूजा ला सामान।
 आउर एगो सुखद गुफा में राम लगएलन ध्यान।।
 लछुमन गुफा द्वार पर बनलन चौकस पहरेदार।
 सम्मुख सागर के गरजन बन उमरल मन्त्रोच्चार।।
 आसन पर बइठल राघव - मन जागल भाओ अनूप।
 सबसे पहिले ध्यान में आएल कौसिल्या के रूप।।

हे माँ कौसिल्या ममतामई सतीसिरोमनी देबी।
 सहनसील मरजादित पतिबरता पतिपद के सेबी।।
 तोरा अँचरा के छाया से दूर सत्रु के घर में।
 सागर लांघ सिआ'ला अइली जूझे महासमर में।।
 जननी सतत ध्यान में आबऽ हाथ पीठ पर रख द।
 तोहर दूध लजाऊ न एतना सक्ति तू भर द।।

हे गुरुदेव बसिष्ठ इहँई से तोहर चरन छुअइले।
 सत्रु के जीते ला तोहरा से आसीस मंगइले।।
 अपने देली धनुरबेद, जाँचे के अएलक क
 केतना सक्ति अमोघ बान में, केतना प्रबल कृपान।।
 ओतहीं से गुरुबर अभय मुद्रा में हाथ उठा दू।
 हमरा तरकस के हर सर के गुरु ब्रम्हदंड बना दू।।

हे पिता स्वर्गबासी! देबासुर समर बिजेता बीर।
 इन्द्रमित्र पुन्यात्मा जनपालक महान प्रनबीर।।
 सुत बिजोग में प्रानदान दाता नेही अबधेस।
 रावन से बदला लेबे ला दीउ आसीस बिसेस।।

हे गुरुस्नेष्ठ मनस्वी साधक मंत्रसक्ति के ग्याता।
 सबिता के आराधक कौसिक दिव्य अस्त्र के दाता।।

भेजू आज हिमालय से गुरुबर अइसन संकल्प।
 राबन के मारे ला रहे सेस न कोइ बिकल्प।।
 जेतना अस्त्र सस्त्र देली ओक्कर सब सक्ति अपार।
 रन बेला में रहे सदा मन में जाग्रत साकार।।

सीता प्रानप्रिया! तू बन के प्रखर प्रेरना आबऽ।
 रोम - रोम में आज सक्ति के अग्निसिखा सुलगाबऽ।।
 नारी नर के सक्ति अपरिमित दुनिया के बतला द।
 रामबान में बस के देवी भीसन लपट उठा द।।
 धनुस डोर में बाँध प्रान खाइले तोहर सौगन्ध।
 अन्याई राबन के झारम अहंकार - मद अन्ध।।

“माँ कराल बदना जगदम्बा तोहर ध्यान धरइले।
 मुंडमाल रुधिराक्त रूप के हम आहवान करइले।।
 छिन्नमस्तिका खड्गधारिनी मुक्त केस तन स्याम।
 चंड मुंड महिसासुर मर्दिनी बिकट रूप गुन काम।।
 महाकालिका माँ दुर्गा बरदात्री सिबा भबानी।
 सर्वभूत में स्थित जननी सोभामई कल्यानी।।
 सिंहबाहिनी तेजमई माँ दुष्टहेतु भयकारी।
 आरत सरनागत के रक्षक ममता मंगलकारी।।
 कृपा करऽ रीझऽ मइआ हमरा पूजा भक्ति से।
 नारी चोर असुर के मारू हम तोहरा सक्ति से।।
 बगलामुखी सत्रु - दल के बुद्धि के करऽ बिनास।
 हाथ गोर मुँह कील - कील के ओकरा करऽ हतास।।
 बन के तेज समा हमारा तन करु सत्रु के स्वाहा।
 भागे के रसता न पावे करे बिकल हो हा हा।।”

कातर बानी में रघुबर के भक्ति भरल पुकार।
 छू देलक माता दुरगा के उर के कोमल तार।।
 दिव्य रूप अभय मुद्रा सोभित दस भुजा बिसाल।
 परगट रघुबर के सम्मुख हो गेलन माँ तत्काल।।

शक्ति राम के कमल नैन में भरल हरस के लोर।
 माँ जगदम्मा दुरगा कहइत गिरलन हुनका गोर।।
 अनुभव कएलन दिव्य सक्ति छू देलक हुनकर सीस।
 आउर गुफा में गूँज उठल बिजई होअऽ आसीस।।
 परम प्रसन्न तेजमय राघव के आनन हो गेलक।
 रन जीते के प्रबल पराक्रम से तन मन भर गेलक।।

बाहर अएलन बतलएलन पइली माँ के बरदान।
 करऽ समर उत्साहित होके मिलत अबस जए दान।।
 बइठल सभा बिचार करे ला कइसे होए जुद्ध।
 कहलन राम “उठाऊ पग जे होए नीति से सुद्ध।।”
 जामबन्त कहलन “हए एक्कर एक्के गो उपचार।
 दूत भेज के जाने चाही ओन्ने कोन बिचार।।”
 अगर जानकी लौटाबे न बिना जुद्ध लंकेस।
 तब ओकरा पर करू चढ़ाई बिना हिचक अबधेस।।
 सब कोई के मत भेलक कि अंगद लंका जाथ।
 अगर जरूरत समझथ त उ ले लथ केकरो साथ।।
 “हम असगरे जाएम” अंगद गदा उठबइत कहलन।
 “देखू हम्मर दूत कर्म” कह सीस उठा के चललन।।
 अएलन अंगद नगर द्वार पर मच गेलक हहरोर।
 “फेरू उहे बानर आएल” भेलक भारी सोर।।
 द्वारपाल से कहलन बालिसुत अंगद हए नाम।
 लंकापति कन खबर पेठाबऽ हुनका से हए काम।।
 द्वारपाल के संदेसा के उत्तर आएल भेजऽ।
 करे न उ उत्पात साथ में रक्षक के दल दे दऽ।।
 द्वार खुलल सिंह गति से अंगद भारी गदा उठएले।
 थाम - थाम के गोर बढ़एलन धरती के धँसकएले।।
 देख-देख के भागे लागल बाल बृद्ध नर नारी।
 केऊ - केऊ ठोकलक अपना घर के बज्र केमारी।।
 राजद्वार पर आ प्रहरी से कहलन कपिकुमार।
 लंकापति से कहऽ जाके अएलन बालिकुमार।।
 प्रहरी ले संदेसा गेलक लंकापति के पास।
 पहिला बेर राम - सक्ति के कएलक उ बिस्वास।।

कहलक "आग्या हए आबे द रामदूत के इहमौं।
 एमरी चूक न होएत आखिर बच के जाएत कहमौं।।
 एन्ने ओन्ने तकइत अंगद अएलन राजसभा में।
 छल भर ला मोहित हो गेलन राबन के परभा में।।
 बाकी मन के साध तुरत सादर कएलन परनाम।
 "रामदूत बन के अइली ह अंगद हम्मर नाम।।"
 चतुर खेलारी राबन छन में सोंच चलएलक दाओ।
 बहुत-बहुत अपनापन के ले अएलक मुँह पर भाओ।।
 कहलक "लंका में स्वागत किस्किन्धा के दिनमान।
 बाली मित्र रहथ हम्मर तू भेलऽ पुत्र समान।।
 आसन ग्रहन करऽ बतलाबऽ तू अप्पन सब हाल।
 कइसे फँस गेलऽ जाके तू पुत्र सत्रु के जाल।।
 चच्चा तोहर सत्रु पापी बाली के मरबएलक।
 जे किस्किन्धा तोहर ओपर ऊ अधिकार जमएलक।।
 तू एतना बुरबक फुच भेलऽ बन छुच्छे जुबराज।
 सेना सोना आ सक्ति में होइअ असली राज।।
 मारलक तोरा बाप के जे बनलऽ ओकरे तू दूत।
 सत्रु के गोदी में गिरलऽ उचित न भेल सपूत।।"
 कहलन अंगद "तोरा सोंचे के न इ सब बात।
 आउर कइसन मित्र पिताजी इहो हमरा ग्यात।।
 एक मित्र के दाब काँख में दोसर मित्र रखइअ।
 ए से भला मित्रता जग में उत्तम कहाँ मिलइअ।।
 खैर बात इ छोरऽ असली बात सुनऽ लंकेस।
 रामदूत बन के अइली ह ले सन्देश बिसेस।।
 जुद्ध बचाबे के इ अन्तिम समझऽ राम - प्रयास।
 सीता के लौटा द न त होतओ लंका नास।।
 ब्रम्हा - संकर बचा न पएतन राबन तोहर प्रान।
 तोरे करनी से डूबत राक्षस कुल के दिनमान।।
 हम उत्तार स्पस्ट चहइले तोरा से लंकेस।
 अभी समय हए आ प्राश्चित के अन्तिम औसर सेस।।"
 "अच्छा उ तपसी हमरा ला भेजलक इ सन्देश।
 लाग रहल ओ राजनिकलुआ के दुरगत हए सेस।।

हए सुग्रीब बिभीसन जेवकर मंत्री मित्र सहायक।
 अंगद ओकरा हम न बुझइले अपना से रन लाएक।।
 बिना आग के जेकरा डर से तिनका इहाँ जरइअ।
 ओकरा से लरे ला तपसी बानर भालू लबइअ।।
 जा कहऽ भुलिओ के देखो न सीता के सपना।
 इच्छित बस्तु के राबन मानलक ह सब दिन अपना।।
 कोनो कीमत पर सीता के कभी न हम लौटाएम।
 सेना साथे ओ तपसी के सागर में फेंकबाएम।।”
 अंगद कहलन ‘बुझा गेल’ तोरा सिर काल नचइअ।
 तोहरा समझाबे ला पापी जुद्धे सेस बचइअ।।
 बालबुद्धि मतिमूढ़ तू छूए ला अब ब्याकुल आग।
 तोरे हाथे फूटत कामी राक्षस कुल के भाग।।”
 गरज उठल लंकेस अरे इ बक-बक बरा करइअ।
 बानर होके पंडित के आगे उपदेस छँटइअ।।
 हम एकरा बच्चा बुझली देली सनेह सम्मान।
 बाकी इ मूरख कर रहलक ह हम्मर अपमान।।
 मार डाल एकरा इहमाँ से बच के जाए न पाबे।
 कुट्टी - कुट्टी काट देह तपसी के लग फेंकबा दे।।”
 सुन के पकरे ला दउरल कुछ जोद्धा अति बलवान।
 कुपित बालिसुत गरजन कएलन उम्मत सिंह समान।।
 जे आएल ओकरे घुस्सा से लगलन धूल चटाबे।
 राबन के जोद्धा सब के ताकत के गरब छोराबे।।
 धर - धर मार - मार के भारी मच गेलक हुरदंग।
 केकरो दाँत टुटल केकरो भेलक कोनो अंग भंग।।
 अंगद उछल सिंहासन पर राबन के जा चढ़ गेलन।
 आउर लपक ओकरा माथा से मुकुट खींच उ लेलन।।
 जाले सम्हले राबन ताले अंगद बाहर आके।
 फेंकलन गिरि सुबेल के ओरी राबन मुकुट भँजा के।।
 आउर उछल के महाबली करइत भीसन हुंकार।
 एक झपट्टा में चल देलन जहाँ राम दरबार।।
 राबन मुकुट गिरल राघब के पगतर पहिले आके।
 आउर पीठे पर चल अएलन अंगद ओकरा पाछे।।

सब कोई उत्सुक जाने ला दूत - कर्म परिनाम।
 बाकी मुकुट देख के राघब बुझलन बनल न काम।।
 अंगद बता हाल कहल हम सफल न भेली नाथ।
 राबन के दुरबुद्धि घेरलक बचत न उ रघुनाथ।।
 हो तइआर तुरत तोरू अब लंका गढ़ के द्वार।
 कपिदल गदा सिला तरु से करतक राक्षस - संहार।।
 जेतना कम औसर उ पएतक ओतने जल्दी हारतक।
 रक्खू ध्यान कि गढ़ से रक्षित होके राबन लरतक।।
 ए लेल जेतना जल्दी दूटत लंका गढ़ के द्वार।
 ओतने जल्दी खुलतक राघब समर बिजय के द्वार।।”
 अंगद के सुन बात राम झटपट सबसे बतिअएलन।
 आउर लंका के घेरे ला तच्छन सबके कहलन।।
 बाँट चार टुकरी में सेना नाएक चार अधीन।
 कहलन “द्वार किला के तोरऽ तू सब जुद्ध प्रवीन।।”
 महाबली कपिदल उत्साहित पत्थर बृक्ष गदा ले।
 लंका के घेरे चल देलक घटा समान उमरले।।

ओन्ने राबन जोद्धा सब से कहलक “हे रनबंका।
 तुरत करअ तइआरी रन के बीर बजाबऽ डंका।।
 चढ़ परकोटा पर उपरे से अस्त्र - सस्त्र बरसाबऽ।
 बानर भालू के सेना के छन में मार भगाबऽ।।
 बीचे में टोकलक राबन के नाना माल्यवान।
 नीति निपुन ऊ परम बिबेकी आ अनुभव के खान।।
 “राबन कहेला अइसे अपना जिद पर अरल हतऽ।
 सदबिचार सदबुद्धि सबसे नाता तोरले हतऽ।।
 जे राजा सतपथ पर नाती समय देख चलइअ।
 ऊहे सफल निपुन दीर्घायु आउर काबिल होइअ।।
 तू मनमानी कएलऽ ले अएलऽ परनारी हर के।
 आउरो बैर बेसाहइत हतऽ अपना जिद पर अर के।।
 नीति कहइअ सीता दे के अप्पन दोस सुधारऽ।
 जे सेतु बन्हबएलक ओकरा सत्रु छोट न मानऽ।।

तू अधर्म पर हतऽ अच्छा होतओ न परिनाम।
 बिसई, लोलुप, चोर रूप में हो गेलऽ बदनाम।।
 राम तपस्वी ओकरा पाछे सत्य न्याय के बल हए।
 आउर रिसि मुनि देओता सबके आसीस बिमल हए।।
 ए लेल हम्मर हए बिचार तोरा ला मंगलकारी।
 संधि कर ल बहुत न सोचऽ आगे आउर पिछारी।।
 एही में तोहर हित हए आउर लंका के लाभ।
 कहेला सोना के नगरी में उगबएबऽ कुस - डाभ।।”
 माल्याबान के हितकर बानी राबन के कटु लागल।
 आउर क्रोध तुरन्ते स्वेच्छाचारी मन में जागल।।
 सत्रु समर्थक कहके कएलक नाना के अपमान।
 माल्यबान पीरित हो गेलक समझ काल बलबान।।

राबन साजे लगल समर्थक साथ समर के साज।
 बिसर गेल नाना के बानी लगल न तनिको लाज।।
 पच्छिम द्वार पुत्र के भेजलक उत्तर अपने गेलक।
 दक्खिन पार्श्व महोदर पूरब भार प्रहस्त के देलक।।
 नाक द्वार के रक्षा ला ब्यूह रचलक उ नकबेसर।
 बाकी सज पर रक्षा पंक्ति देलक दोसर तेसर।।
 जाले बानर दल अएलक ताले राक्षस दल बीर।
 मोरचा ले बरसाबे लागल गँदा परिध आ तीर।।
 दू गो बादल दल लेखा दुन्नो सेना टकराएल।
 जेकरा जे सम्मुख परलक ओकरे सें उ ओझराएल।।
 अन्धकार छा गेलक भेलक घमासान संघर्ष।
 हार जीत बउआए लागल करइत सोच बिमर्स।।
 कन्हरो गरजन कन्हरो तरजन कन्हरो चीख - पुकार।
 कन्हरो परल पहार लोथ के बहल रक्त के धार।।
 केकरो धर से सीस अलग आ केकरो अल्लग हाथ।
 केकरो गोर पेट में घूसल केकरो फाटल माथ।।
 केऊ पानी ला चिचिआइत केऊ रक्त में डूबल।
 केऊ भय से ब्याकुल केऊ तन्मय होके जूझल।।

दुन्नो दल के प्रमुख बीर में भेल जुद्ध घनघोर।
 जय निनाद गरजन तरजन से भेलक भारी सोर।।
 रामबान बिकराल पटापट मरे बीर सब लागल।
 छूट गेल जेक्कर हिम्मत उ छोर समर के भागल।।
 पबनपुत्र के बज्जर मुट्ठी कएलक बिकट प्रहार।
 अनगिन राक्षस जोद्धा के कएलक छन में संहार।।
 मेघनाद आ अंगद में ठन गेलक भीसन जुद्ध।
 ओकरा गदाघात से अंगद हो गेलन अति क्रुद्ध।।
 छीन गदा मारलन ओकरा के एतना बालिकुमार।
 पीरा से ब्याकुल हो छिपलक झट लंकेसकुमार।।
 छिप के असुर चलाबे लागल राम लखन पर बान।
 राम चलएलन बान बहुत पर पएलन न सन्धान।।
 जाले दिव्य अस्त्र कोनो उ चाहलन करे सन्धान।
 ताले दुन्नो भाई पर उ छोरलक तक्षक बान।।
 बिसमय बान देह में घुसलक दुन्नो बेबस भेलन।
 आउर समर भूमि में गिर के उ मुरछित हो गेलन।।
 दउर पबनसुत अएलन हुनकर बल - बुद्धि भुतलाएल।
 जामबन्त किस्किन्धोपति के समझ न कुच्छो आएल।।
 घेर खरा हो गेलन दुन्नो भाई के सब लोग।
 आउर मुरछा तोरे के सोंचे लगलन उतजोग।।
 ओन्ने मेघनाद दुन्नो के समझ सुनिस्चित अन्त।
 डंका बजा बिजय के चललक लंका तरफ तुरन्त।।
 सुन हरखित लंकापति दउरल आ चुमलक सुत माथ।
 धन्न - धन्न सुत राम - बिजेता ऊँचगर कएलऽ माथ।।
 परम प्रसन्न तुरत उन्मादी त्रिजटा के बोलबएलक।
 “सीता के ले जा रनभूमि में” आदेस सुनएलक।।
 देखो जा के समरभूमि में परल लखन आ राम।
 लंकापति के सत्रु पबइअ इहे सुभ परिनाम।।
 राबन के डर से त्रिजटा ले अएलक पुस्पक यान।
 प्रहरी सब बरजोरी सीता के बइठएलक यान।।
 समरभूमि में ले गेलक सीता के दृस्य देखाबे।
 जरल सिया के हिरदय पर सब लगलक नमक लगाबे।।

देख, बिलख के दुख से टूटल सीता रोए लगलन।
 "हाय, केकरा ला अब हम्मर पापी जीवन रहतन।।
 हमरा जीए के अब बचलक कोन प्रजोजन नाथ।
 अपने गेली सुरपुर त हमहू अब देइले साथ।।"
 कहइत ब्याकुल सिआ कूद के देबे चहलन प्रांन।
 तब त्रिजटा रोकइत हुनका कहलन "बेटी नादान।।
 चलऽ इहाँ से तोरा के एगो रहस्य बतबइले।
 तोहर देबर आ पति जीबित तोरा सुखी करइले।।"
 घुमा बिमान प्रमद बन ओरी जब त्रिजटा ले अएलन।
 तब सीता के आँसू पोंछइत उ हुनका से कहलन।।
 "बेटी इ पुस्पक बिमान हए देब - सक्ति सम्पन्न।
 धारन इ न करइअ कबहीं बिधवा आउर बिपन्न।।
 राम मरल रहिमत त तोहरा इ न चढ़इतक कबहीं।
 जीबित हथ एही से ए में बइठल हतऽ अबहीं।।
 नाग बान से मेघनाद हुनका के मुरछित कएलक।
 तोरा मन के बल तोरे ला राबन नाटक रचलक।।
 तू सधबा, सधबे रहबऽ बनलक न अइसन बान।
 हरन करे में होए सक्षम राम - लखन के प्रांन।।
 ओन्ने ताकऽ नभ पथ में उठ रहलक घोर तूफान।
 बिसनु - बाहन के आबे के देबी हए पहचान।।
 देखऽ पाछे आ रहलन ह बिनतापुत्र महान।
 हुनका आगे आगे हतन पबनपुत्र हनुमान।।
 गरुर महाग्यानी हुनका मालूम बिस के उपचार।
 हुनका अएला पर बिस से समझऽ निश्चित उद्धार।।
 तनिके देरी में तू सुनबऽ राम धनुस टंकार।
 आउर सुनबऽ बानरदल के हरखित जय - जयकार।।
 मेघनाद के नाग बान पर बिसनु वाहन भारी।
 छनिक खुसी राबन के मिटतक जगतन तुरत खरारी।।"
 त्रिजटा कहलन "आगे से ए भ्रम में कभी न अइहऽ।
 राबन के माया से मन के कभी न तू भटकइह।।
 बेटी, उ पापी नारी के सुख - साधन समझइअ।
 नारी ला सम्मान प्यार उ कभी न सोंच सकइअ।।

सब दिन नारी के अपमानित कएलक आ कलपएलक।
 उहे कलपऽना हे सीता तोरा लंका लएलक।।
 कतनो माया रचतक ओक्कर होएतक न निस्तार।
 राम बान से निश्चित मानऽ राबन के संहार।।
 चलऽ बइठ के करऽ प्रतीक्षा, गौरीपति के ध्याबऽ।
 पति के जीते ला हुनकरे रात - दिबस गोहराबऽ।।
 देखऽ कइसे तनिके देरी में होइअ उपचार।
 ओकरा बाद तुरन्ते सुनबऽ कपिदल के जयकार।।
 सीता कुछ - कुछ धीरज धरइत होके आसाबान।
 लगलन करे प्रतीक्षा होइअ कखनी उहाँ निदान।।

राम - लखन जी गेलन सुनके चिन्ताकुल लंकेस।
 भे गेलक भयभीत न मन में साहस रहलक सेस।।
 बाकी अहंकार में बल के करइत बहुत बखान।
 इन्द्रजीत आ कुम्भकरन के करइत अति गुनगान।।
 आस्वासन प्रोत्साहन दे भेजलक धूम्राक्ष बलबान।
 बाकी ओकरा मार गिरएलन पबनपुत्र हनुमान।।
 बज्रदंष्ट्र गेलक सेना ले करे राम - संहार।
 महाबली अंगद ओकरा के देलन सहजे मार।।
 गेल अकम्पन मगर समर में छूटल पल में कम्प।
 एक फूँक में पबनपुत्र कएलन ओकरा निस्कम्प।।
 महाबली प्रहस्त मचएलक रन में भारी मार।
 बाकी बली नील के हाथे उ पएलक उद्धार।।
 एक - एक क मरलक जोद्धा तब राबन अकुलाएल।
 अपने भारी सेना लेले समरभूमि में आएल।।
 अति क्रोधित सर बरसा के उ कएलक जुद्ध प्रचंड।
 भाग चलल बानर सेना बादल लेखा हो खंड।।
 रबिसुत अएलन करे लराई घायल होके भगलन।
 अंगद जामबन्त नल एक्को बीर न आगे टिकलन।।
 तब लछुमन अपने आ गेलन भारी जुद्ध मचएलन।
 बाकी ऊहो सक्ति बान से मुरछित होके गिरलन।।

पवनपुत्र दूटलन राबन पर क्रोधित काल प्रमान।
 आउर मुक्का छाती में उ मारलन बज्र समान।।
 सम्हर न पएलक राबन रथ में गिरलक संग्याहीन।
 रुक गेलक छन भर ला ओक्कर रथ होके गतिहीन।।
 मुरछा दूटल तब उ क्रोधित ले के धनुस बिसाल।
 मार - मार बानर सेना के कएलक बहुत बेहाल।।
 तब ओकरा रोके ला राघब अपने आगे अएलन।
 बज्र बान से ध्वजा पताका रथ के काट गिरएलन।।
 देलन बेध अंग सब ओक्कर कटलन धनुस प्रचंड।
 महाबली असहाय भेलक दूटल झूठ घमंड।।
 आतंकित होके भागल ले समरभूमि से प्रान।
 राघब के रन कौसल से भेलक पहिला पहिचान।।
 तन पर लेले घाओ बहुत उ राजमहल में अएलक।
 सत्य वैद के बोला उचित उपचार बहुत करबएलक।।
 देख दसा मन्दोदरी लागल आदर से समझाबे।
 सेस अबहिओ संधि - पंथ लागल पति के बतलाबे।।
 "सीता रोग - मूल लंका ला स्वामी करू बिचार।
 लौटाऊ राघब कन ओकरा इहे हए उपचार।।
 ब्यर्थ न हठ ठानू स्वामी न जन धन हानि कराऊ।
 अपने पंडित ग्यानी हम सब कथी प्रिय समझाऊ।।"
 सुनके पीरा से बेकल राबन के भरकल क्रोध।
 देस काल आ प्रिया सुमुखि के रहल न तनिको बोध।।
 कहलक "जा चुप्पे हमरा उपदेस न केकरो चाही।
 चाही त एक्के बस्तु बस राम - लखन - सिर चाही।।
 राजनीति आ जुद्ध न हए नारी के बस के काम।
 चुप्पे चापे रह के देखऽ घर - दुआर के काम।।"
 एतना कहइत राबन चल गेलक एकान्त भवन में।
 सोंचे लागल कोन नीति अपनाऊ आगे रन में।।
 सोंच समझ जूपाक्ष सचिव के अनुचर भेज बोलएलक।
 कुम्भकरन के जगबाबे के ऊ आदेस सुनएलक।।
 'जइसन आग्या कह मंत्री करे लगलक तइआरी।
 सहजोगी भेलक अनुचर आ खान - पान - भंडारी।।

तरह - तरह के माँस मिठाई पूआ आ पकवान।
 तरह - तरह के आसब सुरभित साजे लगल समान।।
 तरह - तरह के लेप सुगन्धित चन्नन आउर धूप।
 तरह - तरह के पात्र छोट बर चित्रित कला अनूप।।
 भेरी संख पनब आ धौंसा ढोल झाल मिरदंग।
 मुगदर भाला लाठी सोंटा साजल गेलक संग।।
 सब लेके राक्षस दल चललक भारी सोर मचवइत।
 सूतल कुम्भकरन जहमाँ सुख से खरटा भरइत।।
 रख देलक पकवान मिठाई आउर भूँजल माँस।
 आउर भर-भर घइला रखलक सुरभित मदिरा पास।।
 ओकरा बाद जगाबे लागल पीट - पीट के ढोल।
 भेरी संख मृदंग बजाबे लगलक सब जी खोल।।
 ओ से कुछ न भेलक त मुक्का मुगदर से पीटलक।
 आउर लाठी के हूँरा से मारलक, भाला भोंकलक।।
 तइओ न जागल त ठंढ़ा पानी खूब पटा के।
 तरह - तरह से राक्षस दल ओकरा के लगल जगाबे।।
 आखिर बहुत परिस्रम से टूटल राक्षस के नीन।
 मुँह के फार जम्हाई लेलक देखलक राक्षस दीन।।
 आँख घुमएलक एन्ने ओन्ने देखलक बिकट प्रबन्ध।
 भोजन के अम्बार आउर सुंघलक मदिरा के गंध।।
 पुस्पहार चन्दन के देखलक थरिआ बहुत सजाएल।
 आउर कटोरा सब में देखलक लेप भरल मन भाएल।।
 देख टूट परलक भोजन पर आउर भकोसे लागल।
 घइला के घइला मदिरा उप्पर से ढारे लागल।।
 खा पी के तिरपित भेलक तब चन्दन लेप लगएलक।
 पुस्पहार से बाँह कलाई आउर कंठ सजएलक।।
 हो गेलक प्रसन्न त कहलक "सचिब बात बतलावऽ।
 संकट कोन परल राजा पर हमरा के समझावऽ।।
 काँचे नीन जगाबे के माने हम खूब बुझइले।
 भाई राबन पर भारी संकट अनुमान करइले।।"
 हाथ जोर संछेपे में मंत्री सब कहलक बात।
 राबन - राम समर के कारन ओकरा भेलक ग्यात।।

"महाराज अपने रन से घायल होके आएलन ह।
 एही लेल जगाबे ला उ अपने के कहलन ह।।"
 महाबली राबन - बंधु अंगराई ले के उठलक।
 लागल कोनो छोट मोट परबत जीबित हो चललक।।
 अएलक मंत्री साथ बीर झुमइत लंकापति पास।
 हुनका के उ देखलक ब्याकुल चिन्तित आउर उदास।।
 आसन दे सम्मानित कएलन भाई के लंकेस।
 बल के परसंसा कएलन आ देलन मान बिसेस।।
 परसंसा से फूलल मदिरा से उमताएल बीर।
 उत्साहित हो गरजन कएलक होके बहुत अधीर।।
 कहलक "भाई नारी हरन त भेल न उत्तम काम।
 बाकी ए सब से हमरा न रहलक कोनो काम।।
 हम तोहर परजा तोरा आस्रय में इहाँ पलइले।
 राजा ला सिर कटबाबे के निष्ठा धरम रखइले।।
 आग्या द कथी करू तोरा मन लाइक काम।
 जेकरा से कहऽ ओकरे से करू बिकट संग्राम।।"
 राबन कहलक "भाई रन में मारऽ लछुमन - राम।
 इहे हमरा मन के लाइक कर द एगो काम।।"
 'जइसन आग्या कह ओतहीं से समरभूमि के ओर।
 चल देलक उ महाबली सेना के पाछे छोर।।

देख महा बिकराल असुर रघुबर के सेना भागल।
 रोक न पएलक केऊ ओकरा अइसन उ रन मातल।।
 अंगद नील गबाक्ष आउर अंजनीनन्दन सन बीर।
 कुम्भकरन के रोक न पएलन भेलन बहुत अधीर।।
 सेना के हेलइत मथइत उ बढइत आगे चललक।
 राम कहाँ, कहमाँ हए लछुमन, गरजन करइत कहलक।।
 बढ़लन राम तुरत धनु तनले सुन ओक्कर ललकार।
 देखलन आ रहलक ह एगो करिआ भुच्च पहार।।
 देख राम के उ कहलक 'रे तपसी लछुमन राम।
 कुम्भकरन से परतऊ तोरा आज समर में काम।।

भगबो करबे समरभूमि से तइओ आज न छोरम।
 बानर भालू के साथे तोहरा सागर में बोरम।।
 कहलन राम "अरे मद मातल हम्मर बान सम्हाल।
 पेदू भोजन - पान न होइअ सक्ति के पहिचान।।
 रे पहार, पहिले तू कर निद्रा पर कुछ अधिकार।
 समर बीरता के भूमि, न निद्रा के ब्यापार।।"
 सुनके कुम्भकरन क्रोधित फेंकलक भीसन तिरसूल।
 बाकी दिव्य बान से रघुबर काट बनएलन धूल।।
 तब राबन-बन्धु फेंकलक राघब पर गदा प्रचंड।
 ओकरो बान अमोघ मार के कर देलन सतखंड।।
 कुपित असुर तब कपि सेना के तोरे मारे लागल।
 आउर उठा - उठा के ढेला लेखा फेंके लागल।।
 दुरगत देख कपि सेना के राघब बेधलन अंग।
 गेरू के परबत सन भेलक कुम्भकरन के रंग।।
 बाकी रुकल न कुम्भकरन तब क्रोधित हो रघुनाथ।
 दिव्य बान से काट गिरएलन ओक्कर एगो हाथ।।
 भेल रूप बिकराल उ दोसर हाथ उठा के लरलक।
 भीसन मुगदर से बानर सेना के मारे लगलक।।
 तब रघुबीर चला सर कटलन ओक्कर दोसर हाथ।
 आउर दुन्नो गोर काट के कएलन पंगु साथ।।
 पंगु असुर के गरजन से हो चललक बिकल दिगन्त।
 तब रघुनायक काट सीस कर देलन ओक्कर अन्त।।
 माथ फेंक देलन सर-बल से सहजे लंका द्वार।
 आउर देह परल रनभूमि जइसे गिरल पहार।।

सुन भाई के मिरतु दुख से वेकल लंकानाथ।
 रोए आउर पीटे लागल रह - रह छाती माथ।।
 क्रोध आउर पीरा से रह - रह अँइठे ओक्कर प्रान।
 आउर छटपट करइत नोचे रह - रह अप्पन बाल।।
 हाय भाई, अब केकरा बल पर जीतब संग्राम।
 तोरा बिना मरत कइसे हमरा से लछुमन राम।।
 सब दिन देलऽ साथ जीत के उत्सव साथ मनइली।
 आज अकेले कइसे भाई हम तोहरा से होइली।।

हाथ, कट गेलक रन में अब हम्मर दहिना हाथ ।
 तोरा बिना भाई हो रहली केतना आज अनाथ ॥
 हाथ, पितामह अमर होए के बर हो गेलक झूठ ।
 कुम्भकरन के बिना आज हम ठनका गीरल दूँठ ॥”

सुन चाचा के निधन पुत्र सब राबन के बलबान ।
 आउर भाई पार्स्व महोदर समरप्रिय मतिमान ॥
 आके दुख परगट करइत लंकापति के समझएलक ।
 राम - लखन के मारे ला आग्या हित आग्रह कएलक ॥
 देख प्रबल उत्साह पुत्र आ भाई सब के बीर ।
 आँसू पोंछ समर ला आग्या देलक तनिक अधीर ॥
 साज समर ला चललक सेना ले के पार्स्व महोदर ।
 नारान्तक अतिकाय देवान्तक त्रिसिरा भाई सहोदर ॥
 मार मचएलक भारी सब मिल भागल बानर सेना ।
 पट गेलक रनभूमि लोथ से रहल न होस ठेकाना ॥
 तब बानरदल प्रमुख बीर सब आके मोरचा लेलन ।
 असगरे देवान्तक त्रिसिरा से हनुमत भिर गेलन ॥
 लरलन अंगद नारांतक संग आउर महोदर नील ।
 महापार्स्व के साथ रिसभ अतिकाय लखन रन लीन ॥
 छूटे लागल बान दिव्य दुन्नो ओरी से भारी ।
 बरसे लागल वृक्ष सिला जइसे भादो के बारी ॥
 आखिर अंगद मार गिरएलन नारान्तक रनधीर ।
 आउर हनुमत हाथ मरल त्रिसिरा देवान्तक बीर ॥
 देख भतीजा सबके मिरतु महापार्स्व पगलाएल ।
 मार गदा से बानरदल के करे लगलक घाएल ॥
 रिसभ महाबली मारलन ओकरा अइसन मुक्का तान ।
 कटल वृक्ष सन गिरल आउर उर गेलक ओकर प्राण ॥
 तब नीलो उत्साहित होके अप्पन सक्ति देखएलन ।
 सिलाघात से बीर महोदर के उ मार गिरएलन ॥
 राबन सुत अतिकाय रहे सबमें भारी रन बंका ।
 उ लछुमन से जा भिर गेलक बजा समर के डंका ॥
 कहलक “भाग तपस्वी तू न सहबे हम्मर बान ।
 एकरा सहे में न सक्षम हए पथरो के प्राण ॥

लछुमन कहलन "बात बनाबे से न जीतबऽ जुद्ध ।
 एकरा लेल चलाबे परतओ रन में बान प्रबुद्ध ॥
 बरबोला पहिले तू अप्पन ताकत तनिक देखावऽ ।
 ओकरा बाद तपस्वी कोमल से उत्तर तू पावऽ ॥
 सुन क्रोधित अतिकाय चलाबे लागल तीक्ष्ण बान ।
 धूल उरा लछुमन देलन रन कौसल के परमान ॥
 चले लगल दुन्नो ओरी से तब भारी दिव्यास्त्र ।
 देख अचल राक्षस के लछुमन छोरलन झट ब्रह्मास्त्र ॥
 चलल अमोघ बान कतनो उ राक्षस जोर लगएलक ।
 बाकी बान न रुकलक सिर के तन से अल्लग कएलक ॥
 मरल बीर अतिकाय पस्त हो राक्षस सेना भागल ।
 समरभूमि में लछुमन के जय रह - रह गूँजे लागल ॥

समाचार सुत - बध के सुनके आकुल लंकानाथ ।
 फूट - फूट के रोए लागल होके बहुत अनाथ ॥
 हो गेलक उ सुन्न हतासा घेरलक ओकरा घोर ।
 सूझ न परलक राह बिजय के आसा देलक छोर ॥
 एक - एक क महाबली सब हम्मर मारल जाइअ ।
 सत्रु पछ के महाबली में एक्को गो न घटइअ ॥
 लाग रहल हमरा सक्ति के भानु अस्त हो जाएत ।
 लात मार छाती पर हमरा राम सिआ ले जाएत ॥
 चिन्ता से एक्को पल असथिर चित न तनिक रहइअ ।
 तरह - तरह के असगुन रोजे मन कमजोर करइअ ॥
 अब थोरके सेना बच्चल आ हमही दुन्नो बापुत ।
 बच्चल हती समर करेला अबहीं तकले साबुत ॥
 एक्के गो सुत इन्द्रजित के बल पर हए बिस्वास ।
 एक्के गो ओकरे पर निरभर राम - बिजय के आस ॥
 बाकी ओकरा कइसे कहू बेटा समर सजावऽ ।
 इन्द्रबिजेता अपना बल के चमत्कार देखलावऽ ॥
 कहँऊ उलटा भेलक आउर मारल गेलक बीर ।
 पुत्र बिना प्रौढ़ावस्था में कइसे रक्खम धीर ॥

ओकरा मरला पर हम निश्चित अपने रन में जाएम ।
 राम - लखन के मारे ला हम पूरा जोर लगाएम ॥
 अगर कहँऊ हम मार सत्रु के बनली समर बिजेता ।
 पुत्र बिना ले के की करम लंका आउर सीता ॥
 जाले जीअम ताले सालत पुत्र सोक के गाज ।
 मन्दोदरी सुलोचना ओरी तकइत लागत लाज ॥
 अब एगो उहे कुलदीपक बच्चल कुल में सेस ।
 ओकरा बाद महाबली राबन बंस न रहतक सेस ॥
 ए लेल उचित समर में जाऊ अपने पहिले लरे ।
 राम - लखन के मारू चाहे अपने जाऊ मरे ॥
 हमरा मरला पर ओकरा जे उचित बुझाएत करतक ।
 चाहे समर रचाएत चाहे सन्धि राम से करतक ॥
 हम सन्धि न करम प्रतिष्ठा आज चढ़ल हए दाओ ।
 बाकी ओकरा पर न रहतक अइसन कोई दबाओ ॥
 इहे सोँच उ चललक सूते बिहने समर सजाएम ।
 निरनए भेले बिना न घरे लौट समर से आएम ॥

भेल बिहान समर ला जाले सजलक राबन साज ।
 ताले सजित होके पहुँचलन इन्द्रजीत जुबराज ॥
 कहलक पिता समर ला अपने से आदेस मंगइले ।
 देखू अपने ला दुन्नो के कइसे बान्ह लबइले ॥
 “न सुत कुम्भकरन के बध से डिग गेलक बिस्वास ।
 कोनो दिव्य सक्ति निश्चिते हए राघब के पास ॥
 ए लेल अपने जाएम रन में करम जुद्ध घनघोर ।
 आउर राम - सक्ति के तोरम कोनो एगो डोर ॥
 अगर काल गति से हमहू भाई के पथ परं जाएम ।
 त तोरा बल के आस्रय में राक्षसकुल रख जाएम ॥
 मर गेलक अतिकाय त्रिसिरा आउर अक्षकुमार ।
 अब तूही एक्के गो हतऽ बंसदीप आधार ॥
 ए लेल तोरा पर न बेटा कोनो दाओ लगाएम ।
 हो जाएत अनहोनी त हम केकरा मुँह देखलाएम ॥”

इन्द्रजीत गर्बोन्नत कहलक "पिता महा रनबीर ।
 एतने हानि से हो गेली एतना अधिक अधीर ॥
 महाबीर त प्रानो के रन में कुछ न समझइअ ।
 घर परिवार कुटुम सेना के मोल भला की होइअ ॥
 अबहीं एतना बीर सेस आ हम सुरराज विजेता ।
 राम - लखन के जीते ला हम बहुत हे जगत विजेता ॥
 अइसहूँ राजा के रक्षा जन के पहिला काम ।
 सब कुछ नस्टे भेला पर नृप जाए करे संग्राम ॥
 ए लेल हमरा अछइत कइसे अपने रन में जाएम ।
 हम परजा करतब्यसील हम पहिले समर सजाएम ॥"
 बहुत तरहसे समझा के सेना लेले बलवान ।
 समरभूमि के ओर चलल उ जीत सुनिश्चित मान ॥
 अबते - अबते राबनसुत भारी आतंक मचएलक ।
 तीक्ष्ण बान से केतना बानर छन में मार गिरएलक ॥
 देखला के लाघब रथ के लगलक सबतर दउराबे ।
 आ चुन-चुन के प्रमुख बीर पर लगलक तीर चलाबे ॥
 बान अठारह गन्धमादन के आउर मैन्द के सात ।
 बीर नील पर बान नौ आ गज के मारलक पाँच ॥
 एही तरह से अंगद नल आ रिसभ द्विबिद के मार ।
 मथ देलक बानरदल के उ मचलक चीख - पुकार ॥
 तब सुमित्र आगे बढ़ के बरसाबे लगलन बान ।
 कुटिल देबद्रोही हो गेलक झट से अन्तर्धान ॥
 माया रच के उ अदृश्य रह छोरलक एतना तीर ।
 पल भर ला लछुमन हो गेलन बिचलित आउर अधीर ॥
 एही बीच चला देलक उ दिव्य बान ब्रह्मास्त्र ।
 पर गेलन संकट में लछुमन देख बिकट ब्रह्मास्त्र ॥
 बाकी झट हनुमत बढ़ अएलन कहलन लखन कुमार ।
 इ संकट के बेला, मत तू करऽ सोंच बिचार ॥
 करबऽ तू सम्मान त इ ब्रह्मास्त्र प्रान हरतओ ॥
 आउर ई पापी हमरे लेखा तोहरो बन्हतओ ॥
 ए लेल उत्तर में तूहूँ बन्धु ब्रह्मास्त्र चलाबऽ ।
 घायल हए सब वीर, भगा के एकरा, प्रान बचाबऽ ॥

लछुमन दुबिधा में पर के तकलन भाई के ओर ।
हुनके निरनए पर निरभर रह गेल समर के डोर ॥
राघब चुप रहलन त आके कहलन बन्धु बिभीसन ।
“मानऽ बात पबनसुत के आ टालऽ संकट भीसन ॥”
सब कोई के देख बिकल लछुमन कएलन सन्धान ।
टकराएल ब्रह्मास्त्र इन्द्रजित भागल लेके प्रान ॥
जामबन्त पीरा से बेकल कहलन “हे हनुमान ।
जा जल्दी तू गिरि हिमालय पवनपुत्र बलवान ॥
संकट मोचन ओत्ते से लाबऽ औसधि कल्यानी ।
साबर्नी बिसल्यकरनी संजीबनी आ संघानी ॥
कपि सुसेन के मालूम हए ओकर सब बिध उपजोग ।
ओही से पीरा मिटतक आ तन के घाओ निरोग ॥”
हनुमत तुरत साध प्रान के उरलन सिन्धु पार ।
आउर गेलन पहुँच उहाँ जहमाँ उ दिव्य पहार ॥
चीन्ह न पएलन जल्दी में जब औसधि पबनकुमार ।
लगा जोर परबत से लेलन औसधि - सिखर उखार ॥
पबन बेग से आ सुबेल पर देलन सिखर उतारें ।
आउर कहलन “हे सुसेन अब करु उचित उपचार ॥
जाले होएत समर इ परबत एतहीं रहतक बीर ।
अब न केऊ मरतक खाके सत्रु पक्ष के तीर ॥
कपि सुसेन औसधि के तोरलन कूट निकाललन सार ।
ओहीसे घाएल कपिदल के कएलन उ उपचार ॥
औसधि बिसल्य देखलएलक छन में अप्पन तीव्र प्रभाओ ।
बान निकाललक पीरा हरलक आउर भरलक घाओ ॥
साबर्नी के चमत्कार लएलक पहिले सन रंग ।
संघानी के सक्ति से जूटल सब टूटल अंग ॥
संजीबनी से मुरछा भागल तन भेलक बलवान ।
घाएल हारल टूटल कपिदल पएलक जीवन दान ॥

ओन्ने इन्द्रजीत सोंचलक जेतना हमरा दिव्यास्त्र ।
ओकर काट तपस्वी ओतने रखले हए दिव्यास्त्र ॥

जीत न सकम ओकरा चाहे कतनो छोरम बान ।
 ए लेल माँ निकुम्भिला से लेबे चाही बरदान ।।
 जग्य करम हुनका गहबर में देम हबिस आ होम ।
 हो जएतन उ तृप्त आ हुनकर पुलकित होएतक रोम ।।
 तब सत्रु के जीते ला मांगम अइसन बरदान ।
 जे से राक्षस कुल के बचल रह जाएत अभिमान ।।
 इहे सोंच सामग्री भेजलक पूजा ला गहबर में ।
 आउर अपने हो पबित्र गेलक तत्पर हो मन में ।।
 एन्ने बइठल पूजा पर ओन्ने राघब से जाके ।
 कहलन बीर बिभीसन हुनका के सब बात बुझा के ।।
 “मेघनाद गेलक जग करे अगर सफल उ होएतक ।
 केकरो मारे से उ राघब दुनिया में न मरतक ।।
 ए लेल भेजू हमरा साथे हनुमत लखनकुमार ।
 अंगद नील मैन्द साथ कपिदल जे दे के ललकार ।।
 ओकरा जुद्ध करे ला प्रेरित करे छोर के जग्य ।
 उ अधीर क्रोधी आसन से उठत तुरन्ते अग्य ।।”
 राघब आग्या देलन कपिदल चललक गहबर ओर ।
 पहुँच उहाँ पर देलक बाधा कएलक भारी सोर ।।
 इन्द्रजीत ललकार न सहलक उठ के बाहर अएलक ।
 आउर उठा बिसाल धनुस लछुमन से समर रचएलक ।।
 होए लागल जुद्ध भेआनक बरसे लागल बान ।
 दुन्नो बीर जूझ परलन रख तरहत्थी पर प्रान ।।
 बरसे लागल दिव्य अस्त्र आ कटल बान से बान ।
 लागल नभ से टूट रहल टकरा नक्षत्र समान ।।
 दुन्नो घाएल दुन्नो क्रोधित भरल रक्त से देह ।
 दुन्नो अडिग न केकरो मन में तनिक प्रान से नेह ।।
 लछुमन प्रबल पराक्रम कएलन खींच कान तक बान ।
 मेघनाद के सारथी के हर लेलन झटपट प्रान ।।
 कुपित इन्द्रजित बना धनुस के मंडल सन आकार ।
 लागल बान चला के करे कपिदल के संहार ।।
 तब क्रोधित होके लछुमन कटलन ओकर धनु-डोर ।
 आउर मार बान के ओकरा रथ के देलन तोर ।।

तइओ ओकर गति न रुकलक लेके दोसर चाप ।
 लगलक बान चलाबे बानर सेना गेलक काँप ।
 भाग चलल सेना तब लछुमन अप्पन सक्ति समेट ।
 छोरलन झट बरुनास्त्र जे लेलक ओकरा तुरत लपेट ।
 इन्द्रजीत रौद्रास्त्र चला के कएलक तब प्रतिकार ।
 आउर लछुमन पर उ कएलक अग्निबान संधान ।
 छोर लखन सूर्जास्त्र तुरन्ते कर देलन निस्प्रान ।
 उ असुरास्त्र चलएलक लछुमन छोर माहेस्वर बान ।
 भैरव गरजन करइत ओकरा कर देलन बेकाम ।
 तुमुल जुद्ध दिव्यास्त्र जोग से धरती कांपे लागल ।
 आउर दुनो दल केसेना चकित निहारे लागल ।
 लछुमन निरनए कएलन अब न औसर देबे चाही ।
 चला इन्द्र के अस्त्र असुर के जीवन लेबे चाही ।
 इहे सोँच चढ़एल धनु पर लखन बीर ऐन्द्रास्त्र ।
 ओन्ने इन्द्रजीत सोँचलक फेरू फेंकू ब्रह्मास्त्र ।
 बाकी एकरा पहिले लछुमन के उ भीसन बान ।
 काट गिरएल माथा आउर हरलक ओकर प्राण ।
 गर्बोनन्नत सिर राबनसुत के भू पर लोटे लागल ।
 आउर हाहाकार करइत राक्षस के सेना भागल ।
 इन्द्र खुसी से उम्मत हो बरसाबे लगलन नीर ।
 “धन्न - धन्न सौमित्र महाबली धन्न - धन्न तू बीर ।
 तोरा कारन मिटल बीर अपमान पराजय डंस ।
 इन्द्रबिजेता के तू मारलऽ हे रघुकुल अबतंस ।”
 समरभूमि में गूँजे लागल लछुमन के जयकार ।
 नभ से गिरलक फूल कि जइसे बरसे जल के धार ।
 देवसत्रु के निधन भेल देओता सब हरखित भेलन ।
 कटल हाथ दुनो राबन के, साँस चैन के लेलन ।
 पीरा से बेकल लछुमन के तन पर फेरइत हाथ ।
 कपि सुसेन से कहलन स्नेहिल बानी में रघुनाथ ।
 “वीर, बिकल हथ लखनलाल औसधि के लेप लगाऊ ।
 समरबिजेता भाई के सब पीरा तुरत मेटाऊ ।
 ले गेलन सुसेन सादर कएलन तत्पर उपचार ।

सुख के नीन लखन सुतलन राघब के प्रान अधार ।
 बिहने खनी प्रसन्न स्वस्थ अपना के अनुभव कएलन ।।
 भाई के लग आके सादर हुनकर बन्दन कएलन ।
 अति प्रसन्न रघुनाथ स्नेह से हुनका हृदय लगएलन ।।
 आउर अद्भुत रनकौसल के खूब प्रसंसा कएलन ।
 लछुमन खुस उत्साहित मारल गेलक भारी कंटक ।।
 अब तनिके में हो जाएत राबन - जय - पथ निस्कंटक ।।

समाचार पहुँचल कि मारल गेलन राजकुमार ।
 सऊँसे लंका में मच गेलक दुख से हाहाकार ।।
 राबन मुरछित भेलक पीरा से माता बेहाल ।
 सती सुलोचना पर गिर गेलक इन्द्र बज्र बिकराल ।।
 संग्या सुन्न उ प्रतिमा भेलक जे में बचल परान ।
 न रोए न बोले - सूने न केकरो पहचान ।।
 मन्दोदरी गाए के लेका छाती फार रंभाए ।
 ओकरा सूझ परे न कइसे अप्पन प्रान गमाए ।।
 ओकर आँसू गोस्सा बन अपना स्वामी पर फूटल ।
 जेकरा चलते गोदी खाली, चुरी बहू के फूटल ।।
 “एगो नारी के चलते पापी सबके कटबा के ।
 सूतल राजमहल में सुख से पग में तेल लगा के ।।
 हाय केकरा ला अब जीअम के कहतक अब माए ।
 कहिआ तक ले रोएम जइसे बिन बछरा के गाए ।।”
 पागल सन मन्दोदरी भेलक सेस न रहलक ग्यान ।
 पुत्र लेल रह - रह के छछने ओकर पीरित प्रान ।।
 सुलोचना के दसा भिन्न उ बिना स्वामी के साथ ।
 जीए ला तइआर न भेलक होके दुखी अनाथ ।।
 बार-बार दोहराबे हम न दुख से रोएम गाएम ।
 बीर पत्नी हम बीर पति के साथे जमपुर जाएम ।।
 चिता सजा द हम अपने से ओ में आग लगा के ।
 पति के पास खुसी से जाएम सब सिंगार सजा के ।।
 रोके लोग न माने दुखिनी अस्त-ब्यस्त बेचैन ।
 केतना जल्दी तन छूटे जे मिले प्रान के चैन ।।

राबन कुछ न बोले भीतर ओझा लखरी लेखा ।
 रह - रह प्रान धुँआए आउर छिटके चिनगी लेखा ।।
 पीरा आ गोस्सा से आकुल कुंठित भेलक ग्यान ।
 दुख के सक्ति अमोघ दीन होइअ पंडित बलवान ।।
 ओकरा कुछ न सूझल त उ निरनए कएलक नीच ।
 सीता के कारन इ भेलक मारम ओकरे खींच ।।
 चले चहलक उन्मादी सन उठा खडग बिकराल ।
 दुरमति लेइअ घेर पुरुस के जब आ जाइअ काल ।।
 केकरो रोकला से न रुकलक न मानलक समझाओन ।
 तब सुपास्व मंत्री कहलक बानी ओकरा मन भाओन ।।
 महाराज अपने के इ करनी न तनिक सोभइअ ।
 खिसिआएल बिल्ली अइसहीं ब्याकुल खंभ नोचइअ ।।
 केकरो पर गोस्सा आउर केकरो पर झारे जाइले ।
 तइओ अपना के पंडित आ ग्यानी बीर कहइले ।।
 दोस कथी सीता के ए में की उ साथे अएलन ?
 आउर लंका के खातिर पाछे से संकट लएलन ?
 अपने लइली आग बनइली ओकरा मनि मुकुट के ।
 अब की भेलक जे जा रहली मारे नाथ उचट के ।।
 साहस हए त जा के अपने राम लखन के मारू ।
 सुत के जे मारलक ओकरे पर जा के क्रोध उतारू ।।
 एगो त चोरी कइली दोसर मारम नारी के ।
 महाराज इतिहास लिखल जाएत अपजस भारी के ।।
 ए लेल अपने सोंचू राजन कुंठित तेज जगाऊ ।
 महाबली अपने जगजेता सत्रु मार भगाऊ ।।
 हम सब अबहीं बच्चल हती आ बच्चल कुछ सेना ।
 देबेला सब राक्षस तत्पर अप्पन खून - पसेना ।।
 सक्ति के सूरज न डुबतक जाले अपने सेस ।
 जागू - जागू समर सजाऊ महाबली लंकेस ।।”
 मत सुपास्व के लागल जइसे चिन्नी मिलल कुनैन ।
 क्रोध मलेरिआ हरलक राबन के मन आएल चैन ।।
 उ लागल तइआरी करे लेलक धनुस बिसाल ।
 दिव्य कबच पेन्हलक आ रथ पर धएलक सब्बे बान ।।

गदा परिधि तोमर आ सक्ति रखलक सस्त्र प्रचंड ।
 चक्र,सूल, मूसल फँरसा जे करे सत्रु के खंड ॥
 गरबित सेना के सम्बोधित करइत कहलक बीर ।
 “मारले बिना न रन से लौटम आज लखन रघुबीर ॥
 कुम्भकरन आ इन्द्रजीत के मरला से न दीन ।
 भेली ह हम आउर न भेलक ह हम्मर बल छीन ॥
 हम असगरे जीते में सक्षम हती तिरलोक ।
 हम रन ला पूरा उत्साहित मन में तनिक न सोक ॥
 चलऽ बीर सब बानर सेना यदि तोहर आहार ।
 त बन्धु राघव लछुमन पर हए हम्मर अधिकार ॥
 देखऽ चलके आज समर में हम्मर कौसल बीर ।
 आज सुमेरु लेखा मथ के सागर करम अधीर ॥”
 चललक राक्षस सेना रोए लगलक स्वान सिआर ।
 उलका गिरे लागल आउर उठल सिन्धु में ज्वार ॥
 रन मद मातल राबन बढ़लक जइसे सरिता धार ।
 तोर चलइअ बिन बाधा के उम्मत कूल कगार ॥
 भागे लागल बानर सेना अंगद आगे अएलन ।
 भीसन गदा चला के ओकर सादर स्वागत कएलन ॥
 बाकी हुनका ठेलइत राबन पहुँचल लछुमन पास ।
 सुत हत्यारा के देखइत लेलक उ भीसन साँस ॥
 उमरल क्रोध आँख से ओकरा बरसे लागल आग ।
 कहलक सुत हत्यारा कहमाँ जएबे रन से भाग ॥
 लछुमन कहलन “अरे चोर तू ब्यर्थ न गाल बजा ।
 उठा धनुस आ सक्ति भर तू अप्पन बान चला ॥”
 उत्तर में गरजन करइत राबन लेके असुरास्त्र ।
 लछुमन ओरी फेंकलक मारे ला भीसन दिब्यास्त्र ॥
 बाकी लछुमन अग्निबान से क के ओकरा छार ।
 बज्र बान से राबन के रथचालक देलन मार ॥
 देलन काट धनुस ओकर आ घोरा मार गिरएलन ।
 जाले उ सम्हले ताले कुछ सेनो मार भगएलन ॥
 एतने में राबन के दृष्टि परल भाई पर जाके ।
 उठा चलएलक भीसन सक्ति गोस्ता में उफना के ॥

पापी तूँही सबके जर में आज न तोहरा छोरम ।
 जहमाँ गेलक कुम्भकरन ओतहीं तोहरा के भेजम ॥
 देख बिभीसन पर संकट आगे बढ़ लखनकुमार ।
 सह लेलन अपना छाती पर ओ सक्ति के बार ॥
 सक्ति घँस गेलक छाती में उ मुरछित हो गेलन ।
 कटल पेर लेखा सीधे उ घरती पर गिर गेलन ॥
 देख भाई के दसा क्रोध से करइत बिकट हुंकार ।
 आगे बढ़ रघुनाएक कएलन राबन पर प्रहार ॥
 उत्तेजित अतिसय राघव अप्पन बिसाल धनु तान ।
 सर - बरसा से कर देलन लंकापति के हैरान ॥
 अंग - अंग में घाओ लागल विफल भेल दिव्यास्त्र ।
 काम न आएल अस्त्र सस्त्र आ झूठ भेल ब्रह्मास्त्र ॥
 आखिर भाग चलल राबन होके घाएल बेचैन ।
 ओकरा पाछे - पाछे भागल ओकर सभ्मे सैन ॥
 ताले एन्ने खरा घेर के लछुमन के सब बीर ।
 आउर प्रान बचाबे ला सोचइत कोनो तदबीर ॥
 जामबन्त कहलन सुसेन तू जल्दी दवा बनाबऽ ।
 सक्ति निकाले पीरा हरे ला तू लेप लगाबऽ ॥
 लछुमन के तन रक्त नेहाएल देख राम बेचैन ।
 दुख से आकुल - ब्याकुल भरल हुनकर दुन्नो नैन ॥
 हाय, भाई केकरा ला राबन के रन में मारम ।
 आउर अपना सुख - दुख के बोझा केकरा पर डालम ॥
 दुखिआ माई सुमित्रा के कइसे ढारस बन्हबाएम ।
 बहु उरमिला के आगे हम कोन मुँह ले जाएम ॥
 पुछतन भरत कि साथे गेलऽ बन में दुन्नो भाई ।
 त कहेना असगरे अएलऽ लौट अबध रघुराई ॥
 होएतक भेंट सिया से त पहिले पुछतन उ नाथ ।
 हम्मर लहुरा देबर कहमाँ छोरली हे रघुनाथ ॥
 राजपाट, सुख - सुबिधा जग में बारम्बार मिलइअ ।
 बाकी लछुमन अइसन भाई एक्के बेर मिलइअ ॥
 भाई बिभीसन, जहमाँ जाएम ओतहीं निन्दा पाएम ।
 पतनी खातिर भाई गमइली इ कइसे झुठलाएम ॥

लछुमन बिना जगत में हमर जीवन हए बेकार ।
राबन के मारिए के पाएम कोन सुखद संसार ॥
ए लेल भाई प्रान तेआगम आज लखन के साथ ।
भाई रहलक भुजा सबल अब टूटल हमर हाथ ॥
दुख हए तोरा राजतिलक के प्रान न भेलक पूरा ।
आउर सीता से भेंटे के इच्छा रहल अधूरा ॥
बन्धु रबिसुत तूँहू सेना लेके लौटऽ बीर ।
अब एतहीं लछुमन के साथे तेजम अधम सरीर ॥
तू सब हमरा लेल भाई सक्ति से जादे कएलऽ ।
लेले प्रान हथेली पर सब साथे समर रचएलऽ ॥
बाकी अब इ सब हो गेलक निष्फल आ बेकार ।
देखऽ धरती पर परल हए भाई प्रान अधार ॥”
कहलन बीर सुसेन नाथ साहस से लीऊ काम ।
लछुमन न मरलन ह तन में सेस बचल हए प्रान ॥
तन के कान्ति मलिन न हिनकर गरम हाथ आ गोर ।
मन्द - मन्द धरकइअ छाती रक्तिम नख के कोर ॥
अबहीं सक्ति निकाल बक्ष से हम प्रलेप करइले ।
आउर मुरछा तोरे ला संजीबनी झट सुंघबइले ॥”
जोर लगा खिंचलन सुसेन उ धँसल सक्ति प्रचंड ।
लछुमन के छाती के कएले रहे जे दूगो खंड ॥
ओकरा बाद लहू रोके ला देलन गाढ़ प्रलेप ।
आउर नाक सहारे देलन संजीबनी के सेंक ॥
धीरे - धीरे लखनलाल के मुरछा टूटे लागल ।
रुकल रक्त के धार प्रान में उस्मा आवे लागल ॥
हरिखित राम प्यार से भाई के सोहराबे लगलन ।
“लौटल हमर प्रान” स्नेह से गदगद होके कहलन ॥
जामबन्त तोरा कारन औसधि के भेलक ग्यान ॥
पवनपुत्र तू ले अएलऽ तू हतऽ प्रान समान ॥
कपि सुसेन तोरा कारन हम भाई बापस पइली ।
तोरे तीनो कारन ए संकट से मुक्ति पइली ॥
तूँही स परिजन पुरजन तूँही स प्रान अधार ।
तोरे सब के नेह - छोह हमर जीवन संसार ॥

डबडब लोर आँख में आएल मुँह पर मृदु मुस्कान ।
 के थाहत केतना हरखित ए छन रघुकुल दिनमान ॥
 मेघ घटा के फार निकलइत निरमल चन्द्र समान ।
 सब कोई के मुँह पर खेले लागल मृदु मुस्कान ॥
 “लछुमन जी उठलन” कपिल में उमरल हरख निनाद ।
 लंका तक जा के बन गेलक राबन लेल बिसाद ॥
 कहलन राम सुसेन करऽ सब घाएल के उपचार ।
 सब हमरा ला ओतने प्रिय हथ जेतना लखनकुमार ॥
 लछुमन से कहलन “भाई तू कल करिहऽ बिस्राम ।
 आउर हम राबन के साथे करम घोर संग्राम ॥”
 लछुमन कहलन भइआ “हमरा देखे स्वस्थ चहइछ ।
 आउर सीता भाभी के पाबे के चाह रखइछ ॥
 बन्धु बिभीसन के देबे के हओ लंका के राज ।
 त राबन के मार प्रतिग्या पूरा करऽ आज ॥”
 राघव कहलन “भाई तोहर इच्छा अबस पुराएम ।
 भाग न जाएत उ रन से त निश्चित मार गिराएम ॥”

भेल बिहान समर ला आएल हो राबन तइआर ।
 रथ पर रखले तरह - तरह के दिव्य बान हथिआर ॥
 सेना भारी सजले आउर ढोल मृदंग बजबइत ।
 रन मद से ब्याकुल होके उ गरजन तरजन करइत ॥
 कपि सब चललन गदा बृक्ष आ पत्थर लेले हाथ ।
 हुनका आगे - आगे चललन धनुधारी रघुनाथ ॥
 राबन देख राम के लागल दिव्य बान बरसाबे ।
 आउर तरह - तरह के माया से हुनका भरमाबे ॥
 बाकी राम अबिचलित कटइत रहलन ओकर बान ।
 राबन जोन - जोन सर छोरे राघव करथ निदान ॥
 कुपित सूल लंकापति लेलक राघव लेलन सक्ति ।
 उ ब्रह्मा के सुमिरन कएलक इ संकर के भक्ति ॥
 राघव प्रबल पराक्रम कके मारलन एतना बान ।
 संकट में पर गेलक राबन भेलक लहू लुहान ॥

ऊहो मार बान राघव के छत बिक्षत कर देलक ।
 बाकी उत्साही राघव के सक्ति छीन न भेलक ।।
 राम बेध देलन तब ओकर एक - एक सब अंग ।
 आउर गर्बोन्नत रथ के कर देलन उ ध्वज भंग ।।
 राबन संग्याहीन बिबस हो रथ में गिरल अचेत ।
 राम समझ लेलन कि राबन आएल रन में खेत ।।
 बाकी चतुर सारथी ओकर रथ के तुरत भगा के ।
 ले गलक अपना स्वामी के रन से दूर हटा के ।।
 गुंज उठल बानर दल के किलकारी आ जयकार ।
 राक्षस सब के लागल टूटल सिर पर बिकट पहार ।।
 ओन्ने राबन के मुरछा टूटल त बिगरे लागल ।
 “अरे मूढ़ सारथी तू कहेना लएले इहाँ अभागल ।।
 अरे नीच तू हमरा जस पर देले पानी फेर ।
 अधम अहितकारी तोरा के अभी करइले ढेर ।।”
 सारथी हाथ जोर के कहलक “हे राक्षस कुल केत ।
 समरभूमि में हो गेली जब अपने बिकल अचेत ।।
 आउर रन लाइक न रहली जब हम अनुभव कइली ।
 सारथी के करतब्य समझ के इहमाँ लेके अइली ।।
 अपने के रक्षा ला कइली अनजाने अपराध ।
 हमरा मन में रहे न तनिको हित बिरोध के साध ।।
 गलती अनजाने हो गेलक स्वामी छमा मंगइले ।
 आग्या दू त रनभूमि ओरी रथ के घुमबइले ।।”
 तुस्ट भेल राबन कहलक “तू कएलऽ ठीके काम ।
 अब ले चलऽ रथ के जहमाँ हए उ तपसी राम ।।
 ओकरा मारले बिना न सारथी बापस जाएम आज ।
 बिना अस्त कएले न मानम सीता के सुख - साज ।।”
 राबन के आग्या से प्रेरित सारथी रथ लौटा के ।
 कर देलक रथ खरा समरभूमि में तत्पर आ के ।।
 एन्ने राघव सोचलन ढलइत जा रहलक दिनमान ।
 हम परतिग्या बद्ध आज ढाहब राबन के मान ।।
 ए लेल आँख मून ओतहीं उ पल भर ध्यान लगएलन ।
 आबऽ हे आदित्य देव उ मन में इच्छा कएलन ।।

करे लगलन तन्मय हो आदित्यहृदय के जाप ।
 राबन बध ला मांगे लगलन भानू सक्ति अमाप ॥
 पढ़इत - पढ़इत सबिता सक्ति तन में दीपे लागल ।
 आउर राबन के मारे ला इच्छा उत्कट जागल ॥
 खोललन आँख त देखलन राबन करइत हए सिंहनाद ।
 ओकरा पाछे गूंज रहल हए सेना के जयनाद ॥
 राबन के सिंहनाद राम के मन में उमरल क्रोध ।
 राबन के मारे से अल्लग रहल न कोनो बोध ॥
 जोग सक्ति से कएलन तन मन आउर किरिआ एक ।
 माँ जगदम्मा के सुनिरन कर धएलन मन में टेक ॥
 ओकरा बाद रोस से कहलन "अरे अधम लंकेस ।
 आज मार के तोहरा पापी करम समर के सेस ॥"
 राबन कहलक "अरे तपस्वी इहे प्रन हमरो हए ।
 तोहर बध कइए के हमरो बापस जाए के हए ॥
 ले सम्हार हम्मर सक्ति तोहरा के अभी बधइले ।
 इन्द्रजीत आ कुम्भकरन के आत्मा तृप करइले ॥
 कह के छोरलक राबन एगो सक्ति बिकट प्रचंड ।
 बाकी बज्रबान से राघब कर देलन सत खंड ॥
 आउर सरपाकार बान के अइसन झरी लगएलन ।
 लंकापति के बेध - बेध के अतिसय बिचलित कएलन ॥
 क्रोधित लंकापति चलएलक बहुत बिकट असुरास्त्र ।
 राघब ओकरा कुंठित कएलन चला अग्नि के अस्त्र ॥
 मचल घोर संग्राम - चकित सब कोई देखे लागल ।
 दिव्य अस्त्र टकरा - टकरा उल्का सन टूटे लागल ॥
 दुन्नो बीर अपरिमित दुन्नो में बल बीज अपार ।
 बाकी राम जुबा उत्साहित हुनकर प्रबल प्रहार ॥
 धीरे - धीरे राबन के बल ठंढ़ा होए लागल ।
 आउर बीस परइत राघब के फुरती बढ़े लागल ॥
 जान समय उपयुक्त उ कएलन ब्रम्ह अस्त्र संधान ।
 रिसि अगस्त राबन के मारे ला देलन जे दान ॥
 इन्द्र लेल निरमित कएलन र ब्रह्माजी उ बान ।
 उ अमोघ सक्षम लेबे में तीन लोक के प्रान ॥

क्रोधित राघव जइसहीं कएलन ओकर सन्धान ।
 काँप उठल अनजाने ओकरा देख असुर के प्रान ॥
 चलल बान फुँफकारइत सनसन करइत काल समान ।
 दुन्नो दल असतब्ध चकित पत्थर के मुरत समान ॥
 राबन रोके ला ओकरा छोरलक कए गो दिव्यास्त्र ।
 बाकी सब जर के मिट गेलक रुकल न उ ब्रम्हास्त्र ॥
 कबच फार छाती के बेधलक उ बिसधारी बान ।
 आउर पल में हर लेलक ओ अभिभानी के प्रान ॥
 छा गेलक सब ओर त्रास राक्षस भय से अबसान्न ।
 राघव से लरे ला बढ़लक बीर न केऊ अन्न ॥
 जै निनाद से कपिदल लागल बाताबरन गुंजाबे ॥
 उछल कूद आ नाच- नाच के जै के खुसी मनाबे ॥
 बीर बिभीसन के छुटल तब एकाएक रोआई ।
 हाय आज समर में सुतलन जगत बिजेता भाई ॥
 लंका के सूरज हो गेलऽ हाय साँच में अस्त ।
 केकरा से अब पोसन पाएत लंका रन से ध्वस्त ॥
 जरल झोंकरल लंका कइसे बनतक सोना नगरी ।
 ग्यान कला कबिता के रस के खाली भेलक गगरी ॥

समाचार लंका पहुँचल उमरल पीरा के ज्वार ।
 बिलख - बिलख के रोए लागल सब राक्षस परिवार ॥
 मन्दोदरी मुरछित हो गिरलक बस्त्र केस छितराएल ।
 लोटे लागल धरती पर उ जइसे पंछी घाएल ॥
 हाय नाथ , कहमाँ गेलऽ तू हम्मर प्रान समीर ।
 देखऽ कइसे लोटइत हए तोहर प्रिया अधीर ॥
 केतनो समझइली न मानलऽ सीता ला बउरएलऽ ।
 ओकरा साथे सरबनास के घर लंका में लएलऽ ॥
 देव दनुज गन्धर्व न टिकलक कहिओ तोरा आगे ।
 बाकी तू न टिकलऽ स्वामी एगो तपसी आगे ॥
 नील कुसुम सन रंग तरासल परबत अइसन देह ।
 बान बिद्ध हो लोटल भू पर लागल ओ में खेह ॥

हम बिधवा एस्वर्जहीन अब के हमरा के पूछत ।
 सब दिन सुख भोगली अब कइसे बाकी जीवन बीतत । । ”
 उठ के मन्दोदरी कनइत चललक रनभूमि ओर ।
 जहमाँ राबन के तन परल तोर प्रान के डोर । ।
 पाछे - पाछे रोइत - कनइत राबन के सब नारी ।
 रनभूमि के ओरी चललक बेकल बिबस बेचारी । ।
 एतने में नाती - बध सुन के अएलन माल्यवान ।
 बिधवा सब के रोदन सुनके धीर न रहलक प्रान । ।
 रोकलन मन्दोदरी के आउर कहलन उ समझा के ।
 नतपुतोह सुनऽ तनिका तू अप्पन सोक भुलाके । ।
 हम रोकली तूँहूँ समेझएलऽ बाकी बीर न मानलक ।
 जे कएलक ओकर फल बेटी दइबगति से पएलक । ।
 ए में न तोहर हिस्सा न हम्मर नीति बिधान ।
 मेट भला के सकलक जग में बिधि के लिखल बिधान । ।
 राजा मरलक भेल पराजय राज राम के भेलक ।
 तू जे कहबऽ सेही निरनए बचल लोग अब लेतक । ।
 तू चाहऽ त बच्चल सेना लेके समर सजइले ।
 तू पटरानी गद्दी तोहर, चलके जुद्ध करइले । ।
 अगर न इच्छा तोहर त हम इ आदेस चहइले ।
 राम निकट जा साधु बिभीसन से कुछ बात करइले । ।
 सुनली ह ओकरा पहिलहीं देलन राघब राज ।
 पता न बिजय घरी में अखनी कथी सोंचतन आज । ।
 अगर उ देतन राज बिभीसन के त ओकरा लाएम ।
 तोहरा इच्छा से लंका के गद्दी पर बइठाएम । ।
 उहे जोरतक टूटल - फूटल कुटुम मित्र परिवार ।
 उहे एकमात्र दीपक बाकी अब सेस अन्हार । ।
 जरल मरल टूटल रन से लंका हए दुखी निरास ।
 पता न केतना दिन में होएत एकर उचित बिकास । ।
 नीतिवान उ राघब के आस्रय जा अच्छा कएलक ।
 कम से कम राक्षस कुल के एगो दीपक त बचलक । ।
 उ सतबादी भूत भविष्यत बर्तमान के ग्याता ।
 मृदुभासी राक्षस कुल के उ एकमात्र दुखत्राता । ।

जदपि उ सतपथ पर तइओ बन्धुद्रोही जग कहतक ।
 ए डर से उ बिना बोलएले कभी न इहमाँ आएतक ।।
 अपना के अपराधी मानत तोरा दुख के कारन ।
 तोरा आगे खरा न होएत करत न लाज निवारन ।।
 ए लेल तू आग्या द त ओकरा सादर ले आऊ ।
 लंका के आँसू पोँछे ला ओन्ने हाथ बढ़ाऊ ।।”
 नाना के सब बात मन्दोदरी के कुछ निम्नन लागल ।
 धीरे - धीरे क्रोध बिभीसन पर से ओकर भागल ।।
 आँसू पोँछइत कहलक “नाना अपने नीतिबान ।
 अब कथी लरम राघव से अस्त भेल दिनमान ।।
 जाऊ बीर बिभीसन देबर के सादर ले आऊ ।
 लंका ला इ रात अन्हरिआ चन्द्रोदय करबाऊ ।।”
 बापस गेलन राजमहल में रानी बिकल अधीर ।
 आउर माल्यवान चल देलन जहाँ बिभीसन बीर ।।

राघव कहइत रहथ बिभीसन से “जा सोक मेटाबऽ ।
 नारी सबके समझाबऽ आ दुख में धीर बन्हाबऽ ।।
 करऽ दाह - संस्कार भाई के द तू पिंडा - पानी ।
 उ बेदग्य बीर ग्यानी जदपि रहे अभिमानी ।।
 कहलन बीर बिभीसन राघव रहलक राबन भाई ।
 बाकी ओकरा अबगुने से रहलक सदा मिताई ।।
 मिथ्याचारी, क्रूर - हृदय न धरम - करम के ग्यान ।
 नारी - चोर लोकपीरक कइसे दीऊ सम्मान ।।”
 कहलन राम “मरल से करबऽ कथी बैर बिरोध ।
 आउर कथी गुन अबगुन के करबऽ बन्धु सोध ।।
 तू अपना धरम पर चलऽ ओकरा गुरुजन मान ।
 पिंडा - पानी से करऽ तू मरल के सम्मान ।।”

माल्यवान कुछ जन के साथे आ कहलन “महराज ।
 हमें राबन के नाना जाचक बन के अइली आज ।।
 लंका मरल जरल स्वामी दुख सागर में हए डूबल ।
 आज अनाथ बनल अपने के पगतल में हए टूटल ।।

अपने बीर बिजेता लंका अब अपने के राज ।
 एकरा बारे में कुछ सोंचू रामचन्द्र महाराज ॥”
 कहलन राम “स्नेह अपने हम सादर गौर लगइले ।
 आसन ग्रहन करु हम अपने के सम्मान करइले ॥
 लंका के इ सर्बनास न हए हम्मर मनमानी ।
 एकरा ला दोसी अपने के मृत नाती अभिमानी ॥
 उ सीता के हरलक हमरा जुद्ध निमंत्रन देलक ।
 लंका के ए महानास के ऊहे अगुआ भेलक ॥
 ओकर फल उ भोगलक अपना बेटा बन्धु समेत ।
 समरभूमि में ओन्ने परल जइसे पत्थर रेत ॥
 सब के कथी अनादर ओकरा करु अग्नि के दान ।
 माटी के तन माटी में मिल पा जएतक सम्मान ॥
 रहल राज, त बीर बिभीसन के दे चुकली दान ।
 जब इ हमरा कन अएलन र मांगे अस्त्रय दान ॥
 जाथ करथ पिडा पानी नारी सब के समझाबथ ।
 बिधवा बच्चा आउर बूढ़ के दुख सनेह से पाटथ ॥
 ओकरा बाद उचित विधि से हम राजतिलक करबाएम ।
 ओकरे बाद इहाँ से नाना अबधपुरी हम जाएम ॥”
 सुन के माल्यवान कहलन “हे राम सील के खान ।
 तोरा सन दुनिया में देखली न हम पुरुस महान ॥
 मृदुभासी, नीतिग्य आउर त्यागी तोहरा सन बीर ।
 देब दनुज गन्धर्व लोक में देखली न रघुबीर ॥
 निरलोभी, करतव्यपरायन आउर छोट पर नेह ।
 तू साक्षात् प्रेम आ ममता धएले मानुस देह ॥
 तोरा सन दानी न देखली अरज राज धन धान ।
 दे देलऽ सुग्रीब बिभीसन के हे महिमावान ॥
 हे पुरुसोत्तम, धीरमति प्रेमी मानबतापूजक ।
 तू देओता भगवान तूहीं तू हतऽ मंगल सूचक ॥
 महाबीर तोहरा सदगुन के सादर नमन करइले ।
 बानर देब असुर नर पूजित प्रभु परनाम करइले ॥”
 माल्यवान सादर कर जोरइत चललन सब के साथ ।
 साधु बिभीसन कहलन हमरा की आग्या रघुनाथ ?

कहलन राम, "बन्धु ! सीता के देखे ला मन आकुल ।
 कइसन हो गेलन उ दुख से, आउर केतना ब्याकुल ।।
 ए लेल चलऽ साथ अखनिए प्रमदा बन देखलाबऽ ।
 सीता-ससि ला मन-चकोर आकुल तू दरस कराबऽ ।।"
 "जइसन आग्या" कह लंकापति राघव साथे चललन ।
 हुनका पाछे लछुमन अंगद किस्किन्धोपति बढ़लन ।।
 रोक न पएलन अपना के तब जामबन्त हनुमान ।
 ऊहो दुन्नो पाछे लगलन छाया सन गतिमान ।।
 कपिदल अलगे ब्याकुल सीता देवी के दरसन ला ।
 असुर बिजेता राम प्रिया के पावन पद परसे ला ।।

एनो ओन्ने देखइत राघव जब प्रमदा बन अएलन ।
 उजरल बन पर हनुमत-करनी सबतर अंकित पएलन ।।
 "सीता केन्ने?" प्रहरी से पुछलन राक्षस कुल केत ।
 आदर से असोक तरु ओरी उ कएलक संकेत ।।
 आगे बढ़लन रघुबर धीरे लंकापति पछुअएलन ।
 हुनका पाछे धीरे से सब कोई ठिठके लगलन ।।
 तरु असोक तर सीता के बइठल देखलन रघुनाथ ।
 दुब्बर - पातर तन मलीन उ धएले सिर पर हाथ ।।
 रूप आग के कान्ति ढँकले परत राख के छीन ।
 गरहन लागल ससि हो जाइअ जइसे सोभाहीन ।।
 जग के ध्यान न तनिको अपने पीरा में भुतलाएल ।
 पता न राम-बिजय के हुनका, एतना मन में घाएल ।।
 देख सिया के दसा राम उर उमरल दुख के ज्वार ।
 हाय हमरा अछइत सीता भेलन अति लाचार ।।
 "सीता प्रान प्रिया !" आकुल स्वर में रघुनाथ पुकारलन ।
 आउर बढ़ के आलिंगन ला अप्पन हाथ पसारलन ।।
 उठा दृष्टि तकलन सीता बाकी रह गेलन मौन ।
 उमरल प्यार मगर हो गेलक दोसर छन उ मौन ।।
 कहँऊ फेन असुरी माया, उमरल मन में आसंका ।
 इहाँ न कोई ठौर ठेकाना इ मायापुर लंका ।।

"सीता ! हम रघुनाथ प्रानधन तोहर तनिका बोलऽ ।
 प्रानप्रिया असमंजस तोरऽ तनिका सा तू डोलऽ ।।
 हम तोहरा लग खरा हती न हए माया न सपना ।
 कहेला तोहर मन कुंठित हए कहेला बन्धन अतना ?
 राबन पापी के हम मारली करऽ तू बिस्वास ।
 उठ के आबऽ प्रानप्रिया तू तनिका हमरा पास ।।
 अब राजा हथ बीर बिभीसन सतबादी आ न्याई ।
 छू न सकइअ तोहर छाया अब राबन अन्याई ।।
 तोरे प्यार बनल बैदेही हमरा धनु के बान ।
 ओही से हम हरली देबी राक्षस सब के प्रान ।।
 पीरा आउर निरासा के अब बीतल दुखमय काल ।
 प्रेम दृष्टि से ताकऽ तनिका खोलऽ नैन बिसाल ।।"
 स्रबन पंथ से घुसल नेह उर में बनलक रसधार ।
 तन में पसर - पसर बन गेलक उ गंगा के धार ।।
 डूबे लागल ग्यान तर्क बिसरल बुद्धि - ब्यापार ।
 तरलाइत कर देलक मन के प्रिय के मधुर पुकार ।।
 नेह सनल बिस्वास भरल प्रिय के बानी पहिचान ।
 फटल कुहासा संका के उमरल सीता के प्रान ।।
 "हाय, नाथ ! अपने के देखे ला इ नैन झुराएल ।
 इहे बानी सुने ला मन रहलक नित अकुलाएल ।।
 बिसरा चुकली र ए जीवन में मिले के आस ।
 अमरित दरसन से हो रहलक तिरपित प्रास-पिआस ।।"
 कहइत - कहइत सीता बढ़ के गिरे पग पर लगलन ।
 बाकी बीचे में बढ़ राघब आलिंगन में लेलन ।।
 फूटल दुख के ज्वार लोर बन सीता सुबुक-सुबुक के ।
 रोए लगलन स्वामी के छाती से बहुत चिपट के ।।
 बहलक आँसू के धारा भींजल राघब के छाती ।
 नेह भिंजाबे लागल हुनका प्रान दीप के बाती ।।
 रोए लगलन रामो एतना बहलक लोर असेस ।
 भींज गेल सीता के रुखल - सुखल सुन्दर केस ।।
 टूटल बाँध हृदय के हिचकी ले ले रोए लगलन ।
 आउर सीता के तन कोमल थर - थर काँपे लगलन ।।

लागल स्नेह - समाधि आउर देस काल बिसराएल ।
 तृप्त न होए प्यार मिलन से एतना रहे भुखाएल ।।
 पति-पत्नी के मिलन-कमल खिललक आँसू के सर में ।
 गन्ध सुकोमल भर देलक देखेबाला के मन में ।।
 नेह चान्दनी के बरसा से सब के हृदय जुराएल ।
 अइसन प्रेम न दुनिया में केउ देखल आ सुन पाएल ।।
 गम्मे -गम्मे थमल ज्वार तन - मन के भेलक ग्यान ।
 आस - पास के सुधि आएल आ संगी जन के ध्यान ।।
 राम लजाएल पाछे तकलन केकरो पास न पंएलन ।
 दूर खरा देखलन सबके त आउरो बहुत लजएलन ।।
 होके सहज प्रसन्न तुरंत कहलन देबि तनी ओन्ने ।
 देखऽ लंकापति किस्किन्धापति लखन तकइछन एन्ने ।।
 चल के दरसन द हुनका सबके तू हृदय जुराबऽ ।
 आज बिजय के खुसी तू ओ में अप्पन खुसी मिलाबऽ ।।
 तोहरा खातिर इ सब कएलन ह राबन से जुद्ध ।
 निस्छल पाबन इ सब हतन बैस्वानर सन सुद्ध ।।
 सब हथ मित्र परम बिस्वासी बिद्या बुद्धि निदान ।
 बल आउर बुद्धि में सबके अलग - अलग पहिचान ।।”
 कहइत सीता के संग लेले रघुबर आगे अएलन ।
 आउर बारी - बारी से सबसे परिचय करबएलन ।।
 हिलमिल के भेलन प्रसन्न सब तब कहलन रघुबीर ।
 “चलऽ सिबिर में उहमाँ होएतन कपिदल बहुत अधीर ।।”
 तब लंकापति कहलन “राघब सिया न जएतन साथ ।
 न अपहृता, न बन्दिनी अब इ, पूज्य अतिथि हथ नाथ ।।
 ए लेल अपने जाऊ अखनी ए सब जन के संग ।
 महारानी अएतन बिहने सादर राजोचित ढंग ।।”
 मान बात लंकापति के प्रभु कपिदल साथे गेलन ।
 आउर बिभीसन सिया - सुरक्षा अपना हाथे लेलन ।
 तुरत बदललन प्रहरी सब के अप्पन सुभट लगएलन ।
 आउर प्रिय बेहवार कुसल दासी उत्तम भेजबएलन ।।
 ऊँच नीच सबके समझा कहलन “सब चौकस रहिहऽ ।
 अखनी से केउ आवे त बिस्वास न तनिको करिहऽ ।।

चिरई आ चुरमुन्नी तक जाए न सीता पास ।
 रामो आबथ त न करिहऽ हुनका पर बिस्वास ।।”
 उ भयभीत कि कोनो हारल आउर अति निरास ।
 सीता के मारे के चेस्टा करतक असुर हतास ।।
 हो सन्तुष्ट सुरक्षा से जदपि गेलन लंकेस ।
 बाकी नीन न परलक हुनका चिन्ता भेल न सेस ।।
 प्रातःकाल बोला रक्षक के कुसल सनेसा लेलन ।
 ओकरा बाद पत्नी के साथे सीता के लग गेलन ।।
 कहबएलन “देबी अब अपने मञ्जन पूजन करू ।
 लइली ह बस्तर आभूसन अपने धारन करू ।।
 पूज्य अतिथि अपने हम्मर हम सादर ले के जाएम ।
 रामप्रिया के राम लगुन हम अपने से पहुँचाएम ।।”
 सीता कहलन “लंकापति हम अइली जोना रूप ।
 स्वामी लग जाएम इहमाँ से लेले ऊहे रूप ।।
 लेकिन अपने के इच्छा के करइत हम सम्मान ।
 मञ्जन पूजन कर लेइले पर बदलम न परिधान ।।”
 “जे देबी के इच्छा ऊहे हमरा ला आदेस ।
 धन्न भाग लंका पर कएलन किरपा राम असेस ।।”
 गेलन अपने सिबिका लाबे सज्जन सरल बिभीसन ।
 सेबक स लौटा ले गेलक बस्तर आ आभूषन ।।
 तइआरी ला दउर - धूप अपने करइत लंकेस ।
 पद गरिमा आ मरजादा के ध्यान न रखलन सेस ।।
 लागे बेटी के उ करइत हतन बिकल बिदाई ।
 कइसे गरिमा से जाए जे होए न तनिक हँसाई ।।
 आएल सिबिका सोना मढ़ल लागल पिअर ओहार ।
 ले आके रखलक सीता लग ओकरा चार कहार ।।
 सिबिका पर बइठइत रोए लगलन जनककुमारी ।
 लागल नइहर से जा रहलन ह पीहर सुकुमारी ।।
 आगे - आगे रक्षकदल पाछे सीता के डोली ।
 फूल खील बिखरबइत चललक राक्षस जन के टोली ।।
 हुनका पाछे अपने चललन रथारूढ़ लंकेस ।
 साथे - साथे चललन मंत्री आउर सुहृद बिसेस ।।

ओकरा पाछे सेबक लेले चललन दही मिठाई ।
 गबइत चारन भाट चलल बिरुदाबली अति सुखदाई ।।
 गिरि सुबेल पर अएलन सब जहमाँ राघब दरबार ।
 सादर हाथ उठा सब कएलन रघुबर के जयकार ।।
 थम गेलक सब लोग उतरलन रथ से बीर बिभीसन ।
 डोली बढबा आगे अएलन जहाँ राम रघुभूसन ।।
 सीता के उतार साथ लएलन राघब के आगे ।
 हाथ जोर राघब से लगलन सादर आग्या मांगे ।।
 “हे राघब सीता बेटी के हम सादर सौंपइले ।
 लंका जे कएलक ओकरा ला दिल से छमा मंगइले ।।
 जनकदुलारी के दुख लंका ला कलंक के टीका ।
 छमादान कर एकरा कर दू प्रभु सनेह के टीका ।।
 अपने परम उदार दयालु सील सक्ति अबतार ।
 अपने के कारन मानबता के भेलक उद्धार ।।
 लंका के चाही अपने के मधुर मित्रता प्यार ।
 हम अपने के भक्त अकिंचन हमरा करू स्वीकार ।।
 अपने के आस्रय के छाया में हम फूलब फलब ।
 लंका आउर अबध के हम दू देह एक मन करब ।।”
 राघब सादर उठ सीता के कएलन अंगीकार ।
 दुन्नो दल हरसित हो कएलक बार - बार जयकार ।।
 किस्किन्धापति कहलन राघब से “गिरि सुबेल पर साथ ।
 अपने दुन्नो बइठू तनिका हे बन्धु रघुनाथ ।।
 लछुमन आबऽ खरा होअऽ तनिक धनुस तू लेके ।
 दरसन करे द हमरा सब के अब तिरपित होके ।।
 देखऽ हम्मर कपि सेना दरसन ला हए अकुलाएल ।
 एक साथ तीनो के छबि देखे ला हए अगुताएल ।।
 अइसन समय न आएत फेनू जब सीता रघुनाथ ।
 लछुमन, लंकापति, हम, हनुमत कपिदल मिलतन साथ ।।
 अइसने छन से हे राघब सुभ इतिहास बनइअ ।
 राक्षस, बानर आ मानब के तन - मन एक करइअ ।।
 सिआ हरन दुखदाई काजर बनलक आज डिठौना ।
 ए से बढ के समय न आएत सुन्दर सुखद सलौना ।।”

राघब लछुमन हँसइत हुनकर इच्छा पूरन कएलन ।
 दुस्रो दल दरसन कएलन आ अप्पन नैन जुरएलन ।।
 राघब कहलन लछुमन तू लंकापति के संग चल जा ।
 आउर जामबन्त, किस्किन्धापति, हनुमत के तू लेजा ।।
 बिधि - बिधान से जा के करऽ हिनकर तू अभिसेक ।
 तूँही हम्मर प्रतिनिधि बन के रक्खऽ हम्मर टेक ।।
 "जइसन आग्या" कह हरखित सब चललन लंका ओरी ।
 सबके मन में बन्हलन राघब नेह - छोह के डोरी ।।

❀ ॐ गणेशाय नमः ❀

राजतिलक कांड

बन्दना

हे मंगलमय महादेव हे आसुतोस सुखरासी ।
राजमहल के दाता भोला अपने गिरिवर बासी ।।
हे त्रिपुरारी दयासिन्धु जोगेस्वर हे तिरलोचन ।
हे नटराज कृपाल त्र्यम्बक् जन - जन के दुख मोचन ।।
हे गिरिजापति महामहेश्वर भोला दीनदयाल ।
तोहर पदतल हम्मर आस्रय दानी परम कृपाल ।।
निम्न समय देखाबऽ अब प्रभु निम्न समय देखाबऽ ।
लरइत - लरइत रन में थकली जीवन समर जिताबऽ ।।
राजवंस में जनम भेल बाकी सुख कभी न पइली ।
समय परिस्थिति से जूझे में तन-मन के बिखरइली ।।
तोरा सब दिन मन में रखली तोरे बल कुछ कइली ।
चाहे चाप उठइली चाहे सत्रु पराजित कइली ।।
तोहरा से दानी के लमहर, तोहरा से बलवान ।
भांग - धतूरा पर जे रीझे अइसन के भगवान ।।
सोना - चानी के दुनिया सोना - चानी पर रीझे ।
तू ही एगो औढ़र भोला बेलपत्र पर रीझे ।।
पत्थर के घर तोहर आउर हिम के कठिन बिछौना ।
देख बिपत में दुनिया के तू हो जाइछऽ मृगछौना ।।
पाप ताप से तप्त धरा पर सुख सान्ती बरसाबऽ ।
रामराज के हम्मर सपना प्रभु साकार बनाबऽ ।।
हे सिब संकर हम्मर जीवन मंगल भवन बना द ।
निम्न समय देखा दऽ भोला निम्न समय देखा दऽ ।।

बीतल राबन रात तम, उदित भेल रबि राम ।
सुखद बिभीसन कमल से, पूजित सीता राम ।।

बोला बिभीसनके रघुपति मोहक बानी में कहलन ।
बीत रहल बनबास अबधि अब भरत बेआकुल होएतन ।।

ए लेल अब जाए के आग्या चाही हे लंकेस ।
 सुख से रहू प्रजा के पालू मंगल करथ महेस ॥”
 तब लंकापति हाथ जोर बिहबल बानी में कहलन ।
 अपना हिरदय के सरधा रघुपति के पद पर रखलन ॥
 “हे रघुनाथ बिना मंगले अपने हमरा सब देली ।
 आस्रयहीन भिखारी से लंका के सासक भेली ॥
 आज नाथ हम अपना मन से मांगे लेल चहइले ।
 बाकी मांगे से पहिले प्रभु के आदेस चहइले ॥”
 हँस के कहलन राम, “मित्र तू मन के हौंस मिटा लऽ ।
 जे हमरा से संभव बन्धु से हमरा से पा लऽ ॥”
 लंकापति कहलन “एके गो इच्छा प्रभु पुरा दू ।
 राजसभा में पग रख के लंका के हृदय जुरा दू ॥
 केबट लेखा हमहू अपने के पग धोए चहइले ।
 आउर ओही जल से घर के पाबन करे चहइले ॥
 अपने परम उदार सदा आस्रित पर नेह रखइले ।
 एही से बन ढीठ आज अइसन बरदान मंगइले ॥”
 राघव मन में सोँचे लगलन अजब धरम - संकट हए ।
 एक तरफ परतिग्या अप्पन दोसर तरफ भगत हए ॥
 आखिर निरनए कएलन लंकापति के रहतक बात ।
 अब बनबास खतम हए प्रन में परतक न ब्याघात ॥
 कहलन “तोरा सुख में बन्धु अप्पन खुसी मानइले ।
 ए लेल हम तोहर आग्रह सादर स्वीकार करइले ॥”
 राम लखन सीता के लएलन राजभवन लंकेस ।
 आसन पर बइठएलन कएलन स्वागत बात बिसेस ॥
 सिन्धु के पाबन जल से हुनकर पद कमल पखारलन ।
 छींट-छींट ओ जल के सबतर कन कन पाबन कएलन ॥
 हँस के कहलन राम, “बन्धु रखली अपने के बात ।
 इच्छा कइली पूर्ण प्रेम से बिदा करू अब तात ॥”
 तब लंकापति लगलन करे सबके प्रेम बिदाई ।
 दे उपहार जथोचित कएलन सम्मानित सब भाई ॥
 प्रभु के रुख अनुकूल देख सीता के पाँओ पूजलन ।
 मूल्यवान उपहार बहुत आगे में ला के रखलन ॥

ओकरा बाद निवेदित कएलन “प्रभु चढ़ पुष्पक यान ।
 अबधपुरी ला इहमाँ से अपने करू प्रस्थान ॥
 अपने के पहुँचावे ला हम साथे चले चहइले ।
 एही बहाने अबधपुरी के दरसन करे चहइले ॥
 कइसन हए उ पुन्यभूमि जे जनलक लछुमन राम ।
 एक बेर ओ माटी के, इच्छा हए, करू प्रनाम ॥
 सीता, लछुमन, किस्किन्धापति अंगद आ हनुमान ।
 साथ - साथ सब कोइ चलतन चढ़ के एही बिमान ॥
 सेना जूथपति के साथे सेतु - पंथ से आएत ।
 हम सब धीरे - धीरे चलम जादे न पछुआएत ॥”
 बात मान लंकापति के चढ़लन रघुनाथ बिमान ।
 मन्द - मन्द उर चलल गगन में सुन्दर सुखद बिमान ॥
 सागर पार प्रभु जब अएलन तब बिमान रोकबएलन ।
 महादेब के पूजा करे रामेस्वर लग चललन ॥
 बिधिबत पूजा कएलन उहमाँ भगती भर रघुनाथ ।
 आउर हाथ जोर के कहलन सादर “भोलानाथ ॥
 तोहरा किरपा से त्रिपुरारी, राबन मारल गेलक ।
 अहंकार औगुन के कारन प्राप्त पतन के भेलक ॥
 न हम्मर कोनो पुरुसारथ न बल बिक्रम छमता ।
 इ सब तोहर किरपा भोला आउर तोहर ममता ॥”
 एही तरह से बार - बार टेकलन संभु पद माथ ।
 उहमाँ से चल के किस्किन्धा अएलन सीतानाथ ॥
 रबिसुत के आग्रह पर हुनको राजभवन में गेलन ।
 स्वागत - पूजन के हुनकरो इच्छा पूरन कएलन ॥
 देख बिभीसन के सरधा रबिसुत के उमरल भाओ ।
 ऊहो आसन पर बइठा के धोएलन प्रभु के पाँओ ॥
 सब के प्रति किरतग्य राम कपिदल से मिले अएलन ।
 अप्पन, प्रेम जतावे ला हुनका सम्बोधित कएलन ॥
 कहलन “हे सुख - दुख के साथी कपि समूह बलबान ।
 अपने सब के बल पर ढाहली राबन के अभिमान ॥
 सीता के उद्धार भेल नारी के बढ़लक मान ।
 अन्याई आतंकी के डूबल आखिर दिनमान ॥

बल के अहंकार में जे करतक नारी - अपमान ।
 ओकर दसा जगत में होएतक राबन बली समान ॥
 रहतन सत्ता में सुग्रीब बिभीसन सन मतिमान ।
 कभी न होएतक नारी जाती के कतहूँ अपमान ॥
 अब उतर से दक्खिन तक मानबता एक समान ।
 नर, बानर, राक्षस कहला केऊ पाएत न अपमान ॥
 रहत एक संस्कृति आ एक्के जीवन मूल्य महान ।
 सब कोई कहलाएत एक्के मनु के प्रिय सन्तान ॥
 भेद मिटे नर - बानर राक्षस के, हम सेतु बनइले ।
 साखी हथ दिनमान न हम मानब में भेद करइले ॥
 सब मिल के सुभ करम करु आपस में प्रेम बढ़ाऊ ।
 भेद - द्रोह सत्रु मानब के एकरा मार भगाऊ ॥
 रूप, रंग आ जाति बरन के भेद - कल्पना दूसित ।
 हो न सकइअ एकरा से मानबता कभी बिभूसित ॥
 ए लेल ममता - समता के सब मिल के जोत जगाऊ ।
 उब्भर - खाबर जीवन के मेहनत से सरल बनाऊ ॥
 प्रेम मनुजता के पोसक हए एकर न उपमान ।
 जीवन में उप्पर उठे ला प्रेमे हए सोपान ॥
 ए लेल प्रेम करु धरती से, घर, समाज, अपना से ।
 प्रेम जगत से, प्रेम ईस से, प्रेम करु सपना से ॥
 अपने सबके बार - बार हम साधुबाद करइले ।
 आउर ले इआद हिरदय में सादर बिदा मंगइले ॥”
 देख राम के सील - नेह आ समता भरल बिचार ।
 भाबाकुल बानर दल कएलक बार - बार जयकार ॥
 बिदा मांग सबसे राघव पुष्पक बिमान पर चढलन ।
 अपना दलबल के साथे उ रिसि अगस्त कन अएलन ॥
 सरधा से रिसिबर के पद छू कहलन सिरी रघुनाथ ।
 अपने के किरपा से राबन के मारली रिसिनाथ ॥
 अपने देली दिव्य अस्त्र आ संजम ग्यान बिबेक ।
 ओही से रन जितली मुनिबर रहलक हम्मर टेक ॥
 अब दीऊ आसीस कि रखके अप्पन निरमल ग्यान ।
 करमनिष्ठ बनके हम करु परजा के कल्याण ॥”

गदगद स्वर में रिसिबर कहलन "हे रघुकुल दिनमान ।
 तोहरा में धरती पएलक हं नरता के प्रतिमान ।।
 सील - सक्ति मरजादा के तू हतऽ उज्ज्वल रूप ।
 तोहर जीबन दुनिया ला जइसे पूजा के धूप ।।
 हम्मर सुभ आसीस सदा हए राघब तोहरा साथ ।
 तोरा अइसन राज जग में मिलतक न रघुनाथ ।।"
 ले रिसि के आसीस राम हरखित उहमाँ से चललन ।
 अत्रि - भरद्वाज के आस्रम होइत आगे बढ़लन ।।
 अत्रि आ अनुसूया के बैदेही छूलन पाँओ ।
 "अमर सोहागिन होअऽ" स्वर में उमरल स्नेहिल भाओ ।।
 उहमाँ से चल के रघुबर अएलन केबट के गाँओ ।
 बोलबएलन केबट के, टिकलन एक घरी ओ ठाँओ ।।
 केबट-पतनी से मंगबा के धूप - दीप, फल - फूल ।
 सीता गंगा मइआ पूजलन सुख मंगलन समतूल ।।
 "मइआ तोहरा किरपा से हम लौट खुसी से अइली ।
 अन्त भला त सब भल भइआ मूल न तनिक गमइली ।।"
 क के गंगा पार राम जब सृंगबेरपुर अएलन ।
 भेज अनुज के प्रिय निसादपति के सादर बोलबएलन ।।
 गला - गला मिललन दुन्नो हरखित निसाद नरनाथ ।
 लघु जन ला केतना अपनापन रखले हथ रघुनाथ ।।
 कहलन "खेम कुसल बतलाऊ, बन्धु प्रिया समेत ।
 कइसे दिन बीतल जंगल में धीरज - धरम निकेत ।।
 कहलन राघब "बन्धु न पूछऽ परल बिपत्ति भारी ।
 बरा कस्ट से जीबित अइली साथ अनुज ले नारी ।।"
 तनिके में गुह से राघब सब बिपत्ति कथा बतलएलन ।
 आउर अपना सखा लोगसे हुनकर मिलन करएलन ।।
 सिआ-हरन, लछुमन संकट से गुह जेतना दुख पएलन ।
 राम-बिजय, सेतुबन्धन पर ओतने हरस मनएलन ।।
 छनभर में जुट केबट के दल मनभर नचलक गएलक ।
 अएलन बन से राम, खुसी में उत्सव खूब मनएलक ।।
 उहमाँ से चललन राघब त कएलन सोँच - बिचार ।
 एकाएक नगर में पहुँचल उचित न हए आचार ।।

सोच - समझ कुछ पहिलही पुस्पक के ऊ रोकबएलन ।
 एक घरी उहमाँ ठहरे ला सबसे आग्रह कएलन ।।
 बोला पवनसुत के अलग कहलन राघब मतिमान ।
 "हाल अजोध्या के जाने के इच्छा हए हनुमान ।।
 बिप्र रूप धर के तू जा, आउर नगर घूम के आबऽ ।
 जनता के रुख आउर भरत के इच्छा तू बतलाबऽ ।।
 ओकरे बाद करम निरनए कि करु अबध में बास ।
 आ कि छोर भरत ला गद्दी बन में करु निबास ।।"
 "जइसन इच्छा" कहइत हनुमत राजधानी में अएलन ।
 आउर घूम फिर के सबतर हालत पता लगएलन ।।
 आ गेलन थोरके देरी में घूमघाम हनुमान ।
 आउर बतएलन भीतर - बाहर के गति मतिमान ।।
 "चित्रकूट से लौट भरत बसलन जा नन्दीग्राम ।
 ओतहीं ब्याकुल समय कटइछन कहिआ अएतन राम ।।
 सत्ता के पंचाग्नि में तप रहलन भरत तपस्वी ।
 आउर राज सम्हारले हतन छोटका भाई मनस्वी ।।
 चरनपादुका राजमुकुट सिंहासन पर रक्खल हए ।
 ओकरे निच्चा साधु भरत के मृगछाला बिच्छल हए ।।
 जनसमूह ब्याकुल अपने ला पीरा सहल न जाइअ ।
 परजा से राजा तक सब अपने के राह तकइअ ।।
 सऊँसे नगर उदास न कतहूँ राग - रंग के बात ।
 बस अपने ला बिकल प्रतीक्षा सबतर देखली नाथ ।।
 हम्मर बात मान के पहिले चलू भरत के पास ।
 हुनके हालत देख सचाई के होएतक बिस्बाव ।।"
 सुनके दसा भरत के राघब बिकल उहाँ से चललन ।
 आउर खबर पेठाबे ला हनुमत के आगे भेजलन ।।
 संजीवन सन सन्देशा हनुमत हुनका ला लएलन ।
 सुनके भरत तुरत अगबानी ला भाई के अएलन ।।
 "हाए केतना राह तकइली भाई प्रान अधार ।
 कहइत हुनका पग पर गिरलन बिह्वल भरत कुमार ।।"
 एक - एक दिन जुग सन बीतल पीरा भेल पहार ।
 अपने बिना ब्यर्थ भेल भइआ सुख - सुबिधा - संसार ।।

तन से सब करतव्य निभइली मन अपने कन रखली ।
 चउदह बरिस राजसुख के हम कारागार समझली ॥
 अनुभव भेलक कइसे बिरही के जीवन डहकइअ ।
 आउर नेह बिना सत्ता के अमरित बिस हो जाइअ ॥
 बहुत दंड सहली भइआ अब अप्पन राज सम्हारू ।
 खाली कृपा दृष्टि से हमरा ओरी तनिक निहारू ॥”
 बिह्वल राम भाई के आतुर होके हृदय लगएलन ।
 आउर भरत भाबाकुल हुनका छाती से सट गेएलन ॥
 रोए लगलन दुन्नो भाई थरथर काँपल गात ।
 जइसे ओस भार से कोमल पत्ता जाइअ काँप ॥
 आखिर भेलन सान्त भरत भाभी के लगलन गोर ।
 भाभी के दुख सोच - सोच के ढर - ढर ढरकल लोर ॥
 लछुमन छूलन पाँओ भाई के भरत अंक में भरलन ।
 भाभो के दुख मन में कौंधल उ बिहबल हो अएलन ॥
 असथिर भेला पर रघुबर अप्पन सब सखा बोला के ।
 बन्धु भरत से मिलबएलन हुनकर परिचय बतला के ॥
 रामसखा के सादर कएलन साधु भरत सम्मान ।
 बहुत - बहुत परसंसा कएलन दुख के साथी जान ॥
 अनुचर के बोलबा के ओकरा तुरत अजोध्या भेजलन ।
 “खबर जनाबऽ जाके जल्दी राम सिया घर अएलन ॥
 राघब के स्वागत ला जल्दी तइआरी करबाबऽ ।
 भाओ भरल कोसल के हिरदय पगतल में बिछबाबऽ ॥”

घर अएलन सीता राम अबध में सोर मचल ।
 दरसन ला दउरल लोग कि जइसे नद उमरल ॥
 जे जहमाँ जइसे ओतही से तइसहीं भाग चलल ।
 दरसन के आकुलता में स्वागत के सुध बिसरल ॥
 केऊ भेलक खरा द्वार पर केऊ चढ़ल अटारी ।
 धक्का - धुक्की में केऊ पिछरल केऊ बढल अगारी ॥
 एही बीच पहुँचलन रथ पर भरत सहित रघुनाथ ।
 स्वागत के उत्तर में सादर जोरले अप्पन हाथ ॥

बरसे लागल फूल - खील होए लागल जैकार ।
 उमरल जनसमूह जइसे सागर में उठलक ज्वार ॥
 आगे रथ पाछे जनता चलइत साथे चल गेल ।
 राजमहल के सिंहद्वार तक अदमी के पथ भेल ॥
 गुरु बसिष्ठ आ सत्रोहन बढ़के अगबानी कएलन ।
 हुनका पाछे सचिव सभासद सेनापति सब अएलन ॥
 हुनका पाछे राजपुरोहित आरती थाल सजएले ।
 अच्छत चन्नन रोरी लेले चउमुख दीप जरएले ॥
 सबके पीछे तीनो माई बिह्वल आ बेचैन ।
 सुख के आँसू से भरले अएलन सब स्नेहिल नैन ॥
 राम - लखन - सीता गुरुजन के लागे लगलन गोर ।
 देख मिलन के दृश्य नैन में भरलक सबके लोर ॥
 माथा चूम पुतोह - पुत्र के माई आरती कएलन ।
 आँसू के मोती बिखरबइत सबके भीतर लएलन ॥
 राजमहल में भीतर गेलन राम सहित परिवार ।
 बाहर गुंजइत रह गेलक जनता के जै जै कार ॥
 केकईनन्दन रामसखा सबके साथे ले गेलन ।
 स्वागत आ बिस्राम बेबस्था ला निरदेसन देलन ॥
 नेहा - धोआ के भोजन कके सब कएलन बिस्राम ।
 सँझिआ में गोष्ठी बइठल मिललन सबसे सुखधाम ॥
 कौसिल्या आतुर रह - रह सीता के हृदय लगाबथ ।
 आउर सुमित्रा लछुमन के छाती के घाओ निहारथ ॥
 भरत आउर सत्रोहन उत्सुक पूछथ बन के बात ।
 कइसे सिया हरन भेलक आ भेलक असुर निपात ॥
 केकई सोचथ हमरे कारन सब कोई दुख पएलन ।
 सोना सन जीवन जंगल में चउदह बरस गमएलन ॥
 पढ़ लेलन राघव छन भर में हुनका मुँह के भाओ ।
 आउर कहे लगलन छुअइत बिहबल हुनकर पाँओ ॥
 माई तोहरे कारन हम सब दुनिया में जस पइली ।
 राबन अइसन अत्याचारी के जमलोक पेठइली ॥
 तू अपजस के मूल न मइआ मत मानऽ अपराध ।
 तू जगमंगल के कारन तोहर हए नेह अगाध ॥

बचल अबहिँओ तोरा मन में तनिको ग्लानि माए ।
 भूलऽ ओकरा के अखनी से तू गंगा आ गाए ।।”
 राम बचन सुन गदगद केकई हुनका हृदय लगएलन ।
 “बेटा तू साँचो महान” कह के उ रोए लगलन ।।
 अल्लग गुमसुम खम्हा धएले उरमिल सोंचथ बात ।
 प्रिय के चरन छुए ला कखनी आएत सुखमय रात ।।
 उठे पलक लछुमन के ओन्ने बाकी नजर घुमा लथ ।
 कइसे ज्वार सम्हारब सुख के सोंच न तनिको पावथ ।।
 सुख-दुख कहइत सुनइत में आखिर रजनी आ गेलक ।
 खुसियाली में दीप जरल दीपोत्सव सन हो गेलक ।।
 बीत गेल दुख के दिन बाउर रात सोहागिन अएलक ।
 दुख से सुखल रघुकुल पर ससि सुधा सुखद वरसएलक ।।
 सुख के नीन भरत सुतलन मांडवी के चिन्ता मेटल ।
 संन्यासी पति के सुख - सपना आखिर बापस भेंटल ।।
 लछुमन आ उरमिल्ला के लागे तनी गो रात ।
 रह - हर उमरे ब्यथा प्यार के ओरिआए न बात ।।
 टूटल बान्ह ब्यथा के बहलक बन आँसू के धार ।
 दुन्नो सती - तपस्वी रोकथ रुके न बाकी प्यार ।।
 हिचकी थमे न लोर उरमिला के दुब्बर तन काँपे ।
 आकुल मन रह - रह उपलाए जब गहराई नापे ।।
 आलिंगन में ले लछुमन सोहराबे लगलन केस ।
 पुचकारे लगलन पतनी के दे अनुराग बिसेस ।।
 उमर - बरस के जइसे आखिर बादल होइअ सान्त ।
 तइसे उरमिल्ला के पीरा भेलक आखिर सान्त ।
 उगलक नेह चान्दनी हँसलक मुक्त हृदय आकास ।
 बिरह अन्हरिया भाग चलल जब देखलक उदित प्रकास ।।
 हँसइत बतिआइत में बीतल बाकी बच्चल रात ।
 रघुकुल ला अरुनोदय लेले आएल सुखमय प्रात ।।

गुरु से लेके राय भरत तब राजसभा बोलबएलन ।
 हाथ जोर के नम्र बचन में ऊ अनुरोध सुनएलन ।।

“चउदह बरिस तपस्या कइली कोसल राज जोगइली ।
 भाई के परतीक्षा में हम गिन-गिन दिवस बितइली ॥
 अपने सब सहजोगी बनली सत्रोहन के साथ ।
 मिलजुल के रक्षा कइली आ ऊँचा रखली माथ ॥
 अब अपने सबसे सादर हम अति अनुरोध करइले ।
 भइआ राज सम्हारथ हम एकरा से मुक्ति चहइले ॥
 अपने सब अनुरोध - करु प्रभु सिंहासन स्वीकारथ ।
 हम सब अनुगत प्रजा, राम अब राजा बन के पालथ ॥”
 कहलक सभा एक स्वर से इ उत्तम हए प्रस्ताओ ।
 राम करथ सम्मान मान एकरा जन - जन के भाओ ॥
 गुरु कहलन “रघुनाथ न अब हए मीनमेख के बात ।
 सब जन के इहे इच्छा तू रखऽ भरत के बात ॥”
 उठ के कहलन राम “प्रजा के आग्या सीस धरइले ।
 जनता के सुख ला सिंहासन हम स्वीकार करइले ॥”
 सभा भवन में गूँज उठल सिरी रामचन्द्र के जय हो ।
 परजा सुख सान्ती पाबे रघुबर के जस अक्षय हो ॥
 राजपुरोहित तिथि निकाललन लगन घरी बतलएलन ।
 भरत बेबस्था के सब बोझा मंत्री के सिर धएलन ॥
 जुटे लगल समान आउर होए लागल बेहबार ।
 नेओता जाए लागल सबतर मित्र कुटुम सरदार ॥
 बिधि-बिधान के साथ समय पर उत्सव गेल मनाएल ।
 गुरु कर से रघुबर के गेलक राजमुकुट पहिनाएल ॥
 दिव्य भानु चिन्हांकित सुन्दर सोना मढ़ल सिंहासन ।
 हीरा मोती जरल आउर निरमित जेपर कमलासन ॥
 राम बिराजलन सिंहासन पर साथे सीता सोभित ।
 चौर उठएलन आप भरत त जनता हो गेल हरखित ॥
 प्रहरी लछुमन आ सत्रोहन दहिना बायाँ भेलन ।
 रिसिगन संख बजएलन जब गुरु तिलक भाल पर देलन ॥
 बाजल ढोल, मृदंग, झाल कन - कन गुंजित हो गेलक ।
 एतना फूल बरसलक सऊँसे सभागार पट गेलक ॥
 उत्सव भेल समाप्त राम तब देओता घर में गेलन ।
 तेजरासी कुल देओता रबि के सादर सीस झुकएलन ॥

बाहर आके छूलन सादर माई सब के गोर ।
 सुख से बिहबल माई सबके भरल आँख में लोर ॥
 एकरा बाद गुरु के पाँओ छूलन चारो भाई ।
 गुरु देलन आसीस कि जुग - जुग जीअऽ हो सुखदाई ॥
 सचिव सभासद परजा सब के जथाजोग परनाम ।
 हँस - हँस के सादर स्वीकारलन परजावत्सल राम ॥
 राजतिलक के गहमा - गहमी भेलक आखिर अन्त ।
 सम्मानित हो - हो घर गेलन मित्र कुटुम सामन्त ॥

एक रोज लंकापति कहलन कपिपति से तब बात ।
 राजतिलक हो गेलक प्रभु के लौटू अब घर तात ॥
 बहुत दिवस अएला हो गेलक पता न कोनो हाल ।
 की जानी के बिनले होएतक कइसन - कइसन जाल ॥
 बाहर - भीतर छेद बहुत आ सत्रु - मित्र फेंटाएल ।
 केकरो निस्था सही आउर केकरो निस्था भरमाएल ॥
 जुद्ध - दाह आहत लंका के भारी लचर अबस्था ।
 अन - पानी के कम्मी आ दुरबल सब तरफ बेबस्था ॥
 मन्त्री सब पर छोर राज रघुनाथ प्रेमबस अइली ।
 गेली भूल उहाँ के चिन्ता अइसन इहाँ भुलइली ॥
 सक्ति-केन्द्र के जब अनुपस्थित स्वार्थी लोग देखइअ ।
 सत्ता पलटे ला रोजे कोनो उपतंत रचइअ ॥
 राजा बिना राज हो जाइअ दुरबल के खरिहान ।
 केऊ कन्हरो से उठवा लेइअ दू बोझा धान ॥
 हमरे लेखा अपनहू दुन्नो जन चिन्ता भूल ।
 भूलल हती उत्सव में ओकरा मानले सुखमूल ॥
 न राजा जुवराज न उहमाँ पता न कइसे काज ।
 मन्त्री सब चलबइत होएतक अपनहू के राज ॥”
 लंकापति के बात उचित कपिपति के मन में भाएल ॥
 मित्र नेह भूलल आ परजा के सुधि मन में आएल ॥
 राघव से मिल के दुन्नो अप्पन इच्छा बतलएलन ।
 आउर अपना देस जाए ला सादर आग्या मंगलन ॥

कहलन "देखली राजतिलक आउर सासन परबन्ध ।
 भाई - भाई में प्रेम आउर राजा - परजा सम्बन्ध ।।
 बिन दबाओ भय के कइसे परजा सम्मान करइअ ।
 आउर परजा पर राजा के नेह बारि बरसइअ ।।
 इहे सब ले जाएम अपना जनता ला उपहार ।
 अपनापन में जीएबाला स्वार्थरहित संसार ।।
 कहलन राम "बिदा दू कइसे सोच बिकल मन होइअ ।
 अपने सबसे बिलग रहे के बात न हृदय मानइअ ।।
 एतना दिन साथे रहली जे भेली अंग अभिन्न ।
 कइसे जीअत हृदय कमल होके पानी से भिन्न ।।"
 कहलन लंकापति "प्रभु अपने ग्यानी स्थितप्रग्य ।
 हम सब नीति आ बिद्या में अपने के लग अग्य ।।
 राजनीति के पंडित अपने हम कथी समझाऊ ।
 राजा बिना राज के हालत कइसे क बतलाऊ ।।
 अपने बिना अधूरा हम्मर सबके जीवन छन्द ।
 तन से जाएम मगर रहत मन राम-कमल में बन्द ।।
 समय - समय पर हम सब कोसल अबइत जाइत रहम ।
 आउर खेम - कुसल ला दूतो के पेठबइत रहम ।।"
 आखिर राम भरल मन से जाए ला आग्या देलन ।
 आउर सबके राजोचित सम्मान बिदाई कएलन ।।
 बिदा करे ला जब हुनका पुष्पक बिमान लग अएलन ।
 तब राघव किस्किन्धापति के अल्लग से समझएलन ।।
 कहलन "पुत्र समान मान अंगद के रखिहऽ साथ ।
 पिताहीन उ समझे न अपना के कभी अनाथ ।।
 बहुत समय तक राजगद्दी पर बइठल मत तू रहिहऽ ।
 अंगदो के राजकरे के बन्धु औसर दीहऽ ।।
 कतनो भोगबऽ कभी न घटतओ सत्ता - सुख के भोग ।
 ए लेल जेतना लोभ घटएबऽ आदर करतओ लोग ।।
 स्वेच्छाचारी मन पर बन्धु हरदम अंकुस रखिहऽ ।
 आउर राजकाज में अंगद के राय नित पूछिहऽ ।।
 निष्ठावान समरपित जन पर करिहऽ अति बिस्वास ।
 अहंकार में तू जनमत के करिहऽ मत उपहास ।।

राजा के असली सक्ति जनता में बास करइअ ।
 जनता जेतना सुखी नृपति ओतने बलवान रहइअ ॥
 राजा दीपक, नेह प्रजा, सेबक बन बत्ती जरइअ ।
 तबही सासन के जोती से जन आलोक पबइअ ॥
 स्वेच्छाचारी सुखलोलुप सासक जब छुदर होइअ ।
 सासन में निच्चा से उप्पर तक अतिचार बढइअ ॥
 भ्रस्टाचार, परिग्रह, सोसन आउर अत्याचार ।
 जनता के बेबस कर देइअ लेबे ला हथिआर ॥
 अइसन सासन में होइअ रोजे बिप्लव बिस्फोट ।
 राज पलट जाइअ पलभर में लेके कोनो ओट ॥
 ए लेल राजकाज पर बन्धु अपने दृष्टि रखिहऽ ।
 परजा के दुख-सुख-इच्छा समझे के कोसिस करिहऽ ॥
 बुद्धिमान तू अपने हतऽ तोहरा की समझाऊ ।
 सोना पर सोना के पानी कथी बन्धु चढ़ाऊ ॥”
 ओकरा बाद अलग ले गेलन अंगद के रघुनाथ ।
 हुनको के समझएलन नीति फेर पीठ पर हाथ ॥
 “अंगद दुनिया में उत्तम होइअ सबसे बिग्यान ।
 बिग्यानों से जादे जग में कर्मठता के मान ॥
 कर्महीन ग्यानी दुनिया में कभी न मान पबइअ ।
 कतनो उत्तम बात कहइअ लोग न ध्यान लबइअ ॥
 करमो से ऊँचा होइअ दुनिया में सबल चरित्र ।
 सब कोई ओकर मान करइअ सत्रु आउर मित्र ॥
 एकरो से ऊँचा हए एगो चीज जगत में तात ।
 सील से आगे दुनिया में उत्तम न कोनो बात ॥
 सत्रु - मित्र से उप्पर होइअ सीलवान नरबीर ।
 छोभ क्रोध से मुक्त उ होइअ सागर सन गंभीर ॥
 सीलवान नर के जग में पूजल जाइअ आचार ।
 ओकरे बानी बेद सास्त्र ओकरे किरिआ बेहबार ॥
 तू भाबी सम्राट न छोरिहऽ मरजादा के संग ।
 सील आउर सक्ति के मानिहऽ तू जीवन के अंग ॥
 पितातुल्य मानिहऽ चच्चा के हुनकर आदर करिहऽ ।
 तोरे पथ पर दुनिया चलतक उत्तम राह बनइहऽ ॥

सत्ता ला संघर्स न करिहऽ कान न कच्चा रखिहऽ ।
 सुनिहऽ सबके बात मगर नीति सम्मत जे करिहऽ ।।
 रबिसुत सन मतिमान तू हतऽ बाली सन बलवान ।
 दीनहीन पीरित जनके तू रखिहऽ जादे ध्यान ।।”
 बापस दुन्नो अएलन खरा जहमाँ पुस्पक यान ।
 खोजे लगलन राम “कहाँ गेलन प्रियबर हनुमान ।।”
 हाथ जोर के पबनपुत्र कहलन “हे राम दिनेस ।
 सेबक इहाँ खरा आग्या में आग्या दू अबधेस ।।
 रघुबर मुस्काइत एगो सुन्दर मनिमाल निकाललन ।
 आउर बरा प्रेम से हनुमत ओर बढ़ाके कहलन ।।
 महाबीर तोहरा ला देलन सीता इ मनिमाल ।
 एकरा के सादर स्वीकारऽ हे अंजनी के लाल ।”
 हाथ जोर हनुमत कहलन “प्रभु कहेला निठुर बनइले ।
 अपना किरपा के बदला हमरा के पत्थर देइले ।।
 इ त बज्जर सन कठोर माई के नेह न एमें ।
 अपनहू के अपनापन के बिम्ब न कतहूँ एमें ।।
 सुत-बित-दारा-हीन प्रभु हम धरती पर अनिकेत ।
 हमरा ला धरती पर कतहूँ न कोनो साकेत ।।
 ए लेल अपना सेवा में हमरा रख लीऊ नाथ ।
 स्वर्गो से उत्तम हमरा ला हए अपने के साथ ।।
 जहाँ राम ओतही सान्ती सोभा आ सुख के बास ।
 कमलनयन अपने से अल्लग कइसे रहतक दास ।।
 लंकापति आ किस्किन्धापति जाके राज सम्हारतन ।
 अंगद हथ जुबराज ऊ जाके राज-काज अब सिखतन ।।
 गुरु के आग्या मान बिपत्ति में देली जिनकर साथ ।
 अपने के किरपा से उ अब हथ किस्किन्धानाथ ।।
 माता हम्मर ब्रती, पिता हथ जूथपति कपिनाथ ।
 रुचि सुभाओ के बात अबहिओ हथ सत्ता के साथ ।।
 बाकी हमरा मोह न धन से न सत्ता से राग ।
 ब्रह्मचारी परदुखकातर न नारी से अनुराग ।।
 अपने प्रभु जनता के सेबक सब ला सदा मरइले ।
 राजकाज के चिन्ता अप्पन सुध न तनिक रखइले ।।

अपने के सुधि रखे ला प्रभु सेबक एगो चाही ।
 अपने के इच्छा से चले अइसन अनुचर चाही ।।
 तनिको नेह अगर हमरा पर अपने के रघुनाथ ।
 त हमरा के दास बना लू सेवा ला नरनाथ ।।”
 कहइत - कहइत डबडब भेलक नैन पवननन्दन के ।
 आउर आरत होके गिरलन पद पर रघुनन्दन के ।।
 आसुतोस रघुनाथ उठा के हुनका हृदय लगएलन ।
 आउर कोमल कर से हुनकर आँसू पोंछे लगलन ।।
 कहलन “हमरा पर तोहर उपकार अमित हनुमान ।
 जे में तोरा सुख ओही में हमरो सुख मतिमान ।।”
 “धन्न बीर हनुमान राम के सेबक निश्छल धन्न ।
 तोरा सन अनमोल दास के पएतक जग में अन्न ।।”
 रघुबर के आग्रह पर सब कोई बइठल सुन्दर यान ।
 सब कोई के ले के उरलक दक्खिन तरफ बिमान ।।
 सबके साथे बापस राघव राजभवन में अएलन ।
 बार - बार सुग्रीब बिभीसन के गुन पुलकित गएलन ।।

सबतर से निश्चिन्त राम सासन पर देलन ध्यान ।
 राजकोस, सेना आ सेबक से कएलन पहचान ।।
 जाने लगलन राजकाज के नीति नियम बेहबार ।
 जनता के प्रति राजपुरुष सब के कइसन आचार ।।
 अनुभव कएलन साधु भरत न देलन पूरा ध्यान ।
 हमरे पीरा में भुतलाएल रहलक हुनकर ग्यान ।।
 सरल हृदय सत्रोहन उपरे - उपरे राज चलएलन ।
 सत्ता के ए चक्रब्यूह में पइठ न भीतर पएलन ।।
 ए लेल असथिर रहल न सत्ता के चारो दृढ़, तंत्र ।
 साम - दाम आ दंड - भेद के जानल परखल मंत्र ।।
 सासन में कुछ भेल सिथिलता बढलक स्वेच्छाचार ।
 जनहित के हर काम - काज में पइठल भ्रस्टाचार ।।
 नगरे पर दृष्टि रह गेलक भेल उपेक्षित ग्राम ।
 रह गेलक भगवान भरोसे केऊ न लेलक नाम ।।

नेता भ्रस्ट, बनिक जन सोसक, राजपुरुष मतिमन्द ।
 जथाइसथिति के परिपोसक क्रियाहीन स्वच्छन्द ।।
 अपना लाभ-लोभ से मतलब सुख सुविधा के ध्यान ।
 दुख अभाओ पीरा पुकार पर कभी न देलक कान ।।
 सुविधाभोगी कामचोर मिथ्याभासी अधिकारी ।
 घर भरे ला दाम बढ़ावे में तत्पर व्यापारी ।।
 मानबता से रहित निरंकुस राजतंत्र के चाल ।
 देख छोभ पीरा से भेलन राघब बहुत बेहाल ।।
 सोंच समझ के सासन ला उ निश्चित नीति बनएलन ।
 राजग्या लागू होए के ढंग सुनिश्चित कएलन ।।
 सबसे पहिले अबध राज के तीन भाग में बँटलन ।
 आउर तीनों भाई के ओकर अधिकारी रखलन ।।
 एकरा बाद गुप्तचर साखा के कएलन उ चुस्त ।
 सासन बिधि के सिथिल बेबस्था कएलन तुरत दुरुस्त ।।
 काहिल चोर भ्रस्ट बतबनबा आउर जे घुसखोर ।
 चुन-चुन के बाहर कएलन आ देलन दंड कठोर ।।
 राजा - परजा के हक में जे सेबक निस्थाहीन ।
 ओकर बल सब छीन-छीन के कएलन सक्तिविहीन ।।
 पद के लाभ उठा के जोरलक जे धन के अम्बार ।
 ओकर सब धन राजकोस में लेलन उचित बिचार ।।
 टूटल साहस भ्रस्ट आउर स्वेच्छाचारी घबराएल ।
 छोर - छोर डरे अप्पन पद लेके प्रान पलाएल ।।
 मंत्री से लेके प्रहरी तक सासन भेलक सुद्ध ।
 लमहर - लमहर पद पर बइठल न्याई आउर प्रबुद्ध ।।
 सेना भेल अजेय निकालल गेलक कायर चोर ।
 राम - बेबस्था के मच गेलक चारो ओरी सोर ।।
 सब तरह से राम राज के चुस्त बेबस्था कएलन ।
 ग्यानी आ गुनगर सज्जन से सासन के भर देलन ।।
 राजदंड के भय से भागल बंचक चोर चुहार ।
 दुष्ट अताई आउर कुटिल जन छोर चलल घरबार ।।
 करतब पालन ला तत्पर हरदम सेबक तइआर ।
 दृढ़ चरित्र बाकी उपर से अति बिनम्र बेहबार ।।

तुरत न्याय से जन - जन में बिस्वास अनोखा जागल ।
 एक घाट पर बाघ आ बकरी पानी पीए लागल ।।
 हर अदमी के काम काज पर चर के तेसर आँख ।
 के कहमाँ कइसे चलबइअ राज - काज के साख ।।
 हर दिन के सब हाल राम तत्पर हो अपने सूनथ ।
 आउर मंत्री न्यायधीस संग उचित न्याय झट करथ ।।
 गेल गाँओ में न्याय बेबस्था आ पंचइती राज ।
 सज्जन न्याई मुखिया के सिर परल न्याय के ताज ।।
 बेद बिहित आचरन आउर सुभ लोकनीति बेहवार ।
 स्वेच्छा से जन छोरे लागल अबगुन आउर बिकार ।।
 अतिवृष्टि से बच्चे ला भेलक अनेक उपचार ।
 अनावृष्टि से रक्षा ला इन्डा पोखरी तइआर ।।
 सोना उगले लागल धरती समुचित पोसन पाके ।
 घर - घर में लछमी आ गेलन सुन्दर स्वागत पाके ।।
 अन से भरल बखार दुधारू भेलक भँइसी गाय ।
 बनिज आउर उद्योग बढ़एलक राजकोस के आय ।।
 गाँओ - गाँओ में सरक भेल आ हरित पेंर के बाँह ।
 गरमी में रस्ता कट जाए चल के छाँहे छाँह ।।
 गरी लदान फरल फल जे से झुक्कल तरु के डाढ़ ।
 बाल फसल के लमहर भेलक आएल एतना बाढ़ ।।
 जहाँ - तहाँ पनसल्ला सुन्दर रस्ता भेल निरापद ।
 रामराज से भागल चुपे रोग, दुःख आ आपद ।।
 लम्बा तगरा पुरुस मनोहर सुन्दर सुत्थर नारी ।
 न केउ कामी लोलुप पापी न केऊ भ्रस्टाचारी ।।
 नारी सीलवान पतिबरता कोमल आ गिरथाइन ।
 नेह डोर में बन्हले घर के लछमी सन धनिकाइन ।।
 राम प्रजामय प्रजा राममय गिरा अरथ अनुबन्ध ।
 असथापित जन - जन में भेलक राग भरल सम्बन्ध ।।
 राम प्रजा के उत्तम सेबक प्रजा राम - गुन - गायक ।
 जनहित के प्रतीक हो गेलक रघुबर के धनु - सायक ।।
 पति के प्रेम पुजारिन सीता राज त्याग बन गेलन ।
 जे कोमलता के मूरत ऊ दुःख माथा पर लेलन ।।

बिपति पर बिपति परलक हर ले गेलक लंकेस।
 अपना जनते सब्भे भाँति देलक बहुत कलेस।।
 बाकी साहस के देबी ऊ संकट झेलइत गेलन।
 नारी के सक्ति के अद्भुत परिचय जग के देलन।।
 दुख के आग तपएलक जेतना ओतने चमकल रूप।
 पति-प्रेम, सक्ति आ सत के भेलन अद्भुत रूप।।
 हुनकर करनी नारी ला गउरब के सिखर बनएलक।
 दुरबल कोमल नारी मन से हीन भाओ बेलगएलक।।
 हुनकर जीवन गाथा के नारी सब गीत बना के।
 लोक कंठ में मुखरित कएलक जीवन में अपना के।।
 जइसे सीता नारी-सक्ति के भेलन प्रतिमान।
 तइसे राघव नर-सक्ति के भेलन सुभ उपमान।।
 राम - सिया के जीवन भेलक जनता ला आदर्स।
 काव्य कला हुनका में पएलक जीवन के उत्कर्ष।।
 रामचरित पारस के छूके बानी बनलक सोना।
 रामकथा लिखबइआ पएलक चारो फल के दोना।।
 हमहू ले अइली पूजा ला अच्छर के कुछ फूल।
 रामकृपा से मिट जाएत हमरो सब दुख आ सूल।।

रामराज रबि प्रात सुखद, तमसहीन संसार।
 दुष्ट नुकएलक खंडहर, भल पएलक सुख-सार।।
 पुरुसोत्तम रघुबीर के, पाबन चरित महान।
 सुख सान्ती उत्थान के, रामराज प्रतिमान।।



उपसंहार

अगहन सुभ तिथि पंचमी रामकथा रस-सार।
बज्रिका रामाएन सुखद पएलक उपसंहार।।
इस्ट मित्र मर्मग्य जन लेके बहुत सोआद।
सुनलन आउर सराहलन मान सुखद अपबाद।।

बाकी नास्तिक बुद्धिजीवी भौतिकताप्रिय लोग।
जे न पालइअ जीवन में आदर पूजा के रोग।।
जे भगवान भजन पूजन के नित उपहास करइअ।
आउर घर के जोगी के जोगरा कह दूर रहइअ।।
अइसन लोग पुछइअ हमरा राम-महत्त्व बताऊ।
राम मनुस कि ईस्वर ए में कहेला माथ खपाऊ।।
ईस्वर बिना चलइअ बुद्धि से हम्मर सब काम।
हए बिग्यान सहाएक ऊहे हमरा ला भगवान।।
कहेला पूजू राम सिया, कहेला मानू भगवान।
रामनाम से कोन लाभ बतलाऊ कबि सिरीमान।।

अइसन जन के रघुबर - महिमा समझावे के पहिले।
ए जग के कुछ हालत हम बतलावे लेल चहइले।।
ओही से अन्दाज लगत केतना आबस्यक राम।
आउर हुनका चरन चिन्ह पर चलल जरूरी काम।।

आज प्रबल बिग्यान मनुस बुद्धि के दास बनल हए।
भौतिक सुख-सुबिधा के अदभुत मेला इहाँ लगल हए।।
धरती पर बिस्फोट बम के नभ में यान उरइअ।
पूजा के दिन बीतल नौग्रह पर राकेट गिरइअ।।

राबन के पुस्पक विमान हर जन ला सुलभ इहाँ हए।
 आउर दूरदरसन में परगट जग के हर कोना हए।।
 मगर न हए सन्तोस मनुस के सान्ती दूर बसइअ।
 अपने पर बिस्वास न केकरो दोसर कहाँ बचइअ।।
 एक महल में सुख - सुबिधा के लागल हए अम्बार।
 दोसर घर में अन्न बस्त्र ला मच्चल हाहाकार।।
 भाई के मुँह से भाई नित छीन रहल हए रोटी।
 एन्ने हए अम्बार बस्त्र के ओन्ने फटल लंगोटी।।
 केऊ कमएले बिना चाहइअ बन जाऊ धनवान।
 केऊ पढ़ले बिना चाहइअ कहलाऊ बिद्वान।।
 केऊ पद के लाभ उठा के चानी काट रहल हए।
 केऊ तिकरम आ तस्करी से धनवान बनल हए।।
 केऊ गिरोह बनाके सबतर हए आतंक मचएले।
 केऊ दे सिद्धान्त नाम हए देसद्रोह अपनएले।।
 केऊ अपना धन से भरले जाइअ दोसर देस।
 केऊ रोटी ला अप्पन धरती तज बसल विदेस।।
 शिक्षा आ संस्कृति के लागल रंग - बिरंग बाजार।
 पूजा के ईश्वर बिक रहलन चोरी के बाजार।।
 भ्रस्टाचार घोटाला सत्ता के अदभुत ब्यापार।
 अधिकारी ब्यापारी नेता के चमकल रोजगार।।
 बल आउर अबिबेक आज कएले हए अइसन मेल।
 अलगोझा आतंक द्रोह के चारो ओरी खेल।।
 सील-बिनय - मानबता - पूजक जन कायर कहबइअ।
 जेक्कर लाठी ओक्कर भँइसी सबतर देख परइअ।।
 कुरसीबाला दीन - दुखी के दरद न तनिक बुझइअ।
 अपना सुख ला सैब्यो से कप्पन के भाग मंगइअ।।
 अहंकार उग्रता क्रोध हए सक्ति के परिभाषा।
 छल - प्रपंच - बिस्वासहीनता आज मनुज के भासा।।
 त्याग तपस्या सपना बनलक स्वारथ राज करइअ।
 जन्ने खोजू तझे बाली आ सुग्रीब मिलइअ।।
 नंगा भूखा काम करइअ धोतीबाला खाइअ।
 साँच बोलइअ मारल जाइअ झूठा जग पतिआइअ।।

बात - बात में झगरा झंझट पग - पग प्रगट विभेद।
 लोकाचार देखाबा सबतर बिसरल गीता बेद।।
 कुटिल कुचाली मौज करइअ सज्जन दुख उठबइअ।
 हर अदमी अधिकार मंगइअ काम न करे चहइअ।।
 बहुरूपिआ रिसबत के चलती निच्चा से उप्पर तक।
 ऊहे रानी बनके बइठल खम्हा से छप्पर तक।।
 आन्दोलन हरताल घेराओ रोजे रोज बढ़इअ।
 तरह - तरह के साँढ़ देस के खेती मुक्त चरइअ।।
 अनपढ़ आ ग्यानी दुन्नो के हए आचरण समान।
 जेकरा जेतना कम साधन ओतने जादे सन्तान।।
 भोजन आ कपरो के सुबिधा से बंचित समुदाय।
 नरक तुल्य जीवन जीए ला करइत हाय-हाय।।
 जनता के सुबिधा ला उप्पर से जे बूँद गिरइअ।
 जीभ निकालले जीब - जन्तु सब बीचे में पी जाइअ।।
 सुबिधा रोज घटइअ पर आबादी रोज बढ़इअ।
 घास लतरनी लेखा मानब धरती छएले जाइअ।।
 अपना के निरदोस बता दोसरा के दोसी कह के।
 हर अदमी गरदन बचबइअ अप्पन बोझ पटक के।।
 रोटी हए सरबस्व इहाँ पर व्यर्थ देस के बात।
 जननी जनमभूमि के सुत सब मार रहल नित लात।।
 राष्ट्रतरु के काट रहल हए स्वेच्छाचार कुठार।
 राम - रहीम - ईसा हो गेलन देसद्रोह हथिआर।।
 दोसरा ला उपदेस आउर अपना ला अलग चरित्र।
 मुँह में राम बगल में छूरी अदमी भेल बिचित्र।।
 जेक्कर जेतना गिरल आचरन ओतने अधिक पुजाइअ।
 जेकरा चाही जेल उ न्यायी बन के न्याय करइअ।।
 सन्त तपस्वी बनबासी हथ, चोर राज चलबइअ।
 सरस्वती निरबासित मूरख बइठल बेद रचइअ।।
 सत्त्वहीन भीतर से, बाहर चमचम करइत रूप।
 चमत्कार अभिनय कौसल के, बनल बिदूसक भूप।।
 हए चरित्र के संकट सबतर कामचोर नर - नारी।
 गलगर के चलती ऊ सबतर कर्मठता पर भारी।।

परल कुपातर के कुंडली में राजजोग अलबेला।
 ग्यानी आ गुनवान ढोअइअ बेबस ओक्कर ढेला।।
 राजस - तामस मिलके रचले अइसन सुन्दर जोग।
 छय रोगी के कुंडली में जा परल राजसुख भोग।।
 जेन्ने देखू राबन के चेहरा पर खुसी मिलइअ।
 आउर बिभीसन घर-बाहर सबतर लतिआएल जाइअ।।
 जे सदगुन के पूजा में जीवन अरपित कएले हए।
 मानबता के सेवा ला संकल्प तनिक रखले हए।।
 उ कुंठा से ग्रस्त इहाँ चिन्ता में रोज घुलइअ।
 राबन जुग के जाए के चुप्पे नित राह तकइअ।।
 सोंच रहल राजस - तामस के कहिआ टूटत साथ।
 कहिआ राजस सात्विक से जोरत सहजोगी हाथ।।
 कइसे रामराज के सपना बनत इहाँ साकार।
 दीन - दुखी जन के सुख - सपना लेतक कुछ आकार।।
 सोसन आ अन्याय पर आश्रित इ सासन तंत्र।
 जाएत इहमाँ से कब आएत असली परजातंत्र।।
 आपस में सदभाओं प्रेम के कइसे फइलत गान।
 कइसे मानब मानब के देतक समता सम्मान।।
 पूरब में अरुनोदय ला जग आसा रोज तकइअ।
 उगतन राम भरत राबन बिस्वास न टूटे देइअ।।

अइसन हालत में जनता के चाही निरमल ग्यान।
 जेसे जागे अपनापन बिस्वास त्याग के गान।।
 एकरा पाबे ला चाही जीवन में भाओ भक्ति।
 आउर संजम सद्बिचार जे देबे उन्नत सक्ति।।
 एकरा ला प्रेरक ब्यक्ति सबसे उत्तम रघुनाथ।
 हुनके गुन आ ग्यान निभाएत उन्नति पथ पर साथ।।
 राम रहथ हमरे सब लेखा मानब अति गुनवान।
 सील दया ममता के मूरत तन - मन से बलवान।।
 त्याग तपस्या सदाचार से बनलन उ भगवान।
 सबसे अल्लग कायम कएलन अप्पन उ पहचान।।

सिरी बीर्ज ऐस्वर्ज बिमल जस आउर ग्यान बिराग।
 इहे छौ गो भग कहबइअ दीपित जइसे आग।।
 जे नर में इ दीपित छौ गुन ऊहे हए भगवान।
 पूजा के अधिकारी जग में नरता के प्रतिमान।।
 रहे छहो भग रामचन्द्र में बनलन उ भगवान।
 कएलन उ आदर्स प्रतिष्ठा क के करम महान।।
 बीर सभा में सिब - धनु तोरलन महाबीर कहलएलन।
 राबन अइसन महाबली के रन में मार गिरएलन।।
 त्यागी अइसन रहथ कि छन में बचन पिता के मानलन।
 ओतना भारी राज तजे में तनिक न देर लगएलन।।
 बैरागी अइसन जे छोरलन माए बाप के मोह।
 राजपाट भाई बन्धु के तनिक न रखलन छोह।।
 सरनागत के अपना के अप्पन ऐस्वर्ज देखएलन।
 मित्र बना सुग्रीब बिभीसन के गद्दी बइठएलन।।
 ग्यानी अइसन रहथ कि पाके बेद - सास्त्र के ग्यान।
 कभी न अपना मन में लएलन तनिको सा अभिमान।।
 रिसि मुनि गुरुजन परिजन से जेतना अनुभव पएलन।
 सीपी सन अपना मन में उ मोती अइसन रखलन।।
 सदा आचरन में उतारलन अप्पन अनुभव ग्यान।
 सील बिनय से ओकरा कएलन उन्नत महिमाबान।।
 आसमान से उ न टपकलन ले कोनो औतार।
 धरती से उप्पर उठलन ले सील - सक्ति आधार।।
 एही से हुनका चरित्र के जग में उरल पताका।
 सील सक्ति आचार ग्यान के उ रच देलन साका।।
 ब्रम्हा लेखा रच देलन उ एगो नूतन सृस्टि।
 ताप तप्त धरती के मिललक रामराज के बृस्टि।।
 बिस्नु लेखा पालक बनके परजा पालन कएलन।
 सोसन रहित समाज के सपना जग में सफल बनएलन।।
 उत्पीरन अन्याय पाप के कएलन जर से नास।
 जन - जन में भरलन अपना करनी से बल - बिस्वास।।
 सिब लेखा संहारक बन दुरजन के देलन दंड।
 साधु सज्जन के रक्षा ला धएलन उ कोदंड।।

अनाचार आतंक त्रास से जे जग के दुख देलक।
 हुनका हाथे निश्चिते उ पापी जमपुर गेलक।।
 रीझल जग हुनका गुन पर ए से भगवान बनएलक।
 धरती से गेला पर हुनका मंदिर में बइठएलक।।
 धूप दीप अच्छत चन्नन आ रोरी तिलक सजा के।
 हुनका के पूजे लगलक जग सरधा सुमन चढ़ाके।।
 तहिआ से भाबुक जन हुनका के भगवान मानइअ।
 हुनका आगे अप्पन सुख - दुख के सब बात रखइअ।।
 हो बिहबल हुनका उर से अप्पन उर - तार जोरइअ।
 संकट से आहत होएला पर रामनाम सुमिरइअ।।
 अपने मन के सक्ति गुनित हो साथ राम के नाम।
 अनु परमानु सन ताकतबर बन बनबइअ काम।।
 कर्म महान जगत में जेक्कर ओक्कर जोत बरइअ।
 ऊहे जोती जन जीवन से अन्धकार भगबइअ।।
 कथनी आ करनी में अन्तर इहे भारी झंझट।
 एही कारन दुनिया में सबतर चरित्र के संकट।।
 सुबिधाजीवी लोग न संकट के नजदीक अबइअ।
 बात बना बानी के कौसल से नित ठगी करइअ।।
 ग्यान छुद्रता के साथी, स्वारथ चरित्र के मित्र।
 दुनिया के ए रंगभवन में भरल इहे हए चित्र।
 अइसन हालत से उबरे ला जेक्कर हृदय बिकल हए।
 ओकरा ला अथाह सागर में राम नाम संबल हए।।

रामकथा संकल्प कथा हए जग में असुर बिनास के।
 रामकथा आदर्स कथा हए करम - चरित्र बिकास के।।
 रामकथा पावन गंगा हए अपनापन आ त्याग के।।
 रामकथा कोमल खिस्सा हए नर - नारी अनुराग के।।
 रामकथा हए बज्रलेख छत्री के बचन निबाह के।
 रामकथा सम्बन्ध-कथा हए घर - परिवार मिलाप के।।
 रामकथा हए उन्नत सक्ति रास्त्र भाओ बिस्तार के।
 रामकथा हए सर्वसहा नारी के बल बिस्तार के।।

रामकथा संघर्ष कथा हए सत्य - असत्य बिचार के।
रामकथा हए बिजय कथा सुभ कर्म बिबेक बिचार के।।

एही से जे रामकथा के सरबन मनन करइअ।
ओकरा मन में सुभ विचार के पाबन जोत फुटइअ।।
इ जोती ओकरा जीवन में उत्तम पथ बनबइअ।
अन्याय सोसन से जूझे ला सुभ सक्ति भरइअ।।
जे रखले हए रामनाम के मोती मन के सीप।
ओकरा जीवन में आलोकित नित मंगल मनिदीप।।
राम परम पुरुसोत्तम पाबन सील सक्ति के धाम।
नरता के उत्कर्ष सिखर हुनका अनन्त परनाम।।

